॥ श्रीराधावल्लभो जयति ॥

॥ श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति ॥

श्रीराधासुधानिधिस्तोत्रम्

अन्वितार्थचन्द्रिकाविभूषितम्

टीकाकार

पं० ओंकारदत्तशास्त्री, वृन्दावन

पदावलीकार

भक्त धर्मचन्द्र

प्रकाशनप्रेरक

श्री १०८ गोस्वामी हितानन्द जी महाराज

प्रकाशक

लक्ष्मीनारायण कागजी

राधाष्टमी हिताब्द ४५५

सं० २०२५

प्रथम बार ३००

लागत न्यौछावर

३) ९५

सजिल्द

लागत न्यौछावर प्रकाशन संस्था का
चतुर्थ प्रकाशन

● मुद्रक

प्रीतम लाल गोस्वामी

रतन प्रेस, अठखम्भा वृन्दावन

● न्यौछावर
तीन रुपये

● प्राप्ति स्थान

लक्ष्मीनारायण कागजी,

बिहारी पुरा, वृन्दावन

● प्रथम बार

३०० प्रति

● श्रीराधाष्टमी हिताब्द ४६५

सं० २०२५ सन् १९६८

प्राक्कथन

●

श्रीमन्महाप्रभु हितहरिवंश गोस्वामी प्रणीत "श्रीराधा-सुधानिधि" रसग्रन्थ अपने आप में एक सम्पूर्ण मौलिक रचना है।

इसमें श्रीराधामाधव के सहज प्रेमोत्सव, नित्य विहार की जैसी अद्भुत व्यञ्जना और उनके अंगों की व्याख्या उज्ज्वल रस के माध्यम से सम्भव हुई है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। इसीलिए श्रीवृन्दावन-रस के प्रिया-पक्षपाती उपासकों के लिए, यह अनुपम कृति रस-पदवी का प्रकाश स्तम्भ बन कर रह गई है। श्रीराधाचरणद्वयी के विचित्र आलोक की चन्द्रिका इसमें सर्वत्र विखरी पड़ी है। वृन्दावन, सहचरी, रसिक और रस मय लाड़-चाव की चर्चा "श्रीराधासुधानिधि के' बिना अधूरी रह जाती है।

रसिक विद्वानों ने इस ग्रन्थ पर अनेक टीकायें की हैं, प्रस्तुत "अन्वितार्थ चन्द्रिका" हिन्दी टीका; संस्कृत भाषा के माने हुए विद्वान श्रीयुत ओंकारदत्त जी शास्त्री ने अन्वय और प्रत्येक पद का सरल अर्थ करते हुए लिखी है, जो उपासक

जगत के लिए उनकी अनूठी देन है। शास्त्री जी श्री १०८ स्वामी अखण्डानन्द जी के आश्रित हैं और उन्हीं के आश्रम में आदर्श रूप से श्रीधाम वास कर रहे हैं। भक्त धर्मचन्द जी (निजहित) अपने उपासना सुख की अभिवृद्धि के निमित्त इन श्लोकों का भावानुवाद-व्रजभाषा के पदों में समय-समय पर करते रहे हैं वे भी यहाँ संग्रहीत कर दिये गए हैं। पदों में मूल का अनुसरण करने की भर-सक चेष्टा परिलक्षित होती है। "रीझैंगे रसिक तो कहैंगे कविताई ना तो, राधिका-व्रजेश कौ अनूप गुन गान है।"

श्रीलक्ष्मी नारायणजी आदि के सहयोग से "लागत न्यौछावर प्रकाशन संस्था" के सूत्रपात के द्वारा स्वल्प मूल्य पर १ श्री राधा लाड सागर २ रास छद्म आदि ४० बेलियां ३ समय प्रबन्ध अष्टयाम सेवा श्रीचाचा जी के ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं और श्रीवृन्दावन रस उपासकों ने उनसे अपूर्व लाभ उठाया है।

प्रस्तुत प्रकाशन इस संस्था का चतुर्थ प्रकाशन है आशा है रस मार्गी उपासक संस्था के इस प्रेय कार्य से तुष्ट होकर प्रकाशकों को प्रोत्साहित करेंगे।

हितानन्द गोस्वामी

श्रीराधाष्टमी २०२५

श्रीमहल सेवा कुंज
श्रीधाम वृन्दावन

॥ श्री राधावल्लभो जयति ॥

श्रीयमुनाष्टकम्

व्रजाधिराजनन्दनाम्बुदाभगात्रचन्दना-
नुलेपगन्धवाहिनीं भवाब्धिबीजदाहिनीम् ।
जगत्त्रये यशस्विनीं लसत्सुधापयस्विनीं,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ॥१॥

व्रजाधिराज-	=(जो) व्रजराज	यशस्विनीम्	को प्राप्त,
नन्दन	कुमार के	लसत्सुधा	=सुन्दर सुधातुल्य
अम्बुदा	=घन सुन्दर गात्र	पयस्विनीम्	जल को प्रवाहित
भगात्र-	के		करने वाली,
चन्दनानुलेप	=चन्दन चर्चित	दुरन्तमोह	=कष्ट से कटने
गन्धवा	=गन्ध वहन करने	भञ्जिनीम्	वाले अज्ञान का
हिनीम्	वाली हैं (तथा)		नाश करने वाली
भवाब्धिबीज	=भव सागर के	कलिन्द	=(उन) श्रीकालिन्दी
दाहिनीम्	कारण को	नन्दिनीम्	देवी (यमुना जी)
	निवारण करने		का
	वाली हैं (तथा)	भजे	=(मैं) भजन
जगत्त्रये	=त्रिभुवन में कीर्ति		करता हूँ ।

भावार्थ छन्द—व्रजाधिराज के कुमार कृष्ण नन्द नन्दन । के अङ्ग मेघ श्याम में लगा जु शुभ्र चंदन ।। सुगंध वही पावन जो है सदा बहाती । आवागमन के बीज सभी तुरत है जलाती ॥ धारा सुधा समान जो अखण्ड ही बहावें । जिसके गुणानुवाद तीन लोक सदा गावें ॥ शरणागतों के उग्र मोह पाश को छुड़ावें । वह सूर्या-सुता यमुना मेरे हिये समावें ॥

रसैकसीमराधिकापदाब्जभक्तिसाधिकां,
तदङ्गरागपिञ्जरप्रभातिपुञ्जमंजुलाम् ।
स्वरोचिषातिशोभितां कृतांजनाधिगञ्जनां,
भजे कलिंदनंदिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ॥२॥

रसैकसीम =(जो) रस की
राधिका चरमावधि श्रीराधा जी के
पदाब्ज भक्ति =पद पद्म की भक्ति
साधिकाम् को देने वाली हैं
तदङ्ग राग =और उन्हीं
पिञ्जर प्रभा (श्रीराधा के) अङ्गराग की
अति पुञ्ज =पीत प्रभा के
मंजुलाम् मण्डल से मण्डित हैं
स्वरोचिषाति =(तथा) अपनी ही
शोभिताम् कान्ति से अलंकृत हैं
कृताञ्जना =मानवों के मालिन्य
धिगञ्जनाम् को दूर करने वाली,
दुरन्तमोह =(उन) दुरन्त मोह
भञ्जिनीम् की नाशिनी
कलिन्द =कलिन्द कन्या
नन्दिनीम् का (मैं)
भजे =भजन (सेवन) करता हूँ ।

छंद—रस की परावधी जो श्रीराधा नाम वाली । उसके चरण कमल की भक्ति भी दे निराली ॥ अरु अङ्गराग उसका धारा में मिला करके । मञ्जुल प्रभा के पुञ्ज की छटा को बहा करके ॥ शोभित है सदा महा दीप्ती किये प्रकाशन । अपने जनों के अखिल पाप ताप की विनाशिन ॥ शरणागतों के उग्र मोहपाश को छुड़ावें । वह सूर्या सुता यमुना मेरे हिये समावें ॥

व्रजेन्द्रसूनुराधिकाहृदिप्रपूर्यमाणयो-
र्महारसाब्धिपूरयोरिवातितीव्रवेगतः ।
बहिःसमुच्छलन्नवप्रवाहरूपिणीमहं,
भजे कलिंदनंदिनीं दुरंतमोहभञ्जिनीम् ॥३॥

बहि:	=(जो) बाहर	महारसाब्धि	=महारस सागर के
समुच्छलन्	उछलते हुए	पूरयोः	दो समूहों को ही
नवप्रवाह	=नूतन प्रवाह के	इवाति तीव्र	=मानो तीव्रतम
रूपिणीम्	=रूप वाली (श्रीयमुना)	वेगत:	वेग से बहा रही हैं
व्रजेन्द्र सूनु	=श्रीव्रजेन्द्र नन्दन	दुरन्तमोह	=दु:साध्य अविद्या
राधिका हृदि	एवं श्रीराधा जी	भञ्जिनीम्	विदारिणी
प्रपूर्यमाणयोः	के हृदय में भरपूर	कलिन्द	=उन कालिन्दी का
		नन्दिनीम्	
		अहं भजे	=मैं भजन करता हूँ।

छंद—व्रजेन्द्र सुवन कृष्ण व वृषभानुनन्दिनी में। है प्रेम का अगाध सिन्धु दम्पति के जी में ।। मानो वही उछल कर यमुना बना हुआ है। पावन नवीन वेगि से प्रवाह हो बहा हैं ।। रस रूप है प्रवाह वही विवश यामिनी का। ऐसा जु है सुभाग्य बना कृष्ण भामिनी का ।। शरणगतों के उग्र मोह पाश को छुडावें। वह सूर्या सुता यमुना मेरे हिये समावें ।।

विचित्ररत्नबद्धसत्तटद्वयश्रियोज्ज्वलां,
विचित्रहंससारसाद्यनन्तपक्षिसंकुलाम् ।
विचित्रमीनमेखलां कृतातिदीनपालितां,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ।।४।।

विचित्र रत्न	=(जो) विचित्र		अनेक
बद्धसत्तटद्वय	रत्न खचित सुन्दर तट युगल	पक्षिसंकुलाम्	=पक्षियों से व्याप्त
श्रियोज्ज्वलाम्	=की कान्ति से शोभित हैं (तथा)	विचित्र मीन	=रङ्ग-विरङ्गी
		मेखलाम्	मछलियाँ ही जिनकी मेखला हैं
विचित्र हंस	=विविध हंस	कृतातिदीन	=अत्यन्त दीनों का
सारसाद्यनेक	सारस आदि		

पालिदाम्	भी पालन करने वाली,
दुरन्त मोह भञ्जिनीम्	=दुर्दमनीय मोह की दाहिका
कलिन्द नन्दिनीम्	=उन कलिन्द कन्या का
भजे	=(मैं) भजन करता हूँ।

छंद—हीरों व लाल से जड़े विचित्र दो किनारे। जिनसे प्रकाश उज्ज्वल छिटका है चहूंधारे॥ सारस व हंस आदि पक्षी जु तट निवासी। आनन्द पूर्ण विचरें मानो युगल उपासी॥ हैं मछलियां जहां पर क्रीड़ें बँधी कतारें। वह करधनी है मानो शोभा अगर विचारें॥ दोनों को पालें उग्र मोह पाश को छुड़ावें। वह सूर्या सुता यमुना मेरे हिये समावें॥

वहन्तिकां श्रियं हरेर्मुदा कृपास्वरूपिणीं,
विशुद्धभक्तिमुज्ज्वलां परे रसात्मिकां विदुः।
सुधास्रुतिन्त्वलौकिकीं परेशवर्णरूपिणीं,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ॥५॥

मुदा हरेः श्रियं	=(जो) मोद से श्री हरि की कान्ति को
वहन्तिकाम्	=धारण करती हैं। (एवं)
कृपास्वरूपिणीम्	=कृपा ही जिनका स्वरूप है
परे रसात्मिकाम्	=कुछ लोग जिन्हें रसमयी
उज्ज्वलां विशुद्ध भक्तिम्	=उज्ज्वल विशुद्ध भक्ति के रूप में
विदुः	=जानते हैं।
अलौकिकीम् तु सुधास्रुतिम्	=(जो) दिव्यसुधा की ही निर्झरिणी हैं
परेश वर्ण रूपिणीम्	=प्रभु के तुल्य नील वर्ण वाली
दुरन्त मोह भञ्जिनीम्	=दुरन्त मोह नाशिनी (उन,
कलिन्द नन्दिनीम्	=कालिन्दी का (मैं)
भजे	=भजन करता हूँ।

छन्द—जो श्री हरि की कान्ति भावों को लिये गोद। जल में बहा रही बढा कैमोद व प्रमोद ॥ कृपा ही मूर्ति रूप हैं इक रस स्वरूप उज्ज्वल। भक्ति स्वरूप भूत व मीठा है सुधा सा जल ॥ जिसमें विशुद्ध श्यामता का रङ्ग मनो ऐसा। है कृष्ण चन्द्र का ही वर्ण मेघश्याम तैसा ॥ शरणागतों........॥

सुरेन्द्रवृंदवंदितां रसादधिष्ठिते वने,
सदोपलब्धमाधवाद्भुतैकसदृशोन्मदाम् ।
अतीव विह्वला मिवोच्चलत्तरङ्गदोर्लतां,
भजे कलिंदनंदिनीं दुरंतमोहभञ्जिनीम् ॥६॥

रसादधिष्ठिते वने =(जो) रस के अधिष्ठान श्री वृन्दावन में
सुरेन्द्रवृन्द =देव वृन्द (तथा)
वन्दिताम् इन्द्रादिवृन्द से वन्दित हैं
सदोपलब्ध माधवाद्भुत =(जिन्हें) श्रीहरि के समान अत्यन्त विचित्र उन्मदभाव
एकसदृशोन्म-दाम् =सदैव प्राप्त है
उच्चलत्तरङ्ग =उत्ताल तरङ्ग रूप
दोर्लताम् भुज लताओं से (जो)
अतीव विह्वलां =अत्यन्त विह्वल सी
इव प्रतीत हो रही हैं
दुरन्तमोह =दुरन्त मोह
भञ्जिनीम् विपाटिनी (उन)
कलिन्द नन्दिनीम् =कलिन्द कन्या का
भजे =(मैं) भजन करता हूँ।

छन्द—वंदन सुरेन्द्र वृन्द भी करते हैं सदा जिसका। रस रूप धाम श्रीविपिन में है निवास उसका ॥ माधव सदा रहते हैं मत्त रस विभोर जैसे। यह सूर्यसुता मत्त बह रही है मनो तैसे ॥ मस्ती में अपनी लहरें बाजू उठा-उठा कर। विह्वल हुई है आनंद उल्लास में समाकर। शरणागतों........॥

प्रफुल्लपङ्कजाननांलसन्नवोत्पलेक्षणां,
रथाङ्गनामयुग्मकस्तनीमुदारहंसिकाम् ।

नितम्बचारुरोधसां हरेः प्रियारसोज्ज्वलां,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ॥७॥

प्रफुल्ल =विकसित कमल
पङ्कजाननाम् ही जिनका मुख है
लसन्नवोत्पले =(तथा) सुन्दर
क्षणाम् नूतन नील कमल ही जिनके नेत्र हैं
रथाङ्गनाम =चक्रवाक मिथुन
युग्मकस्तनीम् ही जिनके स्तन युगल हैं
उदार =(जो) हंसी के
हंसिकाम् समान प्रशस्त गमन करने वाली हैं

नितम्बचारु =सुन्दर तट ही
रोधसाम् जिनके नितम्ब हैं
हरेः प्रिया- =श्रीहरि प्रिया के
रसोज्ज्वलाम् रस से जो प्रकाश मान हैं
दुरन्त मोह =कष्ट से हरणीय
भञ्जिनीम् मोह को काटने वाली
कलिन्द =(उन) कालिन्दी
नन्दिनीम् का मैं
भजे =भजन करता हूँ।

छंद—हैं फूल जो कमल के है वदन मनो सुन्दर। नयनों की चमक नील रङ्ग उत्पलों के अन्दर ॥ हैं चक्रवाक जोरा जल में बिहार करता। मानो सजा है मण्डल वक्षोज का उभरता ॥ हंसों की चाल ही है यहां चाल मनोहारी। मण्डल नितम्ब दोनों तट हैं विलासकारी ॥ हैं युगल रस विभोर मोहपाश......

समस्तवेदमस्तकैरगम्यवैभवां सदा,
महामुनीन्द्रनारदादिभिः सदैव भाविताम्।
अतुल्यपामरैरपिश्रितां पुमर्थशारदां
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ॥८॥

सदा समस्त =सम्पूर्ण उपनिषद्
वेद मस्तकैः भी सतत प्रयत्न से
अगम्यवैभवाम्=जिनकी विभुता का पार नहीं पा सकते।

सदैव महा =निरन्तर महा-
मुनीन्द्र मुनीन्द्र नारदादि

नारदादिभिः भावितम्	=हृदय में जिनकी भावना करते रहते हैं	पुमर्थशारदाम्	=जो पुरुषार्थचतुष्टय देने में बडी उदार हैं
अतुल्यपामरै रपि श्रिताम्	=महापातकी भी जिनका आश्रय प्राप्त करते हैं	दुरन्तमोह भञ्जिनीम्	=(उन) दुरन्तमोह की नाशिनी
		कलिन्द नन्दिनीम् भजे	=कालिन्दी का मैं भजन करता हूँ।

छंद—जिसका कि उपनिषद ने भी पार नहीं पाया। नारद महा मुनींद्र के भी भाव रहे छ या ॥ जितने हैं महापामर दो शरण माँ ! पुकारें। पा करके मोक्ष प्रेम अन्तकाल यों सुधारे। शरणागतों...... ॥

य एतदष्टकं बुधस्त्रिकालमादृतः पठेत्,
कलिन्दनन्दिनीं हृदा विचिन्त्य विश्ववन्दिताम्।
इहैव राधिकापतेः पदाब्जभक्तिमुत्तमा-
मवाप्य स ध्रुवं भवेत्परत्र तत्प्रियानुगः ॥९॥

विश्ववन्दिताम्	=विश्ववन्दित	राधिकापतेः	श्रीराधाकान्त श्रीकृष्ण के
कलिन्द नन्दिनीम्	श्रीकालिन्दी का	उत्तमां	=पद कमल की
हृदा विचिन्त्य	=हृदय में चिन्तन करके	पदाब्ज भक्ति मवाप्य	परम भक्ति पाकर
आदृतः यः	=आदर पूर्वक जो	ध्रुवं परत्र	=निश्चित रूप से
बुधः	बिचारशील पुरुष	तत्प्रियानुगः	अन्य जन्म में उनकी
त्रिकालम्	=त्रिकाल इस अष्टक	भवेत्	=प्राणेश्वरी श्रीराधा जी के कैङ्कर्य को प्राप्त करेंगे।
एतदष्टकं पठेत्	का पाठ करेंगे।		
स इहैव	=वे इसी जन्म में		

छंद—करते हैं पाठ तीन काल जो भी बुद्धिमान। करके हृदय में ध्यान नित्य वंदिता महान ।। इस सूर्य्य सुता अष्टक का प्रेम भाव रखकर। पहिले विशुद्ध भक्ति श्रीकृष्ण चन्द्र लख कर। फिर प्राप्त करके वास इसी धाम श्रीविपिन में। पाते है पुनः भाव किंकरी का अटल मन में।।

दोहा— मार्गशीर्ष की द्वादशी, शुक्ल पक्ष की रात।
विंशतिशत दश वर्ष को, अष्टक छन्द सु प्राप्त ।।
कविता पै दृष्टि नहीं, निजहित कृपा प्रधान।
देव वाणि जानै न जे, पाठ करें हित मान ।।

।। इति श्रीहित हरिवंश महाप्रभु विरचितं श्रीयमुनाष्टकम् सम्पूर्णम् ।।

सम्मति

महाप्रभु श्रीहित हरिवंश गोस्वामी विरचित श्रीराधासुधानिधि स्तोत्र देश के समस्त श्रीराधा चरणानुरागियों का कण्ठाभरण ग्रन्थ है। प्राचीन संस्कृत और व्रजभाषा टीकाएँ उपलब्ध हैं। विभिन्न व्यक्तियों द्वारा इस ग्रन्थ के अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत संस्करण के हिन्दी टीका कार संस्कृत के अधिकारी विद्वान् हैं और उन्होंने श्लोकों के प्रत्येक शब्द का पृथक् अर्थ देकर संस्कृत न जानने वालों का बड़ा उपकार किया है। इसके साथ भक्त धर्मचन्द जी का पद्यानुवाद भी सुन्दर बन पड़ा है।

इस संस्करण के प्रकाशक धन्यवाद के पात्र हैं।

गो० श्रीललिता चरणजी महाराज

पं० श्रीओंकारदत्तजीशास्त्री कृत गद्यानुवाद और भक्त श्री धर्मचन्द जी कृत पद्यानुवाद से युक्त श्रीराधासुधानिधि का यह नवीन संस्करण सुन्दर बन पड़ा है। श्रीराधारस के प्रेमियों के लिये शुद्ध हिन्दी अनुवाद की आवश्यकता थी, वह इससे पूर्ण हुई है। सभी रसिक जनों के लिए यह उपादेय है।

श्रीव्रजजीवन लाल गोस्वामी
छोटी सरकार, वृन्दावन

२१-८-६८

❀ श्रीराधावल्लभो जयति ❀

❀ श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति ❀

श्रीराधासुधानिधिस्तोत्रम्

(अन्वयार्थभाषा-पदावलीसहितम्)

यस्याः कदापि वसनाञ्चलखेलनोत्थ
धन्यातिधन्यपवनेन कृतार्थमानी ।
योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोऽपि
तस्या नमोस्तु वृषभानुभुवोदिशेऽपि ॥१॥

कदापि	=किसी समय	मधुसूदनो	=श्रीलालजी ने
यस्याः	=जिनके	ऽपि	भी
वसनाञ्चल-	=वस्त्र-छोर के उड़ने	कृतार्थमानी=	अपने को कृतार्थ
खेलनोत्थ	से उत्पन्न हुई	(आसीत्)	माना
धन्याति	=सर्वाधिक	तस्याः	=उन
धन्यपवनेन	=धन्य पवन से	वृषभानु-	=श्रीवृषभानुनन्दिनी जी
योगीन्द्र	=योगीन्द्रों को भी	भुवोदिशे-	की दिशा के लिये
दुर्गमगतिः	दुष्प्राप्य	ऽपि	भी
		नमोऽस्तु	=(हमारा)नमस्कार हो।

—❀—

दिशा सोइ वन्दौं भानुलली ।
जिहि दिसि सों नीलांचल चालित परसत पवन चली ॥
कबहुंक महा धन्य सोइ परसै गति योगीन्द्र अगम्य ।
मधु लोलुप कृत-कृत्य भये जिय पाय महा रस रम्य ॥
रचत सुधा-निधि हित प्रभु प्रथमहि दिशा करी सोइ वन्दन ।
निज हित रसिकन काज वस्तु प्रगटी काटे कलि-क्रन्दन ॥

ब्रह्मेश्वरादिसुदुरूहपदारविन्द,
श्रीमत्परागपरमाद्भुतवैभवायाः ।
सर्वार्थसाररसवर्षिकृपार्द्रदृष्टे,
स्तस्या नमोस्तु वृषभानुभुवो महिम्ने ॥२॥

ब्रह्मेश्वरादि	=जोब्रह्माशिवादिकों से (भी)
सुदुरूह	=अतिशय दुस्तर्क्य
पदार-	=पद कमल युगल
विन्द	=की
श्रीमत्पराग	=शोभा संपन्न पराग
परमाद्भुत-	=के परमाद्भुत ऐश्वर्य
वैभवायाः	से युक्त (एवं)

सर्वार्थ-सार	=पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म अर्थ काम मोक्ष) का सारभूत
रसवर्षि कृपार्द्र दृष्टेः	=रस वर्षाने वाली-कृपा से स्निग्ध-दृष्टि
तस्या	=उन
वृषभानु भुवो	=वृषभानुकुमारी की
महिम्ने	=महिमा को
नमोस्तु	=हमारा नमस्कार हो

वंदिये भानु लली की महिमा ।
जिनकी रसमइ कृपा दृष्टि है सार पुमर्थनि गरिमा ॥
जिनके चरण कमल अज शंकर खोजत परम दुरूह ।
निजहित परमाद्भुत पराग हैं सब ऐश्वर्य-समूह ॥

यो ब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यै,
रालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तस्य ।
सद्यो वशीकरणचूर्णमनन्तशक्तिं,
तं राधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ॥३॥

यः	=जो	सद्योवशी-	=तत्काल ही वश
ब्रह्मरुद्रशुक-	=ब्रह्मा रुद्र शुक	करण	करने में समर्थ
नारद	नारद	चूर्णम्	=चूर्ण के समान
भीष्ममुख्यैः	=भीष्मादिकों से भी	अनंतशक्ति	=अनंत शक्ति सपंन्न
सहसा	=एकाएक	तं	=उस
न आलक्षितः	=लक्षित नहीं हुए	राधिका-	=श्रीराधाजी की
तस्य	=उन	चरणरेणुं	चरण रेणु का
पुरु-	=परम पुरुष (लाल	अनुस्मराभि	=मैं बार-बार स्मरण
षस्य	जी) को		करता हूँ

अनुसुमिरन करि पद-रज-राधा ।
अमित शक्तिमय चूरन तत्क्षण वश करै कृष्ण अबाधा ॥
खोजतु पुरुषोतम कौं अज शिव शुक मुनि भीषम नारद ।
नहिं करि सके लक्ष सहसा जे निजहित सहज विशारद ॥

आधायमूर्द्धनि यदापुरुदारगोप्यः ।
काम्यं पदं प्रियगुणैरपि पिच्छमौलेः ॥
भावोत्सवेन भजतां रसकामधेनुं ।
तं राधिकाचरणरेणुमहं स्मरामि ॥४॥

उदारगोप्यः	=उदार गोपियों ने	प्रियगुणैः	=प्रिय गुणों के
यत् (यम्)	=जिसको	सहापि	=सहित
मूर्द्धनि	=अपने मस्तक पर	काम्यं	=वाञ्छित
आधाय	=चढ़ा कर	पदमापुः	=पद को प्राप्त किया
पिच्छमौलेः	=मयूरपिच्छधारी	भावोत्सवेन	=(तथा) भाव चाव से
	लालजी के	भजतां	=भजने वालों के

	लिये	रधिका-	=श्रीराधाचरण
रस काम-धेनुं	=रस की काम धेनु के समान	चरण रेणुं	रेणु को
तं	=उस	अहं स्मरामि	=मैं स्मरण करता हूँ

सुमिर मन ! सो राधा पद रेनु ।
भावुक भावोत्सव सों सेवहिं रस दाइक सुर धेनु ॥
परम उदार गोपिका शिर धरि अखिल मधुर गुण नायक ।
पिञ्छमौलि मोहन वर पायो निजहित सब रस दायक ॥

दिव्यप्रमोदरससारनिजाङ्गसङ्ग ।
पीयूषवीचिनिचयैरभिषेचयन्ती ॥
कन्दर्पकोटिशरमूर्च्छितनन्दसूनु ।
सञ्जीवनी जयति कापि निकुञ्जदेवी ॥५॥

दिव्यप्रमोद	=अलौकिक आनन्द के	कंदर्पकोटि-शर	=कामदेव के कोटि-कोटि बाणों से
रससार	=रस का (सर्वस्व) सार	मूर्च्छित	=व्यथित
निजाङ्ग-सङ्ग	=(जो) निज अङ्ग सङ्ग (मिलन) है	नन्दसूनु	=उन नन्दकुमार
पीयूषवीचि	=(उसी) अमृत के तरङ्ग	सञ्जीवनी	की सञ्जीवनी रूपा
निचयैः	=समूह से	कापि	=कोई अनिर्वचनीय
अभिषेचयन्ती	=सींचती हुई	निकुञ्जदेवी-जयति	=निकुञ्जदेवी सर्वोपरि जय को प्राप्त हो रही है ।

जय जय देवी निकुञ्ज बाला ।
अंग अंग प्रति बढ़ति अलौकिक सुधा तरंगनि माला ।।
सो पीयूष सार सिंचति उर कोटि काम शर मोहित ।
नन्द सुवन संजीवनि मानो करि व्यामोह तिरोहित ।।

तन्नः प्रतिक्षणचमत्कृतचारुलीला ।
लावण्यमोहनमहामधुराङ्गभङ्गि ।।
राधाननंहि मधुराङ्गकलानिधान ।
माविर्भविष्यति कदा रससिन्धुसारम् ।।६।।

प्रतिक्षण	=क्षण क्षण में
चमत्कृत	=चमत्कार पूर्ण
चारु लीला	=सुन्दर लीला के
लावण्य-मोहन	=लावण्य द्वारा मोहित करने में
महामधुराङ्ग-भङ्गि	=अत्यन्त मधुर अङ्ग भङ्गी पूर्ण
मधुराङ्ग-कलानिधानं	=मधुर शृङ्गार केलि की अङ्ग रूप कलाओं के निधि
रससिंधुसारम्	=एवं रस सिन्धु का सार रूप
तत्	=वह
राधाननं	=श्री राधाजी का मुख
नः	=हमारे (सम्मुख)
कदाहि	=कब (यथार्थ) रूप से
आविर्भ-विष्यति	=प्रकट होगा ?

निहारों कब सोइ राधा आनन ।
क्षण-क्षण महा चमत्कृत लीला मधुर भंगि को साधन ।।
सब रस सार सिंधु महा मोहन भाव भंगिमा दरसें ।
अति लावण्य चातुरी निधि-विधि निजहित हिय आकरषें ।।

यत्किङ्करीषु बहुशः खलु काकुवाणी ।
नित्यं परस्य पुरुषस्य शिखण्डमौलेः ॥
तस्याः कदा रसनिधेर्वृषभानुजाया ।
स्तत्केलिकुञ्ज भवनाङ्गणमार्जनीस्याम् ॥७॥

यत्	= जिन (श्रीप्रियाजी) की
किंकरीषु	= दासियों के प्रति
शिखण्डमौलेः	= मयूर मुकुट धारी
परस्यपुरुषस्य	= परम पुरुषोत्तम (लालजी) की
नित्यं	= नित्य निरन्तर
बहुशः	= बहुत बार
खलु	= निश्शंक रूप से
काकुवाणी- (भवति)	= कातर (चाटुकारिता पूर्ण) वचन रचना होती रहती है
तस्याः	= उन
रसनिधेर्वृष-भानुजायाः	= रस निधि श्रीवृष-भानुनन्दिनी की
तत्केलिकुञ्ज	= उस केलि कुञ्ज
भवनांगण	= भवनके आंगनकी
मार्जनी	= सोहनी देने वाली
कदा	= कब
स्याम्	= होऊँगी ?

करिहौ कब रति-भवन बुहारिनि ।
दोगी सो सौभाग्य इतौ कब स्वामिनि नित्य बिहारिनि ॥
परमपुरुष शिरमौर पिच्छ सजि जहँ प्रवेश कूँ तरसै ।
करै विनीत विनय दासिन की पुनि-पुनि उन पग परसै ॥
श्रीवन वसिकै लगी रैन दिन पल-पल यहै उतावल ।
निजहिय अन अधिकारी जाँचै हिय तुह्मरी किरपाबल ॥

वृन्दानिसर्वमहतामपहायदूराद् ।
वृन्दाटवीमनुसर प्रणयेन चेतः ॥

सत्तारणीकृतसुभावसुधारसौघं ।
राधाभिधानमिह दिव्य निधानमस्ति ॥८॥

चेतः	=हे मेरे मन !	इह	=यहां
सर्वमहताम्	=सभी महत्व पूर्ण (महापुरुषों) के	सत्तारणीकृत	=(सज्जनों के)तारने को तत्पर
वृन्दानि	=समूह को	सुभाव	=सुन्दर भाव रूप
दूरात्	=दूर से ही	सुधारसौघम्	=सुधारस के प्रवाह से पूर्ण
अपहाय	=त्याग कर	राधाभिधानं	=श्रीराधा नाम की
प्रणयेन	=प्रीति पूर्वक	दिव्यनिधानं	=अलौकिक निधि
वृन्दाटवीं	=वृन्दावन के मार्ग का	अस्ति	विराज रही है।
अनुसर	=अनुसरण कर (क्योंकि)		

रे मन ! मानि कही यह अब तो ।
दूरहि ते करि नमन अन्य जे महत बृन्द हैं सबको ॥
केवल श्रीबृन्दावन सों करि प्रीति-रीति को नाता ।
राधा दिव्य महा धन पैहौ अखिल निधिन की दाता ॥
जो रसिकन की भव उद्धरणी भाव सुधा कौं प्यावै ।
यों निज हित करि भवसागर तरि बिगड़ी सब बनि जावै ॥

केनापि नागरवरेण पदे निपत्य ।
संप्रार्थितैक परिरम्भरसोत्सवायाः ॥
सभ्रूविभङ्गमतिरङ्गनिधेः कदा ते ।
श्रीराधिके नहिनहीतिगिरः शृणोमि ॥९॥

श्रीराधिके ! = हे श्रीराधे !
केनापि किसी एक (अलौकिक)
नागरवरेण = चतुर शिरोमणि के द्वारा
पदे निपत्य = चरणोंमें पड़कर, अर्थात् चरणों में नतमस्तक होकर
एक = एक बार
परिरम्भ = आलिंगन
रसोत्सवाया: = रसमय उत्सव की
सम्प्रार्थिते = सम्यक् प्रार्थना करने पर
ते = आपके
अतिरङ्गनिधे: = निगूढ़ केलि-निधि रूप
सभ्रूविभङ्ग = कुटिल भृकुटि पूर्ण
नहि नहीति = "नहीं" "नहीं", ऐसे
गिर: (प्रतिकार) वचनों को
शृणोमि = कब सुनूँगी ?

सो वचनामृत तुव कब सुनि हौं ?
श्रीराधे ! 'नहिं' 'नहिं' बोलत वर कौतुक निधि कर धुनि हौं ।।
चतुर शिरोमणि नवकिशोर इक चरननि लुठत तिहारे ।
नित परिरम्भन रस उत्सव चहैं तुमसों दीन विचारे ।।
कोप कपट भ्रू-भंग विलोकनि रस मय वचन् उचारौ ।
सोई नेति-नेति ध्वनि निजहित जनु वेदन कौ सारौ ।।

यत्पादपद्मनखचन्द्रमणिच्छटाया
विस्फूर्जितं किमपि गोपवधूष्ववर्शि ।।
पूर्णानुरागरससागरसारमूर्त्तिः ।
सा राधिकामयि कदापिकृपां करोतु ।।१०।।

यत् = जिनके
पादपद्म = चरणकमल-स्थित
नखचन्द्रमणि = चन्द्राकार नख मणि की

छटायाः	=कान्ति का	रस सागर सारमूर्त्तिः	=शृङ्गार रस सागर की सारमूर्ति
किमपि	=कुछ अनिर्वचनीय	राधिका	=श्रीराधिका
विस्फूर्जितम्	=चमत्कारी प्रभाव	कदापि	=कभी
गोपवधूषु	=गोपवधूटियों में	मयि	=मेरे ऊपर
अदर्शि	=लक्षित हुआ है	कृपां करोतु	=कृपा करें
सा	=वह		
पूर्णानुराग	=परिपूर्ण प्रेमस्वरूप		

कबहुं कहुं लहौं कृपा तुव स्वामिनि ।
श्री राधे ! अनुराग प्रपूरण रस सागर वपु कामिनी ।।
तुव पद पद्म चन्द्र नख मणि दुति अकथ प्रकाश प्रकासी ।
दरसतु गोप बधुनि उर निज हित चिन्तत नित रस रासी ।।

उज्जृम्भमाणरसवारिनिधेस्तरंगै-
रंगैरिव प्रणयलोलविलोचनायाः ।
तस्याः कदा नु भविता मयि पुण्यदृष्टि-
र्वृन्दाटवीनवनिकुञ्जगृहाधिदेव्याः ।।११।।

उज्जृम्भमाण	=निरन्तर उत्कृष्ट रूप से उच्छलित	तस्याः	=उन
रस वारिनिधेः	=रस सागर की	वृन्दाटवी	=वृन्दावन के
तरङ्गैः	=तरंगों के	नव निकुञ्ज	=नव निकुञ्ज रूप
इव	=समान	गृहाधिदेव्याः	=सदन की अधिष्ठात्री देवी की
अङ्गैः	=अङ्गों से (अलंकृत)	कदानु	=क्या कभी
प्रणयलोल	=प्रणय के कारण चंचल	मयि	=मुझ पर
विलोचनायाः	=नेत्रों वाली	पुण्य दृष्टि	=पवित्र दृष्टि
		भविता	=होगी ?

देवी नव निकुञ्ज वृन्दावन ।
अधिष्ठात्रि ! कहुं आप कृपा करि करि हौं दासि विलोकन ॥
नेत्र प्रणय रस युत चंचल अरु अङ्ग प्रफुल्लित दरसौं ।
रस सागर उद्गम लहरिनु जे-निज हित हिय कब परसौं ॥

वृन्दावनेश्वरि तवैवपदारविन्दं-
प्रेमामृतैकमकरन्दरसौघपूर्णम् ।
हृद्यर्पितं मधुपतेः स्मरतापमुग्र-
निर्वापयत्परमशीतलमाश्रयामि ॥१२॥

वृन्दावनेश्वरि	=हे वृन्दावनेश्वरि !		अर्पित होने से
प्रेमामृत	=प्रेमामृत के	उग्रम्	=तीव्र
एक	=एक मात्र	स्मरतापम्	=काम व्यथा को
मकरन्द	=मकरन्द	निर्वापयत्	=शान्त करने वाले
रसौघपूर्णम्	=रस के प्रभाव से पूर्ण तथा)	तवैव	=आप के ही
		परम शीतलम्	=अत्यन्त शीतल
मधुपतेः	=श्री लाल जी के	पदारविन्दम्	=चरण कमल का
हृद्यर्पितम्	=वक्षस्थल पर	आश्रयामि	=आश्रय लेता हूँ

नहि नहि अनत कहूं अवलम्ब ।
शीतल परम पद्म पद विनु तुव सत्य कहौं तजि दम्भ ॥
श्री वृन्दावन स्वामिनि तव पद प्रेम सुधा रस रासि ।
मधुपति हिय धरि लहि मरन्द हित स्मर ताप विनासि॥

राधाकरावचितपल्लववल्लरीके-
राधापदांकविलसन्मधुरस्थलीके ।
राधायशोमुखरमत्तखगावलीके-
राधाविहारविपिने रमतां मनो मे ॥१३॥

राधा	=श्रीराधाजी के		कीर्त्तिगान से
करावचित	=कर कमलों द्वारा संस्पृष्ट	मुखर	=चहचहाते (प्रसन्न चित्त)
पल्लव	=पल्लव वाली	मत्त	=मतवाले
वल्लरीके	=लताओं से अलंकृत	खगावलीके	=पक्षि समूह से राजित
राधा	=श्रीराधाजी के	राधा	=श्री राधा जी के ऐसे (उपर्युक्त)
पदाङ्क	=चरण कमलों के चिन्हों से	विहारविपिने	=विहार वन श्री वृन्दावन में
विलसन्	=शोभायमान	मे मनो रमताम्	=मेरा मन निरंतर रमण करे।
मधुरस्थलीके	=मनोहर स्थलियों से मण्डित (एवं)		
राधा यशः	=श्री राधा जी के		

रे मन ! श्री वन नित मँडरा।
जहँ श्री राधा सुयश खगावलि गुनत मत्त मुखरा ॥
पद चिन्हित भुवि कुञ्ज केलि बहु थली मनोहर राजें।
कर परसत पल्लव वल्लरि बहु निजहित रसमयि भ्राजें ॥

कृष्णामृतं चल विगाढुमितीरिताहं-
तावत्सहस्व रजनी सखि यावदेति।
इत्थं विहस्य वृषभानुसुतेह लप्स्ये-
मानं कदा रसदकेलिकदम्बजातम् ॥१४॥

सखि	=हे सखि !	चल	=चलो
कृष्णामृतम्	=श्याम रूपी अमृत (श्लेष) यमुना जल में	अहम्	=मैं (इस प्रकार)
		ईरितो	=आज्ञा किये जाने पर (उत्तर में कहूँगी)
विगाढुम्	=स्नान करने को		

यावत्	=जब तक	रसदकेलि	=रस दायिनी केलि
रजनी	=रात्री	कदम्बं	=समूह से
एति	=प्राप्त हो	जातम्	=समुत्पन्न
तावत्	=तब तक	मानम्	=सम्मान को
सहस्व	=धैर्य्य धारण करो	अहम्	=मैं
इत्थं	=इस प्रकार	कदा	=निश्चित-रूप से कब
विहस्य	=परिहास करती हुई	लप्स्ये	=प्राप्त करूँगी ?
हे वृषभानु सुते !	=हे श्रीभानुसुते!		

कबहुं हौं करि हौं रसद विनोद ।
श्री बृषभानु नन्दिनी सुनि तुम मानौगी महा मोद ॥
जब तुम मोसों कहो चलैं सखि ! कृष्णामृत अवगाहैं ।
कहौं-धीर धरु रजनि उचित सुनि आप सुहास्य सराहैं ॥

पादांगुलीनिहितदृष्टिमपत्रपिष्णुं-
दूरादुदीक्ष्य रसिकेन्द्रमुखेन्दुविम्वम् ।
वीक्षे चलत्पदगतिं चरिताभिरामां-
झंकारनूपुरवतीं वत कर्हि राधाम् ॥१५॥

दूरात्	=दूर से ही		की अँगुलियों में
रसिकेन्द्र	=रसिक शेखर (श्री लाल जी के	निहित दृष्टिम्	=नजर जमाए हुए
मुखेन्दु विम्बम	=मुख चन्द्र की छटा को	चरिताभिरामाम्	=अपने चारु चरित्रों से अति रम्य
उदीक्ष्य	=भली भाँति पहिचान कर	झङ्कार नूपुरवतीं	=बजते हुए नूपुर वाली
अपत्रपिष्णुं	=परम लज्जावती	चलत्पदगतिं	=चरण कमलों की गति युक्त
पादांगुली	=स्वकीय चरणकमल		

राधाम्	=श्री राधा जी को	कर्हि	=कब (मैं)
वत	=अहाहा	वीक्षे	=देखूँगी ?

यहि विधि कब देखौं तुहि स्वामिनि ।
शेखर रसिक लाल मुख विधु दुति निरखति जब अभिरामिनि ॥
कछुक लजीली दृष्टिपात निज चरण अंगुरियनि कीनी ।
नूपुर झंकृत मन्थर गति निज हित निकुञ्ज धुनि भीनी ॥

उज्जागरं रसिकनागरसंगरंगैः-
कुञ्जोदरे कृतवती नु मुदा रजन्याम् ।
सुस्नापिता हि मधुनैव सुभोजिता त्व-
राधे कदा स्वपिषि मत्करलालितांघ्रिः ॥१६॥

राधे	=हे श्री राधे !	कृतवती	=किया हो (फिर)
त्वं	=आपने	(प्रातः) हि	=भोर ही (मेरे द्वारा)
रजन्याम्	=सारी रात	सुस्नापिता	=स्नान कराए जाने के बाद
रसिक नागर	=रसिक शेखर श्री-श्री लाल जी के	मधुनैव	=मधुर
संग	=साथ	सुभोजिता	=बाल-भोग लगाकर
रङ्गै	=प्रेम विहार में	मत्कर	=मेरे कर युगल से
मुदा	=हर्ष पूर्वक	लालितांघ्रि	=चरण कमलों का लालन पाकर
कुञ्जोदरे	=कुञ्ज भवन में	कदा	=कब
नु	=निश्चय ही	स्वपिषि	=शयन करेंगी ?
उज्जागरं	=जागरण		

ह्वै है कब सुभाग्य अस मेरो ।
प्रात समुझि स्वामिनि विथकित तन कुञ्ज सदन निशि जागी ॥
प्रियतम रसिक लाल सँग विलसी महा मुदित अनुरागी ॥
न्हाइ उबटि तुहि मधुर मधुर कछु करवाऊं जु कलेऊ ।
पद संवाहन करि निज हित कर स्वाइ सेज पर सेऊं ॥

वैदग्ध्यसिंधुरनुरागरसैकसिन्धु-
र्वात्सल्यसिन्धुरतिसांद्रकृपैकसिंधुः ।
लावण्यसिंधुरमृतच्छविरूपसिंधुः-
श्रीराधिका स्फुरतु मे हृदि केलिसिंधुः ॥१७॥

वैदग्ध्य सिंधुः = चातुरी (कोक गान नृत्य वाद्य आदि समस्त कला) की सिंधु
अनुराग रसैक सिंधुः = अखिल माधुर्य की एकमात्र सिंधु
वात्सल्य सिंधुः = वत्सलता की सिंधु
अति सान्द्र = अत्यन्त घनीभूत
कृपैक सिन्धुः = कृपा की एकमात्र सिन्धु

लावण्य सिन्धुः = यौवन छटा की सिन्धु
अमृतच्छवि रूप = अविनाशी कांति वाले रूप की
सिन्धुः = सिन्धु
केलि = केलि कलाप की
सिन्धुः = सिन्धु
श्रीराधिका = श्रीराधिका जू
मे = मेरे
हृदि = हृदय में
स्फुरतु = स्फुरित हों ?

फुरें उर सप्तसिन्धु१ श्री राधा ।
सिन्धु चतुरता१ अरु वत्सलता२ रस अनुराग३ अगाधा ॥
घनीभूत इक मात्र कृपा४ सिंधु है लावण्य५ अबाधा ।
छविद पीयूष सिन्धु निज हित रति केलि७ सिन्धु विनु बाधा ॥

दृष्ट्वैव चंपकलतेव चमत्कृतांगी-
वेणुध्वनिं क्व च निशम्य च विह्वलांगी ।
सा श्यामसुन्दरगुणैरनुगीयमानैः-
प्रीता परिष्वजतु मां वृषभानुपुत्री ॥१८॥

१टिप्पणी—सप्तसिंधु : १ शुद्धोदक, २ दुग्ध, ३ दधि, ४ घृत, ५ सुरा, ईख, ७ क्षार (केलि कैवल श्रवण गान करे) ।

या प्रियतमम् =जो प्यारे लाल का
दृष्ट्वैव =दर्शन करते ही
चम्पकलतेव =चंपकलता के सदृश
चमत्कृताङ्गी =कम्पित कलेवर हो उठती हैं
क्वच =और कभी
वेणु =वंशी के
ध्वनिं =नाद को
निशम्य =सुन कर
विह्वलाङ्गी =विकल-वपु हो जाती हैं
श्यामसुन्दर =श्री लालजी के
गुणैः =गुणों का (मुझ से)
अनुगीयमानैः =रुचि पूर्वक गान सुनकर
प्रीता =प्रसन्न हो
सा =वह
वृषभानुपुत्री =वृषभानुनन्दिनी
मां (कदा) =मुझे (कब)
परिष्वजतु =आलिङ्गन करेंगी?

कबहुं तव, निज हिय मुहि भेंटौगी ॥
श्री वृषभानुनंदिनी तुम पिय श्यामहि जबै विलोकयौ ।
चम्पकलता समान कंप वपु जात न तुम पै रोकयौ ॥
सुनत कबहुं धुनि वेणुनादवश विह्वल अंग तिहारौ ।
श्रवण सुनत यश श्यामसुंदर निज हित उर रस विस्तारौ ॥

श्रीराधिके सुरतरंगि नितम्बभागे-
कांचीकलापकलहंसकलानुलापैः ।
मंजीरशिंजितमधुव्रतगुञ्जितांघ्रि-
पंकेरुहैः शिशिरयस्व रसच्छटाभिः ॥१६॥

सुरतरङ्गि =विहार रंग रञ्जित
नितम्बभागे =नितम्ब प्रान्तवाली
श्री राधिके! =हे श्री राधिके !
काञ्ची =करधनी के
कलाप =सरस राव रूप
कलहंस =कलहंसों के
कलानुलापैः =मधुर कलरव से एवं
मञ्जीर =नूपुर की
शिञ्जित =ध्वनि रूप
मधुव्रत =भ्रमरों के
गुञ्जित =गुञ्जार से युक्त

अङ्घ्रि	=चरण	रसच्छटाभिः	=रस की छटाओं से (मुझे)
पङ्करुहैः	=कमलों के द्वारा	शिशिरय	=शीतल करो।
स्व	=अपनी		

केलि सुरत-रंग नितम्ब भोगे।
हे राधे ! कांची कलाप तुव कलकलात हंसनि धुनि लागे ॥
पद पंकज नूपुर झंकृत अति मन्द मत्त मधुकर रव पागे।
कृपामयी यह रसद छटा उर निज हित सोंचु-भाव जिहि जागे ॥

श्रीराधिके सुरतरंगिणि दिव्यकेलि-
कल्लोलमालिनि लसद्वदनारविंदे।
श्यामामृतांबुनिधिसङ्गमतीव्रवेगि-
न्यावर्त्तनाभिरुचिरे मम सन्निधेहि ॥२०॥

दिव्य	=अप्राकृत	तीव्र	=अबाध
केलि	=विहार रूप	वेगिनी	=गति शालिनी
कल्लोल	=लहर	आवर्तनाभि	=नाभि रूप आवर्त से
मालिनि	=मालाओं (प्रवाहों) से मण्डित	रुचिरे !	=आकर्षक
लसद्वदन्	=सुशोभित मुख	सुरतरङ्गिणि	=गंगाजी के समान
अरविन्दे !	=कमल वाली !	श्रीराधिके !	=हे श्री राधिके !
श्याम	=प्रियतम रूप	मम	=मुझे (अपना)
अमृताम्बुनिधि	=अमृतरससागर के	सन्निधेहि	=सामीप्य प्रदान कीजिये।
सङ्गम	=समागम के लिये		

दिव्य केलि रस तरंग माले !
वदन प्रभा अरविन्द तीव्र गति श्याम सुधा सागर ढिग चाले ॥
हे राधे ! गंभीर भंवर युत नाभि सुरत नदि अनुपम तेरी।
निज हित दासी कौं अपनी करि शरणागत लै राखौ नेरी ॥

सत्प्रेमसिन्धुमकरन्दरसौघधारा-
सारानजस्रमभितः स्रवदाश्रितेषु ।
श्रीराधिके ! तव कदा चरणारविन्दं
गोविन्दजीवनधनं शिरसा वहामि ॥२१॥

श्री राधिके ! =हे श्री राधिके !
आश्रितेषु =आधीन जनों पर
अभितः =चारों ओर से
सत्प्रेम =निर्मल प्रेम
सिन्धु =सिन्धु रूपी
मकरन्द =मकरन्द
रसौघ =रस प्रवाह के
धारासारान् =अटूट सम्पात को
अजस्रम् =निरन्तर
स्रवत् =उड़ेलते हुए (एवं)
गोविन्द =श्री लाल जी के
जीवन धनं =एक मात्र जीवन सर्वस्व
तव =आपके
चरण =चरण
अरविन्दं =कमल को
(अहं) कदा =(मैं) कब
शिरसा =अपने सिर पर
वहामि =धारण करूंगी ?

कब सिर धरिहौं तुव चरणन कँह ।
श्रीराधिके ! सतत बर्षत जे सुधा सार रसिकन मँह ॥
सागर महा प्रेम इक रस उर उदित करें भक्तन के ।
निज हित सों पद गोविन्द सेवें जीवनधन निज मन के ॥

संकेतकुञ्जमनुकुञ्जरमन्दगामि-
न्यादाय दिव्यमृदुचन्दनगन्धमाल्यम् ।
त्वां कामकेलिरभसेन कदा चलन्तीं
राधेनुयामि पदवीमुपदर्शयन्ती ॥२२॥

राधे ! =हे श्री राधे !
काम केलि रभसेन =प्रेम विहार की उत्सुकता से
कुञ्जमनु =कुञ्ज की ओर

चलन्तीं = प्रस्थान करती हुई
त्वामनु = आपके पीछे-पीछे (आपको)
पदवीं = अभीष्ट मार्ग
उपदर्शयन्ती = दिखाती हुई
दिव्य = अलौकिक
मृदु = कोमल
चन्दन = चन्दन (तथा)
गन्ध = सुगन्धित
माल्यम् = मालाओं को
आदाय = लेकर
कुञ्जर = गज जैसी
मन्द = मन्द
गामिनी = गति से (मैं)
कदा = कब
यामि = चलूँगी ?

जब तुम कुञ्ज केलि दिशि चालो ।
राधे ! उत्कण्ठित गज गामिनि मुहि सँग दासि बना लो ॥
उबटन गंध शीत चन्दन कुसुमित मालादिक दिव्य ।
लिये संग पाछे लगि निज हित दर्शाऊँ पथ भव्य ॥

गत्वा कलिन्दतनयाविजनावतार-
मुद्वर्त्तयन्त्यमृतमङ्गमनङ्गजीवम् ।
श्रीराधिके तव कदा नवनागरेन्द्र
पश्यामि मग्ननयनं स्थितमुच्चनीपे ॥२३॥

श्री राधिके ! = हे श्री राधिके !
कलिन्दतनया = श्रीयमुना जीके
विजन = एकान्त निर्जन
अवतारं = घाट पर
गत्वा = जा कर
अनङ्गजीवम् = कामदेवको जीवित करने वाले
तव = आपके
अमृतमङ्गम् = अमृत सार अङ्गों का
उद्वर्त्तयन्ती = उबटन करती हुई
उच्चनीपे = विशाल कदम्बपर
स्थितम् = विराजमान (आपके दिव्य वपु के प्रति)
मग्ननयनम् = दृष्टि जमाए हुए
तव = आपके

नव नागरेन्द्रम् = नागर किशोर शिरोमणि (प्रियतम) को	कदा = कब
	पश्यामि = देखूँगी ?

कबहुं अस कौतुक एक निहारौं।
राधे ! काम जीवि अँग-अँग तुव उबटन करत पखारौं ।।
यमुना तीर घाट निर्जन तहँ तरु कदम्ब पै नागर।
दुरे स्नान करती निज हित लगि निखरत तुमहिं उजागर ।।

सत्प्रेमराशिसरसो विकसत्सरोजं
स्वानन्दसीधुरससिन्धुविवर्द्धनेन्दुम्।
तच्छ्रीमुखंकुटिलकुन्तलभृङ्गजुष्टं
श्रीराधिके तव कदा नु विलोकयिष्ये ।।२४।।

श्री राधिके ! = हे श्रीराधिके !	पूर्ण चन्द्र तुल्य एवं)
सत्प्रेम = श्रेष्ठतम प्रेम	कुटिल = घुँघराली
राशि = पुञ्ज	कुन्तल = अलकावली रूप
सरसः = सरोवर के	भृङ्गजुष्टं = भ्रमरों से वेष्टित
विकसत् = खिले हुए	तव = आपके
सरोजम् = कमल के समान	तत् = उस
स्वानन्द = निजानन्द रूप	श्री मुख = शोभाशाली मुख का
सीधु = अमृत पूर्ण	
रस सिन्धु = रस सिन्धु को	कदानु = कब भली भांति
विवर्द्धनेन्दुम् = उच्छलित करने में	विलोकयिष्ये = दर्शन करूँगी।

राधे ! तुव श्रीमुख की शोभा।
मानहुँ पूर्ण इन्दु रस सिन्धुहि उछरत जनु मन लोभा ।।
अथवा प्रेम पुञ्ज सरवर तें निकस्यौ अब्ज समान।
निरखौं निज हित कुन्तल कच जनु मत्त भ्रमर उरझान ।।

लावण्यसाररससारसुखैकसारे
कारुण्यसारमधुरच्छविरूपसारे ।
वैदग्ध्यसाररतिकेलिविलाससारे
राधाभिधे मम मनोखिलसारसारे ॥२५॥

लावण्य सार = लावण्य के सार
रस सार = रस के सार
सुखैक सारे = सुख के एक मात्र सार
कारुण्य सार = करुणा के सार
मधुरच्छवि = मधुर कान्ति से युक्त
रूप सारे = रूप के सार
वैदग्ध्य सार = चातुरी के सार
रति केलि = सुरत क्रीड़ा पूर्ण
विलास सारे = विहार के सार एवं
अखिल सार = समस्त सारों के भी
सारे = सार सर्वस्व रूप
राधाभिधे = श्री राधा नामक = सार में
मम = मेरा
मनः = मन
रमताम् = रमण करे ।

अखिल सार को सार स्वरूप ।
केवल राधा नाम स्वामिनी रे मन ! भजि अनुरूप ॥
सर्वसार लावण्य अखिल जे सुख हैं तिन को सार ।
करुणासार मधुर छवि सारहु अन्य सार निस्सार ॥
सार सकल चातुर्य्य केलि रति रास जु निज हित सार ।
सर्व सार दृढ़ गहो एक मन दत गुरु हित अनुसार ॥

चिन्तामणिः प्रणमतां व्रजनागरीणां
चूडामणिः कुलमणिर्वृषभानुनाम्नः ।
सा श्यामकामवरशान्तिमणिर्निकुञ्ज
भूषामणिर्हृदयसम्पुटसन्मणिर्नः ॥२६॥

या = जो	शान्त करने वाली
प्रणमतान् = प्रणाम करनेवालों को	शान्तिमणि: = शीतल मणि (एवं)
चिन्तामणि: = चिन्तामणि	निकुञ्जभूषा = निकुञ्ज भवन को
व्रज नागरीणां = व्रज सुन्दरियोंकी	मणि: भूषित करने वाली मणि है
चूड़ामणि: = शिरोमणि	सा = वह (श्रीराधा)
वृषभानुनाम्न: = श्रीवृषभानुजी के	न: = हमारे
कुलमणि: = समस्त कुल की मणि	हृदय = हृदय रूपी
	सम्पुट = सम्पुट की
श्याम कामवर = प्रियतम के काम	सन्मणि:(अस्ति) = श्रेष्ठतममणि है

कुञ्ज भवन भूषणमणि राधा
मो हिय संपुट दिव्य सु-मणि सो वृषभानू कुलमणी अगाधा ॥
श्याम काम शमनी कमनी मणि व्रज नव तरुणी मुकुट मणि प्यारी ।
निज हित रसिकन की चिन्तामणि अखिल कामना पुरण कारी ॥

मञ्जुस्वभावमधिकल्पलतानिकुञ्जं
व्यञ्जन्तमद्‌भुतकृपारसपुञ्जमेव ।
प्रेमामृताम्बुधिमगाधमबाधमेतं
राधाभिधं द्रुतमुपाश्रय साधु चेतः ॥२७॥

चेतः ! = हे मन !	व्यञ्जन्तं = प्रकट करते हुए
अधिकल्पलता = कल्पलता कीकुञ्ज	मञ्जु = मनोज्ञ
निकुञ्जं में विराजमान	स्वभावम् = स्वभाव वाले
अद्‌भुत = अभूतपूर्व	अगाधं = अथाह एवं)
कृपारस पुञ्जम् = कृपा रस के समूह को	अबाधं = समस्त बाधाओं को दूर करने वाले
एव = निश्चय रूप से	एतं = इस

राधाभिधं = श्रीराधा नामक	साधु = दृढ़ता से
प्रेमामृताम्बुधिं = प्रेमामृत सागर का	उपाश्रय = अवगाहन कर।
द्रुतम् = शीघ्र	

रे मन ! सुन मेरी इक बात।
श्री राधा प्रेमामृत सागर अगम अबाध उदात ॥
मृदुल स्वभाव भाव सुर वल्ली निभृत निकुञ्ज विराजे।
अद्भुत कृपा पुञ्ज रसवर्षी गहि उर निज हित आजे ॥

श्रीराधिकां निजविटेन सहालपन्तीं
शोणाधरप्रसृमरच्छविमञ्जरीकाम्।
सिन्दूरसम्वलितमौक्तिकपंक्तिशोभां
यो भावयेद्दशनकुन्दवतीं स धन्यः ॥२८॥

शोणाधर = रक्तवर्ण अधर से	निज = अपने
प्रसृमरच्छवि = छिटकती हुई कांति	विटेन = लम्पट प्रियतम से
मञ्जरीकाम् = मञ्जरी से युक्त	सहालपन्तीं = बात-चीत करती हुई
सिन्दूर = सिन्दूर से	श्री राधिकां = श्रीराधिकाजीकी
सम्वलित = सनी हुई	यः = जो कोई
मौक्तिक = मोतियों की	भावयेत् = भावना करता है
पंक्ति = लड़ियों की मांगसे	सः = वह
शोभां = सुशोभित	धन्यः = कृतार्थ है।
दशन कुन्दवतीम् = कुन्दकली के समान दन्त पंक्ति वाली	

भाव परायण अस बड़ भागी।
ध्यावहिं दम्पति सम्भाषण जब करत केलि रस पागी ॥

तिहि क्षण अधरनि गाढ लालिमा चहुँ दिशि प्रभा प्रकासी।
भाल विशाल मांग मुक्तावलि सेन्दुर रेख प्रभासी॥
दन्तावली कुन्द कलिका की माला सम दरसावैं।
धन्य धन्य अति धन्य रसिक निज हित यों लाड़ लडावैं॥

पीतारुणच्छविमनन्ततडिल्लताभां
प्रौढानुरागमदविह्वलचारुमूर्त्तिम्।
प्रेमास्पदं व्रजमहीपतितन्महिष्यो-
गोविन्दवन्मनसि तां निदधामिराधाम्॥२६॥

पीतारुण =स्वर्ण वर्ण
छविम् =कान्ति सम्पन्न
अनन्त =असीम
तडिल्लताभं =विद्युत् लताओं की प्रभा वाली
प्रौढानुराग =घनीभूत प्रगाढ़ अनुराग के
मदविह्वल =मदसे भाव विभोर (एवं)
चारु =सुन्दर
मूर्त्तिम् =विग्रह वाली
व्रजमहीपति=व्रजेश्वर नन्द की
(तथा)
तत् =उनकी
महिष्योः =रानी (यशोदा) दोनों की
गोविन्द =लाल जी के
वत् =समान
प्रेमास्पदं =प्रेम पात्र
तां =उन
राधां =श्री राधा जी को
मनसि =मन में
निदधामि =धारण करती हूं

सो छवि श्री राधा उर धरि हौं॥टेक॥
पीत अरुण मिश्रित कञ्चन दुति चपला अमित उदोति।
मद उन्मत्त प्रगाढ़ रागमयि मूरति कमनी ज्योति॥
व्रज रानी व्रजराज लड़ावैं निज गोविन्द समान।
ऐसी प्रेम पात्र दम्पति की निज हित नित उर आनि॥

निर्माय चारुमुकुटं नवचंद्रकेण
गुञ्जाभिरारचितहारमुपाहरन्ती।
वृन्दाटवीनवनिकुञ्जगृहाधिदेव्याः
श्रीराधिके तव कदा भवितास्मि दासी ॥३०॥

श्री राधिके ! = हे श्रीराधिके !
नवचन्द्रकेण = नवीन मोरपिच्छ का
चारु = मनोहर
मुकुटं = मुकुट
निर्माय = बनाकर
गुञ्जाभिः = घुंघुचियों से
आरचित = भलीभांति गूंथी हुई
हारम् = माला
उपाहरन्ती = समर्पित करती हुई
वृन्दाटवी = श्री वृन्दावन के
नव = नूतन
निकुञ्ज = निकुञ्ज
गृहाधिदेव्याः = सदन की अधिष्ठात्री देवी
तव = आपकी
दासी = किङ्करी
कदा = कब
भवितास्मि = बनूंगी ?

कबहुँ हौं ह्वै हों तुव अस दासी।
हे श्री राधे ! श्री वन नव घन कुञ्ज देवि अधिवासी ॥
नव नव केकी पिच्छ चन्द्रिका निर्मित मुकुट सजाकर।
गुञ्जा खचित हार निज हित रचि पहुँचाऊं ले जाकर ॥

संकेतकुञ्जमनुपल्लवमास्तरीतु
तत्तत्प्रसादमभितः खलु संवरीतुम्।
त्वां श्यामचन्द्रमभिसारयितुं धृताशे
श्रीराधिके मयि विधेहि कृपाकटाक्षम् ॥३१॥

श्री राधिके = हे श्रीराधिके !
संकेत = इङ्गित, संकेत
कुञ्जमनु = कुञ्जों में
पल्लवम् = पल्लव (शय्या)

आस्तरीतुं	=रचने के लिये	श्यामचन्द्रं	=श्याम-शशि (लाल जी) के प्रति
अभितः	=सब प्रकार से	अभिसारयितुं	=अभिसार कराने के उद्देश्य से
तत्तत्	=उस-उस	धृताशे	=आशा युक्त
प्रसादं	=प्रसाद (कृपा) को	मयि	=मुझ पर
खलु	=निश्चय रूप से	कृपाकटाक्षं	=कृपा दृष्टि
संवरीतुं	=भलीभाँति छिपाने के लिये	विधेहि	=कीजिये
त्वां	=आपको		

कीजिय इतनी कृपा विधान।
श्री राधे ! मम इक अभिलाषा बिनवौं तत्सुख मान ॥
संकेतित नव कुंज जहाँ तहँ नव नव पल्लव सज्जा।
रचि कै तुम्हें छिपाइ तहाँ पै लै जाऊँ तजि लज्जा ॥
तहाँ श्याम सुन्दर नायक सों तुम्हरी भेंट कराऊँ।
जानि तुम्हें निज हित प्रसन्न मन कृत्य कृत्य ह्वै जाऊँ ॥

दूरादपास्य स्वजनान्सुखमर्थकोटिं
सर्वेषु साधनवरेषु चिरं निराशः।
वर्षन्तमेव सहजाद्भुतसौख्यधारां
श्रीराधिकाचरणरेणुमहं स्मरामि ॥३२॥

अहं	=मैं	सर्वेषु	=सब प्रकार के
स्वजनान्	=वन्धु-बान्धवों को	साधनवरेषु	=पारमार्थिक श्रेष्ठ साधनों को
सुखं	=समस्त सुखों को	चिरं	=दीर्घ काल तक करने के बाद
अर्थकोटिं	=कोटि कोटि-सम्पत्तियों को	निराशः	=निराश होकर
दूरात्	=दूर से ही	सहज	=अनायास
अपास्य	=त्याग करके (तथा)		

अद्भुत	=अनुपम
सौख्य	=सुख की
धारां	=धारा
वर्षन्तं	=वरसाती हुई
श्रीराधिका	=श्री राधा जी की
चरण	=चरण
रेणुं	=रज का
एव	=एक मात्र
स्मरामि	=स्मरण करती हूँ

सुमिरि हों श्री राधा पद रेनु ।
अद्भुत सहज सकलसुखवर्षी धारा सम सुर धेनु ॥
तजि सब स्वजन दूरितें कोटिन साधन सों गयो ऊब ।
सब सुख सम्पति तजि निराश ह्वै सूझ्यौ निज हित खूब ॥

वृन्दाटवीप्रकटमन्मथकोटिमूर्त्तेः
कस्यापि गोकुलकिशोरनिशाकरस्य ।
सर्वस्वसम्पुटमिव स्तनशातकुम्भ-
कुम्भद्वयं स्मर मनो वृषभानुपुत्र्याः ॥३३॥

मनः !	=हे मेरे मन !
वृन्दाटवी	=श्रीवृन्दावन में
प्रकट	=नित्य विराजमान
मन्मथकोटि	=कोटि कोटि मदन से भी
मूर्त्तेः	=सुन्दर विग्रह वाले
कस्यापि	=किसी अनिर्वचनीय
गोकुलकिशोर	=गोकुल के नित्य-किशोर
निशाकरस्य	=चन्द्रमा के
सर्वस्व	=सर्वस्व रखने की
सम्पुटं	=पिटारी के
इव	=समान,
वृषभानु	=श्रीवृषभानु बाबा की
पुत्र्याः	=दुलारी के
स्तन	=युगल उरोज रूप
शातकुम्भ	=स्वर्ण
कुम्भद्वयम्	=कलश द्वय का
स्मर	=स्मरण कर ।

हे मन ! ध्याइ सुमिर लगि वरसन ।
श्री वृषभानु सुता कुच युग अति स्निग्ध हेम ह्वै कलसन ॥

श्रीवृन्दावन राजत कोउ इक गोकुल चन्द किशोर।
मन्मथ मथे कोटि उर निज हित सर्वस लखि कुच कोर ॥

सान्द्रानुरागरससारसरः सरोजं
किंवा द्विधा मुकुलितं मुखचन्द्रभासा।
तन्नूतनस्तनयुगं वृषभानुजायाः
स्वानन्दसीधुमकरन्दघनं स्मरामि ॥३४॥

किंवा	=क्या
सान्द्रानुराग	=निविड़ अनुराग
रस सार	=रस सार
सरः	=सरोवर का
सरोजं	=कमल ही
मुखचन्द्र	=मुख-शशि की
भासा	=कान्ति से
द्विधा	=दो भाग होकर
मुकुलितं	=कलिका में परिणत हो गया है!
वृषभानुजायाः	=(ऐसे) वृषभानु कुमारी के
स्वानन्द	=निजानन्द
सीधु	=अमृत रूप
मकरन्द	=मकरन्द से
घनं	=घनीभूत
तत्	=उस
नूतन	=नवीन
स्तन	=उरोज
युगं	=युगल का (मैं)
स्मरामि	=स्मरण करती हूँ

प्रेम सर सरवस सार सरोज।
मुकुलित मानौं चन्द्र निरखि विवि रूप भयो वै ओज ॥
सो सरोज स्वानन्द घनामृत श्री वृषभानु सुता के।
कुच युग सुमिरौं निज हित हिय घन लक्ष्य नेह ममता के ॥

क्रीडासरः कनकपङ्कजकुड्मलाय
स्वानन्दपूर्णरसकल्पतरोः फलाय।
तस्मै नमो भुवनमोहनमोहनाय,
श्रीराधिके! तव नवस्तनमण्डलाय ॥३५॥

श्रीराधिके !	=हे श्री राधिके !
क्रीडा	=केलि
सरः	=सरोवर के
कनक	=सुवर्ण
पङ्कज	=कमल की
कुड्मलाय	=कलिका के समान
स्वानन्द	=निजानन्द से
पूर्ण	=भरपूर
रसकल्पतरोः	=रसमय कल्पवृक्ष के
फलाय	=फल के समान
भुवनमोहन	=त्रिभुवन मोहन लाल जी को भी
मोहनाय	=मोहित करने में समर्थ
तस्मै	=उस
तव	=आपके
नव	=नवीन
स्तनमण्डलाय	=स्तन मण्डल को (मेरा)
नमः	=नमस्कार हो ।

नमो नमो नव कुच मण्डल कौं ।
श्री राधे ! तुव आनँद रस के सुर तरुवर के फल कौं ॥
कनक कमल कलि केलि सरोवर सम उपमा नहिं आन ।
सकल भुवन मोहन-मोहन हूं मोहित निज हित जान ॥

पत्रावलीं रचयितुं कुचयोः कपोले
बन्धुं विचित्रकबरीं नवमल्लिकाभिः ।
अङ्गं च भूषयितुमाभरणैर्धृताशे
श्रीराधिके मयि विधेहि कृपावलोकम् ॥ ३६ ॥

श्रीराधिके !	=हे श्रीराधिके !
तव	=आपके
कुचयोः	=स्तन (और)
कपोले	=कपोलों पर
पत्रावलीं	=चित्रकारी
रचयितुं	=रचने के लिये
नव	=नवीन
मल्लिकाभिः	=मल्लिका के पुष्पोंसे
विचित्र	=अपूर्व
कबरीं	=केश-पाश
बन्धुं	=सजाने के लिये
च	=और
आभरणैः	=आभूषणों से
अङ्गं	=श्रीअङ्ग को

भूषयितुं	=विभूषित करने के लिये	मयि	=मुझ पर
धृताशे	=आशा लगानेवाली	कृपावलोकम्	=कृपा-दृष्टि
		विधेहि	=कीजिये

अस किरपा करि करहुं विलोकन ।
श्रीराधे ! यह आस पुजावहु कीजै मनहिं विसोकन ॥
तुव कुच युग्मरु गण्ड कपोलनि चित्रित करि जु सजाऊँ ।
नव नव मल्ली माल गूंथि कर वेणि साजि सरसाऊँ ॥
कमनी कोमल अंग अंग सुठि अभरन तवु अनुरूप ।
करि आभूषित तत्सुख लगि निर्जहित सुमिरो अस रूप ॥

श्यामेति सुन्दरवरेति मनोहरेति
कन्दर्प-कोटि-ललितेति सुनागरेति ।
सोत्कण्ठमह्नि गृणती मुहुराकुलाक्षी
सा राधिका मयि कदा नु भवेत्प्रसन्ना ॥३७॥

श्याम इति	=हे श्याम !	सोत्कण्ठं	=उत्कण्ठा-पूर्वक
सुन्दरवर इति	=हे सुन्दर शिरोमणे	गृणती	=उच्चारण करती
मनोहर इति	=हे मनोहर !	आकुलाक्षी	=विह्वल-नयनी
कन्दर्प कोटि ललित इति	=हे कोटि मन्मथ कमनीय !	सा	=वह
सुनागर इति	=हे श्रेष्ठ नट नागर! इस प्रकार	श्रीराधिका	=श्रीराधा
अह्नि	=दिन में	कदानु	=क्या कभी
मुहुः	=बार बार	मयि	=मुझ पर
		प्रसन्ना	=प्रसन्न
		भवेत्	=होंगी ?

राधे ! कब प्रसन्न अस ह्वै हौ ।
नयनाकुल हे श्याम ! हे सुन्दर ! हे मनहर ! यों कहिहौ ।
हे हे काम कोटि कमनी ! हे चतुर-शिरोमणि ! प्यारे !
बार बार गाती उत्कण्ठित सुनि हौं वचन तिहारे ॥

वेणुः करान्निपतितः स्खलितं शिखण्डं
भ्रष्टं च पीतवसनं व्रजराजसूनोः ।
यस्याः कटाक्षशरपातविमूर्च्छितस्य
तां राधिकां परिचरामि कदा रसेन ॥३८॥

यस्याः =जिनके
कटाक्ष =कटाक्ष (चितवन) रूप
शरपात =बाण प्रहार से
विमूर्च्छितस्य =मूर्च्छित हुए
व्रजराज =व्रजेश्वर
सूनोः =कुमार (श्री लाल जी) के
करात् =हाथ से
वेणुः =वंशी
निपतितः =गिर गई
शिखण्डं =मयूर पिच्छ
स्खलितं =खिसक गया
च =और
पीत वसनं =पीताम्बर
भ्रष्टं =अस्त व्यस्त होगय
तां =उन (ऐसे चमत्कार वाली)
राधिकां =श्रीराधिका को मैं
कदा =कब
रसेन =अनुराग पूर्वक
परिचरामि =सेवन करूंगी ?

लहौं कब अस रसमयि तुव चर्य्या ।
श्रीराधे ! तुव नयन बाण सों आहत नन्द कुमार ।
वंशी खिसी हाथ सों सिर सों मुकुट न सके संभार ॥
अस्त-व्यस्त पट पीत-विलुण्ठित अवनी लई पछार ।
तभी प्रेम वश निज हित दासी सेऊँ रस उर-धार ॥

तस्या अपाररस-सारविलासमूर्त्ते—
रानन्दकन्दपरमाद्भुतसौम्यलक्ष्म्याः ।
ब्रह्मादिदुर्गमगतेर्वृषभानुजायाः
कैङ्कर्य्यमेव मम जन्मनि-जन्मनि स्यात् ॥३९॥

अपार	=असीम
रस सार	=रस सार
विलास	=विहार की
मूर्त्तेः	=विग्रह,
आनन्द कन्द	=आनन्द स्वरूप-लाल जी की
परमाद्भुत	=परम अनुपम
सौम्य	=मृदुल
लक्ष्म्याः	=श्रेष्ठ सम्पत्ति(एवं)
ब्रह्मादि	=ब्रह्मादिकों से भी
दुर्गम	=दुर्लक्ष्य
गतेः	=गति
तस्याः	=उन (ऐसी)
वृषभानुजायाः	=वृषभानुकुमारी का
कैङ्कर्य्यम्	=किंकरी भाव
एव	=ही
मम	=मुझे
जन्मनिजन्मनि	=जन्म जन्मान्तर में
स्यात्	=प्राप्त हो।

जन्म जन्म जाचौं कैङ्कर्य्य।
भानु सुता को दुर्लभ अज कौं, महिमा अत्याश्चर्य्य ।।
अगम विलास सार रस रूपा मूल अखिल आनन्द।
अद्भुत परम सार सुख सम्पति चाहैं निज हित मन्द ।।

पूर्णानुरागरसमूर्त्तितडिल्लताभं
ज्योतिः परं भगवतो रतिमद्रहस्यम् ।
यत्प्रादुरस्ति कृपया वृषभानुगेहे
स्यात्किङ्करी भवितुमेव ममाभिलाषः ।।४०।।

पूर्णानुराग	=पूर्ण प्रेम
रसमूर्त्ति	=रस की मूर्त्ति
तडिल्लताभं	=विद्युत्वल्लरी के समान कान्ति-सम्पन्न (एवं)
भगवतो	=भगवान् की
रतिमद्रहस्यं	=रति-पूर्ण रहस्य वस्तु
यत्	=जो
कृपया	=कृपा-परवश
वृषभानु	=वृषभानु जी के
गेहे	=भवन में
प्रादुरस्ति	=प्रकट हैं (उनकी)
किङ्करी	=दासी

भवितुमेव	=बनना ही	अभिलाषः	=लालसा
मम	=मेरी	स्यात्	=हो

परम रहस्यमयी इक ज्योति।
प्रगट अहैं वृषभानु भवन उर सहज कृपा की स्रोति॥
परम पुरुष भगवान कृष्ण प्रति निज हित रमण प्रकासी।
पूरन राग रूप चपला सम ह्वै हौं नित उन दासी॥

प्रेमोल्लसद्रसविलासविकासकन्दं
गोविन्दलोचनवितृप्तचकोरपेयम्।
सिञ्चन्तमद्भुतरसामृतचन्द्रिकौघैः
श्रीराधिकावदनचन्द्रमहं स्मरामि॥४१॥

प्रेम	=प्रेम से	रसामृत	=अमृत रसमयी
उल्लसत्	=उच्छलित हुए	चन्द्रिका	=चाँदनी के
रसविलास-	=सुरत केलि-विकास	ओघैः	=प्रवाह से
विकासकन्दं	के कारण (एवं)	सिञ्चन्तं	=सींचने वाले
गोविन्द	=श्री लालजी के	श्रीराधिका	=श्रीराधाजी के
लोचन	=नेत्र रूपी	वदन	=मुख
वितृप्त	=अतृप्त	चन्द्रं	=चन्द्र को
चकोर के	=चकोर के	अहं	=मैं
पेयम्	=पेय (तथा)	स्मरामि	=स्मरण करती हूँ।
अद्भुत	=अद्भुत		

सुमिर रहौं राधा विधु आनन।
जो उल्लाम विलास-रास-रस-बीज विकासी कानन।
नैन तृषित गोविन्द पेय निज हित चकोर सम ताके।
अद्भुत रस पीयूष चन्द्रिका सींचै लोचन जाके॥

संकेतकुञ्जनिलये मृदुपल्लवेन
क्लृप्ते कदापि नवसङ्गभयत्रपाढ्याम् ।
अत्याग्रहेण करवारिरुहे गृहीत्वा
नेष्ये विटेन्द्रशयने वृषभानुपुत्रीम् ।।४२।।

संकेत	= संकेतित	भय	= भय से और
कुञ्ज-निलये	= कुञ्ज-सदन में	त्रपाढ्याम्	= लज्जा से भरी हुई
मृदु	= कोमल	वृषभानुपुत्रीम्	= वृषभानु कुमारी जी को
पल्लवेन	= पल्लवों से	अत्याग्रहेण	= अत्यन्त हठ से
क्लृप्ते	= रचित	कर	= हस्त
विटेन्द्र	= लम्पट-शिरोमणि प्रियतम की	वारिरुहे	= कमल को
शयने	= शय्या पर	गृहीत्वा	= ग्रहण कर
नव	= प्रथम	कदापि	= क्या कभी (मैं)
सङ्ग	= मिलन के कारण	नेष्ये	= ले जाऊँगी

ह्वै है अस कब मोर सुभाग ।
भानु लली कर कमल गहौं लै जाऊँ संग पिय लागि ।।
नव संगम हित श्याम कुंज माँहि मृदु पल्लवयुत सज्जा ।
रसिकलाल ने रची ठिठुकि जहँ निज हित करि भय लज्जा ।।

सद्गन्धमाल्यनवचन्द्रलवङ्गसङ्ग
ताम्बूल सम्पुटमधीश्वरि मां वहन्तीम् ।
श्यामं तमुन्मदरसादभिसंसरन्ती
श्रीराधिके! करुणयानुचरीं विधेहि ।।४३।।

अधीश्वरि	= हे स्वामिनि !	तं	= उन
श्री राधिके !	= हे श्रीकिशोरीजू !	श्यामं	= लालजी के प्रति

उन्मद =प्रेमोन्माद
रसाद् =रस से (सुरत-उत्कण्ठा से)
अभिसंसरन्ती =अभिसार करते समय
(त्वं =आप)
सद्गन्ध =सुगन्धित
माल्य =मालाएँ
नवचन्द्र =नूतन कर्पूर (एवं)
लवङ्ग-सङ्ग =लौंग मिश्रित
ताम्बूल =पान की
सम्पुटम् =(रत्नमई) डिबिया को
वहन्तीम् =पहुँचाने के लिये
मां =मुझे
करुणया =करुणा करके
अनुचरीं =अपनी अनुचरी
विधेहि =बना लीजिये

कृपा करि सो अनुचरि मुहि कीजै ।
श्रीराधे ! लालन हित मिलिबे काज जबहि पग दीजै ॥
हे स्वामिनि ! रस उन्मद लखि हौं ले सँग पुष्पनि हार ।
अरु कर्पूर लौंग युत बीरिनु डिबिया चलौं सँभार ॥

श्रीराधिके! तव नवोद्गमचारुवृत्त
वक्षोजमेव मुकुलद्वयलोभनीयम् ।
श्रोणीं दधद्रसगुणैरुपचीयमानं
कैशोरकं जयति मोहनचित्तचोरम् ॥४४॥

श्रीराधिके ! =हे श्री राधिके !
नवोद्गम =नूतन उल्लसित (उभरे हुए)
चारु =मनोहर
वृत्तं =गोल
वक्षोज =कुच युगल
मुकुलद्वय =दो कलियों के समान
लोभनीयं =मोहित करनेवाला (तथा)
श्रोणीं =नितम्ब प्रदेश को
दधद् =विशेषतया विकसित करता हुआ
रसगुणैः =रसमय गुणों से
उपचीयमानं =विवर्धमान
मोहन =लाल जी के

चित्त चोरम्	=चितको हरनेवाला	एवं	=निश्चय ही
तव	=आपका	जयति	=विजय को प्राप्त हो रहा है।
कैशोरकं	=किशोर वय		

जयति राधे ! तुव वय कैशोर।
चारु गोल विवि पीन पयोधर मुकुलित पिय चित चोर ॥
पृथुल नितम्ब विशेष लुभाने कृष्ण स्वयं रस राज।
ज्यों ज्यों सेवैं ब्रढ़ै निरन्तर निज हित नव वय-राज ॥

संलापमुच्छलदनङ्गतरङ्गमाला
संक्षोभितेन वपुषा व्रजनागरेण।
प्रत्यक्षरं क्षरदपाररसामृताब्धि
श्रीराधिके! तव कदा नु शृणोम्यदूरात् ॥४५॥

श्री राधिके !	=हे श्री राधिके !	क्षरदपाररसा-मृताब्धि	=अपार रसमय अमृत सागर को प्रवाहित करनेवाले
उच्छलद्	=उछलती हुई	तव	=आपके
अनङ्ग	=कामदेव की	संलापम्	=वार्तालाप को
तरङ्गमाला	=कल्लोल मालाओं से	अदूरात्	=समीप से
संक्षोभितेन	=अत्यन्त क्षुब्ध	कदानु	=क्या कभी
वपुषा	=विग्रह वाले	(अहं)	=(मैं)
व्रज नागरेण	=नटनागर श्रीलाल जी के साथ	शृणोमि	=सुनूँगी
प्रत्यक्षरं	=प्रत्येक अक्षर में		

श्रवण कब सुनिहौं मधुरालाप।
निकट स्वामिनी ! व्रज नागर सों करति प्रेम मय आप ॥
इक इक वर्ण रसामृत सागर अधिक स्रवति तिहि काल।
सींचत श्री वपु अमित अनंग तरंगनि निज हित लाल ॥

अङ्कस्थितेपि दयिते किमपि प्रलापं
हा मोहनेति मधुरं विदधत्यकस्मात् ।
श्यामानुरागमदविह्वलमोहनाङ्गी
श्यामामणिर्जयति कापि निकुञ्जसीम्नि ॥४६॥

दयिते	=प्रियतम के	श्यामानुराग	=लाल जी के अनुराग में
अङ्कस्थितेऽपि	=गोद में विराजमान होने पर भी	मदविह्वल	=मद से विह्वल
अकस्मात्	=अचानक	मोहनाङ्गी	=मनोहर अङ्गवाली
हा मोहन !	=हा मोहन ! हा मोहन !	कापि	=कोई अनिर्वचनीय
इति	=इस प्रकार	श्यामामणिः	=नित्य-किशोरी
मधुरं	=मधुर	निकुञ्ज सीम्नि	=निकुञ्ज भवन में
प्रलापं	=प्रलाप	जयति	=सबसे ऊपर विराजमान हैं ।
विदधती	=करती हुई (एवं)		

इक श्यामा मणि कुञ्ज प्रान्त में ।
भ्राजति मोहनि मद विह्वल अनुरागवती निज श्याम कान्त में ।।
यद्यपि लाल उछंग अहै, कहि हा ! मोहन ! मोहन ! अकुलात ।
करति प्रलाप मधुर एकाइक रसद प्रेम वैचित्ति सुहात ।।

कुञ्जान्तरे किमपि जातरसोत्सवायाः
श्रुत्वा तदालपितसिञ्जितमिश्रितानि ।
श्रीराधिके! तव रहः परिचारिकाहं
द्वारस्थिता रसहृदे पतिताकदा स्याम् ॥४७॥

श्री राधिके !	=हे श्री राधे !	किमपि	=किसी अनिर्वचनीय
कुञ्जान्तरे	=कुञ्ज भवन में		

जातरसोत्सवायाः	=विहार रसोत्सव के समय
तदालपित	=वहाँ के वार्तालाप (एवं)
शिञ्जित	=आभरणों की झङ्कार की
मिश्रितानि	=मिश्रित ध्वनि
श्रुत्वा	=सुन करके
द्वारस्थिता	=कुञ्ज द्वार पर स्थित
अहं	=मैं
तव	=आपकी
रहः	=एकान्त
परिचारिका	=सेविका
कदा	=कब
रसह्रदे	=रस सरोवर में
पतिता	=डूब
स्याम्	=जाऊँगी ।

हे राधे ! होइ कब अस भाग ।
कुञ्ज भवन तुम प्रियतम सँग रहु रस उत्सव महँ पाग ।।
आपस को आलाप मधुर भूषण धुनि जामें व्यापी ।
परिचारिका नियत तहँ द्वारे कुञ्ज सुनों हिय धापी ।।
सुनत इकन्त अनिर्वचनी सोइ रस विह्वल ह्वै जाऊँ ।
कुञ्जान्तर तुम, द्वारस्थित हौं, यों निज हित सरसाऊँ ।।

वीणां करे मधुमतीं मधुरस्वरां ता–
माधायनागर-शिरोमणिभाव-लीलाम् ।
गायन्त्यहो दिनमपारमिवाश्रु-वर्षै–
र्दुःखान्नयन्त्यहह साह्लदि मेऽस्तु राधा ।।४८।।

अहो !	=आश्चर्य है !
मधुरस्वरां	=मधुर स्वरों वाली
तां	=उस
मधुमतीं	=मधुमती नाम की
वीणां	=वीणा को
करे	=हाथ में
आधाय	=लेकर
नागरशिरोमणि	=नागर, श्री लाल जी की
भाव लीलां	=भावपूर्ण लीलाओं को
गायन्ती	=गाती हुई

अहह !	=अहो !	सा	=वे
अश्रु वर्षैः	=अश्रुओं की वर्षासे	राधा	=श्रीराधा जी
अपारमिव	पार रहित मानों	मे	=मेरे
दिनं	=दिन को	हृदि	=हृदय में
नयन्ती	=बिताती हुई	अस्तु	=विराजमान हों ।

बसौ उर प्रेम विह्वला राधा ।
करति गान यश निज प्रीतम कौं मेटति विरहज बाधा ॥
कर कमलनि वीणा मधुर्मति लै भाव मयी बहु लीला ।
रसिक शिरोमणि की गावति हैं दृगनि अश्रु सरसीला ॥
कलप समान अपार दिवस गनि यहि मिस आप बिताती ।
अहहा! क्यों करि कथा कहै कोउ निज हित पुलकित छाती ॥

अन्योन्यहासपरिहासविलास केली
वैचित्र्यजृम्भितमहारसवैभवेन ।
वृन्दावने विलसतापहृतं विदग्ध-
द्वन्द्वेन केनचिदहो हृदयं मदीयम् ॥४६॥

अहो !	=आश्चर्य है !	विलसता	=विलास करनेवाले
अन्योन्य	=परस्पर के	केनचित्	=किसी (अनिर्वचनीय)
हास परिहास	=विनोद युक्त		
विलास	=विहारमयी	विदग्ध	=रसिक
केलि	=क्रीड़ा की	द्वन्द्वेन	=युगल द्वारा
वैचित्र्य	=विचित्रता से	मदीयं	=मेरा
जृम्भित	=प्रकटित	हृदयं	=हृदय
महारस	=अति उज्ज्वल रसके	अपहृतम	=अपहरण कर लिया गया है ।
वैभवेन	=चमत्कार से		
वृन्दावने	=श्रीवृन्दावन में		

चरण युगल जु हरयौ मन मोर ।
करत हास-परिहास-निरन्तर केलिन ओर न छोर ॥
अद्भुत महा विभव रस उछरत श्री वृन्दावन बीच ।
नित्य विहार परायण दम्पति निज हित भजु रस सींच ॥

महाप्रेमोन्मीलन्नवरससुधासिन्धुलहरी
परीवाहैर्विश्वं स्नपयदिव नेत्रान्तनटनैः ।
तडिन्मालागौरं किमपि नवकैशोरमधुरं
पुरन्ध्रीणां चूडाभरणनवरत्नं विजयते ॥५०॥

नेत्रान्त	=तिरछी चितवन के	किमपि	=अनिर्वचनीय
नटनैः	=नर्त्तन से	तडिन्माला	=विद्युत् पंक्ति के समान
महा प्रेमोन्मीलत्	=उज्ज्वल प्रेम द्वारा विकसित होते हुए	गौरम्	=उज्ज्वल
		नवं	=नूतन
नव	=नूतन	कैशोर	=किशोर वय से
रससुधा	=रसामृत	मधुरं	=मधुर
सिन्धु	=सागर के	पुरन्ध्रीणां	=ब्रजनागरियों के
लहरी	=तरङ्गों की	चूड़ाभरण	=चूड़ा-भूषण का
परीवाहैः	=बाढ़ से	नवरत्नं	=नवीन रत्न (श्री राधा)
विश्वं	=विश्व को		
स्नपयदिव	=मानो स्नान कराने वाला	विजयते	=सर्वोत्कर्ष से विराजमान हैं ।

सर्वजयी इक मधुर किशोरी ।
ब्रज नव तरुणि मुकुट मणि आभा तड़ित माल सम गोरी ॥
चञ्चल नैंन नृत्य जनु नव रस प्रेमामृत महा सागर ।
उठत तरंग विश्व प्लावित करि निज हित नित भजि आगर ॥

अमन्दप्रेमाङ्कश्लथसकलनिर्बन्धहृदयं
दयापारं दिव्यच्छविमधुरलावण्यललितम् ।
अलक्ष्यं राधाख्यं निखिलनिगमैरप्यतितरां
रसाम्भोधेःसारं किमपिसुकुमारंविजयते ।।५१।।

अमन्द =तीव्र
प्रेमाङ्क =प्रेम की छाप से (जिसके)
श्लथ सकल =समस्त हृदय के (मान आदि)
निर्बन्ध-हृदयं =बन्धन विगलित हो गये हैं (तथा)
दिव्यच्छवि =अलौकिक कान्ति से युक्त
मधुर =मधुर
लावण्य =लावण्य से
ललितं =सुन्दर (एवं)
दयापारं =अपार दयालु
निखिल =समस्त
निगमैःअपि =वेदों से भी
अतितरां =अत्यन्त
अलक्ष्यं =अलक्षित
रसाम्भोधेः =रस सागर के
सारं =सार स्वरूप
किमपि =किसी अनिर्वचनीय
राधाख्यं =राधा नामक
सुकुमारं =सुकुमार तत्त्व की
विजयते =जय हो ।

जै ज श्री राधा सुकुमारी ।
रस सागर की सार स्वरूपा अगम निगम महिमारी ।।
उद्भट प्रेम प्रवाहित उर सों हिय बन्धन सब ढीले ।
सीमा दया दिव्य लौनो छवि मधुर ललित मति कीलै ।।

दुकूलं बिभ्राणामथ कुचतटे कंचुकपटं
प्रसादं स्वामिन्याः स्वकरतलदत्तं प्रणयतः
स्थितां नित्यं पार्श्वे विविधपरिचर्य्यैकचतुरां
किशोरीमात्मानं किमिह सुकुमारीं नु कलये ।।५२।।

स्वामिन्याः = अपनी श्रीस्वामिनी जीं के द्वारा
प्रणयतः = प्रेम पूर्वक
स्वकरतल = अपने ही कर-कमल से
दत्तं = दी हुई
प्रसादं = प्रसादी
दुकूलं = ओढ़नी (सिर पर)
अथ = तथा
कुचतटे = वक्षस्थल पर
कञ्चुकपटं = चोली को
विभ्राणाम् = धारण करती हुई

विविध परि- चर्य्यैक चतुरां = अनेक प्रकार की सेवा में एकमात्र निपुण
नित्यंपार्श्वे = नित्य समीप ही
स्थितां = स्थित
किमिह = क्या इस जीवन में (मैं)
आत्मानं = अपने आपको
सुकुमारीं = सुकुमारी
किशोरीं = किशोरी रूप में
कलये नु = निश्चय से अनुभव करूँगी ?

निज अन्तः वपु कबहुँ निहारौं।
हे स्वामिनी ! निकट तुव रहि नित सेवा चतुर सँभारौं ॥
अस किशोरि सुकुमारि किंकरी रूप विवश हिय भींजे ।
निज उत्तोरण दुकूल कञ्चुकी प्रेम प्रसादी दीजे ॥
धारण करौं ताहि कुच तट पै रहौं चरण अनुरागिनि ।
निजि हित अहह ! चाह केवल यहि सूभी हित पद लागिनि ॥

क्वचिन्वन्ती केशान् क्वचन करजैः कंचुक पटं
क्व चाप्यामुञ्चन्ती कुचकनकदीव्यत्कलशयोः ।
सुगुल्फे न्यस्यन्ती क्वचन मणिमञ्जीरयुगलं
कदा स्यां श्रीराधे तव सुपरिचारिण्यहमहो ॥५३॥

अहो = आश्चर्य्य है
श्रीराधे = हे श्रीराधे !

क्वचन = कभी तो
केशान् = आपके केशों को

करजैः =नख-प्रान्त द्वारा
विचिन्वन्ती =सुलझाती हुई
क्वचापि =और कभी फिर
कुचकनक =स्वर्ण कलश समान
दीव्यत्कलशयोः=देदीप्यमान वृक्ष पर
कंचुकपटं =चोली को
आमुञ्चन्ती =पहिनाती हुई
क्वचन =कभी फिर
मणिमंजीर =मणिजटित युगल
युगलं नूपुरों को
सुगुल्फे =सुन्दर टखनों पर
न्यस्यन्ती =बाँधती हुई
अहं =मैं
कदा =क्या कभी
तव =आपकी
सुपरिचारिणी=सुन्दर सेविका
स्याम् =बन सकूँगी ?

परिचर्या अस कबहुँ सँभारौं।
श्रीराधे ! कर नख सों कुञ्चित सघन केश निरवारौं॥
कञ्चुकि कनक कलश कुच कमनी वर्तुल पै पहिराऊँ॥
निज हित उभय गुल्फ मणिमय नूपुर पहिराइ सजाऊँ॥

अतिस्नेहादुच्चैरपि च हरिनामानि गृणत—
स्तथा सौगन्धाद्यैर्बहुभिरुपचारैश्च यजतः।
परानन्दं वृन्दावनमनुचरन्तं च दधतो
मनो मे राधायाः पदमृदुलपद्मे निवसतु॥५४॥

अतिस्नेहात् =अत्यन्त प्रेम से
अपि च= तथा
उच्चैः =ऊँचे स्वर से
हरिनामानि=प्यारेलाल के नामों का
गृणतः =सङ्कीर्तन करते हुए
तथा =तथा
सौगन्धाद्यैः=सुगन्धि पूर्ण
बहुभिः =बहुत प्रकार की
उपचारैः =सामग्रियों से
यजतः =पूजन करते हुए
च =और
वृन्दावनं =वृन्दावन का
अनुचरन्तम्=अनुसरण करते हुए
परानन्दम् =परमानन्द को

दधतः	=धारण करते हुए
मे	=मेरा
मनः	=मन
राधायाः	=श्रीराधाजी के
पद मृदुल पद्मे	=कोमल पद-कमलों में
निवसतु	=निवास करे

बसौ पद पद्म सदा मो मन में।
तुम्हरे श्रीराधे ! जब विचरौं आह्लादित श्री वन में।।
उच्च स्वरनि सनेह युक्त हिय सों हरि नाम उच्चारौं।
सौरभ युत उपचारन सों पूजन निज हित विस्तारौं।।

निजप्राणेश्वर्या यदपि दयनीयेयमिति मां
मुहुश्चुम्बत्यालिङ्गति सुरतमाध्व्या मदयति।
विचित्रां स्नेहर्द्धिं रचयति तथाप्यद्भुतगते—
स्तवैव श्रीराधे पदरसविलासे मम मनः ।।५५।।

श्रीराधे !	=हे श्री राधे !
इयं	=यह किङ्करी
निज	=मेरी
प्राणेश्वर्याः	=प्राणेश्वरी की
दयनीया	=दया की पात्र है
इति	=ऐसा समझकर (प्रियतम)
मां	=मेरा
मुहुश्चुम्बति	=बार बार चुम्बन
आलिङ्गति	=आलिङ्गन करते हैं
	=(तथा)
सुरतमाध्व्या	=सुरत रस माधुरी से
मदयति	=मत्त बना देते हैं
विचित्रां	=विचित्र प्रकार से
स्नेहर्द्धि	=स्नेह वृद्धि भी
रचयति	=करते हैं
तथापि	=फिर भी
अद्भुतगतेः	=अद्भुत प्रभाव वाले
तवैव	=आपके ही
पदरस विलासे	=चरणकमलों के रसमय विलास में
मम	=मेरा
मनः	=मन (रहता है)

मो मन केवल रहत हुलास ।
हे श्री राधे ! होउँ किंकरी तुव पद-पंकज खास ।
यद्यपि भाजन कृपा जानि तुव अद्‌भुत कौतुक शील ।।
प्रियतमलाल करत मुहि चुम्बन पुनि-पुनि उर रस झील ।।
मदिरा सुरत पिवाय मत्त करि नेह गहन दरसाते ।
रचना अति विचित्र वैभव बहु निजहित प्रगटत ताते ।।

प्रीतिं कामपि नाममात्रजनितप्रोद्दामरोमोद्‌गमां
राधामाधवयोः सदैव भजतोः कौमार एवोज्ज्वलाम् ।
वृन्दारण्यनवप्रसूननिचयानानीय कुञ्जारन्तरे
गूढं शैशवखेलनैर्बत कदा कार्य्यो विवाहोत्सवः।।५६।।

नाम मात्र =(परस्पर) नाम-मात्र लेने से
जनित =उत्पन्न हुए
प्रोद्दामं =अबाध
रोमोद्‌गमाम् =रोमाञ्चसे युक्त
कामपि =किसी अनिर्वचनीय
उज्ज्वलां =उज्ज्वल
प्रीतिं =प्रीति को
सदैव =निरन्तर (निश्चित)
कौमार =कुमार अवस्था में
एव =ही
भजतोः =धारण करने वाले

राधामावयोः =राधामाधव का
वृन्दारण्य =वृन्दावन के
नव प्रसून =नूतन पुष्प-
निचयान् =समूह को
आनीय =चयन कर
बत =आनन्द पूर्वक
शैशव =बाल्यावस्था के
खेलनैः =खेल द्वारा
गूढ गुप्त रूप से
विवाहोत्सवः =विवाह उत्सव
मया =मेरे द्वारा
कदा =कब
कार्य्यः =रचा जायगा ?

गहन कुञ्ज में रचौं व्याहुलौ ।
खेल खेल में हर्षित ह्वै बालक सम प्रेम उमाहिलौ ।।
राधा माधव नव कुमार वय उज्ज्वल अकथ प्रकासी ।
करत परस्पर नाम गान सों मुदित पुलकि रस-रासी ।।
ऐसे युगल इष्ट वृन्दावन पुष्प चयन बहु करके ।
निजहित प्रीत सहित उत्सव यौं ~~निजहित~~ वरनी-वर के ।। रचिहौं

विपञ्चितसुपञ्चमं रुचिरवेणुना गायता
प्रियेण सहवीणया मधुरगानविद्यानिधिः ।
करीन्द्रवनसम्मिलन्मदकरिण्युदारक्रमा
कदा नु वृषभानुजा मिलतु भानुजारोधसि ।।५७।।

विपञ्चित = वीणा में गाये हुए
सुपञ्चमम् = सुन्दर पञ्चम राग को
रुचिर = मनोहर
वेणुना = वेणु से
गायता = गान वाले
प्रियेण सह = प्रियतम के साथ
वीणया = वीणा द्वारा
मधुरगान = मधुर गायन करने की
विद्यानिधिः = विद्या में निधान, एवं
करीन्द्र = गजराज से
वन सम्मिलन् = वन में मिलती हुई
मद = मतवाली
करिण्युदारक्रमा = हथिनी के समान मन्द गति वाली
वृषभानुजा = वृषभानु कुमारी
कदानु = क्या कभी
भानुजा = श्री यमुनाजी के
रोधसि = तट पर
मिलतु = मिलेंगी

भानुनन्दिनी प्रियतम संग ।
मिलें तीर यमुना मुहि ज्यों इक विहरति मद करिणी गज अंग ।।
ठुमकि धरति पग चाल मत्त गज वीणा मधुर बजाती ।
कला प्रबीन लाल लखि छेड़ी वंशी तान सुहाती ।।

स्वर पञ्चम सँग तान मिलावत तव वीणा अनुसार।
यों निज हित दम्पति विलसत रस रविजा तट सुख सार ॥

सहासवरमोहनाद्भुतविलासरासोत्सवे
विचित्रवरताण्डवश्रमजलार्द्र गण्डस्थलौ।
कदा नु वरनागरीरसिकशेखरौ तौ मुदा
भजामि पदलालनाल्ललितजीवनं कुर्वती ॥५८

सहास =परिहास सहित
वर =अत्यन्त
मोहनाद्भुत=विचित्र मनोहर
विलास =क्रीड़ामय
रासोत्सवे =रासोत्सव में
विचित्रवर=असाधारण
ताण्डव =नृत्य द्वारा
श्रमजलार्द्र=श्रम जल से भीजे हुए
गण्डस्थलौ=कपोल युगलवाले
तौ =उन दोनों
वर नागरी =श्रेष्ठ नागरी(तथा)
रसिकशेखरौ=रसिक शेखर लाल जो के
पदलालनात्=चरण कमलों के सम्वाहन से
ललित जीवनं=अपने जीवन को आह्लादित
कुर्वती =बनाती हुई
कदानु =क्या कभी
मुदा =प्रेम से
भजामि =सेवन करूँगी

आनन्दित कब भजन बनैंगौ।
प्रिया नागरी लाल रसिक शेखर पद लालन प्रीति जनैंगौ ॥
जब अद्भुत विलास अरु रासोत्सव छाके मन मोद मनाते।
अति उत्कृष्ट नृत्य गति लेते श्रमकन गण्ड सुहाते ॥
भीजे रस दरसतु अति कमनी युगल दरस यों पाऊँ।
जीवन होय सहज सुन्दर तब निज हित लहि सरसाऊँ ॥

वृन्दारण्यनिकुञ्जमञ्जुलगृहेष्वात्मेश्वरीं मार्गयन्
हा राधे सविदग्धदर्शितपथं किं यासिनेत्यालपन् ।
कालिन्दीसलिले च तत्कुचतटीकस्तूरिकापङ्किले
स्नायं स्नायमहो कुदेहजमलं जह्यां कदा निर्मलः॥५६॥

अहो	= आश्चर्य्य है
वृन्दारण्य	= श्री वृन्दावन के
निकुञ्ज	= निकुञ्ज रूपी
मञ्जुल ग्रेहषु	= सुन्दर सदन में
आत्मेश्वरीं	= अपनी स्वामिनी की
मार्गयन्	= खोज करती हुई (मिलने पर)
हा राधे	= हा राधे
सविदग्ध	= जहाँ रसिक शिरोमणि (विराजमान) हैं
दर्शित	= मेरे द्वारा) उस निर्दिष्ट
पथं	= पंथ पर
किं न यासि	= क्यों नहीं जाती हो
इति आलपन्	= इस प्रकार कहती
च	= और
तत्	= उनके
कुचतटी	= वक्षस्थल के
कस्तूरिका	= मृगमद से
पङ्किले	= मिश्रित
कालिन्दी	= श्री यमुनाजी के
सलिले	= जल में
स्नायं स्नायं	= बार बार स्नान करती हुई
कदा	= कब
कुदेहज	= कुत्सित देह जन्य
मलम्	= मल (कामादि) का
जह्याम्	= त्याग करूँगी (और)
निर्मलः	= निर्मल बनूँगी।

यमुना तुव कुच मृगमद गंधित।
पुनि पुनि मज्जित हुइ है निर्मल मल कुदेह सम्बन्धित॥
हा राधे ! श्री वृन्दावन कहँ तुम कौं पथ दरसाती॥
पिय नागर प्रति संग लै चलौं कुञ्ज भवन अलसाती॥

इहै भाव आवेश करौं अन्वेषण वृन्दावन में।
तुमहि स्वामिनी इतउत विचरति निजहित पदरति मन में॥

पादस्पर्शरसोत्सवं प्रणतिभिर्गोविन्दमिन्दीवर—
श्यामं प्रार्थयितुं सुमञ्जुल रहः कुञ्जांश्च संमार्जितुम्।
मालाचन्दनगन्धपूररसवत्ताम्बूलसत्पानका—
न्यादातुं च रसैकदायिनि तव प्रेष्या कदा स्यामहम्॥६०॥

रसैक दायनि = हे रस की एक-मात्र दात्री! (आपकी)
प्रणतिभिः = प्रणाम करते समय
पादस्पर्श = पाद स्पर्श से
रसोत्सवं = रसमय उत्सव सम्पन्न
इन्दीवरश्यामं = नील-कमल सम श्याम
गोविन्दम् = गोविन्द के प्रति
प्रार्थयितुन् = प्रार्थना करने के लिये
च = और
सुमञ्जुल = अत्यन्त मनोहर
रहः = एकान्त
कुञ्जान् = कुञ्ज सदन का
सम्मार्जितुम् = मार्जन करने के हेतु
च = और
माला चन्दन = माला चन्दन
गन्धपूर = सुगन्धि से युक्त
रसवत्ताम्बूल = रसीले ताम्बूल
सत्पानकानि = रुचिर पेय पदार्थ
आदातुं = लाने के निमित्त
अहं = मैं
कदा = कब
तव = आपकी
प्रेष्या = किङ्करी
स्याम् = बनूँगी?

ऐसी सेवा कब मुहि दै हौ।
रस दात्री इकमात्र स्वामिनी! इति विनय सुनि लै हौ॥
तुम पै अति विनीत श्री लालहि प्रेरित करि जु मिलाऊँ।
यह रस उत्सव परसन लोलुप जबहि तुम्हें लखि पाऊँ॥

करौं मार्जित कुञ्ज लिये चन्दन अरु कुसुमनि माल।
रसद पान अरु इत्र दान पहुँचाऊँ तहँ तत्काल॥
कछु सुस्वादी पेय पदारथ प्रस्तुत करौं सुजान।
यह सेवा निज हित पाऊँ यदि मानौं भाग्य महान॥

लावण्यामृतवार्त्तया जगदिदं संप्लावयन्ती शर-
द्राकाचन्द्रमनन्तमेव वदनज्योत्स्नाभिरातन्वती।
श्रीवृन्दावनकुञ्जमंजुगृहिणी काप्यस्ति तुच्छामहो
कुर्वाणाखिलसाध्यसाधनकथां दत्वा स्वदास्योत्सवम्॥६१

इदं	=इस
जगत्	=जगत् को
लावण्यामृत	=आभापूर्ण अमृत-मयी
वार्त्तया	=वाक्चातुरी से
सम्प्लावयन्ती	=सम्यक् मज्जन कराती हुई (एवं)
वदन	=मुख (चन्द्र की)
ज्योत्स्नाभिः	=चाँदनी से
शरद्	=शरत्कालीन
राकाचन्द्रमनन्तम्	=पूर्णमासी के चन्द्रमा को अनंत रूप से
एव आतन्वती	=विस्तृत करती हुई
अहो	=आश्चर्य्य है कि
स्वदास्योत्सवं	=स्वकीय कैङ्कर्य्यरूप उत्सव
दत्वा	=देकर
अखिल	=समस्त
साध्य	=साध्य
साधन	=साधनों की
कथां	=चर्चा को
तुच्छां	=अत्यन्त नगण्य
कुर्वाणा	=करती हुई
कापि	=कोई अनिर्वचनीय
श्रीवृन्दावन	=श्री वृन्दावन कुञ्ज
कुञ्ज मञ्जु	=सदन की मनोज्ञा
गृहिणी	=स्वामिनी
अस्ति	=विराजमान है

सुनौ कौतुक अनुपम दै कान।
श्रीवृन्दावन कुञ्ज भवन मञ्जुल स्वामिनि की बान॥

अखिल जगत प्रति सुधा गिरा छवि प्लावित करति सुजान ।
शरद अनन्त इन्दु सम आनन ज्योति देति हित सानि ॥
एसो अगम दास्य उत्सव निज हित दै राख्यौ दान ।
तुच्छ किये सब साधन साध्य कथा नहिं अन्य सुहान ॥

दृष्ट्या यत्र क्वचन विहिताम्रेडने नन्दसूनोः
प्रत्याख्यानच्छलत उदितोदारसंकेतदेशा ।
धूर्त्तेन्द्रत्वद्भयमुपगता सा रहो नीपवाट्यां
नैका गच्छेत्कितव कृतमित्यादिशेत्कर्हि राधा ॥६२॥

नन्दसूनोः	=श्रीनन्दलालजी की	उपगता	=प्राप्त हुई
दृष्ट्या	=दृष्टि से	सा	=वह (हमारी स्वामिनी)
यत्र	=जब		
क्वचन	=कभी	रहः	=एकान्त
विहिताम्रेडने	=अनुनय विनय करने पर	नीपवाट्यां	=कदम्ब वाटिका में
		एका	=अकेली
प्रत्याख्यान-च्छलतः	=टालने के बहाने	न गच्छेत्	=नहीं जाएगी
		इति कृतम	=इस प्रकार की वचन रूपी रचना का
उदितोदार-संकेतदेशा	=सुखप्रद संकेतदेश को बताने वाली		
हे कितव	=हे कपटी !	राधा	=श्रीराधा
हे धूर्त्तेन्द्र	=हे धूर्त्तराज !	कर्हि	=कब (मुझे)
त्वद्भयं	=तुम्हारे भय को	आदिशेत्	=आदेश देंगी

निज सँग अनुचरि कीजै मोहि ।
आशङ्कित पिय पै न पधारो हिय तुव भय युत होहि ॥
हे हे कितव ! हे धूर्त्त शिरोमणि! करी विनय बहु बार ।
प्रिया तुरत संकेत कियो थल कुञ्ज कदम्ब निहार ॥
पै श्री लाड़िलि भय विह्वल चित इकली तुम्हरे साथ ।
जाय न निज हित स्वयं करैं आदेश सखी गहि हाथ ॥

सा भ्रूनर्त्तनचातुरी निरुपमा सा चारुनेत्राञ्चले
लीलाखेलनचातुरी वरतनोस्तादृग्वचश्चातुरी ।
संकेतागमचातुरी नवनवक्रीडाकलाचातुरी
राधाया जयतात्सखीजनपरीहासोत्सवे चातुरी ।।६३।।

वरतनो राधायाः = कमनीय कलेवर श्रीराधा की
सा = वह
निरुपमा = उपमा रहित
भ्रूनर्त्तन = भृकुटी नचाने की
चातुरी = कुशलता
सा = वह
चारुनेत्राञ्चले = मनोहर नेत्र प्रान्त की
लीलाखेलन चातुरी = लीलापूर्वक संचालन निपुणता
सा = वह
तादृग्वचश्चातुरी = तैसी ही वचन रचना की वाग्मिता चातुरी
संकेतागम = संकेत स्थान में आगमन की
चातुरी = तत्परता
नव नव = नवीन नवीन
क्रीडाकलाचातुरी = क्रीडाविलास की कला (कोक) पूर्ण स्फूर्ति रूप चातुरी
आत्मसखीजन = अपनी सखी जन के मध्य में
परीहासोत्सवे = हास परिहास (रञ्जन) की चातुरी
जयतात् (विदग्धता) की जय हो ।

उन्नत परमोन्नत चतुराई ।
भरी अहो राधा - पिय कारण - महिमा अगम कहै को गाई ।।
अनुपम भ्रुवनि नृत्य की चातुरि - दृग कमनीय कटाक्ष सहाई ।
लीला पूर्ण वदन सों वच-रच चतुराई आलक्षित पाई ।।
रहसि मिलन संकेत चातुरी नव नव केलि कला हुलसाई ।
परिकर सों परिहास हास आनन्द चातुरी निज हित भाई ।।

उन्मीलन्मिथुनानुरागगरिमोदारस्फुरन्माधुरी
धारासारधुरीणदिव्यललितानङ्गोत्सवैः खेलतोः ।
राधामाधवयोः परं भवतु नश्चित्ते चिरार्त्तिस्पृशोः
कौमारे नवकेलिशिल्पलहरीशिक्षादिदीक्षारसः ॥६४॥

उन्मीलन्	=विकसित हुए
मिथुनानुराग	=परस्पर के प्रेम
गरिमोदार	=गौरव से उदार रूपेण
स्फुरन्माधुरी	=प्रस्फुटित होतीहुई माधुरी की
धारासार	=धारा की बाढ़ में
धुरीण	=मुख्य
दिव्य	=अलौकिक
ललितानङ्ग	=प्रेम के
उत्सवैः	=उत्सव वश
खेलतोः	=खेलते हुए
कौमारे	=कुमारावस्था में ही
चिरार्तिस्पृशोः	=चिरकाल से पीड़ित
राधामाधवयोः	=राधामाधव की
नव केलि	=नूतन विलास की
शिल्प लहरी	=तरङ्गपूर्ण रचना के
शिक्षादि	=शिक्षण आदि रूप
दीक्षा	=समर्पण का
रसः	=रस ही
परं	=केवल
नश्चित्ते	=हमारे चित्त में
भवतु	=स्थित रहे ।

कोक केलि कल शिक्षा दीक्षा ।
राधा माधव नव कुमार दोउ सिखें परस्पर करें परीक्षा ॥
परम मधुर उन्नत उदार अनुराग परस्पर दरसै ।
जाते सार मधुर रस धारा धुरी सर्व दिश परसै ॥
ललित दिव्य तम मनसिज उत्सव क्रीड़ा दोउनि जिय में ।
मथित भए जिहि ते मिथुनी ह्वै हाव भाव रतिपिय में ॥
अस चातुरी अनंग तरंगें परम अबाध जु रस की ।
उचित रहैं कब हूं निज हित उर यहै चाह रहै कसकी ॥

कदा वा खेलन्तौ व्रजनगरवीथीषु हृदयं
हरन्तौ श्रीराधाव्रजपतिकुमारौ सुकृतिनः ।
अकस्मात् कौमारे प्रकटनवकैशोरविभवौ
प्रपश्यन्पूर्णः स्यां रहसि परिहासादिनिरतौ ।।६५।।

व्रजनगर वीथीषु	=व्रजपुर की गलियों में	सुकृतिनः	=किसी भाग्यशाली के
खेलन्तौ	=खेलते हुए	हृदयं	=मन को
अकस्मात्	=सहसा	हरन्तौ	=चुराते हुए
कौमारे	=कुमारावस्था में ही	श्री राधा व्रज-पति कुमारौ	=श्रीराधा तथा नंदनन्दन को
प्रकट नव-कैशोर विभवौ	=किशोर अवस्था के वैभव को प्रकट करने वाले	प्रपश्यन्	=भलीभाँति देखता हुआ
रहसि	=एकान्त	कदा वा	=क्या कभी मैं
परिहासादि	=हास परिहास में	पूर्णः	=कृतार्थ
निरतौ	=निरन्तर लगे हुए (एवं)	स्याम्	=होऊँगा ।

प्रेम केलि सुकृतिन जन मोहै ।
जब राधा व्रजपति सुत वीथिनु व्रज पुर खेलत सोहैं ।।
क्रम सों वय कौमार बीति कैशोर विभव तन छायो ।
मगन दिव्य परिहास हास दोउ मनसिज मनहि समायो ।।
ऐसे रस परिपूरण दोउन एकाएक निहारौं ।
निजहित उर धरि पूर्ण युगलछवि तन-मन-धन सब वारौं ।।

धम्मिल्लं ते नवपरिमलैरुल्लसत्फुल्लमल्ली–
मालंभालस्थलमपि लसत्सान्द्रसिन्दूरबिन्दु ।

दीर्घापाङ्गच्छविमनुपमां चारु चन्द्रांशु हासं
प्रेमोल्लासं तव तु कुचयोर्द्वन्द्वमन्तः स्मरामि ।।६६।।

(हे श्रीराधे मैं)

नव परिमलैः	=नूतन (व) अतिशय सुगन्ध पूर्ण
उल्लसत् फुल्ल-मल्लीमालम्	=उल्लसित (विकसित) हुई पुष्पित मल्ली मालाओं से युक्त
ते	=आपके
धम्मिलं	=केश पाश को
अपि	=तथा
लसत्सान्द्र-सिन्दूर बिन्दु	=सघन सिंदूरबिन्दु से शोभित
भालस्थलम्	=ललाट प्रदेश को,
अनुपमां	=अनुपम
दीर्घापाङ्ग-च्छविम्	=कर्णायत नेत्रप्रान्त की छटा को तथा
चारुचन्द्रांशु-हासम्	=चन्द्र किरण के समान मनोहर हास्य को (और)
प्रेमोल्लासम्	=प्रेम के उल्लास से भरे
तवतु	=आपके
कुचयोर्द्वन्द्वम्	=कुच युगल को
अन्तः	=अपने मन में
स्मरामि	=स्मरण करती हूँ

सो किशोर वपु सुमिरों स्वामिनि ।
श्रीराधे ! किंकरि पद याचौं कृपा करो अभिरामिनि ।।
नूतन पुहुप मल्लि सौरभ युत भाल गुथी तुव वेणी ।
तहँ विशाल सिन्दूर बिन्दुका-अद्भुत शोभा श्रेणी ।।
दृग दीरघ अनुपम कटाक्ष छवि प्रेम प्रकासी हास्य ।
अति उल्लसित उरोज युगल निज हित के सतत उपास्य।।

लक्ष्मीकोटिविलक्ष्यलक्षणलसल्लीलाकिशोरीशतै—
राराध्यं व्रजमण्डलेति मधुरं राधाभिधानं परम् ।
ज्योतिः किञ्चन सिञ्चदुज्वलरसप्राग्भावमाविर्भव—
द्राधे चेतसि भूरिभाग्यविभवैः कस्याप्यहो जृम्भते।।६७।।

अहो	=आश्चर्य है	सिञ्चत्	=सेचन करती हुई
लक्ष्मी कोटि-विलक्ष्य लक्षण लसल्लीला किशोरीशतैः	=कोटि २ लक्ष्मी मण्डल में लसित होनेवाले लक्षणों से विभूषित लीलामयी शतशत किशोरीगणों से	अति मधुरं	=महा मधुर
		राधाभिधानं	=श्रीराधा नामक
		किञ्चन	=कोई अनिर्वचनीय
		परं ज्योतिः	=दिव्य ज्योति
		आविर्भवद्राधे	=आराधना के प्राकटय से युक्त
व्रजमण्डले	=व्रजमण्डल में	कस्यापि	=किसी महापुरुष के
आरध्यं	=आराधन (उपासना) योग्य	चेतसि	=चित्त में
		भूरिभाग्य विभवैः	=अतिशय सौभाग्य गौरव से
उज्ज्वलरस	=शृङ्गार रस के		
प्रागभावं	=पूर्वभाव का	जृम्भते	=प्रकट होती है।

परमाराध्य तत्व इक राधा।
मधुर ज्योति उज्ज्वल रस सिञ्चै पूर्वराग जिन साधा॥
जो व्रज ललना निज लीला सों कोटि रमा छवि लाजें।
यूथ यूथ शत शत किशोरियों के उर में जो भ्राजें॥
अस दीपित ज्योती व्रज बसि जे रसिक शिरोमणि ध्यावें।
तिन मधि काहू बड़भागी के उर में निज हित आवें॥

तज्जीयान्नवयौवनोदयमहालावण्यलीलामयं
सान्द्रानन्दघनानुरागघटितश्रीमूर्त्तिसम्मोहनम्।
वृन्दारण्यनिकुञ्ज-केलिललितं काश्मीरगौरच्छवि
श्रीगोविन्द इव व्रजेन्द्रगृहिणी प्रेमैकपात्रं महः॥६८॥

नव यौवनोदय	=नूतन कैशोर के उदय से	लीलामयं	=लीलाओं के स्वरूप वाला
महा लावण्य	=महा लावण्य (कान्ति) मयी	सान्द्रानन्द	=सघन आनन्द के
		घनानुराग	=निविड़ अनुराग

घटित =रचित

श्रीमूर्त्ति- =श्रीविग्रह लालजी

सम्मोहनं =को सम्यक् मोहित करने में समर्थ

वृन्दारण्य-निकुञ्ज =श्रीवृन्दावन कुञ्ज-सदन की

केलिललितं =केलि रचना से मधुर

श्रीगोविन्द इव =श्री गोविन्द की तरह

व्रजेन्द्र गृहिणी =व्रजेन्द्र गृहिणी-यशोदा जी का

प्रेमैक पात्रं =अद्वितीय प्रीति-भाजन

काश्मीर-गौरच्छवि =केसर के समान गौर कान्तियुक्त

तत् =वह

महः =तेज

जीयात् =सर्वोत्कर्ष रूप से विराजमान हो

जै जै सोई अद्भुत ज्योती ।
व्रजपति महरि प्रेम की भाजन गोविंद सम इकलौती ॥
नव नव उदित किशोर प्रकासै अद्भुत कमनी लीला ।
घन अनुराग अनन्द श्याम वपु जनु छविवश करि कीला ॥
केशरि वर्ण गौर छवि नव नव श्री वन कुञ्ज विलासिनि ।
परम ललित निजहित सर्वोपरि हौं ता की जु उपासिनि ॥

प्रेमानन्दरसैकवारिधिमहाकल्लोलमालाकुला
व्यालोलारुणलोचनाञ्चलचमत्कारेण संचिन्वती ।
किञ्चित् केलिकलामहोत्सवमहो वृन्दाटवीमन्दिरे
नन्दत्यद्भुत्कामवैभवमयीराधा जगन्मोहिनी ॥६६॥

प्रेमानन्द =प्रेमानन्द (प्रेमोत्थित आनन्द)

रसैक =रस के एक मात्र

वारिधि =सागर की

महा =उत्ताल

कल्लोलमाला- =तरङ्गावली से

आकुला =युक्त

व्यालोलारुण =अतिशय चञ्चल रक्त वर्ण
लोचनाञ्चल =नेत्र प्रान्त की
चमत्कारेण =चमत्कारिता से
किञ्चित् =कुछ
केलिकला =केलि कलाओं के
महोत्सवं =महान् उत्सव का
सञ्चिन्वती =संचय करती हुई
अद्भुत् =अनिर्वचनीय

कामवैभवमयी=विचित्र काम-सम्पत्ति स्वरूपा
जगन्मोहिनी =अखिल भुवन-मोहिनी
राधा =श्रीराधा
वृन्दाटवी-मन्दिरे =वृन्दावन के निकुञ्ज मन्दिर में
नन्दति =समृद्धि को प्राप्त हो रही हैं

वृन्दाविपिन निकुञ्ज भवन में।
करति विहार अनन्दित राधा कोक कुशल सब जग मोहन में॥
अद्भुत केली कला महोत्सव सींचति चञ्चल कोर कटाक्ष।
प्रेमानन्द रसाम्बुधि लहरी आकुल निजहित प्रकटति साक्षि॥

वृन्दारण्यनिकुञ्जसीमनि नवनवप्रेमानुभावभ्रम—
द्भ्रूभङ्गीलवमोहितव्रजमणिर्भक्तैकचिन्तामणिः ।
सान्द्रानन्दरसामृतस्रवमणिः प्रोद्दामविद्युल्लता
कोटिज्योतिरुदेति कापि रमणी चूडामणिर्मोहिनी ॥७०

नवप्रेमानुभाव=नूतन प्रेम की चेष्टा से
भ्रमत् =चञ्चल
भ्रूभङ्गी =भ्रू विलास के
लव =लेशमात्र से
मोहित व्रज-मणिः =व्रजमणि लालजी को मोहित करने वाली

भक्तैक =भक्तों की एकमात्र
चिन्तामणिः =चिन्तामणि
सान्द्रानन्द रसामृत =सघन आनन्द रस के अमृत की
स्रवमणिः =निर्झर मणि
प्रोद्दाम =निरावरण
विद्युल्लता कोटि ज्योतिः =कोटि २ विद्युत्-लताओं के समान

	दीप्तिशालिनी	मणिः	=शिरोमणि
कापि मोहिनी	=कोई अशेष को मोहित करनेवाली	वृन्दारण्य-निकुञ्ज सीमनि	=वृन्दावन के निकुञ्ज प्रदेश में
रमणी चूडा-	=रमणीवृन्द की	उदेति	=प्रकट हो रही है।

सीमा प्रान्त निकुञ्ज भवन में।
रमणी एक महा मोहिनि चूड़ामणि युवतिन गन में॥
करि प्रकाश नव प्रेम प्रपाटी चञ्चल भ्रूभङ्गी में॥
लेश निरखि व्रजमणि-मोहन-व्याप्यौ वपु त्रयभङ्गी में॥
भक्तन अतुल दिव्य चिन्तामणि सर्वं अमृत रस सागर।
अङ्गनि कोटि कोटि चपलादुति प्रकटति निज हित आगर॥

लीलापाङ्गतरङ्गितैरुदभवन्नेकैकशः कोटिशः
कन्दर्पाः पुरुदर्पटंकृतमहाकोदण्डविस्फारिणः।
तारुण्यप्रथमप्रवेशसमये यस्या महामाधुरी—
धारानन्तचमत्कृता भवतु नः श्रीराधिका स्वामिनी॥७१॥

यस्याः	=जिनके	विस्फारिणः	=खींचने वाले
तारुण्य	=तरुणावस्था में	कोटिशः	=असंख्य
प्रथम प्रवेश	=प्रारम्भिक प्रवेश	कन्दर्पाः	=कामदेव
समये	करते समय	उदभवन्	=उत्पन्न होते रहते हैं
लीलापाङ्ग	=विलासमय कटाक्ष पात की	महा माधुरी	=महा माधुरी की
		धारानन्त	=अनन्त धाराओं से
तरङ्गितैः	=तरङ्गावली से	चमत्कृता	=चमत्कारयुक्त (वे)
एकैकशः	=एक एक बार में	श्री राधिका	=श्री राधिका
पुरुदर्पटङ्कृत	=अखर्व गर्व से टङ्कार करके	नः	=हमारी
		स्वामिनी	=स्वामिनी
महाकोदण्ड	=विशाल चाप को	भवतु	=हों।

अहो चमत्कृति राधा स्वामिनि ।
महा माधुरी महती धारा तरुण अवस्था उदित भामिनि ॥
नैंन कोर ते हाव भाव युत नृत्य कटाक्षिन क्षण क्षण विकसैं ।
करत महा टङ्कार काम-धनु लिये कोटि निज हित तहँ निकसैं ॥

यत्पादाम्बुरुहैकरेणुकणिकां मूर्ध्ना निधातुं न हि
प्रापुर्ब्रह्मशिवादयोऽप्यधिकृतिं गोप्येकभावाश्रया ।
सापिप्रेमसुधारसाम्बुधिनिधीराधापि साधारणी—
भूता कालगतिक्रमेण बलिना हे दैव तुभ्यं नमः ॥७२॥

ब्रह्मशिवादयोपि	=ब्रह्मा शिवादि (प्रमुख देव) भी
यत्पादाम्बुरुहैक	=जिनके चरण-कमल के एक
रेणु कणिकाम्	=रज कण को
मूर्ध्ना	=मस्तक पर
निधातुम्	=धारण करने का
अधिकृतिम्	=अधिकार
नहि	=नहीं
प्रापुः	=प्राप्त कर सके
गोप्येक	=एक मात्र गोपी
भावाश्रया	=भाव की आश्रय रूप
प्रेम सुधा	=प्रेमामृत
रसाम्बुधि-निधिः	=रस सागर की खान
सा	=वही
राधापि	=श्रीराधाजी भी
बलिना	=बलवान्
कालगति	=काल की गति के
क्रमेण	=हेर फेर से
साधारणी	=सर्व सुलभ
भूता	=हो गई हैं
हे दैव !	=हे(कालस्वरूप)देव
तुभ्यम्	=आपको
नमः	=नमस्कार है ।

वंदौं दैव तेरि बलिहारी ।
धन्य काल महिमा जो वस्तु अगम भई उजियारी ॥
प्रेमामृत रस सागर मोहन की निधि परम अथाह ।
गोपि अनन्त करैं जिहि आश्रय उर धरि भाव उमाह ॥

जाकी चरण कमल कण रज शिव ब्रह्मादिक हूं तरसें ।
पाइ सकें नहि सो राधा निजहित वन सहज हि दरसें ॥

दूरे स्निग्धपरम्पराविजयतां दूरे सुहृन्मण्डली
भृत्याः सन्तु विदूरतो व्रजपतेरन्यप्रसंगः कुतः ।
यत्र श्रीवृषभानुजा कृत रतिः कुञ्जोदरे कामिना,
द्वारस्थाप्रियकिङ्करीपरमहं श्रोष्यामि काञ्चीध्वनिम् ॥७३

व्रजपतेः	=श्री लालजी के	कुतः	=व्यर्थ है
स्निग्ध	=स्नेही	यत्र	=जिस समय
परम्परा	=गण	श्रीवृषभानुजा	=श्रीवृषभानु कुमारी
दूरे	=दूर से ही	कामिना	=प्रीतम के साथ
विजयताम्	=अपना गौरव प्रकट करें (तथा)	कुञ्जोदरे	=निकुञ्ज भवन में
सुहृन्मण्डली	=(उनकी) सुहृद् स्वजन मण्डली	कृतरतिः	=रमण कर रही हों
दूरे	=दूर ही विराजी रहें	परमहम्	=मैं ही केवल
भृत्याः	=दास गण भी	द्वारस्था	=द्वार पर नियुक्त
विदूरतः	=दूर ही (सेवा में)	प्रिय किङ्करी	=प्यारी किङ्करी के रूप में
सन्तु	=तत्पर रहें	काञ्ची	=करधनी की
अन्यः	=औरों की तो	ध्वनिम्	=ध्वनि को (भाग्य-बली होने से)
प्रसङ्गः	=चर्चा	श्रोष्यामि	=सुन पाऊंगी ।

कुञ्ज भवन दम्पति रस केली ।
करति रहसि अति नित्य निरन्तर अन्तर प्रेम परस्पर झेली ॥
तहँ नहि लाल सुहृद जन झांकें सखा नहीं अधिकारी ।
कहा गनें अधिकार भृत्य जन झांइ न सकें निहारी ॥

इतर लोग किहि लेखे माहीं पै विहार अवसर पर।
द्वारस्थित धुनि करधनि सुनिहौं निज श्रवणनि रंध्रनि धर॥

गौराङ्गे म्रदिमा स्मिते मधुरिमा नेत्राञ्चले द्राघिमा
वक्षोजे गरिमा तथैव तनिमा मध्ये गतौ मन्दिमा।
श्रोण्यां च प्रथिमा भ्रुवोःकुटिलिमा बिम्बाधरे शोणिमा
श्रीराधे हृदि ते रसेन जडिमा ध्यानेस्तु मे गोचरः ॥७४॥

श्रीराधे !	=हे श्री राधे !	च	=और
ते	=आपके	श्रोण्यां	=नितम्बों की
गौराङ्गे	=गौर अङ्गों की	प्रथिमा	=स्थूलता
म्रदिमा	=मृदुलता	भ्रुवोः	=भृकुटी की
स्मिते	=मन्द हास्य की	कुटिलिमा	=वक्रता
मधुरिमा	=माधुरी	बिम्बाधरे	=अधरों की
नेत्राञ्चले	=नेत्र प्रान्त की	शोणिमा	=लालिमा (तथा आपके)
द्राघिमा	=विशालता		
वक्षोजे	=उरोजों की	हृदि	=हृदय में
गरिमा	=गुरुता	रसेन	=रस की (जो)
तथैव	=तथा	जडिमा	=स्तब्धता है (वह)
मध्ये	=कटि प्रदेश की	मे	=मेरे
तनिमा	=कृशता	ध्याने	=ध्यान का
गतौ	=चाल की	गोचरः	=विषय
मन्दिमा	=मन्दता	अस्तु	=होवे

प्रकट अस छवि मोहिय भाती।
श्रीराधे ! गौराङ्ग मृदुलता मन्द मधुर मुस्काती॥
नेत्राञ्चल अति दीर्घ पीन कुच उच्च क्षीण कटि शोभे।
गजगति धीर चाल अति मांसल शुभ नितम्ब पिय लोभे॥

वक्र भ्रूलता अधर विम्ब अति अरुण अमित छवि राजी ।
रस आवेश उदित जड़ता जिय निजहित टरसतु छाजी ॥

प्रातः पीतपटं कदा व्यपनयाम्यन्यांशुकस्यार्पणात्
कुञ्जे विस्मृतकञ्चुकीमपि समानेतुं प्रधावामि वा ।
बध्नीयां कबरीं युनज्मि गलितां मुक्तावलीमञ्जये
नेत्रे नागरि रंगकैश्चपिदधाम्यङ्गव्रणं वा कदा ॥७५॥

नागरि !	=हे नागरि ! (श्रीराधे)
प्रातः	=प्रातःकाल
अन्यांशुकस्य	=अन्य वस्त्र (नीलाम्बर) को
अर्पणात्	= धारण कराके
पीतपटं	=पीताम्बर
कदा	=कब
व्यपनयामि	=उतार दूँगी
अपि च	=तथा
कुञ्जे	=कुञ्ज में
विस्मृत	=भूली हुई
कञ्चुकीं	=चोली को
समानेतुम्	=लाने के लिये
(कदा) वा	=कब
प्रधावामि	=उतावली से दौड़ जाऊँगी
कबरीं	=केशपाश को (कब)
बध्नीयां	=बाँधूँगी
गलितां	=टूटी हुई
मुक्तावलीं	=मुक्तामाल को (कब)
युनज्मि	=पिरो दूँगी
नेत्रे	=नेत्रों में (कब)
अञ्जये	=अञ्जन लगाऊँगी
च	=और
रङ्गकैः	=कस्तूरी सिन्दूर आदि से
अङ्गव्रणं	=अङ्गक्षत को
कदा वा	=कब
पिदधामि	=आच्छादित करूँगी।

कब ह्वै हैं अस मो बड़ भाग ।
हे राधे-नागरि ! तुव सेवा लहौं निकुञ्ज स-राग ॥
कबहुं पीत पट पहिर रही तुम भ्रम सों प्रातः काल ।
सावधान करि नीलाम्बर कौं पलटि देउं तत्काल ॥

कबहुंक कंचुकि कुञ्जभवन तुम भूलि आंइ निज सेवा।
धाइ शीघ्र अविलम्ब तिहारो लै आऊं तहं ते जा॥
मृगमद मलयज कुंकुम लेपों नख रेखा अँग केरी।
यहि विधि निजहित कों कीजै श्रीस्वामिनि आपुन चेरी॥

यद्वृन्दावनमात्रगोचरमहो यन्नश्रुतीकं शिरो-
प्यारोढुं क्षमते न यच्छिवशुकादीनां तु यद्ध्यानगम्।
यत्प्रेमामृतमाधुरीरसमयं यन्नित्यकैशोरकं
तद्रूपं परिवेष्टुमेव नयनं लोलायमानं मम॥७६॥

अहो ! = आश्चर्य्य है !
यद्वृन्दावन- = जो केवल श्रीवृन्दा
मात्र वन में ही
गोचरं = सहज प्राप्त है (अन्यत्र नहीं)
यत् = (और) जिसमें
श्रुतीकं शिरोपि = उपनिषद् भी
आरोढुं = प्रवेश करने में
क्षमते = समर्थ
न = नहीं है
यत्तु = जो
शिव शुकादीनां = शिव शुकादि के भी
यद्ध्यानगं न = निरन्तर ध्यान का विषय नहीं है
यत् = जो
प्रेमामृत = प्रेम रूप अमृत
माधुरी = माधुरी का
रसमयं = रसस्वरूप है तथा
यत् = जो
नित्य = नित्य
कैशोरकं = किशोरावस्था से सम्पन्न है
तत् = उस
रूप मेव = रूप को ही
परिवेष्टुं = भलीभांति देखने के लिये
मे = मेरे
नयनं = नेत्र
लोलायमानम् = चञ्चल (व्याकुल) हो रहे हैं।

चपल चख चहैं लखें सो रूप।
जो केवल द्रष्टव्य विपिन श्री वृन्दा मांहि अनूप॥

वरणत जाको वेद सार उपनिषद भाग कहि नेती ।
शिव शुक ध्यान अगम्य सुपूरण प्रेमामृत मधु देती ॥
नित्य नवल कैशोर कुंवरि कब ह्वै हो आप निहाल ।
निज हित लहैं दरस सो नैना सफल होइँ तत्काल ॥

धर्माद्यर्थचतुष्टयं विजयतां किं तद्वृथा वार्त्तया
सैकान्तेश्वरभक्तियोगपदवी त्वारोपिता मूर्द्धनि ।
यो वृन्दावनसीम्नि कश्चन घनाश्चर्यः किशोरीमणि-
स्तत्कैङ्कर्य्यरसामृतादिह परं चित्ते न मे रोचते ॥७७॥

धर्म्माद्यर्थ	=धर्म्मादि पुरुषार्थ	कश्चन	=कोई एक
चतुष्टयं	=चतुष्टय का	घनाश्चर्य्यः	=अतिशय आश्चर्य्य से पूर्ण
विजयतां	=गौरव भले हीं बना रहे	किशोरीमणिः	=किशोरीगणों की मुख्य
तत्	=उनकी		
वृथा	=निरर्थक	वृन्दावन	=वृन्दावन की
वार्त्तया	=चर्चा से	सीम्नि	=सीमा में (विराजमान हैं)
किं	=क्या लाभ (तथा)		
सा	=उस	तत्	=उसके
एकान्तेश्वर	=ईश्वर की	कैङ्कर्य्य	=दासीभाव रूप
भक्ति योग	=अव्यभिचारिणी भक्ति योग की	रसामृतात्	=रसामृत के अतिरिक्त
पदवी तु	=पद्धति को भी (हम)	मे	=मेरे
मूर्ध्नि	=सिर माथे पर	इह	=इस
आरोपिता	=चढ़ाते हैं (केवल-आदर दे सकते हैं)	चित्ते	=चित्त को
यः	=वास्तव में तो जो	परं न रोचते	=कुछ भी अच्छा नहीं लगता है ।

विनु कैंकर्य्य रुचै कछु नाँहीं ।
श्री राधे ! इक मात्र आपको श्री वन सीमा माँही ॥
नहीं प्रयोजन धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष सुख लेश ।
भले जगत उत्कृष्ट बखानें चर्चा व्यर्थ विशेष ॥
साक्षर नमन इकन्त भक्ति ऐश्वर्य्य लाभ कछु नाँही ।
चित निजहित अचरज स्वरूप घन कुंवरिमणी पद माँही ॥

प्रेम्णः सन्मधुरोज्ज्वलस्य हृदयं शृङ्गारलीलाकला
वैचित्री परमावधिर्भगवतः पूज्यैव कापीशता ।
ईशानी च शची महासुखतनुःशक्तिः स्वतन्त्रा परा
श्रीवृन्दावननाथपट्टमहिषी राधैव सेव्या मम ॥७८॥

(या)सन्मधु-रोज्ज्वलस्य	=(जो) श्रेष्ठतम मधुर उज्ज्वल	ईशानी	=पार्वती
प्रेम्णः	=प्रेम की	च	=यदि (भगवान् इन्द्र हैं तो यह)
हृदयं	=हृदय रूप हैं(तथा)	शची	=शची हैं
शृङ्गार लीला-कला	=शृङ्गार रस की लीला कलाओं के	महा सुख	=अतिशय सुख-स्वरूप
वैचित्री	=वैचित्र्य की	तनुः	=विग्रह वाली
परमावधिः	=चरम सीमा हैं (तथा)	परा स्वतन्त्रा शक्तिः	=स्वतन्त्र पराशक्ति हैं (ऐसी)
भगवतः	=भगवान् श्रीकृष्ण की	श्रीवृन्दावननाथ	=श्री वृन्दावन के अधीश्वर की
कापि	=कोई अनिर्वचनीय	पट्ट	=सिंहासनारूढ़ा
पूज्यैव	=पूजनीया	महिषी	=रानी
ईशता	=ईश्वरी हैं (यदि श्रीकृष्ण ईश हैं तो यह)	राधैव	=केवल राधा ही
		मम	=मेरी
		सेव्या	=सेव्य हैं

महिर्षि पट्ट वृन्दावन नाथ ।
परमाराध्य स्वामिनी राधा मम जीवन तिनि हाथ ॥
मधुरोज्ज्वल रस प्रेम घनाकृति अवधी केलि कलानि ।
उद्गम लीला वैचित्री की अरु ऐश्वर्य निधान ॥
अखिल स्वरूप कृष्ण सित ईशानी शचि शक्ति स्वतन्त्र ।
परम सुखद विग्रह ताकी दासी निज हित परतन्त्र ॥

राधादास्यमपास्य यः प्रयतते गोविन्दसङ्गाशया
सोयं पूर्णसुधारुचेः परिचयं राकां विना कांक्षति ।
किञ्च श्यामरतिप्रवाहलहरीबीजं न ये तां विदु-
स्ते प्राप्यापि महामृताम्बुधिमहो बिन्दुं परं प्राप्नुः॥७८॥

यः =जो व्यक्ति
राधादास्यं =श्रीराधा कैङ्कर्य्य को
अपास्य =त्याग कर
गोविन्द =श्रीलाल जी के
संग =प्रेम की
आशया =आशा से
प्रयतते =प्रयत्न (साधन-भजन) करता है
सोयं =वह व्यक्ति मानों
राकां विना =पूर्णिमा की रात्रि के बिना ही
पूर्ण सुधारुचेः =पूर्ण चन्द्र का
परिचयं कांक्षति =दर्शन चाहता है
किंच =तथा (ऐसे)

ये =जो व्यक्ति
श्याम =श्याम सुन्दर की
रति प्रवाह =रति के प्रवाह रूप
लहरी =तरङ्ग के
बीजं =मूल बीज
तां =उन (श्रीराधा) को
न विदुः =नहीं जानते हैं
ते =वे (व्यक्ति)
महामृताम्बुधि =विशाल अमृत-सागर को
प्राप्यापि =पाकर भी
अहो =खेद है कि
परं =केवल एक
बिन्दुं =बूँद ही
प्राप्नुयुः =प्राप्त कर पाए

मन्द; जिन राधा पद रति त्यागी।
चहैं लाभ गोविन्द संग को भूले पथ अनुरागी॥
मानहुँ पूर्ण इन्दु को दर्शन चहै पूर्णिमा बादि।
अज्ञ न जानैं बीज प्रेम लहरी राधा जु अनादि॥
इहै परम कौतुक जु निकट रहि महा सागर पीयूष।
भये तुष्ट निजहित लहि बिन्दू केवल मिटी न भूख॥

कैशोराद्भुतमाधुरीभरधुरीणाङ्गच्छविं राधिकां
प्रेमोल्लासभराधिकां निरवधि ध्यायन्ति ये तद्धियः।
त्यक्ताः कर्मभिरात्मनैव भगवद्धर्मेऽप्यहो निर्ममः
सर्वाश्चर्य्यगतिं गता रसमयीं तेभ्यो महद्भ्यो नमः॥८०

ये	=जो व्यक्ति	ध्यायन्ति	=ध्यान करते हैं(वे)
तद्धियः	=उन (श्रीराधाजी) में मन बुद्धि लगा कर	कर्मभिः	=कर्मों द्वारा
		आत्मनैव	=अपने आप
		त्यक्ताः	=छोड़ दिये जाते हैं
कैशोराद्भुत	=किशोरावस्था की विचित्र	अहो	=(और भी) आश्चर्य्य है (कि)
माधुरी	=(आस्वाद्य मिठास की	भगवत्	=भागवत
		धर्मेऽपि	=धर्म्मों से भी (वे)
भरधुरीण	=अधिकता से भर-पूर	निर्ममाः	=ममता हीन होकर
		रसमयीं	=रस से सनी
अङ्गच्छविम्	=अंग कान्तिमयी एवं	सर्वाश्चर्य्य	=सर्वश्रेष्ठ विस्मय
		गतिम्	=अवस्था को
प्रेमोल्लास	=प्रेमोत्कर्ष के	गताः	=प्राप्त हो चुके हैं
भराधिकाम्	=गौरव से परिपूर्ण	तेभ्यः	=उन
राधिकाम्	=श्रीराधिकाजी का	महद्भ्यः	=महा पुरुषों को
निरवधि	=निरन्तर	नमः	=(हमारा)नमस्कार है

पुनि पुनि तिनके पद सिर नाऊँ ।
सर्वाश्चर्य्य पूर्ण पर रस मय गति जिनके जिय ठाऊँ ॥
ध्यावहिं नित्य किशोरि चमत्कृति मधुर रसीली राधा ।
जाके अंग अंग सर्वोत्तम छवि उल्लास अबाधा ॥
प्रेमोल्लास प्रवाह प्रवाहित तहँ तिनके चित लागे ।
अन्य कर्म को गनैं धर्म भगवत निजहित तमि भागे ॥

लिखन्ति भुजमूलतो न खलु शंखचक्रादिकं
विचित्रहरिमन्दिरं न रचयन्ति भालस्थले ।
लसत्तुलसिमालिकां दधति कण्ठपीठे न वा
गुरोर्भजनविक्रमात् क इह ते महाबुद्धयः ॥८१॥

गुरोर्भजन = प्रगाढ़ या गुरुनिष्ठ भजन
विक्रमात् = बल के आधार पर (जो लोग)
खलु = भली भाँति
भुजमूलतः = भुजाओं पर
शङ्खचक्रादिकम् = शङ्खचक्रादिकों के चिह्न
न लिखन्ति = नहीं बनाते हैं
भालस्थले = ललाट पर
विचित्र = सुन्दर सुन्दर
हरिमन्दिरम् = तिलकादि की
न रचयन्ति = रचना नहीं करते हैं
कण्ठ पीठे वा = ग्रीवा में
लसत्तुलसि = सुन्दर तुलसी की
मालिकाम = कण्ठी माला भी
न दधति = धारण नहीं करते हैं
इह = इस लोक में
ते = वे
महाबुद्धयः = महा मति
के = कौन हैं ? (अर्थात् विरले हैं)

गुरु तर भजन पराक्रम जिनके ।
ते विरले अति विमल महा मति कहत सुलक्षण तिनके ॥
रचैं न शङ्ख चक्र आदिक कछु भुज मूलन पर अपने ।
हरि की छाप भाल पै टीका विखियत नहि कर सपने ॥

कण्ठ-सुहातो तुलसि माल नहिं कण्ठो की सुधि आही।
ऐसे तन्मय इष्ट भजन तत्सुख निज हित मति ताही॥

कर्माणि श्रुतिबोधितानि नितरां कुर्वन्तु कुर्वन्तु मा
गूढ़ाश्चर्य्यरसाः स्रगादिविषयान्गृह्णन्तु मुञ्चन्तु वा।
कैर्वा भावरहस्यपारगमतिः श्रीराधिकाप्रेयसः
किञ्चिज्ज्ञैरनुज्यतां बहिरहो भ्राम्यद्भिरन्यैरपि ॥८२॥

गूढ़ाश्चर्य्य =निबिड़ अनुपम
रसाः =रस में निमग्न (रसिक जन।
श्रुति बोधितानि =श्रुति प्रतिपादित
कर्माणि =कर्म कलाप को
कुर्वन्तु =करें
मा वा कुर्वन्तु =अथवा न करें
स्रगादि =माला चन्दनादि
विषयान् =भोगों को
गृह्णन्तु =ग्रहण करें
वा मुञ्चन्तु =अथवा त्याग दें,
अहो ! =आश्चर्य्य है !!
श्रीराधिका =श्री राधा
प्रेयसः =कान्त के
भाव रहस्य =रहस्य भाव की
पारगमतिः =पारङ्गतमतिवाला व्यक्ति
किञ्चिज्ज्ञैः =अल्पज्ञ और
बहिःभ्राम्यद्भिः=बहिर्मुख
अन्यैरपि =अन्य
कैर्वा =किन्हीं लोगों द्वारा
अनुयुज्यताम् =क्या कभी प्रश्न (कुतर्क) का विषय हो सकता है ?
(अर्थात् अँगुली उठाने योग्य नहीं है)

अहो ! गूढ़ रस रसिक शिरोमनि।
उज्ज्वल मधुर उपासन बिनु नहिं सकै वेद विधि कर्मन को गनि॥
चन्दन गन्ध पुष्पमाला विषयन सों कहा प्रयोजन जानैं।
गनैं न हानी लाभ तनिक जीवन सन्तोषी जन सोइ मानैं॥
रुचै न अन्न बहिर्मुख अन्य सकामी जन कौं संग कदाचित।
राधा माधव भाव विभावित निज हित रुचै असंग सदा चित॥

अलं विषयवार्त्तया नरककोटिबीभत्सया
वृथा श्रुतिकथाश्रमो बत बिभेमि कैवल्यतः।
परेशभजनोन्मदा यदि शुकादयः किं ततः
परं तु मम राधिकापदरसे मनो मज्जतु ॥८३॥

नरककोटि	=कोटि कोटि नरकों से भी	यदि	=यदि
बीभत्सया	=घृणास्पद	शुकादयः	=शुक सनकादि
विषय	= भोगों की	परेश	=परमेश्वर के
वार्त्तया	=चर्चा	भजनोन्मदाः	=भजन में उन्मत्त हैं तो
अलम्	=रहने दो	ततः	=उससे (मुझे)
श्रुतिकथा	=वेद कथाओं में	किं	=क्या लाभ है !!
श्रमः	=श्रम करना	मम तु मनः	=मेरा मन तो
वृथा	=निरर्थक है	परं	=केवल
बत	=हाय हाय	राधिका	=श्रीराधाजी के
कैवल्यतः	=एकाकी भावरूप मोक्ष से तो	पदरसे	=चरण कमल के रस में
बिभेमि	=भय लगता है	मज्जतु	=मज्जन करता रहे

मन ! राधा पद रस रहु डूबि।
करी वृथा विषयन की चर्चा बरबस अब गयो ऊबि॥
कोटि कोटि नरकन समान वे विषय अहैं भय दाई।
श्रमित करें श्रुति कथा, मुक्ति अहै जु महा दुखदाई॥
पुरुषोत्तम भगवान-भजन-उन्मत्त शुकादिक लीन।
नहीं प्रयोजन अपनों निज हित हम अयोग्य अरु दीन॥

तत्सौन्दर्यं स च नववयोयौवनश्रीप्रवेशः
सा दृग्भङ्गी सच रसघनाश्चर्यवक्षोजकुम्भः।

सोयं विम्बाधरमधुरिमा तत्स्मितं सा च वाणी
सेयं लीलागतिरपि न विस्मर्यते राधिकायाः ॥८४॥

राधिकायाः =श्री राधिका का
तत्सौन्दर्य्यम् =वह अद्भुत सौंदर्य्य
स च =और वह
नव वयः =नूतनावस्था की
यौवन श्री =तारुण्य शोभाका
प्रवेशः =आविर्भाव
सा =वह
दृग्भङ्गी =नेत्र प्रान्त की कुटिलता
स च =और वह
रसघनाश्चर्य्य =आश्चर्य्य मय रस से पूर्ण
वक्षोजकुम्भः =कुच कलश
सोयं =वही यह
बिम्बाधर =विम्बफल समान अधर की
मधुरिमा =माधुरी
तत्स्मितम् =वह मन्द हास
सा च वाणी =तथा वह वाग्विलास
अपि स =और वही
इयम् =यह
लीलागतिः =मतवाली चाल इनमें से एक भी बात
न विस्मर्यते =नहीं भुलाई जा सकती है।

हिय गढ़ि रही राधिका महिमा।
वह अभूत सौन्दर्य्य अनूपम नव यौवन की गरिमा॥
नैंन भङ्गिमा रस घन अचरज कुच युग कलस उभारे।
विम्बाधर सम रक्त अधर परिपूर्ण मधुरिमा न्यारे॥
मन्द मन्द मुस्क्यान रसीली प्रखर वचन रचना कौं।
लीला गति पग चलन न निजहित भूलि सकौं किन ताकौं॥

यल्लक्ष्मीशुकनारदादिपरमाश्चर्यानुरागोत्सवैः
प्राप्तं त्वत्कृपयैव हि व्रजभृतां तत्तत्किशोरीगणैः।
तत्कैङ्कर्य्यमनुक्षणाद्भुतरसं प्राप्तुं धृताशे मयि
श्रीराधे नवकुञ्जनागरि कृपादृष्टिं कदा दास्यसि॥८५॥

नवकुञ्जनागरि	=नवकुञ्ज ललने
श्रीराधे !	=श्री राधे !
लक्ष्मीशुक-नारदादि	=लक्ष्मी शुक नारद आदिकों के लिये
परमाश्चर्य्य	=परम विस्मय से पूर्ण
अनुरागोत्सवैः	=अनुरागमय उत्सव युक्त
व्रजभृताम्	=व्रज बालाओं में से
तत्तत्	=उन किन्हीं
किशोरीगणैः	=किशोरीगणों को
यत्	=जो (कैङ्कर्य्य)
त्वत्कृपयैव	=केवल आपकी कृपा से ही
प्राप्तम्	=प्राप्त हुआ
तत्	=उसी
अनुक्षणाद्भुत	=प्रतिक्षण चमत्कारी
रसम्	=रसमय
कैङ्कर्य्यम्	=कैङ्कर्य्य को
प्राप्तुम्	=प्राप्त करने के लिये
धृताशे	=आशा लगाये हुए
मयि	=मुझ पर
कदा	=कब
कृपा दृष्टिम्	=कृपा की दृष्टि
दास्यसि	=करोगी

कृपा दृष्टि मो:इ कब डारोगी ।
श्री राधे ! नवकुञ्ज नागरी विरदहि प्रतिपारोगी ॥
जो दृष्टी क्षण क्षण अद्भुत रस देत सदा इक सार ।
व्रज किशोरियन प्राप्त करी अनुरागोत्सव रस धार ॥
तिन गोपिन की परिपाटी लक्ष्मी शुक नारद तरसें ।
सो कैङ्कर्य्य आश निज हित उर कृपा दृष्टि कब बरसें ॥

लब्ध्वादास्यं तदति कृपया मोहनस्वादितेन
सौन्दर्य्यश्रीपदकमलयोर्लालनैः स्वापितायाः ।
श्रीराधाया मधुरमधुरोच्छिष्टपीयूषसारं
भोजं भोजं नवनवरसानन्दमग्नःकदा स्याम् ॥८६॥

तत्	=उन (श्रीप्रियाजी) की
अति कृपया	=महती कृपा से
मोहन स्वादितेन	=श्री मोहन से आस्वादित
दास्यं	=(उनके) दास्य को

लब्ध्वा	=पाकर	पीयूष सारम्	=सुधा सार का
सौन्दर्य्यश्री	=सौन्दर्य्य शोभा अतिरेक से भूषित	भोजं-भोजम्	=पुनः पुनः आस्वादन कर (मैं)
पदकमलयोः	=चरणारविन्द के	कदा	=कब
लालनैः	=दुलार-संवाहन से	नव-नव रसानन्द	=नित्य-नवीन रसानन्द में
स्वापितायाः	=शयन कराई हुई	मग्नः	=डूब
श्रीराधायाः	=श्रीराधिकाजी के	स्याम्	=जाऊँगी
मधुरमधुरोच्छिष्ट	=मधुरातिमधुर उच्छिष्ट रूप		

छवि रासी पद पद्म तिहारे ।
स्वामिनि ! स्वयं पलोटि मुदित मन शयन करावें प्यारे ॥
कछुक शेष मिष्टान्न प्रसादी अमृत सार सुस्वादी ।
परम कृपा करि दई लाल कूँ उन मुहि दई प्रसादी ॥
उहै प्रसादि दुहुंनि केरी हौं पाइ गनौं बड़ भाग ।
नव नव रस आनन्द मगन निज हित दासी रहै पाग ॥

यदि स्नेहाद्राधे दिशसि रतिलांपट्यपदवीं
गतं मे स्वप्रेष्ठं तदपि मम निष्ठां शृणु यथा ।
कटाक्षैरालोके स्मितसहचरैर्जातपुलकं
समाश्लिष्याम्युच्चैरथ च रसये त्वत्पदरसम् ॥८७॥

राधे	=हे श्रीराधे !	दिशसि	=सौंप दो
रति लाम्पट्य पदवीम्	=विहार लम्पटता की कुशलता को	तदपि	=तो भी
गतम्	=प्राप्त	मम निष्ठाम्	=मेरी निष्ठा को
ते	=आपके	शृणु	=सुनिये
स्वप्रेष्ठम्	=अपने प्रियतम को	यथा	=जैसे कि (मैं)
यदि	=यदि (स्वयं)	स्मित	=मन्द मुसकान से
स्नेहात्	=स्नेह वश (मुझे)	सहचरैः	=युक्त
		कटाक्षैः	=कटाक्ष पात से

	(उनको)		करूँगी
आलोके	=देखूँगी	अथ	=इतना होने पर भी
च	=और	त्वत्	=आपके ही
जात पुलकम्	=पुलकित होने पर	पदरसम्	=चरणारविन्द के दास्य रस का
उच्चैः	=अतिगाढ़		
समाश्लिष्यामि	=आलिङ्गन भी	रसये	=आस्वादन करूँगी

जब तुम देहु लाल कँह मोही।
हे राधे ! तद्यपि मम निष्ठा सुदृढ़ सुनो कहौं तोही ॥
रति रस लोभी सदा लाल कों भृकुटि बंक निरखौंगी।
रोम रोम पुलकित वे तुरतहि ह्वै हैं यों परखौंगी ॥
पुनि प्रगाढ़ आलिगन दै हौं प्रेम विवश करि राखौं तिनको।
पै निजहित तुव पद-अम्बुज-रस मग्न राखिहौं अपने मनकों ॥

कृष्णः पक्षो नवकुवलयं कृष्णसारस्तमालो
नीलांभोदस्तव रुचिपदं नामरूपैश्च कृष्णा।
कृष्णे कस्मात्तव विमुखता मोहनश्याममूर्त्ता-
वित्युक्त्वा त्वां प्रहसितमुखीं किन्नु पश्यामि राधे ॥८८

राधे !	=हे श्रीराधे ! (जब)		रूप सादृश्य से)
कृष्णः	=कृष्ण	तव	=आपको
पक्षः	=पक्ष	रुचिपदम्	=परमप्रिय हैं (तब)
नव कुवलयम्	=नील कमल	मोहनश्याम-मूर्त्तौ	=सम्मोहनकारी श्याम विग्रह
कृष्णसारः	=कृष्ण सार मृग		
तमालः	=तमाल तरु	कृष्णे	=श्रीकृष्ण के प्रति
नीलाम्भोदः	=नील नीरद तथा	तव	=आपकी
नामरूपैःच	=(कृष्ण) नाम तथा कृष्णवर्णवाली	विमुखता	=प्रतिकूलता
		कस्मात्	=क्यों है? असंगत है
कृष्णा	=यमुना (यह सब प्रियतम के नाम-	इति उक्त्वा	=ऐसा कह कर (मैं)
		त्वाम्	=आपको

प्रहसित मुखीम्	=हास-विभूषित वदना	किन्तु	=क्या कभी
		पश्यामि	=देखूँगी

क्यों अस खीभ कृष्ण मोहन सों ?
हे राधे ! प्रिय शब्द निम्न तुम चहति सुनति मोदन सों।
कृष्ण पक्ष अरु कृष्ण सनेही कृष्ण कमल-मृग-बादर।
कृष्ण तमाल कलिन्दी कृष्णा सुनति सबै, सह आदर॥
अब जब कृष्ण निकट हैं काहे प्रकट विमुखता एती।
निज हित सुनत व्यंग यों प्रहसित पियहि अंक भरि लेती॥

लीलापांगतरंगितैरिव दिशो नीलोत्पलश्यामला
दोलायत्कनकाद्रिमंडलमिव व्योम स्तनैस्तन्वतीम् ।
उत्फुल्लस्थलपंकजामिव भुवं रासे पदन्यासतः
श्रीराधामनुधावतीं व्रजकिशोरीणां घटां भावये ॥८६॥

लीलापाङ्ग-	=विलासपूर्ण कटाक्ष	रासे	=रास में
तरङ्गितैः	की तरङ्गों से	पदन्यासतः	=पाद विन्यास कौशल से
दिशः	=दिशाओं को	भुवम्	=पृथ्वी को
इव	=मानों	इव	=मानो
नीलोत्पलश्यामलाम्	=नील कमल के समान श्यामल	उत्फुल्लस्थल	=प्रफुल्लित स्थल
तन्वतीम्	=आभासित करती हुई (और)	पङ्कजाम्	=कमलमयी (तन्वतीम्=बनाती हुई)
स्तनैः	=कुचों द्वारा	श्रीराधाम्	—श्रीराधा का
दोलायत्कनकाद्रि	=कम्पायमान सुमेरु	अनुधावतीम्	=अनुगमन करने वाली
मण्डलमिव	=मण्डल से पूर्ण मानो	व्रजकिशोरीणां	=व्रजकिशोरियों की
व्योम	=आकाश को करती	घटाम्	उमड़ती हुई मेघमाला की
(तन्वतीम्)	हुई	भावये	=भावना करता हूँ

राधा अनुगत ब्रज-नागरि जे ।
तिनहीं को, उर भाव राखिहौं; सबहिन सौं आगरि ते ॥
जिनकी दृष्टि कटाक्ष अवधि लोला सब दिशा विकासी ।
नील कमल की प्रभा श्यामता अति कमनी आभासी ॥
कुच मण्डल चल कनक पर्वताकार उदित मनु नभ में ।
नृत्य रास गति पाद थलकमल शोभित निजहित छवि में ॥

दृशौ त्वयि रसांबुधौ मधुरमीनवद्भ्राम्यतः
स्तनौ त्वयि सुधासरस्यहह चक्रवाकाविव ।
मुखं सुरतरंगिणि त्वयि विकासि हेमांबुजं
मिलंतु मयि राधिके तव कृपातरंगच्छटाः ॥९०॥

राधिके !	=हे श्री राधिके !	सुरतरङ्गिणि	=हे सुरसरिता रूपिणि !
रसाम्बुधौ	=रससमुद्र के समान	त्वयि	=आपके (श्रीविग्रह में)
त्वयि	=आपके (इस श्री-विग्रह में)	मुखम्	=मुख मानो
दृशौ	=दोनों नेत्र	विलासि	=प्रफुल्लित
मधुर	=चञ्चल	हेमाम्बुजम्	=स्वर्ण कमलवत् (शोभित) है
मीनवत्	=मीन की तरह	तव	=आपकी
भ्राम्यतः	=कलोल कर रहे हैं	कृपा	=कृपा-रूप
अहह !!	=आश्चर्य्यमय	तरङ्गच्छटाः	=तरङ्ग-परम्परायें
सुधा सरसि	=सुधा सरोवर रूप	मयि	=मुझे
त्वयि	=आपके (श्रीविग्रह में	मिलन्तु	=प्राप्त हों ।
स्तनौ	=कुच युगल		
चक्रवाकौ	=चकवा-चकवी की		
इव	=तरह (सुशोभित हैं		

कृपा तरङ्ग छटा कहुँ पाऊँ ।
अहो राधिके ! श्री तनु तुव रस महा सिन्धु उर ध्याऊँ ॥

तिहि सागर महँ युगल नयन जनु मीन कलोलत दोऊ।
कुच युग चक्रवाक जनु विहरत सुधा सरित वपु सोऊ॥
हे हे सुरतरङ्गिणि! तुव मुख कनक कमल सम विकस्यौ।
निजहित उर रस रूप तरंगनि भरी बहुत जब निकस्यौ॥

कांताढ्याश्चर्यकांताकुलमणिकमलाकोटिकाम्यैकपादां-
भोजभ्राजन्नखेंदुच्छविलवविभवा काप्यगम्या किशोरी।
उन्मर्य्यादप्रवृद्धप्रणयरसमहांभोधिगंभीरलीला
माधुर्योज्जृम्भितांगी मयि किमपि कृपारंगमंगीकरोतु ॥६१॥

एक पादाम्भोज	=(जिनके) अनुपम	गम्भीर लीला	=रहस्यपूर्ण लीलाओं की
भ्राजन्नखेन्दु-	देदीप्यमाननख	माधुर्य्य	=माधुरी से
च्छवि	चन्द्र छटा का	उज्जृम्भिताङ्गी	=प्रफुल्लित अंगों वाली
लव विभवा	=लेशमात्र वैभव भी	अगम्या	=सब से (ब्रह्मादि देव तथा वेद वेदांगों से) अगम्य
कान्ताढ्य	=कान्त से युक्त	कापि	=कोई अनिवर्चनीय
आश्चर्य्य	=आश्चर्य्य रूपी	किशोरी	=किशोरी
कान्ता	=ललना	मयि	=मुझ पर
कुलमणि कमला	=समूह की शिरो-	किमपि	=किसी अपूर्व्व
कोटि काम्य	मणि रूप कोटि कोटि कमलाओं से वाञ्छनीय है (तथा)	कृपा	=कृपा
उन्मर्य्याद	=असीम रूप से	रङ्गम्	=रस की
प्रवृद्ध	=बढ़े हुए	अङ्गी करोतु	=वर्षा करें
प्रणयरस	=अनुराग रस के		
महाम्भोधि	=महासागर की		

(१) इस श्लोक के प्रथम पादका अन्वय सीधा होने पर भी सुगमत के लिये परिवर्तन किया है :

आढ्य कान्त धन सों मम स्वामिनि ।
अखिल अनूपम अद्भुत युवती तिनकी कुलमणि भामिनि ॥
जाके चरण कमल नख कों इक अणु अस प्रभा प्रकासी ।
कोटि कोटि कमला वैभव निज मन वञ्छें उल्लासी ॥
जिनको श्री अँग रूप प्रणय रस महा सिन्धु सम जानो ।
सतत असीम प्रवर्धित बहु लीला माधुर्य्य समानो ॥
अति अगम्य सोई नवल किशोरी मो पै निज रस ढोरें ।
इहि विधि स्वीकृत कर किरपा रस निजहित ता महँ बोरें ॥

कलिंदगिरिनंदिनीपुलिनमालतीमंदिरे
प्रविष्टवनमालिनाललितकेलिलोलीकृते
प्रतिक्षणचमत्कृताद्भुतरसैकलीलानिधे
विधेहि मयि राधिके निजकृपातरंगच्छटाम् ॥ ९२ ॥

कलिन्दगिरि नन्दिनी	=यमुना	चमत्कृत	=उद्दीपन को प्राप्त,
पुलिन	=तट पर	अद्भुत रसैक	=एक मात्र विचित्र रस
मालती	=मालती लता के		
मन्दिरे	=कुञ्ज भवन में	लीलानिधे !	=लीला की निधान
प्रविष्ट वनमा-	=विराजित वन-		
लिना	=माली द्वारा	राधिके !	=हे श्रीराधिके !
ललित	=मनोज्ञ	मयि	=मुझ पर
केलि	=विहार में	निज	=अपनी
लोलीकृते	=चञ्चल की हुई एवं	कृपा	=कृपा
		तरङ्गच्छटाम्	=लहरी की
प्रतिक्षण	=प्रतिक्षण	विधेहि	=बरसाओ

कृपा तरङ्ग छटा विस्तारो।
हे राधे ! दासी उर सींचों घटें न तनिक तिहारौ ।।
यमुना पुलिन मालती के मंदिर मँह संग तिहारे।
करि प्रवेश मथि चञ्चल कीने अग अंग तुव प्यारे ॥
तातें क्षण क्षण अद्भुत लीला रस सागर उमहृतु है।
ताकी केवल इक तरङ्ग किरप निजहित चहियतु है॥

यस्यास्ते बत किंकरीषु बहुशश्चाटूनि वृन्दाटवी
कंदर्पः कुरुते तवैव किमपि प्रेप्सुः प्रसादोत्सवम्
सांद्रानंदघनानुरागलहरीनिस्यन्दिपादांबुजद्वन्द्वे
श्रीवृषभानुनंदिनि सदा वंदे तव श्रीपदम् ॥९३॥

सान्द्रानन्द	=घनीभूत आनंद की	वृन्दाटवी	=श्रीवृन्दावन के
घनानुराग लहरी	=निबिड़ अनुराग लहरियों के	कन्दर्पः	=दिव्य मन्मथ (श्री लाल जी
निस्यन्दि	=निर्भर युक्त	यस्यास्ते	=जिन आपकी
पादाम्बुजद्वन्द्वे!	=युग चरण कमल वाली	किङ्करीषु	=दासियों की
श्री वृषभानु	=हे श्री वृषभानु	बहुशः	=विविध प्रकार से
नन्दिनि	=कुमारी !	चाटूनि	=अनुनय विनय
तवैव	=एक मात्र आप के	कुरुते	=करते रहते हैं, (ऐसे)
किमपि	=किसी अनिर्वचनीय	तव	=आप के
प्रसादोत्सवम्	=रसोत्सव रूप प्रसाद के	श्री पदम्	=महिमाशाली चरणों की
प्रेप्सुः	=इच्छुक होकर	सदा	=निरन्तर
		वन्दे	=वन्दना करता हूँ

वन्दों तुम पद भानुसुता ।
जे पद अम्बुज सतत स्रवत हैं निबिड़ानन्द सुधा ।।
जे अनुराग तरङ्ग विलासी मोहैं श्याम सुजान ।
श्री वन मन्मथ तदपि चहै उत्सव प्रसाद हित मान ।।
यहि लगि तुव किंकरि समूह की करत चाटुता हर्षित ।
निजहित महिम अगाध कहै को सरस सदा आकर्षित ।।

यज्जापः सकृदेव गोकुलपतेराकर्षकस्तत्क्षणा-
द्यत्र प्रेमवतां समस्तपुरुषार्थेषु स्फुरेत्तुच्छता ।
यन्नामाङ्कितमन्त्रजापनपरः प्रीत्या स्वयंमाधवः
श्रीकृष्णोपि तदद्भुतं स्फुरतु मे राधेति वर्णद्वयम् ।।९४।।

सकृदेव	=एक बार भी	माधवः	=कान्त
यज्जापः	=जिसका जाप	श्री कृष्णोऽपि	=श्रीलालजी भी
गोकुलपतेः	=गोकुलेन्द्र (श्री कृष्ण) का	स्वयम्	=आप
तत्क्षणात्	=उसी (जपते) क्षण	प्रीत्या	=प्रीति पूर्वक
आकर्षकः	=आकर्षक(वशीकारक होता है	तत्	=जिस
यत्र	=जिस में	नामाङ्कित	=नाम से अङ्कित
प्रेमवताम्	=प्रेम करने वालों को	मन्त्र	=मन्त्र का
समस्त	=अखिल (चतुर्विध)	जापनपरः	=तत्परता से जप करते हैं,
पुरुषार्थेषु	=पुरुषार्थों के प्रति	राधा	="राधा"
तुच्छता	=लघुता	इति	=ऐसा
स्फुरेत्	=प्रतीत होती है	तत्	=वह
		अद्भुतम्	=अनुपम
		वर्णद्वयम्	=अक्षर युगल
		मे (हृदि)	=मेरे हृदय में
		स्फुरतु	=स्फुरित हो

फुरें उर राधा सुठि द्वै अक्षर ।। टेक ।।
जिन कों जपत स्वयं गोकुल पति आकर्षित ह्वै तत्क्षण ।
यह हैं अक्षर बीज मंत्र हित शोभा देत विलक्षण ।।
गनैं तुच्छ चारहुं पुरुषारथ सुमिरत रसिक प्रतिक्षण ।
माधव कृष्णहुँ जपत मंत्र में प्रीति विवश प्रिय दक्षिण ।।
यह द्वै अक्षर राधा अमृत निधि है सुनौ विचक्षण ।
निजहित दम्पति रस चहौ सुमिरौ भामिनी भाव अनुक्षण ।।

कालिंदीतटकुञ्जमन्दिरगतो योगींद्रवद्यत्पद
ज्योतिर्ध्यानपरः सदा जपति यां प्रेमाश्रुपूर्णो हरिः ।
केनाप्यद्भुतमुल्लसद्रतिरसानन्देन संमोहिता
सा राधेति सदा हृदि स्फुरतु मे विद्या परा द्व्यक्षरा।।६५।

कालिन्दी	=यमुना
तट	=तटवर्ती
कुञ्जमन्दिर	=निकुञ्ज भवन में
गतः	=विराज कर
प्रेमाश्रुपूर्णः	=प्रेम अश्रुओं से भीजे
हरिः	=श्री लाल जी
योगीन्द्रवत्	=(शिवादि) योगीश्वरों की तरह
यत्पद	=जिनकी पद
ज्योतिर्ध्यान परः	=ज्योति के ध्यान में तत्पर होकर
सदा	=निरन्तर
याम्	=जिनको
जपति	=जपते रहते हैं तथा
अद्भुतम्	=अनुपम रूप से
केनापि	=किसी अनिर्वचनीय
उल्लसत्	=उल्लास से परिपूर्ण
रति रसानन्देन	=विहार रस की छकन से
सम्मोहिता	=सम्मोहन भाव को प्राप्त
सा	=वह
राधा	="राधा"
इति	=यह

द्वय क्षरा	=दो अक्षर वाली	हृदि	=हृदय में
पराविद्या	=वेदातीत विद्या	स्फुरतु	=स्फुरतु हो।
मे	=मेरे		

"राधा" विद्या अहै परात्पर ।
पद नख ज्योती उर धरि श्री हरि नाम जपत जिह्वा पर। ।
गद्गद स्वर अश्रुनि पूरित दृग कुञ्जनि यमुना तीरे ।
रहि एकान्तिक ध्यान धरत हरि योगीश्वर सम धीरे ॥
सो उल्लास समन्वित रति रस आनन्दमयि श्री राधा ।
निजोहित मुग्ध मनोहर उर नित फुरै मेटि सब बाधा ॥

देवानामथ भक्तमुक्तसुहृदामत्यन्तदूरं च यत्-
प्रेमानंदरसं महासुखकरं चोच्चारितं प्रेमतः ।
प्रेम्णाकर्णयते जपत्यथ मुदा गायत्यथालिष्वयं
जल्पत्यश्रुमुखो हरिस्तदमृतं राधेति मे जीवनम् ॥९६॥

यत्	=जो	च	=तथा
देवानाम्	=देवताओं के लिए	प्रेमतः	प्रेम पूर्वक
अथ	=तथा	उच्चारितम्	=उच्चारण करने पर
भक्त मुक्त	=भक्तों-मुक्त पुरुषों	महा सुखकरम्	=अतिशय सुख-दायक है;(तथा
सुहृदाम्	=और स्वजनों के लिये	अश्रुमुखः	=अश्रु सिक्त बदन
अत्यन्त	=बहुत ही	अयम्	=(स्वायं) यह
दूरम्	=दूर (अप्राप्य) है,	हरिः	=श्रीलाल जी श्री
		प्रेम्णा	प्रेम विवश होकर
प्रेमानन्द	=प्रेमानन्द के	आकर्णयते	=सुनते हैं
रसम्	=रस से पूर्ण है	जपति	=जपते हैं

अथ	=और
...लिषु	=सखियों के मध्य में
मुदा	=हर्षित होकर
गायति	=कीर्त्तन करते हैं
तत्	=वह
राधेति	=राधा नाम रूपी
अमृतम्	=अमृत
मे	=मेरा
जीवनम्	=जीवन (प्राण) है

राधा नामामृत मम जीवन ।
जाकी महिमा प्रेम सुधानिधि वर्णित श्री हित श्री वन ॥
जो अति अगम देव भक्तन मुक्तन अरु श्याम स्वजन कों ।
मधुरानन्द रूप रस दाता जपत सुखद रसिकन कों ॥
श्याम स्वयं जप करत श्रवण सुनि विह्वल तन सुधि भूले ।
प्रेम अश्रुयुत सखियन सँग मिलि कीर्तत निजहित फूले ॥

या वाराधयति प्रियं व्रजमणिं प्रौढानुरागोत्सवैः
संसिध्यन्ति यदाश्रयेण हि परं गोविन्दसख्युत्सुकाः ।
यत्सिद्धिःपरमापदैकरसवत्याराधनात्तो नु सा
श्रीराधा श्रुतिमौलिशेखरलतानाम्नी मम प्रीयताम् ॥९७

या वा	=जो भली भांति
प्रौढानुरागोत्सवैः	=प्रगाढ अनुराग के उत्सव से
प्रियम्	=निज प्रियतम
व्रजमणिम्	=व्रजमणि को
आराधयति	=प्रसन्न करती है
परम्	=एक मात्र
यत्	जिनके
आश्रयेणाहि	=आश्रय लेने पर ही
गोविन्द	=श्री लालजी के
सख्युत्सुकाः	=सखी भाव में उत्कण्ठित (व्यक्ति)
संसिध्यन्ति	=अभीष्ट सिद्धि लाभ करते हैं
आराधनात्तोनु	=आराधना तत्पर व्यक्ति

	में ही		लाल जी के लिये
यत्	=जो	लता	=लता रूपिणी
सिद्धिः	=सफलता	अनाम्नी	=अनुपम नाम वाली
परमापदा	=परम अनुपम	सा	=वे
एकरसवती	=मधुरोज्ज्वल रसमय रूप से प्रकट होती है	श्री राधा	=श्रीराधा जी
		मम	=मुझ पर
		प्रीयताम्	=प्रसन्न हों
श्रुतिमौलिशेखर	=श्रुति प्रतिपाद्य		

मो पै द्रवहु श्रुति मौलि शेखर लता ।
श्री राधे ! होवहु प्रसन्न तुम मम जीवन की सता ।।
प्रियतम व्रजमणि तोहि भजे तुमहूं प्रियतम आराधौ ।
श्री गोविन्द सख्य रस भावुक तुम कारज तिन साधौ ।।
यों प्रकृष्ट अनुराग परस्पर करि रसिकन पथ शोधौ ।
निजहित लहै परम पद पथ सोइ रस मय स्मृद्धि सो धौं ।।

गात्रे कोटितडिच्छवि प्रविततानन्दच्छवि श्रीमुखे
बिंबोष्ठे नवविद्रुमच्छवि करे सत्पल्लवैकच्छवि ।
हेमांभोरुहकुड्मलच्छवि कुचद्वन्द्वेऽरविंदेक्षणं
वंदेतन्नवकुंजकेलिमधुरं राधाभिधानं महः ।। ९८ ।।

(यत्)	=(जिसके)	आनन्दच्छवि	=आनन्द की सुषमा है,
गात्रे	=अङ्ग में	बिम्बोष्ठे	=बिम्बफल सम ओष्ठ में
कोटि	=कोटि-कोटि	नव विद्रुमच्छवि	=नवीन मूँगे की प्रभा है,
तडिच्छवि	=विद्युत् की कांति है,	करे	=हाथ में
श्री मुखे	श्री मुख में		
प्रवितत	=विस्तृत		

सत्पल्लवैकच्छवि	=सुन्दर कोमल पल्लव की शोभा है,	नवकुञ्जकेलि मधुरम्	=नूतन कुञ्ज विहार से मनोहर
कुचद्वन्द्वे	=कुच युगल में	राधाभिधानम्	=राधा नामक
हेमाम्भोरुह	=स्वर्णकमल की	तत्	=उस
कुड्मलच्छवि	=कलियों की कमनीयता है,	महः	=तेज को (मैं)
अरविन्देक्षणम्	=कमल समान नेत्र वाले (तथा)	वन्दे	=नमस्कार करता हूँ।

वन्दौं राधा छविमय ज्योति।
मधुर कुञ्ज नव केलि परायण दृग अरविंद उदोति॥
कोटि कोटि चपला छवि गातनि, विधु छवि प्रखरित आनन।
नव विद्रुम छवि विम्ब ओष्ठ, नव पल्लव छवि मृदु पानिन।
कुच युग कनक कमल कलियन छवि लसत सनेह सुपुञ्ज।
निजहित भजत सुछविमय स्वामिनी-भ्राजति नित्य निकुञ्ज॥

मुक्तापंक्तिप्रतिमदशना चारुबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा नवनवरसावर्त्तगंभीरनाभिः।
पीन श्रोणिस्तरुणिमसमुन्मेषलावण्यसिधु
वैदग्धीनां किमपि हृदयं नागरी पातु राधा॥९९॥

मुक्ता पंक्ति प्रतिम	=मोतियों की माला के समान	नवनवरसावर्त	=नूतनातिनूतन रसमय भँवर समान
दशना	=दशन वाली		
चारु	=सुन्दर	गम्भीरनाभिः	=गहरी नाभि वाली,
बिम्बाधरोष्ठी	=बिम्बाफल सम अधरोष्ठी,	पीनश्रोणिः	=स्थूल, नितम्बा
मध्येक्षामा	=कृशोदरी	तरुणिमसमुन्मेष	=विकसित यौवन

	के	हृदयम्	=सार सर्वस्व स्वरूपा
लावण्यसिन्धुः	=लावण्य की सागर स्वरूपा	नागरी	=नागरी
वैदग्धीनाम्	=चातुरी की	राधा	=श्री राधा (मेरी)
किमपि	=कोई अनिवर्चनीय	पातु	=रक्षा करें

पाहि पाहि राधा नागरिमनि ।
नव यौवन लावण्य सिन्धु सुठि परम विदग्ध तरुणि मणि स्वामिनि ।।
दन्तावलीं मनोहर मानों जलज माल लहकत अति कामनी ।
बिम्बाफल सम अधर मधुर अरु कटि अति क्षीन नाभि रस ह्रदनी ।।
भँवर परत जनु नव रस उफनत पृथुल नितम्ब देश अति रमनी ।
क्यों करि कहै अकथ मणि निज हित भई न है नहिं ह्वै है अवनी ।।

स्निग्धाकुंचितनीलकेशि विदलद्बिम्बोष्ठि चंद्रानने
खेलत्खंजनगंजनाक्षि रुचिमन्नासाग्रमुक्ताफले ।
पीनश्रोणि तनूदरि स्तनतटीवृत्तच्छटात्यद्भुते
राधे श्रीभुजवल्लिचारुवलये स्वं रूपमाविष्कुरु ।।१००।।

स्निग्ध	=चिकने	गञ्जनाक्षि !	पक्षी (के गर्व) को लज्जित करने वाले नेत्र वाली
आकुञ्चित नील-केशि	=घुँघराले काले केशों वाली !	रुचिमन्नासाग्र-मुक्ताफले !	=मनोहर बेसर वाली !
विदलद्बिम्बोष्ठि	=विकसित बिम्बफल सदृश अधरोष्ठ वाली !	पीनश्रोणि !	=स्थूल नितम्बे !
चन्द्रानने !	=चन्द्रमुखी !	तनूदरि !	=कृशोदरि !
खेलत् खञ्जन-	=चञ्चल खञ्जन	स्तनतटी-	=स्तन मण्डल

वृत्तच्छटाऽति-अद्भुते !	की वर्तुला-कार कान्ति से अनुपम शोभा वाली !	राधे	=हे श्री राधे !
श्री भुजवल्लि-चारु वलये !	=शोभाशाली =भुजलता में सुन्दर कङ्कण वाली !	स्वंरूपं	=(ऐसे) अपने रूप (माधुर्य्य) को
		आविष्कुरु	=प्रकट करो (अर्थात् मुझे दर्शन दो)

राधे ! सो निज रूप लखावहु ।। टेक ।।
कुञ्चित नील सचिक्कन केशी-अधर पक्व बिम्बाफल ।
आनन विधु खञ्जन मद गञ्जन नेत्र चारु अति चञ्चल ।।
मुक्ताफल नासाग्र सुशोभित अरु नितम्ब पृथु रमनी ।
वर्तुल अतुल छटा कुच निर्जहित भुज कङ्कनयुत कमनी ।।

लज्जांत: पटमारचय्य रचितस्मायप्रसूनांजलौ
राधांगे नवरंगधाम्नि ललितप्रस्तावने यौवने ।
श्रोणीहेमवरासने स्मरनृपेणाध्यासिते मोहन
लीलापांगविचित्रतांडवकलापांडित्यमुन्मीलति ।। १०१ ।।

नवरङ्ग	=नूतन (नाट्य) रङ्ग	रचितस्माय प्रसूनाञ्जलौ	=मुस्कान रूप पुष्पाञ्जली बिखेर कर
धाम्नि	=भूमि के समान		
राधाङ्गे	=श्री राधा के अंग में	यौवने	=यौवन की
		ललित	=सुन्दर
लज्जान्त:	=लज्जा रूप	प्रस्तावने	=भूमि में
पटमारचय्य	=जवनिका को डाल कर	स्मरनृपेण	=मदन महीप द्वारा,

श्रोणी =नितम्ब रूप
हेमवरासने =श्रेष्ठ स्वर्ण सिंहासन के ऊपर,
अध्यासिते स्थित होने पर
मोहनम् =सर्व मोहन कारी
लीलापाङ्ग =लीलापूर्ण

कटाच्च की तथा
विचित्र =अद्भुत
ताण्डवकला =नृत्य विद्या की
पाण्डित्यम् =चातुरी का
उन्मीलति =विकास हो रहा है

राधा तन अद्भुत रस झाँकी।
लज्जा पट की ओट हसन मृदु वर्षा पुष्पाञ्जुलि की॥
सो रचना कैशोर वयस अतिल्लित प्रकाश स्वरूपा।
मदन महीप स्वर्ण सिंघासन चारु नितम्ब अनूपा॥
श्री तनु जनु समराङ्गण भूमी ताण्डव कला प्रकासी।
तुव लीलामय वक्ष कटाक्षनि सुमिरत निजहित दासी॥

सा लावण्यचमत्कृतिर्नववयोरूपं च तन्मोहनं
तत्तत्केलिकलाविलासलहरीचातुर्यमाश्चर्यभूः।
नो किंचित्कृतमेव यत्र न नुतिर्नागो न वा संभ्रमो
राधामाधवयोः स कोपि सहजः प्रेमोत्सवः पातु वः १०२।

(यत्र) =(जहाँ)
सा =वह
लावण्य =लावण्य का
चमत्कृतिः =चमत्कार (वर्द्धन)
तत् =वह
नव वयः =नूतन अवस्था

च =और
तत् =वह
मोहनम् =मोहित करने वाला
रूपम् =रूप
तत्तत् और वह
आश्चर्य्यभूः =आश्चर्य्यजनक

केलि कला	=विहार कलाओं के	न वा	=तथा न
विलास लहरी	=विलास तरङ्गों की	सम्भ्रमः	=आदर ही है,
		सः	=(ऐसा) वह
		राधामाधवयोः	=राधा माधव (युगल) का
चातुर्यम्	=कुशलता है, (तथा)	कोपि	=कोई अनिर्वचनीय
यत्र	=जहाँ		
नोकिञ्चित्	=न लेश भर भी	सहजः	=स्वाभाविक
कृतम् एव	=बनावट ही है,	प्रेमोत्सवः	=प्रेमोत्सव
न नतिः	=न स्तुति है,	वः पातु	=तुम्हारी रक्षा करे
न आगः	=न अपराध है,		

प्रेमोत्सव श्रीराधा माधव।
भकहु सहज भागवत रसिकन होइ सहाय भजन हित साधव॥
अति अनूप लावण्य प्रवाहित नव तव मोहन रूपा।
केली कला विलास चतुरता उठत तरङ्ग अनूपा॥
उद्भव सब आश्चर्य तहाँ नहिं गन्ध स्वार्थ सुख लेश।
नांहि स्तुति अपराध रु सम्भ्रम निजहित नांहि निमेष॥

येषां प्रेक्षां वितरति नवोदारगाढानुरागा
न्मेघश्यामो मधुरमधुरानंदमूर्त्तिर्मुकुंदः।
वृन्दाटव्यां सुमहिमचमत्कारकारीण्यहो किं
तानि प्रेक्षेऽद्भुतरसनिधानानि राधापदानि॥ १०३॥

अहो!	=आश्चर्य है		आनन्द
मधुरमधुरानन्द	=मधुरातिमधुर	मूर्त्तिः	=विग्रह

मेघश्यामः	=घनश्यामल	चमत्कार कारीणि	=गौरव से युक्त
मुकुन्दः	=श्रीलालजी	अद्भुत	=विचित्र
नवोदार	=नूतन उदार (असीम)	रस निधानानि	=रस के एक मात्र निधान
गाढानुरागत्	=प्रगाढ़ अनुराग से	तानि	=उन
येषाम्	=जिनके लिये	राधा	=श्रीराधा जी के
प्रेक्षाम्	=अपनी चारु चितवन का	पदानि	=पद चिन्हों को
वितरति	=दान करते हैं,	किम्	=क्या कभी
सुमहिम	=अतिशय महिमा का	वृन्दाटव्याम्	=श्री वृन्दावन में (मैं)
		प्रेक्षे	=देखूँगी !

पदम पद श्री राधा कब दरसें।
जिन के दरसन हित घनश्याम मुकुन्द पियासे तरसें॥
नव उदार अनुराग पूर्ण उर मधुरानन्द स्वरूपा।
क्षच क्षण यहि अभिलाष विर्वधित दरसन चरण अनूपा॥
जिन पद-पंकज की अति महिमा वृदाविपिन प्रकाशित।
अद्भुत रसनिधि निजहित किरपा हो हिय सदा विकासित॥

बलान्नीत्वा तल्पं किमपि परिरभ्याधरसुधां
निपीय प्रोल्लिख्य प्रखरनखरेण स्तनभरम्।
ततो नीवीं न्यस्ते रसिकमणिना त्वत्करधृते
कदा कुंजच्छिद्रे भवतु मम राधेनुनयनम् ॥१०४॥

राधे !	=हे श्रीराधे !	तल्पम्	=कुञ्ज शय्या पर
बलात्	=बल पूर्वक	नीत्वा	=ले जाकर

किमपि	=किसी अभूत पूर्व रूप से	नीवीम्	=नीवी बन्धन का
परिरभ्य	=आलिङ्गन करके	रसिक मणिना	=रसिक शेखर (श्रीलाल जी) द्वारा
अधरसुधाम्	=अधरामृत		
निपीय	=पान करके (एवं)	न्यस्ते	=मोचन करने पर
प्रखर	=तीक्ष्ण		
नखरेण	=नखाग्र से	कुञ्जच्छिद्रे	=कुञ्ज रन्ध्रों में
स्तनभरम्	=स्तन मण्डलको	कदानु	=क्या कभी
प्रोल्लिख्य	=विक्षत करके,	मम	=मेरे
ततः	=तदनन्तर	नयनम्	=नयन युगल
त्वत्	=आपके	भवतु	=लगेंगे (इस छवि को निखरेंगे)
करधृते	=कर कमल से गृहीत		

कुञ्ज रन्ध्र लगि कब यों निरखों।
राधे रसिकराय प्रीतम के वश शय्या पर परखों॥
अद्भुत रस वश परिभंत मिस अधर सुधा करि पानें।
तुव कुच नख रेखाङ्कित करि पिय धन्य धन्य निज जानें॥
यद्यपि नेति नेति युग कर कमलन सों आप निवारें।
पै निजहित प्यारे तुव नीवी बन्धन हठ करि टारें॥

करं ते पत्रालिं किमपि कुचयोः कर्त्तुमुचितं,
पदं ते कुंजेषु प्रियमभिसरंत्या अभिसृतौ।
दृशौ कुञ्जच्छिद्रे स्तव निभृतकेलिं कलयितुं,
यदा वीक्षे राधे तदपि भविता किं शुभदिनम् ॥१०५॥

राधे!	=हे श्रीराधे! (मैं)	ते	=आपके
		कुचयोः	=कुच युगल पर

किमपि =कुछ अनुपम
पत्रालिम् =पत्र रचना
कर्तुम् =करने के
उचितम् =योग्य
करम् =अपने हाथों को (तथा)
कुञ्जेषु =कुञ्जों में
प्रियम् =प्रियतम के प्रति
अभिसरन्त्याः =अभिसारकरती हुई
ते =आपके (उस)
अभिसृतौ =अभिसार में
पदम् =अपने चरणों को

कुञ्जच्छिद्रैः =कुञ्ज रन्ध्रों से
तव =आपकी
निभृत =रहस्य
केलि =क्रीड़ा
कलयितुम् =देखने के लिये
दृशौ =अपने नेत्रोंको
यदा =जब (अन्तः वपु से)
वीक्षे =देखूँगी
किम् =क्या कभी
तदपि =ऐसा भी
शुभदिनम् =मङ्गल दिवस
भविता =होगा

सो दिन कब ह्वै है बड़ भागी।
करनि रचौं अनुपम पत्रावलि तव कुच तट रस पागी॥
पगनि संग तुव कुञ्ज चलौंगी प्रियतम पै अभिसारिणि।
अनुगत कुञ्ज रन्ध्र दृग निरखौं निज हित केलि प्रसारिणि॥

रहोगोष्ठीं श्रोतुं तव निजविटेन्द्रेण ललितां,
करे धृत्वा त्वां वा नवरमणतल्पे घटयितुम्।
रतामर्दस्रस्तं कचभरमथो संयमयितुं
विदध्याः श्रीराधे मम किमधिकारोत्सवरसम्॥१०६॥

राधे =हे श्रीराधे!
तव =आपके
निज =अपने

विटेन्द्रेण =लम्पट प्रियतम के साथ

...लिताम्	=मधुर	रतामर्द	=रति के आमर्दन से
रहो	=रहस्यमयी	स्रस्तम्	=शिथिल (बिखरे हुये)
गोष्ठीम्	=गोष्ठी (वार्तालाप) को	कच भरम्	=केश पाश को
श्रोतुम्	=सुनने के लिये	संयमयितुम्	=सँवार कर बाँधने के लिये,
वा	=तथा	किम्	=क्या (आप)
त्वाम्	=आपका	मम	=मेरे लिये
करे	=कर कमल	अधिकारोत्सव रसम्	=(कैंकर्य्य रूप) अधिकार पूर्ण उत्सवमय रस का
धृत्वा	=पकड़ कर	विदध्याः	=विधान करोगी ?
रमण	=प्यारे की		
नव तल्पे	=नूतन रचित शय्या पर		
घटयितुम्	=सम्मिलन कराने के लिये		
अथो	=और		

कबहुं मुहि दीजे अस अधिकार ।
श्री राधे ! जाचौं किरपा बल जानौं सहज उदार ॥
रस लम्पट पिय सो सुनु तुमरो कछुक रहस्यालाप ॥
कर सों कर गहि रमण सेज नव पहुँचाऊ तहं आप ॥
केलि समय बिखरे केशनि तव निज कर देऊं संवार ।
ऐसो रस उत्सव निजहित के जीवन को फल सार ॥

वृन्दाटव्यां नवनवरसानंदपुंजे निकुञ्जे,
गुंजद्भृङ्गीकुलमुखरिते मंजुमंजुप्रहासैः ।
अन्योन्यक्षेपणनिचयनप्राप्तसंगोपनाद्यैः,
क्रीडज्जीयाद्रसिकमिथुनं क्लृप्तकेलीकदम्बम् ॥१०७॥

वृन्दाटव्याम्	=वृन्दावन में		फेंकना,
गुञ्जद्भृङ्गीकुल	=गुञ्जार करती हुई भ्रमरी समूह से	निचयन	=ग्रहण करना,
		प्राप्त	=सँभालना (तथा)
मुखरिते	=शब्दायमान	सङ्गोपनाद्यैः	=छिपा लेना आदि
नवनव	=नूतनातिनूतन		
रसानन्दपुञ्जे	=रसमय आनंद से पूर्ण	क्लृप्तकेली कदम्बम्	=क्रियाओं से केलि समूह की रचना कर,
निकुञ्जे	=निकुञ्ज में		
मञ्जु मञ्जु	=मधुरातिमधुर		
प्रहासैः	=परिहास के द्वारा	क्रीडत्	=खेलते हुए
		रसिक मिथुनम्	=रसिक युगल
अन्योन्य	=परस्पर	जीयात्	=सर्वोत्कर्ष को प्राप्त हों
क्षेपण	=(कन्दुक)		

जै जै केलि परायण दम्पति ।

रसानन्द नव कुञ्ज पुञ्ज वृन्दावन की जो संपति ॥

जहँ भृङ्गीकुल गुञ्जत इक रस मुखरित मनु उल्लास ।

रसिक मिथुन कन्दुक फेंकत करि ग्रहण दुरावत तास ॥

इहि विधि विविध विचित्र केलि कल करत हास परिहास ।

निजहित प्रभु यों लीला गाई श्री वन मधि रस रासि ॥

रूपं शारदचंद्रकोटिवदने धम्मिल्लमल्लीस्रजा-
मामोदैर्विकलीकृतालिपटले राधे कदा तेऽद्भुतम् ।
ग्रैवेयोज्ज्वलकंबुकंठिमृदुदोर्वल्लीचलत्कंकणे
वीक्षे पट्टदुकूलवासिनि रणन्मंजीरपादांबुजे ॥१०८॥

शारदचन्द्र कोटि वदने	=शरद ऋतु के कोटि चन्द्र तुल्य मुख वाली !
धम्मिलमल्ली-स्रजाम्	=केशपाश में गुम्फित मल्ली माला के
आमोदैः	=परिमल से
विकली कृतालि-पटले	=भ्रमर समूह को विकल करने वाली !
ग्रैवेयोज्ज्वल कम्बु कण्ठि	=कण्ठाभरणों से दीप्त शंख समान कण्ठ वाली !

मृदुदोर्वल्ली चलत्कङ्कणे	=कोमल भुजलता में शोभित चञ्चल कङ्कणों वाली !
पट्टदुकूल वासिनि	=पाटम्बर परिधान वाली !
रणन्मञ्जीर पादाम्बुजे	=ध्वनित नूपुर =से भूषित चरण कमले !
राधे	=हे श्री राधे !
ते	=आपके
अद्भुतम्	=अनुपम
रूपम्	=रूप को
कदा	=कब
वीक्षे	=देखूँगी ?

कब निरखौं तुव अद्भुत रूप ।
श्री राधे ! पद कमल नूपुरनि झङ्कृत सज्यो अनूप ।।
हे हे शरद ऋतु कोटि कोटि चन्द्रानन शोभी बाला ।
मल्लिमाल गूंथित कच विलुलित करैं विकल अलिमाला ।।
कोमल भुजवल्ली कङ्कण चल शोभित पट्ट दुकूले ।
उज्ज्वल ग्रीव शङ्ख सम भूषण भूषित निर्जाहृत मूले ।।

इतो भयमितस्त्रपा कुलमितो यशः श्रीरितो
हिनस्त्यखिलशृङ्खलामपि सखीनिवासस्त्वया ।
सगद्गदमुदीरितं सुबहुमोहनाकांक्षया
कथंकथमयीश्वरि प्रहसितैः कदास्मेऽचसे ।। १०९ ।।

सखी निवासः	=सखी वेष्टित श्रीलाल जी	मोहन	=मोहन की
इतः	=इधर	आकांक्षया	=आकांक्षाओं से युक्त
भयम्	=भय	त्वया	=आप के
इतः	=इधर	सगद्गदम्	=गद्गद
त्रपा	=लज्जा.	उदीरितम्	=वचन(सुनकर)
इतः	=एक ओर	अयि ईश्वरि !	=हे स्वामिनि
कुलम्	=कुल(मर्य्यादा)	कथं कथम्	=यह कैसे है कैसे है ?
इतः	=एक ओर	इति	=इस प्रकार
यशः श्रीः	=यश सम्पत्ति (एवं)	प्रहसितैः	=परिहास पूर्व्वक
अखिल	=समस्त	मया	=मैं
शृङ्खलामपि	=लोक मर्य्यादाओं को भी	त्वम्	=आप से
हिनस्ति	=त्याग देते हैं	कदा	=कब
इति	=इस प्रकार	आम्रेडयसे	=बार बार पूछूँगी ?
सुबहु	=अतिशय		

स्वामिनि तुम सों सुनि व अघाऊँ ।
सखी मौलि श्री मोहन हिय बहु आश मिलन तुव पाऊँ ॥
जिहि कारण भय लाज मान कुल यश बन्धन सब त्याग ।
अखिल शृङ्खला गनैं न तृन सम ऐसो तुम प्रति राग ।
यह सुनि गद्गद वचनावलि हों कछुक हँसन मुख आनि ।
प्रश्न करोंगी "यह कैसे कैसे है" ? निजहित बानि ॥

श्यामे चाटुशतानि कुर्वति सहालापान्प्रणेत्री मया
गृह्णाने च दुकूलपल्लवमहो हुंकृत्य मां द्रक्ष्यसि ।
बिभ्राणे भुजवल्लिमुल्लसितया रोमस्रजालंकृतां
दृष्ट्वा त्वां रसलीनमूर्त्तिमथ किं पश्यामि हास्यं ततः ॥११०॥

श्यामे	=श्री लालजी के	द्रक्ष्यसि	=देखोगी,
चाटुरुतानि	=अनुनय-विनय	अथ	=एवं (लाल जी के द्वारा)
कुर्वति	करने पर (आप)	भुजवल्लीम्	=भुजलता के
मया	=मेरे	विभ्राणे	=ग्रहण करने पर
सह	=साथ		
आलापान्	=बात चीत	उल्लसितया	=विकसित
प्रणेत्री	=करने लगोगी	रोमस्रजालंकृताम्	=रोमावली विभूषित
च अहो !	=और यह आश्चर्य्य कि (उनके द्वारा)	रसलीन मूर्त्तिम्	=रस निमग्न विग्रह
दुकूल पल्लवम्	=वस्त्र के छोर को	त्वाम्	=आपको
		दृष्ट्वा	=देखकर
गृह्णाने	=पकड़े जाने पर (उनकी ओर	ततः	=तदनन्तर
		किम्	=क्या (मैं आप के)
हुंकृत्य	=हुङ्कार करके	हास्यम्	=हास्य को
माम्	=मेरी ओर	पश्यामि	=देखूँगी ?

मनोरथ मन-निरखौं अस कौतुक ।
हे प्यारी ! श्री श्याम करैं तुव चाटुकारि अति भावुक ॥
पै तुम किये अनसुनी मो सों मग्न मधुर संलाप ।
तब वे छोर दुकूल ऐंचि कै चहैं ध्यान द्यो आप ॥
एते पै हुंकार प्रणय-युत करिकै लाल न निरखो ।
वे वरवश भुज गहै तबै तुम रोमाञ्चित हिय हरषौ ॥
रस भीनी मादकता भीनो सो मूरती विलोकौं ।
निजहित ता पाछै निजप्रिय प्रति हँसत लखौं हौं तौं कौं ॥

अहो रसिकशेखरः स्फुरति कोपि वृन्दावने
निकुञ्जनवनागरीकुचकिशोरकेलिप्रियः ।
करोतु स कृपां सखीप्रकटपूर्णनत्युत्सवो
निजप्रियतमापदे रसमये ददातु स्थितिम् ॥१११॥

अहो !	= आश्चर्य !!	नत्युत्सवः	= प्रणति के उत्सव से सम्पन्न
निकुञ्ज	= निकुञ्जस्थ	स कृपाम्	= वे कृपा
नव नागरी	= नव नगरी के	करोतु	= करें, और
कुच किशोर	= यौवनोदित वक्षोज के	रसमये	= (शृंगार) रसमयी
केलि प्रियः	= विहार से प्रेम करने वाले	निज प्रियतमा	= अपनी प्राण प्रिया के
कोपि	= कोई	पदे	= चरणों में
रसिक शेखरः	= रसिक शिरोमणि	स्थितिम्	= स्थिति (कैङ्कर्य्य)
वृन्दावने	= वृन्दावन में	ददातु	= प्रदान करें"
स्फुरति	= विराजित हैं		
सखी	= सखियों में		
प्रकट पूर्ण	= पूर्णतया प्रकट		

राजत श्री वन इक रस शेखर ।
नव नागरि संग नव कुच कलशन क्रीडत कुञ्जनि प्रिय तर ॥
निस्संकोच दैन्य सखियन प्रति जाकौं हर्षित भावै ।
निजहित प्यारी पद कमलनि रस अविचल दास्य दिलावै ॥

विचित्रवरभूषणोज्ज्वलदुकूलसत्कंचुकैः
सखीभिरतिभूषिता तिलकगंधमाल्यैरपि ।

स्वयं च सकलाकलासु कुशलीकृता नः कदा
सुरासमधुरोत्सवे किमपि वेशयेत्स्वामिनी ॥११२॥

विचित्र	=अद्भुत		गई)
वर	=श्रेष्ठ	स्वयं च	=और स्वयं भी
भूषणोज्ज्वल दुकूल	=भूषण एवं निर्मल दुकूल	सकलाकलासु	=समस्त अनुपम कलाओं में
सत्कञ्चुकैः	=मनोहर कंचुक से	कुशली कृता	=निष्णात
तिलकगन्ध माल्यैरपि	=तथा तिलक सुगन्धित द्रव्य और मालाओं से	स्वामिनी	=श्री स्वामिनी जी
		किं कदापि	=क्या कभी
		सुरासमधुर	=मधुर रास के
		उत्सवे	=उत्सव में
सखीभिः	=सखियों द्वारा	नः	=हमें
अतिभूषिता	=भली भांति विभूषित (की	वेशयेत	= प्रविष्ट करेंगी ?

पाऊँ कब रासोत्सव अधिकार ।
हे स्वामिनि ! तहँ तुम विचित्र शृंगार विभूषित लार ॥
सखियन आभूषण दुकूल उज्ज्वल कंचुकी सजाई ।
तिलक गन्ध मालादि सुगन्धित रचना रम्य बनाई ॥
तुम हूं स्वयं सर्व विद्या अरु नृत्य कलानि सिखाओ ।
कृपामयी लै संग तहाँ निजहित चित रास रचाओ ॥

कदा सुमणिकिंकिणीवलयनूपुरप्रोल्लस-
न्महामधुरमण्डलाद्भुतविलासरासोत्सवे ।
अपि प्रणयिनो बृहद्भुजगृहीतकंठ्यो वयं
परं निजरसेश्वरीचरणलक्ष्म वीक्षामहे ॥ ११३ ॥

सुमणि किङ्किणी	=मंजुलमणि जटित किङ्किणी		की
		वृहद्भुज	=(आजानु) विशाल भुजाओं द्वारा
वलय नूपुर	=कङ्कण नूपुर आदि से	गृहीतकण्ठ्य:	=आलिङ्गित
प्रोल्लसत्	=प्रकृष्ट उल्लास में भरे	अपि	=कण्ठ वाली (होने पर) भी
महामधुर	=अतिशय मधुर	वयम्	=हम
मण्डलाद्भुत	=मण्डल युक्त	कदा	=कब
विलास	अनुपम विलास	परम्	=केवल
		निज रसेश्वर्याः	=अपनी स्वामिनी के
रासोत्सवे	=रास के उत्सव में	चरण लक्ष्म	=चरण चिह्न को
प्रणयिनः	=प्यारे लाल जी	वीक्षामहे	=देखेंगी

तदपि हम राधा पद चित ध्यावें ।
यदपि लाल संग रासोत्सव में स्वामिनि दरस दिखावें ॥
उज्ज्वल मणि युत किंकिनि कंकन नूपुर चरण सुशोभित ।
अद्भुत मधुर रास मण्डल में गर वैयां दिये लोभित ॥

यद्गोविंदकथासुधारसह्रदे चेतो मया जृम्भितं
यद्वा तद्गुणकीर्तनार्चनविभूषाद्यैर्दिनं प्रापितम् ।
यद्यत्प्रीतिरकारि तत्प्रियजनेष्वात्यंतिकी तेन मे
गोपेंद्रात्मजजीवनप्रणयिनी श्रीराधिका तुष्यतु ॥११४॥

गोविन्द	=श्री लालजी के	मया	=मैंने
कथा सुधा	=कथामृत रूप	यत्	=जो कुछ
रसह्रदे	=रस सरोवर में	चेतः	=चित्त को

जृम्भितम्	=डुबाया है,	यद्यत्	=जो जो भी
यद्वा	=अथवा	प्रीतिः	=अनुरक्ति
तद्गुण	=उनके गुण	अकारि	=की है
कीर्त्तनार्चन	=गान पूजन	तेन	=उस उस (साधन से).
विभूषाद्यैः	=शृङ्गार सेवा आदि में जो	मे	=मुझ पर
दिनं प्रापितम्	=काल व्यतीत किया है	गोपेन्द्रात्मज	=गोपराजकुमार (लाल जी) की
तत्	=(अथवा) उनके	जीवन प्रणयिनी	=प्राण दात्री
प्रियजनेषु	=प्रिय सेवकों में	श्री राधिका	=श्री राधा जी
आत्यन्तिकी	=अतिशय बढ़ी हुई	तुष्यतु	=संतुष्ट हों

जो कछु सुकृत भयो या तन ते ।
ता के फल व्रजराज सुवन लाडिली प्रसन्न होई निज मन ते ।।
कछुक कथामृत सरवर श्री गोविन्द परसि श्रवणनि उर भीज्यो ।
अथवा गुण कीरतन अर्चनं सेवा शृङ्गारन में दिन छीज्यो ।।
अथवा तिनके रसिकन प्रति कछु प्रीति प्रतीति होइ दरसाई ।
जो कछु अन्य भयो सुधर्म निजहित श्री राधा जाहु रिझाई ।।

रहो दास्यं तस्याः किमपि वृषभानोर्व्रजवरी-
यसः पुत्र्याः पूर्णप्रणयरसमूर्त्तेर्यदि लभे ।
तदा नः किं धर्म्मैः किमु सुरगणैः किं च विधिना
किमीशेन श्यामप्रियमिलनयत्नैरपि च किम् ।।११५।।

पूर्ण प्रणय रसमूर्त्तेः	=पूर्णतम प्रेम रस की (एक मात्र) विग्रह	वृषभानोः	=श्री वृषभानु जी की
व्रज वरीयसः	=व्रजवरिष्ठ	पुत्र्याः	=कुमारी का

किमपि	=कोई अनिर्वचनीय
रहो दास्यम	=रहस्यमय कैंकर्य्य
यदि	=यदि (अकस्मात् हमको)
लभे	=प्राप्त हो जाय,
तदा	=तब तो
नः	=हमें
किं धर्म्मैः	=धर्म विधानों से क्या लेना ?
किमु सुरगणैः	=देव समूह से क्या प्रयोजन ?
किंच विधिना	=और फिर ब्रह्मा से क्या अपेक्षा ?
किमीशेन	=(तथा) शिवजी से क्या प्राप्तव्य ?
च	=और
श्याम प्रिय मिलन	=श्याम के प्रिय समागम के लिए भी
यत्नैः	=विविध चेष्टा करने से
अपि किम्	=फिर क्या (मतलब) है (अर्थात् वे तो अनायास प्राप्त हो ही जाऐंगे)

मिलै यदि श्री राधा कैंङ्कर्य्य ।
जो परिपूर्ण प्रेम रस पूरित सुता भानु व्रज युवतिनवर्य्य ॥
तब नहि रञ्चक शेष प्रयोजन अज शंकर सुर गण अरु धर्म्म ।
सर्वाधिक श्री श्याम मिलन कौं यत्न करै को निजहित मर्म ॥

चंद्रास्ये हरिणाक्षि देवि सुनसे शोणाधरे सुस्मिते
चिल्लक्ष्मीभुजवल्लि कम्बुरुचिरग्रीवे गिरीन्द्रस्तनि ।
भज्यन्मध्यबृहन्नितंबकदलीखंडोरुपादाम्बुज-
प्रोन्मीलन्नखचंद्रमंडलि कदा राधे मयाराध्यसे ॥११६॥

चन्द्रास्ये !	=हे चन्द्रमुखि !
हरिणाक्षि !	=हे मृगनयनि !
देवि !	=देवि !

सुनसे !	=सुन्दरनासिके !	कदली खंडोरु !	=कदली खंडोपम जघने !
शोणाधरे !	=रक्ताधरे !	पादाम्बुज	=समुल्लसित
सुस्मिते !	=हँसमुखि !	प्रोन्मीलन्नख	चरण कमल नख
चिल्लक्ष्मी भुज-वल्लि	=दिव्य शोभा युक्त भुज लते !	चन्द्रमण्डलि !	चन्द्र दीपिते !
कम्बुरुचिर-ग्रीवे !	=शुभ्र शंख कण्ठि !	राधे !	=हे श्री राधे !
गिरीन्द्रस्तनि !	=शैलेंद्र कुचमंडले !	मया	=मैं
भज्यन्मध्य-बृहन्नितम्ब !	=कृशोदरि स्थूल नितम्बे	कदा	=कब (आपकी)
		आराध्यसे	=आराधना करूंगी ?

राधे ! कब अस छवि आराधौं ।
चन्द्रवदनि ! मृगलोयनि ! हे देवी ! सुनासिके ! साधौं ॥
अरुन अधरि ! सुस्मित युत शोभे ! वैभव मयि भुजवल्ले ! ।
रुचिर कम्बु कण्ठी ! गिरिसम कुचकनके ! कृश कटि भल्ले ॥
पृथु नितम्बिनि ! कदली जंघे ! चरण कमल आभासे ! ।
पव नख चन्द्र छटे ! निजहित शशि मण्डल सम सुप्रकासे ॥

राधापादसरोजभक्तिमचलामुद्वीक्ष्य निष्कैतवां
प्रीतः स्वं भजतोपि निर्भरमहाप्रेम्णाधिकं सर्वशः ।
आलिंगत्यथ चुम्बति स्ववदनात्ताम्बूलमास्येर्पयेत्
कण्ठे स्वां वनमालिकामपि मम न्यस्येत्कदा मोहनः ॥११७॥

मोहनः	=श्री लाल जी	अचलाम्	=निश्चल
राधापादसरोज	=श्रीराधा चरण कमल में	उद्वीक्ष्य	=देख कर
भक्तिम्	(मेरी) भक्ति को	स्वंभजतोपि	=अपने निज
निष्कैतवाम्	=निष्कपट(एवं)	अधिकं प्रीतः	भक्त से भी (मुझ पर) अधिक प्रसन्न होकर

सर्वशः	=सब प्रकार से
निर्भर महा	=अत्यधिक
प्रेम्णा	प्रकट प्रेम से (मेरा)
आलिङ्गति	=आलिङ्गन
अथ चुम्बति	=तथा चुम्बन करेंगे,
स्ववदनात्	=अपने मुख से
मम आस्ये	=मेरे मुख में
ताम्बूलम्	=ताम्बूल
अर्पयेत्	=अर्पण करेंगे, (और मेरे)
कण्ठे	=कण्ठ में
कदा	=कब
स्वाम्	=अपनी
वनमालिकामपि	=वन माला भी
न्यस्येत्	=डालेंगे

होइ जब सत्य, चरण रति-राधा।
इतो जानि मोहन महा प्रेमी रीझैं तुरत अगाधा॥
विवश प्रेम उल्लसित मोहि आलिङ्गन चुम्बन करि है।
चर्वित पान प्रसादो निज कर मो मुख मांहि सुभरि हैं॥
निज वनमाला परसादो मोरे गर मँह पहिरावें।
यों निजहित प्यारी के प्रेमी एक मात्र अपनावें॥

लावण्यं परमाद्भुतं रतिकलाचातुर्यमत्यद्भुतं
कांतिः कापि महाद्भुता वरतनोर्लीलागतिश्चाद्भुता।
दृग्भंगी पुनरद्भुताद्भुततमा यस्याः स्मितं चाद्भुतं
सा राधाद्भुतमूर्त्तिरद्भुतरसं दास्यं कदा दास्यति ॥११८॥

यस्याः	=जिनके
वरतनोः	=कमनीय श्री अंग में झलकता हुआ
लावण्यम्	=लावण्य
परमाद्भुतम्	=परम अद्भुत है
रतिकला	=रति कला की
चातुर्य्यम्	चातुरी

अति अद्भुतम्	=अति अद्भुत है		पराकाष्ठा है
कापि	=कोई	स्मितञ्च	=एवं मंद हसन
कांतिः महाद्भुता	=दीप्ति महा अद्भुत है	अद्भुतम्	=अद्भुत है
लीलागतिः च	=और लीलापूर्ण गति (चलन) भी	अद्भुतमूर्तिः	=अद्भुतता की विग्रह
अद्भुता	=अद्भुत है,	सा राधा	=वह श्री राधा जी
पुनः दृग्भङ्गी	=तथा नेत्रों की कुटिलता	अद्भुत रसं दास्यम्	=अद्भुत रस का कैंकर्य (मुझे)
अद्भुताद्भुततमा	=अद्भुतता की	कदा	=कब
		दास्यति	=प्रदान करेंगी

अद्भुत रस स्वरूप कैंङ्कर्य्यं ।
कब दै हैं अद्भुत वपु राधा अद्भुत सो सौन्दर्य्यं ॥
परमाद्भुत लावण्य कला रति चातुरि अद्भुत राजै ।
श्रीतनु अकथ छटा महा अद्भुत नव नव क्षण क्षण भ्राजै ॥
गति लीला पूरण अति अद्भुत अद्भुत मृदु मुस्कान ।
अद्भुत ते अद्भुत तम निजहित नेत्र कटाक्षनि जानि ॥

भ्रमद्भ्रुकुटिसुंदरं स्फुरितचारुबिंबाधरं
ग्रहे मधुरहुंकृतं प्रणयकेलिकोपाकुलम् ।
महारसिकमौलिना समयकौतुकं वीक्षितं
स्मरामि तव राधिके रतिकलासुखं श्रीमुखम् ।।११९।।

राधिके	=हे श्रीराधिके !		जाने पर
ग्रहे	=(लाल जी द्वारा) पकड़े	भ्रमत्	=नर्तनशील
		भ्रुकुटि	=भृकुटि से

सुन्दरम्	=मनोहर,	मौलिना	शेखर द्वारा
स्फुरित	=कम्पायमान (फड़कते)	सभय कौतुकम्	=भय एवं कुतूहल पूर्वक
चारुबिम्बाधरम्	=बिम्बाफल समान सुन्दर ओष्ठ वाले,	वीक्षितम्	=देखे गये
मधुरहुंकृतम्	=मधुर हुङ्कार पूर्ण	तव	=आपके
प्रणयकेलिकोपा-	=प्रेम विलास-	रतिकलासुखम्	=रति कला के प्रहर्ष से पूर्ण
कुलम्	=मय कोप से व्याप्त	श्रीमुखम्	=शोभाशाली मुख को (मैं)
महारसिक-	=महा रसिक	स्मरामि	=स्मरण करता हूँ।

सुरत सुख पूरण श्री मुख ध्याऊँ।
हे राधिके ! अहर्निस ताकी महिमा मन मन गाऊँ॥
भ्रूकुटिनु नृत्य विलास चारु बिम्बाधर मन्द फडकते।
प्रणय हुंकृति मधुर होत गहि भुज बिच लाल जकड़ते॥
लाल रसिक मणि मौलि सुनत ही भय युत दृग चकराए।
विह्वल तुव मुख देखत अद्भुत निजहित ध्यान सुहाए॥

उन्मीलन्मुकुटच्छटापरिलसद्दिक्चक्रवालं स्फुर-
त्केयूरांगदहारकंकणघटानिर्द्धूतरत्नच्छवि।
श्रोणीमंडलकिंकिणीकलरवं मंजीरमंजुध्वनिं
श्रीमत्पादसरोरुहं भज मनो राधाभिधानं महः ॥१२०॥

मनः	=हे मेरे मन !		कांति से
उन्मीलत्	=प्रकाशमान	परिलसत्	=प्रदीप्त
मुकुटच्छटा	=मुकुट की	दिक्चक्रवालम्	=दिशा मण्डल

	वाले
स्फुरत्	=चमकते हुए
केयूराङ्गदहार कङ्कण घटा	=केयूर अङ्गद हार तथा कङ्कण समूह से
निर्धूतरत्नच्छवि	=रत्न प्रभा को तिरस्कृत करने वाले
श्रोणी मण्डल	=नितम्ब प्रदेश में भ्राजमान
किङ्किणी	=किङ्किणी की
कलरवम्	मधुर झङ्कार से युक्त
मञ्जीर	=नूपुरों के
मञ्जुध्वनिम्	=मनोहर नाद-युक्त
श्री मत्पाद	=शोभा सम्पन्न
सरोरुहम्	चरण कमल विशिष्ट
राधाभिधानम्	=श्री राधा नामक
महः	=तेज का
भज	=भजन कर

मनः भजु राधा रस मय ज्योति ।
शीश मुकुट आभा ते सब ही दिशा प्रकाशित होति ॥
अङ्गद वलय हार भुज बन्दनि छटा रत्न प्रभ लाजै ।
किंकिणि जाल करत कलरव कल पृथु नितम्ब पै साजै ॥
चरण कमल नूपुर अति कमनी करत मधुर धुनि झंकृत ।
निजहित यह वितनित अब चित में व्यापै सदा अलंकृत ॥

श्यामामंडलमौलिमंडनमणिः श्यामानुरागस्फुर-
द्रोमोद्भेदविभाविताकृतिरहो काश्मीरगौरच्छविः ।
सातीवोन्मदकामकेलितरला मां पातु मंदस्मिता
मंदारद्रुमकंजमन्दिरगता गोविंदपट्टेश्वरी ॥१२१॥

अहो	=अहह
श्यामा मण्डल	=तरुणीगण की
मौलि मण्डन	शिरोभूषण
	मणि,
श्याम	=लाल जी के
अनुराग	=अनुराग के

	कारण	मन्दारद्रुम	=कल्पतरु के
स्फुरत्	=प्रकट हुए	कुञ्जमन्दिर	=निकुञ्ज मंदिर में
रोमोद्भेद	=रोमाञ्च द्वारा	गता	=विराजमान
विभावित	=विशिष्ट भाव युक्त	मन्दस्मिता	=मन्द मुस्कान वाली
आकृति	=मूर्ति स्वरूपा	सा	=वे
काश्मीर	=केशर समान	गोविन्द	=गोविन्द
गौरच्छविः	=गौर कान्ति सम्पन्न,	पट्टेश्वरी	(लाल जी की सिंहासनासीन स्वामिनी
अतीव	=उत्कृष्ट	माम्	=मेरी
उन्मद	=मदमत्त	पातु	=रक्षा करें
काम केलि तरला	=अनंग क्रीडा से चञ्चल		

पाहि पाहि गोविंद पट्टेश्वरि ।
अखिल किशोर युवति मणि भूषण परिकार की सर्वेश्वरि ॥
रोम रोम पुलकावलि प्रकटित, लाल नेह सों सींचो ।
आकृति गौर केशरी कमनी काम केलि रस भीजो ॥
मन्द मन्द मुस्कान मनोरम द्रुम मन्दार निकुञ्ज ।
ऐसे गहन स्थल रजति नित निजहित भजि रस पुञ्ज ॥

उपास्यचरणांबुजे व्रजभृतां किशोरीगणै-
र्महद्भिरपि पूरुषैरपरिभाव्यभावोत्सवे ।
अगाधरसधामनि स्वपदपद्मसेवाविधौ
विधेहि मधुरोज्ज्वलामिव कृतिं ममाधीश्वरि ॥१२२॥

व्रजभृताम्	=व्रज वासियों की	किशोरीगणैः	=किशोरियों से
		उपास्य	=सेवनीय

चरणाम्बुजे	=चरण कमले !	सेवा	=आराधना के
सुहृद्भिः	=महान् (भागवत)	विधौ	=विधान(प्रबंध) में
पुरुषैरपि	=पुरुषों द्वारा	मम	=मेरे लिये
अपरिभाव्य	=अगम्यभाव मय	मधुरोज्ज्वलाम्	=उज्ज्वल रस पूर्ण
भावोत्सवे	=उत्सव स्वरूपे !	कृतिं इव	=आज्ञा रूप कृति का
अधीश्वरि	=हे स्वामिनि !	विधेहि	=विधान करो (अर्थात् अधिकार दो)
अगाध रस धामनि	=अगाध रस के सदन		
स्वपदपद्म	=अपने चरण कमल की		

मधुरोज्ज्वल सेवा मुहि दीजै ।
हे स्वामिनि ! निज चरण कमल की कृपा विलम्ब न कीजै ॥
जो अगाध रस धाम महत जन नारदादि नित चाहैं ।
सुमरोइ अकथ भाव उत्सव ध्यावहि उर, पै नहिं लाहै ।
हे हे श्रेष्ठ निकर गुण ललितादिक मणि सर्व किशोरी ।
चरणाम्बुजे ! उपासैं ते नित निजहित तहँ मति जोरी ॥

आनम्रानन चंद्रमीरितदृगापांगच्छटामंथरं
किंचिद्दर्शिशिरोवगुण्ठनपटं लीलाविलासावधिम्
उन्नीयालकमंजरीः कररुहैरालक्ष्य सन्नागर
स्यांगेगं तव राधिके सचकितालोकं कदा लोकये ॥१२३॥

राधिके	=हे श्रीराधिके !		अंगों को
सन्नागरस्य	=नागर शिरोमणि के	आलक्ष्य	=(सटा हुआ) देखकर
अङ्गेऽङ्गम्	=अंग में आपके		

आननआनन चन्द्रम्	=(जब कि)मुख कछुक नत हो	कररुहैः	=अपने नखों से
दृगापाङ्गच्छटा	=नेत्र प्रान्त की छटा कुछ	अलक मञ्जरीः	=अलकावलि को
मन्थरम्	=शिथिल हो,	उन्नीय	=उठा कर
किञ्चिद्दर्शि	=तथा शिर का	तव	=आपकी (प्रियतम के प्रति उस)
शिरोवगुपठनपटम्	घूँघट नाम मात्र ही हो	सचकितालोकम्	=चकित भाव पूर्ण चितवन को (मैं)
लीला	=जो लीला पूर्ण	कदा	=कब
विलासावधिम्	विलास की अवधि हो	लोकये	=देखूँगी

कब सचकित तुव दृष्टि विलोकौं ।
लीला मधुर विलास परावधि इकटक पलकनि रोकौं ॥
तब जब नागर रसिक शिरोमणि लाल संग आलिङ्गित ।
करनि अलक मञ्जरि तुव दृग सौं बिलगावौं लखि संकित ॥
तुव मुख चन्द्र किरण विस्तारित वक्र विलोकत पिय कौं ।
किंचित घूंघट पट सों सोइ छवि लोभे निर्जाहत जिय कौं ॥

राकाचंद्रो वराको यदनुपमरसानंदकंदाननेंदो
स्तत्तादृक्चंद्रिकाया अपि किमपि कलामात्रकस्याणुतोपि ।
यस्याः शोणाधरश्रीविधृतनवसुधामाधुरीसारसिंधुः
सा राधा कामबाधाविधुरमधुपतिप्राणदा प्रीयतां नः॥१२४॥

यदनुपम	=जिन के अनुपम		मुख चन्द्र की
		तत्तादृक्	=प्रसिद्ध, उस प्रकार की
रसानन्द	=रसस्निग्ध		
कन्दाननेन्दोः	=आनन्द कन्द	चन्द्रिकायाः	=चन्द्रिका की

किमपि	=किंचित् अनिर्वचनीय	विधृत नव सुधा माधुरी सार सिन्धुः	=नूतन सुधा माधुरी का सार सिन्धु स्थित है
कलामात्र	=कला लेश के	काम बाधा विधुर	=मनसिज बाधा से व्याकुल
कस्याणुतोपि	एक अणु से भी	मधुपति	=श्रीलालजी को
राकाचन्द्रः	=पूर्णिमा का चन्द्र	प्राणदा	=प्राण जीवन देने वाली
वराकः	=अत्यन्त तुच्छ है तथा	सा राधा	=वे श्री राधाजी
यस्याः	=जिनके	नः	=हम पर
शोणाधर श्री	=रक्ताधर की शोभा में	प्रीयताम्	=प्रसन्न हों

होहु प्रसन्न सदा हे स्वामिनि ! ।
मधुपति लाल काम बाधा हर-तुमही तत्क्षण जीवन दायिनी ॥
रस आनन्द कन्द अनुपम मुख चन्द्र अणु जु इक रश्मि प्रकासै ।
ताको तुलना में शशि पूरण सहज ही लज्जित फीको भासै ॥
अधरनि लाली सब सौन्दर्य्य सार सम्पत नव नव जु माधुरी ।
रस अम्बुधि अन्तर्हित उमहत बरसै निजहित तन अगाध री ॥

राकानेकविचित्रचंद्र उदितः प्रेमामृतज्योतिषां
वीचीभिः परिपूरयेदगणितब्रह्मांडकोटिं यदि ।
वृंदारण्यनिकुंजसीमनि तदाभासः परं लक्ष्यते
भावेनैव यदा तदैव तुलये राधे तव श्रीमुखम् ॥१२५॥

राधे	=हे श्री राधे !	विचित्र	अनेक =विचित्र रूप वाला
यदि	=यदि		
राकानेक	=पूर्णिमा का		

चन्द्र =चन्द्र
उदितः =उदित होकर,
प्रेमामृत =प्रेम सुधा के
ज्योतिषाम् =प्रकाश की
वीचिभिः =किरणों द्वारा
अगणित =अनन्त
ब्रह्माण्ड कोटिम् =ब्रह्माण्ड की श्रेणी को
परिपूरयेत =परिपूर्ण कर दे तथा
यदैव =जिस समय (मैं)
तव =आपके
श्री मुखम् =श्री मुख की
भावेनैव =(अन्तर) भावना से (उपर्युक्त चन्द्र से)
तुलये =तुलना करने लगूँ
तदा =तब
वृन्दारण्य =श्रीवृन्दावन के
निकुञ्ज सीमनि =निकुञ्ज प्रदेश में
परम् =केवल
तदाभासः =उस (पूर्वोक्त चंद्र) का आभास ही
लक्ष्यसे =(मुझे) लक्षित होता है

क्यों करि तुव मुख चन्द्र तुलाहौं।
श्री राधे ! अगणित शशि पूरण उदित हों यदि इक ठाहीं ॥
तिन की पुञ्जीभूत ज्योति ब्रह्माण्ड कोटि यदि व्यापै।
औ वन कुञ्ज सींव व्यापी इक छटा न तुमरी मापै ॥
पुनि यदि भाव पूर्ण इक दृष्टि सों आभास निहारौं।
मन्द करत निजहित तद्यपि सो कोटि चन्द्र उजियारौ ॥

कालिंदीकूलकल्पद्रुमतलनिलयप्रोल्लसत्केलिकंदा
वृंदाटव्यां सदैव प्रकटतररहोवल्लवीभावभव्या।
भक्तानां हृत्सरोजे मधुररससुधास्यंदिपादारविन्दा
सांद्रानंदाकृतिर्नः स्फुरतु नवनवप्रेमलक्ष्मीरमंदा ॥१२६॥

कालिन्दी	=श्री यमुनाजी के	भव्या	=गौरवान्वित,
कूल	=तट पर	भक्तानाम्	=भक्तों के
कल्पद्रुम	=कल्प तरु के	हृत्सरोजे	=हृदय कमल में
तल	=नीचे	मधुर रस सुधा	=मधुर रसामृत
निलय	=आवास में,	स्यन्दि	=स्रावी
प्रोल्लसत्	=उल्लासमय	पादारविन्दा	=चरण कमल वाली,
केलि कन्दा	=क्रीड़ा सुख को देने वाली तथा)	सान्द्रानन्द	=सघन आनन्द की
सदैव	=सर्वकाल	आकृति	=मूर्ति,
वृन्दाटव्याम्	=वृन्दावन में	अमन्दा	=सर्वोत्कृष्ट
प्रकटतर	=अतिशय प्रसिद्ध	नव नव	=नूतनातिनूतन
		प्रेमलक्ष्मीः	=प्रेम की संपत्ति
रहो	=रहस्य पूर्ण	नः	=हमारे (चित्त में)
वल्लवी भाव	=गोपी भाव से	स्फुरतु	=प्रकट हो

नवल प्रेम परिपूरण राधा।
नित्यानन्द घनाकृति मो उर फुरै सदा इक रस जु अगाधा ।।
जन उर चरण कमल करि थापित सुधा मधुर रस स्रवै निरन्तर ।
कालिन्दीतट कल्पद्रुम तल कुञ्ज केलि उल्लसित विमल तर ।।
सदा एक रस प्रकट रूप श्री विपिन विराजित हैं महा कमनी ।
निजहित सहचरि भाव विभावित ललितादिक परिकर संग रमनी ।

शुद्धप्रेमैकलीलानिधिरहह महातंकमंकस्थिते च
प्रेष्ठे बिभ्रत्यदभ्रस्फुरदतुलकृपास्नेहमाधुर्य मूर्त्तिः ।
प्राणालीकोटिनीराजितपदसुषमामाधुरी माधवेन
श्रीराधामामगाधामृतरसभरिते कर्हि दास्येभिषिञ्चेत् ।।१२७।।

अहह	=आश्चर्य है !	प्राणाली कोटि	=कोटि कोटि प्राण मालाओं से
शुद्धप्रेमैक	= विशुद्ध प्रेम की एक मात्र	नीराजित	=न्यौछावर की हुई
लीलानिधिः	=लीला की निधान	पद सुषमा	=चरण की अतिशय शोभा
च	=तथा	माधुरी	=माधुरी से पूर्ण
प्रेष्ठे	=प्रियतम के	श्री राधा	=श्रीराधा
अङ्के	=अङ्क में	अगाधामृतरस	=अगाध सुधा रस
स्थिते	=विराजित होने पर भी	भरिते	=परिपूर्ण (अपने)
महातङ्कम्	=महाभय को	दास्ये	=कैङ्कर्य्य में
बिभ्रती	=धारण करती हुई (या प्राप्त)	माम्	=मुझे
अदभ्र	अत्यधिक	कर्हि	=कब
स्फुरत्	=प्रकाशमान	अभिषिञ्चेत्	=अभिषिक्त करेंगी ?
अतुल	=अनुपम		
कृपा स्नेह	=कृपा स्नेह		
माधुर्य्य मूर्त्तिः	=माधुरी की मूर्त्ति		
माधवेन	=श्री लाल जी द्वारा		

दीजें निज अगाध रस दास्य ।
परिपूरवा अमृत रस राधे ! उर रहु नित्य उपास्य ।।
लीला पूत प्रेम जो उछरत एक मात्र आधार ।
विस्मय महा-अङ्क प्रियतम रहि उर वियोग को भार ।।
तुव पद प्रभा माधुरी माधव कोटि प्राण करि माल ।
करत आरती न्यौछावर धरि मानत भाग्य विशाल ।।

कृपा नेह माधुर्य्य स्वरूपा अतुल दीप्तिमई श्यामा।
निजहित के उर सो रस सिंचहु भूरि भाव अभिरामा॥

वृंदारण्यनिकुञ्जसीमसु सदा स्वानंगरंगोत्सवै-
र्माद्यत्यद्भुतमाधवाधरसुधामाध्वीकसंस्वादनैः।
गोविंदप्रियवर्गदुर्गमसखीवृंदैरनालक्षिता
दास्यं दास्यति मे कदा नु कृपया वृंदावनाधीश्वरी ॥१२८॥

सदा	=नित्य	गोविन्द प्रिय वर्ग	=गोविन्द (श्री लाल जी) के परिकर समूह से
वृन्दारण्य	=श्री वृन्दावन के	दुर्गम	=दुर्ज्ञेय
निकुञ्ज सीमसु	=निकुञ्ज प्रदेश में	सखी वृन्दैः	=सखी गणों से
स्वानङ्ग	=अपने प्रेम	अनालक्षिता	=अलक्षित,
रङ्गोत्सवैः	=विलास के उत्सव पूर्ण	वृन्दावनाधीश्वरी	=श्री वृन्दावन की एक मात्र स्वामिनी (वे)
अद्भुत	=विचित्र (एवं)	कदानु	=क्या कभी
माधवाधरसुधा	=श्री लालजी के अधरामृत	कृपया	=कृपा करके
माध्वीक	=सुरा के	मे	=मुझे
संस्वादनैः	=सम्यक् आस्वादन से	दास्यं	=अपना कैङ्कर्य्य
माद्यति	=(जो) उन्मादित हो रही हैं,	दास्यति	=प्रदान करेंगी ?

दुरहु हे वृन्दा विपिन अधीश्वरि।
श्री वन कुञ्ज प्रान्त में मनसिज रस में उन्नत ईश्वरि॥

अधर सुधा रस उत्सव को आस्वादन करि आनन्दित।
श्याम स्वजन अरु सखियन हूं कौं अगम अलक्षित वंदित॥
निजहित तुमरो दास्य रसोत्सव चाहै दीन भिखारी।
कृपामई कीजै सुभाग्य यहै दीजै नांहि बिसारी॥

मल्लीदामनिबद्धचारुकबरं सिंदूररेखोल्लसत्
सीमन्तं नवरत्नचित्रतिलकं गंडोल्लसत्कुण्डलम्।
निष्कग्रीवमुदारहारमरुणं बिभ्रद्दुकूलं नवं
विद्युत्कोटिनिभं स्मरोत्सवमयं राधाख्यमीक्षे महः॥१२६।

मल्लीदामनिबद्ध	=मालती मालाओं से गुंफित
चारु कबरम्	=सुन्दर केश,
सिन्दूररेखा	=सिन्दूर मांग से
उल्लसत्	=शोभायमान
सीमन्तम्	सीमन्त (ललाट) विशिष्ट
नवरत्न	=नवीन रत्न खचित
चित्रतिलकम्	=विचित्र तिलक (टीका), सम्पन्न
गण्डोल्लसत्	=कपोलों पर चमचमाते
कुण्डलम्	=कुण्डल, (एवं)
निष्कग्रीवम्	=ग्रीवा में स्वर्ण जटित पदिक,
उदारहारम्	=लम्बायमान हार धारण किये हुए,
अरुणं नवं दुकूलं	=अरुण नूतन
बिभ्रत्	परिधान युक्त,
विद्युत्कोटि-निभम्	=कोटि कोटि विद्युत् आभा के समान,
स्मरोत्सवमयम्	=प्रेमोत्सव, रूप
राधाख्यम्	=श्री राधा नामक
महः	=ज्योति को (मैं)
ईक्षे	=अवलोकन करती हूँ

इक रस सारोत्सवमयि राधा।
कोटि कोटि विद्युत सम ज्योती दरसन होत अबाधा॥
वर वेणी नव मल्लीदाम सों रची सची लहरावै।
मांग सिन्दूर तिलक नव रत्ननि चित्रित भाल सुहावै॥
लसैं कपोलनि कुण्डल ग्रीवा हेम पदिक जु जड़ाऊ।
हार प्रलम्ब अरुण दुकूल नव निजहित बलि बलि जाऊँ॥

प्रेमोल्लासैकसीमा परमरसचमत्कारवैचित्र्यसीमा।
सौंदर्य्यस्यैकसीमा किमपि नववयोरूपलावण्यसीमा।
लीलामाधुर्यसीमा निजजनपरमौदार्यवात्सल्यसीमा
सा राधा सौख्यसीमा जयति रतिकलाकेलिमाधुर्यसीमा॥१३०

प्रेमोल्लास = प्रेम के विलासोत्कर्ष की
एक सीमा = एक मात्र अवधि,
परमरसचमत्कार = चमत्कार पूर्ण परम रस शृंगार की
वैचित्र्यसीमा = अनुपमेय (अवधि) पराकाष्ठा,
सौंदर्य्यस्य = अखिल सुन्दरता की
एक सीमा = परावधि
किमपि = अनिर्वचनीय
नव वयोरूप = नवीनवय सम्पन्न रूप
लावण्य सीमा = लावण्य की अवधि
लीला माधुर्य्य सीमा = मधुरातिमधुर लीला (के स्रोत की) अवधि,
निजजन = अपने आश्रितों पर
परमौदार्य्य = परम उदारता पूर्ण
वात्सल्य सीमा = वात्सल्य भाव की सीमा,
सौख्य सीमा = सुख की परम अवधि,
रति कला केलि = सुरत क्रीड़ा जनित

माधुर्य्य सीमा =माधुरी की सीमा,
सा =(ऐसी) वह
राधा =श्री राधा जी
जयति =सर्वोत्कर्ष रूप से विराजमान हैं

सर्व माधुर्य्य सींव श्री राधा।
प्रेमोल्लास चरम पर रस वैचित्र्य सुसीम अगाधा॥
सींव अमित सौंदर्य्य रूप वय नव लावण्य सुसींवा।
सींव मधुर लीला उदारता जन प्रति वत्सल सींवा॥
सुरति कला कल केलि माधुरी अवधि परम सुख सींवा।
सर्वोत्कृष्ट स्वामिनी निजहित सींव निरखि अघ ग्रीवा॥

यस्यास्तत्सुकुमारसुन्दरपदोन्मीलन्नखेंदुच्छटा-
लावण्यैकलवोपजीविसकलश्यामामणीमंडलम्।
शुद्धप्रेमविलासमूर्तिरधिकोन्मीलन्महामाधुरी-
धारासारधुरीणकेलिविभवा सा राधिक मे गतिः॥१३१॥

यस्याः =जिनके
तत् =उस
सुकुमार =सुकुमार
सुन्दर =मनोहर
पदोन्मीलत् =चरण की प्रकाशमान
नखेन्दुच्छटा =नख चन्द्र कान्ति
लावण्यैक =लावण्य के एक
लवोपजीवि =लेश मात्र से जीवन प्राप्त करने वाला
सकल =समस्त व्रज
श्यामामणी =रमणी मणि
मण्डलम् गण हैं,
शुद्धप्रेमविलास =निर्मल प्रेम केलि की
मूर्त्तिः =विग्रह (एवं)
अधिक =अतिशय रूप से
उन्मीलत् =विकसित

महा माधुरी	=महा माधुरी	सा	=वे
धारा सार	धारा सम्पात की	राधिका	=श्री राधिका जी
धुरीण	=मुख्य	मे	=मेरी
केलि विभवा	=क्रीडा सम्पत्ति से युक्त	गतिः	=गति (आश्रय) हैं

केलिकला निधि राधे मो गति ।
प्रेम विकास विशुद्ध मूर्ति जो लागि अहै ताके पद में रति ।।
जे सुन्दर सुकुमार चरण नख शशि सम छटा अनूप प्रकासी ।
लेश मात्र सब श्यामा रमणिनु मण्डल सर्वस जीवन रासी ॥
अधिकाधिक उन्मीलित माधुरि धारा धुरी एक जो मंड ।
आश्रय परिकर लाल विपिन संपत निजहित दें हिये उलंड ॥

कलिंदगिरिनंदिनीसलिलबिंदुसंदोहभृन्न-
मृदूद्गतिरतिश्रमं मिथुनमद्भुतक्रीडया ।
अमन्दरसतुंदिल भ्रमरवृंदवृंदाटवो
निकुञ्जवरमन्दिरे किमपि सुन्दरं नंदति ।।१३२।।

अमन्द	=अधिक	मृदूद्गति	=किञ्चित् उत्पन्न
रस	=रस पान से	रतिश्रमम्	=रति श्रम को प्राप्त (एवं वायु द्वारा समानीत)
तुन्दिल	=पुष्ट		
भ्रमर वृन्द	=भ्रमर समूह से भूषित		
वृन्दाटवी	=वृन्दावन	कलिन्दगिरि	=श्री यमुना जी के
निकुञ्ज वर	=सुन्दर निकुञ्ज	नन्दिनी	
मन्दिरे	भवन में	सलिल बिन्दु	=जल सीकर

सन्दोह	=समूह को	मिथुनम्	=युगल स्वरूप
भृत्	=धारण करने वाला	अद्भुत	=विचित्र
किमपि	=कोई अनिर्वचनीय	क्रीड़या	=केलि विहार से
सुन्दरम्	=मनोहर	नन्दति	=आनन्दित हो रहा है

नागरि नागर युगल अनूप।
रस उन्मत्त भए जड़वत रति श्रम जल किंचित दरसत रूप॥
श्री वन रविजा शीतल कण वपु सींचत सुखद सुहाए।
अचरज क्रीडत नव निकुञ्ज निजहित अलि कुल तहँ छाए॥

व्याकोशेंदीवरविकसितामंदहेमारविंद
श्रीमन्निस्यंदनरतिरसांदोलि कंदर्पकेलि।
वृन्दारण्ये नवरससुधास्यंदिपादारविंदं
ज्योतिर्द्वंद्वं किमपि परमानंदकंदं चकास्ति॥१३३

व्याकोश	=प्रफुल्लित	आन्दोलि	=झकोरने वाला,
इन्दीवर	=नील कमल एवं	कन्दर्प केलि	=प्रेम विलास तत्पर
विकसित	=विकसित	नव रस सुधा	=नूतन रसामृत
अमन्द	=श्रेष्ठ	स्यन्दि	=स्रावी,
हेम	=स्वर्ण	पाद	=चरण
अरविन्द	=कमल की	अरविन्दम्	=कमल वाला,
श्री मत्	=शोभा से युक्त	परमानन्द	=परमानन्द का
निस्यन्दन	प्रस्रवण रूप	कन्दम्	=एक मात्र कारण
रति रस	=रति रस की		

किमपि	=कोई अनिर्वचनीय	वृन्दारण्ये	=श्री वृन्दावन में
ज्योतिर्द्वन्द्वम्	=प्रकाश युगल	चकास्ति	=प्रकाशमान हो रहा है

युगल ज्योति अनुपम बन माँहि ।
उद्गम परमानन्द अकथ जो विपिन चमत्कृत आँहि ॥
विकसित नील कमल इक पूरण हेम कमल इक शोभी ।
निरझर रति रस काम केलि युत चकित परस्पर लोभी ॥
चरण कमल नव रस पीयूष प्रवाही कुञ्जनि राजैं ।
ऐसी अद्भुत जोट प्रभा निजहित उर इक रस भ्राजैं ॥

तांबूलं क्वचिदर्पयामि चरणौ संवाहयामि क्वचिन्-
मालाद्यैः परिमंडये क्वचिदहो संवीजयामि क्वचित् ।
कर्पूरादिसुवासितं क्व च पुनः सुस्वादु चांभोमृतं
पायाम्येव गृहे कदा खलु भजे श्रीराधिकामाधवौ ॥१३४॥

अहो	=अहा !	परिमण्डये	=भूषित करूंगी (शृंगार दूँगी)
क्वचित्	=कभी	क्वचित्	=कभी
ताम्बूलम्	=पान की बीड़ी	सम्वीजयामि	=व्यजन (पंखे) से वायु करूंगी,
अर्पयामि	=अर्पण करूंगी	क्व च पुनः	=और कभी
क्वचित्	=कभी	कर्पूरादि	=कर्पूर आदि से
चरणौ	=चरणों को	सुवासितम्	=सुगन्धित
संवाहयामि	=सहलाऊँगी (चापूँगी),		
कंचित्	=कभी		
मालाद्यैः	=माला आदि से		

सुस्वादु च	=और स्वादिष्ठ	खलु	=भली भाँति
अम्भोमृतम्	=अमृत तुल्य जल	गृहे एव	=निकुञ्ज सदन में ही
पाययामि	=पान कराऊँगी (इस प्रकार)	श्री राधिका माधवौ	=श्री राधा माधव (दंपति) की
कदा	=कब		
अहम्	=मैं	भजे	=सेवा करूंगी

अस सेवा कब कुञ्ज सँभारो ।
राधा माधव दास्य रसोत्सव चरण चांपि प्रतिपारो ।
कबहुंक बीरी पान अर्पि कै भूषण हार सजाऊँ ।
व्यजन करूं निजहित पेयामृत सुरभित स्वाद पिवाऊँ ॥

प्रत्यंगोच्छलदुज्ज्वलामृतरसप्रेमैकपूर्णाम्बुधि
र्लावण्यैकसुधानिधिः पुरुकृपावात्सल्यसाराम्बुधिः ।
तारुण्यप्रथमप्रवेशविलसन्माधुर्यसाम्राज्यभू-
र्गुप्तःकोपि महानिधिर्विजयते राधारसैकावधिः ॥१३५॥

प्रति	=प्रत्येक		सागर,
अङ्ग	=अङ्ग में से	लावण्य	=लावण्य का
उच्छलत्	=निर्झरित	एक	=एक मात्र (निरुपम)
उज्ज्वलामृत	=उज्ज्वल अमृत तुल्य	सुधानिधिः	=सुधा सागर
रस	=रसीले	पुरुकृपा	=पूर्ण कृपा से युक्त
प्रेमैक	=प्रेम का एक मात्र	वात्सल्य	=वत्सलता के
पूर्णाम्बुधिः	=परिपूर्ण		

साराम्बुधिः	=सार का सागर	अवधिः	=पराकाष्ठा
तारुण्य	=यौवन की	कोपि	=कोई अनिर्वचनीय
प्रथम प्रवेश	=प्रारम्भिक अवस्था की	राधा	=श्री राधा नामक
विलसत्	=विलास	गुप्तः	=रहस्य युक्त
माधुर्य्य	=माधुरी के	महानिधिः	=महा निधि
साम्राज्य	=साम्राज्य की	विजयते	=सर्वोत्कर्ष रूप से विराजमान है
भूः	=भूमि		
रसैक	=रस की एक मात्र		

एक मात्र रस अवधि स्वामिनि ।
गुप्त महानिधि राजत अस सर्वोपरि राधा नामनि ॥
अनुपम परिपूरनतम सागर प्रेम तरंगित जो है ।
अंग अंग उज्ज्वल रस अमृत तहाँ उच्छलित सोहै ॥
एक मात्र लावण्य सिन्धु, भर कृप सार वत्सलता ।
नव कैशोर उदित निजहित प्रभु भूमि विलास मधुरता ॥

यस्याः स्फूर्जत्पदनखमणिज्योतिरेकच्छटायाः
सांद्रप्रेमामृतरसमहासिंधुकोटिविलासः ।
सा चेद्राधा रचयति कृपादृष्टिपातं कदाचिन्-
मुक्तिस्तुच्छीभवति बहुशः प्राकृताप्राकृतश्रीः ॥१३६॥

सान्द्र	=सघन	स्फूर्जत्	=चमकती हुई
प्रेमामृत रस	=प्रेमामृत रसके	पदनखमणि	=चरण नख रूप मणि
महासिन्धु कोटि	=कोटि कोटि महासागर	ज्योतिः	=प्रभा की
यस्याः	=जिनकी	एकः	=केवल एक

छटायाः	=चमक का	रचयति	=(मुझ पर) करें (तब)
विलासः	=विलास (या खेल) है	मुक्तिः	=मुक्ति तथा
चेत्	=यदि	बहुशः	=बहुत प्रकार की
सा	=वह	प्राकृत	=लौकिक अथवा
राधा	=श्री राधा	अप्राकृत	=अलौकिक
कदाचित्	=(एक बार) कभी	श्रीः	=श्री (मेरे लिये)
कृपा	=(अपनी) कृपा	तुच्छी भवति	=फीकी हो जाएँगी
दृष्टिपातम्	=दृष्टि का निक्षेप		

कृपा करि निरखैं यदि श्री राधा ।
प्राकृत अप्राकृत बहु शोभा तुच्छ मोक्ष गिनि बाधा ॥
जाकी पद नख मणि ज्योती इक छटा विलास प्रकाशित ।
कोटि कोटि रस घन प्रेमामृत सिन्धु समान विकासित ॥

कदा वृंदारण्ये मधुरमधुरानंदरसदे
प्रियेश्वर्य्याः केलीभवननवकुंजानि मृगये ।
कदा श्री राधायाः पदकमलमाध्वीकलहरी-
परीवाहैश्चेतो मधुकरमधीरं मदयिता ॥१३७॥

मधुरमधुरानन्द रसदे	=महा मधुर तम आनन्द रस दायक		की
		नवकुञ्जानि	=नूतन कुञ्जों को
		कदा	=(मैं) कब
वृन्दारण्ये	=श्रीवृन्दावन में	मृगये	=अन्वेषण करूंगी (तथा)
प्रियेश्वर्य्याः	=स्वामिनी प्रिया जी के	श्री राधायाः	=श्री राधा जी की (अपने)
केलीभवन	=विहार भवन		

पद कमल माध्वीक लहरी	=पदपंकज सुरा की तरङ्ग (अपने)	अधीरम्	=(मेरे) चंचल
		चेतो मधुकरम्	=चित्त भ्रमर को
		कदा	=कब
परीवाहैः	=प्रवाह द्वारा	मदयिता	=उन्मत्त करेंगी

कबहुं हौं करि हौं सो अन्वेषण।
मधुर मधुर आनंद रसदाई श्री वन को विश्लेषण॥
तहँ ईश्वर प्रिया राधा के केलि कुञ्ज नव पुञ्जन।
खोजै मन मधुकर मरन्द पद कमल सतत करि गुंजन॥
सो मकरन्द अपार लहरियन वर्षत ह्वां तब पाऊँ।
निजहित मद उन्मत धीर तजि तहँ बेसुध हो जाऊँ॥

राधाकेलिनिकुञ्जवीथिषु चरन्राधाभिधामुच्चरन्राधांया अनुरूपमेव परमं धर्म्मं रसेनाचरन्।
राधायाश्चरणांबुजं परिचरन्नानोपचारैर्मुदा कर्हिस्यां श्रुतिशेखरोपरि चरन्नाश्चर्यचर्यां चरन्॥१३८॥

राधाकेलि	=श्री राधा जी की विहार	अनुरूपमेव	=सर्वथा अनुकूल
निकुञ्ज वीथिषु	=कुञ्जों की वीथियों में	परमं धर्म्मम्	=परम धर्म्म का
		रसेन	=प्रेम से
चरन्	=विचरता हुआ,	आचरन्	=अचरण करता हुआ,
राधाभिधाम्	=श्री राधा नाम को	मुदा	=आनन्द पूर्वक
उच्चरन्	=उच्चारण करता हुआ,	नानोपचारैः	=नाना सामग्री द्वारा
राधायाः	=श्री राधा जी के	राधायाः	=श्री राधा जी के

चरणाम्बुजम् =चरण कमल की
परिचरन् =सेवा करता हुआ (इस प्रकार)
आश्चर्य्य =आश्चर्य्य पूर्ण
चर्य्याम् =चर्य्या को
चरन् =आचरण करता हुआ (मैं)
श्रुतिशेखरोपरि- चरम् =वेदातीस पथ का पथिक
कर्हि स्याम् =कब बनूँगा

वेदातीत बने कब रहनी ।
अन्तर भाव किंकरी अचरज रूप फुरैं दिन रैनी ॥
राधा केलि निकुञ्ज वीथियन कबहुँक अटत स्वछन्द ।
राधा नाम कीर्त्तन तद्व्रत धारि धर्म्म निर्द्वन्द ॥
रसमय भाव भावना युत नित श्रीहित चरण कमल की ।
बहु उपचार मोदमय अर्चन निजहित करत विमल की ॥

यातायातशतेन संगमितयोरन्योन्यवक्त्रोल्लसत्-
चंद्रालोकनसंप्रभूतबहुलानंगांबुधिक्षोभयोः ।
अंतः कुञ्जकुटीरतल्पगतयोर्दिव्याद्भुतक्रीडयो -
राधामाधवयोः कदानु शृणुयां मंजीरकांचीध्वनिम् ।१३८॥

यातायातशतेन =(सखी द्वारा) अनेकानेक विधि से याता यात करके
सङ्गमितयोः =सङ्गम को प्राप्त होने वाले
अन्योन्य =परस्पर के
वक्त्रोल्लसत् =मुख रूपी पूर्ण
चन्द्रालोकन चन्द्र के अवलोकन से
सम्प्रभूत =उत्पन्न
बहुलानङ्गाम्बुधि =काम समुद्र के
क्षोभयोः प्रबल क्षोभ में पड़े
अन्तःकुञ्ज कुटीर=कुञ्ज कुटीर के मध्य में

तल्प गतयोः	=शय्या पर विराजित	मञ्जीर	=नूपुर
दिव्याद्भुत	=विचित्र दिव्य	काञ्ची	=काञ्ची (मिश्रित)
क्रीडयोः	=केलि परायण	ध्वनिम्	=ध्वनि को (मैं)
राधा माधवयोः	=श्री राधा माधव के	कदानु	=कभी
		शृणुयाम	=सुनूँगी ?

सुनौंगी कब सुमधुर झङ्कार।
राधा माधव नूपुर किंकनि कटि मिश्रत रवलार॥
मिलैं परस्पर इत उत विहरत होति ध्वनी सुखकारी।
सङ्गम सुरत झिलैं दम्पति तब की छवि कहौं कहा री॥
वक्र दृष्टि देखत जु परस्पर आनन विधु लखि मोहैं।
जनु मनसिज सागर उमग्यौ कल दृष्टि कटाक्षनि सोहैं॥
परम इकन्त कुञ्ज भीतर दोउ दिव्य सेज पै राजैं।
अद्भुत क्रीडा रत निजहित उर ऐसी छवि सों छाजैं॥

अहो भुवनमोहनं मधुरमाधवीमंडपे
मधूत्सवसमुत्सुकं किमपि नीलपीतच्छवि।
विदग्धमिथुनं मिथोदृढतरानुरागोल्लसन्
मदंमदयते कदा चिरतरं मदीयं मनः॥१४०॥

अहो	=अहह	समुत्सुकम्	=अत्यन्त उत्कण्ठित
मधुर माधवी मण्डपे	=सुन्दर मालती लता के मंदिर में	मिथः	=परस्पर के
		दृढतरानुरागोल्ल-सन्	=प्रकट अनुराग से उल्लसित
मधूत्सव	=वसन्तोत्सव के लिये	मदम्	=मद युक्त

भुवन मोहनम्	=त्रिभुवन को मोहित करने वाला	विदग्ध मिथुनम्	=विदग्ध युगल
नील पीतच्छवि	=नील एवं पीत कान्ति युक्त	मदीयम्	=मेरे इस
किमपि	=कोई अनिर्वचनीय	मनः	=मन को
		कदा	=कब
		चिरतरम्	=(निरन्तर) चिरकाल तक
		मदयते	=उन्मत्त करेंगे

करि हैं कब उन्मत मन मोर ।
अनुपम नील पीत छवि मोहन सकल भुवन चित चोर ॥
उत्सुक उत्सव रितु वसन्त अनुराग समन्वित दोऊ ।
माधविलता विदग्ध परस्पर निजहित उन्मत जोऊ ॥

राधानामसुधारसं रसयितुं जिह्वास्तु मे विह्वला
पादौ तत्पदकांकितासु चरतां वृंदाटवीवीथिषु ।
तत्कर्मैव करः करोतु हृदयं तस्याः पदं ध्यायता-
त्तद्भावोत्सवतः परं भवतु मे तत्प्राणनाथे रतिः॥१४१॥

सुधारसम्	=अमृत समान रस भरे		(लोलुप)
राधा नाम	=श्री राधा नाम के	अस्तु	=बनी रहे,
रसयितुम्	=रसास्वाद के निमित्त	पादौ	=(मेरे) चरण
मे	=मेरी	तत्	=उन्हीं (श्री राधा जी) के
जिह्वा	=रसना	पदकाङ्कितासु	=चरण चिह्नित
विह्वला	=व्याकुल	वृन्दाटवी	=श्री वृन्दावन की
		वीथिषु	=गलियों में

चरताम्	=विचरण करें	परम्	=(और) केवल
करः	=(मेरे) हाथ	तत्	=तदीय
तत्	=उन्हीं के	भावोत्सवतः	=भाव चाव के साथ साथ
कर्मैव	=निमित्त कर्म	तत्प्राणनाथे	=उनके जीवन (लाल जी) में
करोतु	=करें,	मे	=मेरी
हृदयम्	=मेरा हृदय	रतिः	=प्रीति
तस्याः	=उनके	भवतु	=हो
पदम्	=चरणों का		
ध्यायतात्	=ध्यान करें,		

राधा नाममृत लोलुपता ।
रहै गिरा पै सतत करैं आस्वादन परम मधुरता ॥
चरननि राधा पद अङ्कित श्री वन वोथिन नित डोलूं ।
उभय करन सों सेवा स्वामिनि करि ग्रन्थी हिय खोलूं ॥
निजहित हिय पद पङ्कज राधा ध्यान रहे हितकारी ।
भावोत्सव प्यारी के प्यारे में हो प्रीति हमारी ॥

मंदीकृत्य मुकुन्दसुन्दरपदद्वन्द्वारविंदामल-
प्रेमानंदममंदमिंदुतिलकाद्युन्मादकंदं परम् ।
राधाकेलिकथारसांबुधिचलद्वीचीभिरांदोलितं
वृंदारण्यनिकुञ्जमंदिरवरालिंदे मनो नंदतु ॥१४२॥

परम्	=अधिक रूप से		जी के
इन्दु तिलकाद्यु-न्माद कन्दम्	=श्री शंकर आदि के उन्माद का कारण,	सुन्दर	=मनोहर
		पदद्वन्द्वारविन्द	=युगल चरण कमलों के
		अमल	=निर्मल
मुकुन्द	=श्री लाल	प्रेमानन्दम्	=तीव्र प्रेमानन्द

	को भी,	मनः	=मेरा मन
मन्दीकृत्य	=तिरस्कृत करके	वृन्दारण्य	=श्रीवृन्दावन के
राधाकेलि कथा	=श्री राधा	निकुञ्जमन्दिर	=निकुञ्ज मंदिरों
रसाम्बुधि	विहार कथा		के
	रस सागर की	वरालिन्दे	=सुन्दर आङ्गन
चलत्	=तरल		में
वीचीभिः	=तरङ्गों से	नन्दतु	=आनन्द को
आन्दोलितम्	=(झकझोरा		प्राप्त हो
	हुआ) चञ्चल		

मोरे मन केवल यह साधा ।
राधा केलि कथा रस सागर को रस मिलै अबाधा ॥
उठत उमंग चंचल तरंग बहु कुञ्जन भवन विपिन में ।
ऐसी प्रेमोन्माद उच्छलित सदा भरौं सो मन में ॥
यदपि मुकुन्द पद्म पद युग को अमल अमन्द रसासव ।
उन्मत करत इन्दु शेखर पै है निजहित तुच्छासव ॥

राधानामैव कार्य्यं ह्यनुदिनमिलितं साधनाधीशकोटि-
स्त्याज्यो नीराज्य राधापदकमलसुधा सत्पुमर्थाग्रकोटिः ।
राधापादाब्जलीलाभुवि जयति सदा मंदमंदारकोटिः
श्रीराधाकिंकरीणां लुठति चरणयोरद्भुता सिद्धिकोटिः॥१४३॥

हि	=निश्चय रूप	कार्य्यम्	=(श्रवण
	से (सौभाग्य		कीर्तनादि)
	वश)		करना चाहिये
मिलितम्	=प्राप्त होने पर	साधनाधीश	=(और)कोटि२
अनुदिनम्	=प्रति दिन	कोटिः	श्रेष्ठतम [illegible]नि
राधानामैव	=केवल राधा		भी
	नाम का ही	त्याज्यः	=त्याज्य हैं,

सत्पुमर्थाग्र कोटिः	=कोटि २ श्रेष्ठ पुरुषार्थ भी	भुवि	=भूमण्डल पर
नी राज्य राधा पदकमल सुधा	=राधापद कमल सुधा पर न्योछावर के योग्य हैं,	सदा जयति	=सदा सर्वोत्कर्ष रूप से विराजमान है
मन्द मन्दार कोटिः	=कोटि कल्प =तरुओं को तुच्छ करने वाली	श्री राधा	=श्री राधा जी की
राधा पादाब्ज लीला	=श्रीराधा चरण कमल की लीला	किंकरीणाम्	=किङ्करियों के
		चरणयोः	=चरणों में
		अद्भुता	विचित्र
		सिद्धि कोटिः	=कोटि कोटि सिद्धियां
		लुठति	=लोटती रहती हैं

हो जु रति राधा रसमय नाम ।
सुनत कहत नित कोटि श्रेष्ठ साधन निवरैं श्रम धाम ।।
सेवा चरण कमल पियूष सब सधैं निगम पुरुषारथ ।
लीला भुवि श्री वन सुरतरु बहु बसैं जानि निज स्वारथ ।।
श्री राधा दासी समूह पद लुठैं कोटि बहु सिद्धि ।
राधा नाम प्रपत्ति माँहि निजहित वैभव रस वृद्धि ।।

मिथोभंगीकोटिप्रवहदनुरागामृतरसो -
त्तरंगभ्रूभंगक्षुभितबहिरभ्यंतरमहो ।
मदाघूर्णन्नेत्रं रचयति विचित्रं रतिकला
विलासंतत्कुञ्जे जयति नवकैशोरमिथुनम् ।।१४४।।

अहो	=अहह		विलास पद्धति से
मिथो भङ्गी कोटि	=परस्पर की अनेकानेक		

प्रवहदनुरागामृत रसोत्तरङ्ग	=अधिक रूप से प्रवाहित अनुराग रूपी अमृत रस से पूर्ण	तत्	=ऐसी वह
भ्रूभङ्ग	=भृकुटी विलास से (जिनका)	नव कैशोर मिथुनम्	=नूतन किशोर जोरी
क्षुभित बहिरभ्यन्तरम्	=बाह्य एवं अंतर क्षोभ को प्राप्त है (तथा)	कुञ्जे	=कुञ्ज में
मदाघूर्णन्नेत्रम्	=जिनके नेत्र मद से घूम रहे हैं	विचित्रम्	=अद्भुत
		रतिकला	=रतिकला पूर्ण
		विलासम्	=विलास की
		रचयति	=रचना कर रही है
		च	=और
		जयति	=सर्वोत्कर्ष को प्राप्त हो रही है

रति विलास कल कौशल दम्पति ।
नव किशोर मन्दिर निकुञ्ज मधि बसैं लसैं जय युत पाऊँ रति ।
हाव भाव अनुराग रसामृत सहज प्रवाहित बाह्य अरु अन्तर ॥
भ्रूभङ्गी निजहित तरङ्ग मद घूर्ण नेत्र रस भरयो निरन्तर ॥

काचिद्वृंदावननवलतामंदिरे नंदसूनो-
दृप्यद्दोष्कंदलदृढपरीरंभनिस्पंदगात्री ।
दिव्यानंताद्भुतरसकलाः कल्पयंत्याविरास्ते
सांद्रानंदामृतरसघनप्रेममूर्तिः किशोरी ॥१४५॥

सान्द्रानन्दामृत रस	=सघन आनन्दामृत रस की	काचित्	=कोई अनिर्वचनीय
घन प्रेम मूर्तिः	=घनीभूत प्रेम मूर्ति	किशोरी	=किशोरी
		नन्दसूनाः	=श्री नन्दनंदन के

दृप्यद्दोष्कन्दल	=दर्प युक्त भुज लताओं के	दिव्यानन्त	=अलौकिक अनन्त
दृढ़ परीरम्भ	=प्रगाढ़ आलि-ङ्गन से	अद्भुत	=अनुपम
निस्पन्दगात्री	=निश्चेष्ट अङ्गों वाली	रसकलाः	=रस भरी कलाओं को
वृन्दावन	=वृन्दावन के	कल्पयन्ती	=निर्माण करती हुई
नवलतामन्दिरे	=नूतन निकुञ्ज में	आविरास्ते	=प्रकट है

श्री वन नित नव लता भवन में।
सुधा घनानन्द प्रेम रसाकृति नित लाडिलि यौवन में॥
नन्द सुवन भुजलता दर्प युत गाढालिंगित निश्चल कीनैं।
निजहित शिथिल सकल अंग अंगनि कला विविध रस वैभव भीनैं॥

न जानीते लोकं न च निगमजातं कुलपरं
परां वा नो जानात्यहह न सतां चापि चरितम्।
रसं राधायामाभजति किल भावं व्रजमणौ
रहस्ये तद्यस्य स्थितिरपि न साधारणगतिः ॥१४६॥

अहह	=आश्चर्य है कि (जो)	भावम्	=भाव को
किल राधायाम् (स्थितम्	=निश्चय पूर्वक श्री राधा में (वर्तमान)	आभजति	=पूर्णतया सेवन करता है (वह)
		न	=न तो
		लोकम्	=इस लोक को
रसं व्रजमणौ (स्थितम्)	=रसको (तथा) व्रजमणि (लाल जी) में (वर्तमान)	न च	=और न ही
		निगमजातम्	=श्रुति समूह को
		जानीते	=जानता है,
		कुल परंपरां वा	=तथा कुलागत

	पद्धति	यस्य	=जिस पुरुष की
अपि च	=और	रहस्ये	=इस रहस्य में
सतां चरितम्	=सदाचार को भी	स्थितिः	=स्थिति है
		तस्यापि	=उसकी भी
न जानाति	=नहीं जानता है,	साधारण	=साधारण
तत्	=इसलिये	गतिर्न	=गति नहीं है ।

गती असाधारण रसिकन की ।
सुनौ सदा रस भजन छके जे राधा व्रजपति भाव मगन की ॥
रहैं असंग इकन्त वाह्य जनता निगमन पथ नाँहिन लोचें ।
परम्परा कुल चहैं तनिक नहि संत रहनि निज हित नहि सोचें ॥

ब्रह्मानंदैकवादाः कतिचन भगवद्वंदनानंदमत्ताः
केचिद्गोविंदसख्याद्यनुपमपरमानंदमन्ये स्वदंते ।
श्रीराधाकिंकरीणां त्वखिलसुखचमत्कारसारैकसीमा
तत्पादांभोजराजन्नखमणिविलसज्ज्योतिरेकच्छटापि ।१४७।

कतिचन	=कुछ लोग तो		प्रमोद (दास्य रति में),
ब्रह्मानन्द	=ब्रह्मानन्द को ही	मत्ताः	=उन्मत्त रहते हैं,
एकवादाः	=मुख्य रूप से वर्णन करने वाले हैं,	अन्ये	=और कोई
		अनुपम	=अनुपमेय
केचिद्	=कोई	परमानन्द	=परमानन्द स्वरूप
भगवद्वन्दनानन्द	=श्री भगवान् के प्रणाम के	गोविन्द सख्यादि	=श्री गोविन्द के सख्य वात्सल्य

	आदि रस का ही	राजत्	=प्रकाशमान
स्वदन्ते	आस्वादन करते हैं,	नखमणि	=नख मणि की
श्रीराधाकिङ्करीणां तु	=परन्तु श्री राधा दासियों का तो	विलसत्	=उल्लसित
तत्	=उन (श्री राधा के	ज्योतिरेक	=ज्योतिकी एक
पादाम्भोज	=चरण कमल में	छटाऽपि	=झलक भी
		अखिल सुख	—समस्त सुखों के
		चमत्कार सारैक	=सार चमत्कार की चरम
		सीमा	=अवधि है

राधा पद नख मणि की ज्योती।
फिरण लेश किंकरी गणन कूं सींव सर्व सुख सार सुस्रोती॥
तुलें न ते जे ब्रह्म वाद आनन्द मगन भगवत वन्दन में।
निजहित गोविन्द सख्यहि परमानन्द मानि रहै आस्वादन में॥

न देवैर्ब्रह्माद्यैर्न खलु हरिभक्तैर्न सुहृदा
दिभिर्यद्वै राधामधुपतिरहस्यं सुविदितम्।
तयोर्दासीभूत्वा तदुपचितकेलीरसमये
दुरंताः प्रत्याशा हरहर दृशोर्गोचरयितुम् ॥१४८॥

यत्	=जो	भक्तैः	प्रकार से हरि भक्तों ने
राधामधुपति	=श्री राधा माधव का	सुहृदादिभिः	=तथा (लालजी) के सुहृदों ने
रहस्यम्	=रहस्य	वै	=भी
न ब्रह्माद्यैः देवैः	=न ब्रह्मादि देवों ने,	न सुविदितम्	=अच्छी प्रकार से नहीं जाना
न खलु हरि.	=न सम्यक्		

तयोः	=उन्हीं की	गोचरयितुम्	=गोचर करने (देखने) की
दासी	=दासी	हर हर	=हाय हाय (मेरी)
भूत्वा	=होकर	दुरन्ताः	=दुर्लभ
तदुपचित	=उनकी प्रवृद्ध	प्रत्याशाः	=आशाएँ लगी हुई हैं
केलीः	=क्रीड़ा को		
असमये	=असमय में ही		
दृशोः	=नेत्र		

अहो जिय साहस अतिहि दुरूह ।
नैंननि देख्यौं चहौं केलि राधा माधव कौतूह ॥
हरि हरि ! भाव किंकरी उर धरि भल अभिलाष बढ़ाई ।
पै अधिकार विना अन-अवसर कैसे कि देइ दिखाई ॥
कारण सो रहस्य नहिं ब्रह्मादिक देवन हूं पायौ ।
हरि भक्तनि गोविन्द सखनि हूं को निजहित न जनायौ ॥

त्वयि श्यामे नित्ये प्रणयिनि विदग्धे रसनिधौ
प्रिये भूयोभूयः सुदृढमतिरागो भवतु मे ।
इति प्रेष्ठेनोक्ता रमण मम चित्ते तव वचो,
वदंतीति स्मेरा मम मनसि राधा विलसतु ॥१४९॥

श्यामे !	=हे श्री श्यामे !		मान) बार बार
नित्य प्रणयिनि	=हे नित्य प्रण-यिनि !	सुदृढम्	प्रगाढ तर
विदग्धे !	=हे विदग्धे !	मे	=मेरा
रसनिधौ	=रस की निधि स्वरूप	अतिरागः	=अत्यन्त अनुराग
त्वयि	आप में	भवतु	=हो
भूयोभूयः	=(प्रतिक्षण वर्ध-	इति	=इस प्रकार
		प्रेष्ठेन	=प्रियतम के

उक्त्वा	=कहने पर (प्यारी ने उत्तर दिया)
रमण !	=हे रमण !
मम चित्ते तव वचः	=मेरे चित्त में (भी) आपके ही वचन हैं (अर्थात् मैं भी तद्वत् चाहती हूँ।
इति स्मेरा वदन्ती	=इस प्रकार मंद हास्य युक्त कहती हुई (ऐसी)
राधा	=श्री राधा
मम	=मेरे
मनसि	=मन में
विलसतु	=विलास करे

टि०—श्लोक में प्यारे ने प्यारी के लिये जो तीन सम्बोधन किये हैं, वे ही प्रिया जी के द्वारा लाल जी को सप्तमी के एक वचन द्वारा श्लोक में कहे गये हैं उनका अर्थ है श्यामे अर्थात् आप श्याम में-नित्य प्रेमी में विदग्ध में, रस निधि आप में मेरा सुदृढ अनुराग हो। अपने मन के उसी भाव को प्यारी ने उन्हीं शब्दों से व्यक्त किया है।

कबहुं श्याम बोले हे श्यामे !
नित्य प्रणयिनि ! प्रिये ! विदग्धे ! हे रस निधि ! सुनु वामे ॥
तो महं दृढ़ अनुराग होइ उर बोले लाल विहारी।
अहो रमण ! मो मन यह इच्छा ध्रुव, हँसि बोलीं प्यारी ॥
यह संलाप परस्पर प्रहसित लाडिलि वदन निहारौं।
निजहित सतत राखि उर सो छवि जीवन सर्वस वारौं ॥

सदानंदं वृंदावननवलतामंदिरवरे
ष्वमंदैः कंदर्पोन्मदरतिकलाकौतुकरसम् ।
किशोरं तज्ज्योतिर्युगलमतिघोरं मम भवं
ज्वलज्ज्वालं शीतैः स्वपदमकरंदैः शमयतु ॥१५०॥

वृन्दावन	=श्री वृन्दावन के
नव लता मन्दिर वरे	=नूतन सुन्दर निकुञ्ज में
सदानन्दम्	=सदैव परिपूर्ण आनन्द से (विराजमान)
कन्दर्पोन्मद	=काम मद से उन्मत्त,
रतिकला	=रतिकला पूर्ण
कौतुक रसम्	=कुतूहल रस रूप
तत्	=वह
किशोरम्	=किशोर
ज्योतिः	=दिव्य प्रकाश
युगलम्	=युगल
अमन्दैः	अत्यन्त
शीतैः	=शीतल
स्वपद मकरन्दैः	=अपने चरण कमल के घनीभूत रस से
अति घोरम्	=अत्यन्त भयानक
ज्वलज्ज्वालम्	=प्रचण्ड ज्वाला पूर्ण
मम	=मेरे
भवम्	=संसार चक्र को
शमयतु	=शमन करे

प्रज्वलित घोर ज्वाल भव नाशै ।
शीतल मिथुन कमल पद ज्योती उर मकरन्द विकासै ॥
राजत नव वर लता भवन श्री वन मनसिज उन्मादि ।
काम केलि कौतुक रस भीने नित्य किशोर अनादि ॥
इक रस नित्यानन्द घनाकृति विनु नहिं अन-अवलम्ब ।
वे ही आवागवन निवारैं निजहित युगल अदम्भ ॥

उन्मीलन्नवमल्लिदामविलसद्धम्मिल्लभारे बृह
चछ्रोणीमंडलमेखलाकलरवे शिंजत्सुमंजीरिणि ।
केयूरांगदकंकणावलिलसद्दोर्वल्लिशोभिच्छटे
हेमांभोरुहकुड्मलस्तनि कदा राधे दृशा पीयसे ॥१५१॥

उन्मीलन्नव	नवीन प्रफुल्लित
मल्लिदाम	मल्ली के (पुष्पों की) माला से
विलसत	भूषित

धम्मिल भारे ! =केशपाश के भार वाली !
बृहच्छ्रोणी मण्डल पृथु नितम्ब मण्डल पर
मेखला कलरवे ! =काञ्ची की मधुर ध्वनि वाली !
शिञ्जत् सुमञ्जी-रिणि =शब्दायमान सुन्दर नूपुर वाली !
केयूराङ्गद =केयूर बाजूबन्द तथा
कङ्कणावलिलसद् कङ्कण माला से भूषित
दोर्वल्लि भुजलताओं की
दीप्तिच्छटे =छविपरम्परा वाली !
हेमाम्भोरुह कुड्मलस्तनि- स्वर्ण कमल =कलिका तुल्य कुच मण्डल वाली !
राधे =हे श्री राधे ! (ऐसे रूप को)
कदा =कब
दृशा =नेत्रों से
पीयसे =पान करूंगी

रूप रस तव अस नैंननि परसैं ।
राधे ! मल्ली माल प्रफुल्लित गूंथित कबरी दरसैं ॥
पृथुल नितम्ब मेखला मण्डल कल माधुरि धुनि लोभी ।
नूपुर पगनि अलङ्कृत झङ्कृत शब्द हृदय रस चोभी ॥
भुजबंद अङ्गद कङ्कणावली भूषित बाहु लतान ।
दमकत अतिशय कनक कमल कलि कुच निजहित रस खानि ॥

अमर्यादोन्मीलत्सुरतरसपीयूषजलधेः
सुधांगैरुत्तुंगैरिव किमपि दोलायिततनुः ।
स्फुरंती प्रेयोंके स्फुटकनकपंकेरुहमुखी
सखीनां नो राधे नयनसुखमाधास्यसि कदा ॥१५२॥

अमर्यादोन्मीलत् =असीम उल्लास को प्राप्त
सुरतरस पीयूष-जलधे =सुरत रस सुधा सागर के

इव	मानो
उत्तुङ्गैः	=सुधा सने अंग
सुधांगैः	समुन्नत हों (ऐसे निज अङ्गों
किमपि	=विचित्रता
दोलायिततनुः	=आन्दोलित वपु वाली,
प्रेयोङ्के	=प्रियतम के अङ्क में
स्फुरन्ती	=विराजमान
स्फुट	=विकसित

कनक	=स्वर्ण
पङ्केरुहमुखी	=कमल मुखी (ऐसी आप)
राधे	=हे श्री राधे !
नः	=हम
सखीनाम्	=सखियों के (हृदय में)
नयन सुखम्	=नेत्र (दर्शन) सुख कौ
कदा	=कब
आध्यास्यसि	=स्थापित करोगी

पुजोगी परिकर की कब आस ।
हे राधे ! सुख तहै नैंन लखि तव पिय अङ्क विलास ।।
विकसित कनक कमल वदनी ! रस सुरत सुधा निधि उमग्यौ ।
तुव तनु उच्च सुधा अङ्गनि सौं अनुपम यौवन सु-लग्यौ ।।
अङ्क पड़ी प्यारे के अति ही चंचल केलि प्रकासन ।
यह सुख सखियन बांट परें निजहित हिय भरें हुलासन ।।

क्षरंतीव प्रत्यक्षरमनुपमप्रेमजधिं
सुधाधारावृष्टीरिव विदधती श्रोत्रपुटयोः ।
रसार्द्रा सन्मृद्वी परमसुखदा शीतलतरा
भवित्री किं राधे तव सह मया कापि सुकथा ।।१५३।।

प्रत्यक्षरम्	=प्रत्येक अक्षर द्वारा
इव	=मानो
अनुपम	=अनुपम
प्रेम जलधिम्	=प्रेम सागर को

क्षरन्तीव	=उड़ेल रही हों (और)
श्रोत्रपुटयोः	=युगल श्रवण पुट में
सुधाधारा	=अमृत प्रवाह

	की		शीतल,
वृष्टीरिव	=मानो वर्षा ही	तव	=आप की
विदधती	=कर रही हों (ऐसी)	कापि	=कोई अनिर्वचनीय
रसार्द्रा	=रस से पूर्ण	सुकथा	कमनीय चर्चा
सन्मृद्वी	=मधुर मृदुल,	राधे !	=हे श्री राधे !
परम सुखदा	=परम सुखदायिनी,	मया सह	=मेरे साथ
		किम्	=क्या कभी
शीतलतरा	=अत्यन्त	भवित्री	=होगी ?

स्वामिनी ! कब यह आस पुरैगी ।
रसमय अनुपम सम्भाषण मो सों तुव गिरा करैगी ॥
जा को एक एक अक्षर अनुपम निधि प्रेम प्रवाही ।
कर्ण रन्ध्र सुनि गनैं सुधा सम धारा वृष्टि जु लाही ॥
अमित रसीले परम मधुर मृदु शीतल अति सुख साने ।
हे राधे ! दासी की विनती पुजवौ यदि मन माने ॥

अनुल्लिख्यानंतानपि सदपराधान्मधुपति
र्महाप्रेमाविष्टस्तव परमदेयं विमृशति ।
तवैकं श्रीराधे गृणत इह नामामृतरसं
महिम्नः कः सीमां स्पृशति तव दास्यैकमनसाम् ॥१५४॥

श्री राधे !	=हे श्री राधे !		वाले (व्यक्ति) के प्रति
इह	=इस लोक में		
एकम्	=केवल एक	तव	=आपके
तव	=आपके	महाप्रेमाविष्टः	=उज्ज्वल प्रेमावेश में भरे
नामामृत रसम्	=नामामृत रस को	मधुपतिः	=श्री लाल जी
गृणतः	=उच्चारण करने		(उस व्यक्ति के

अनन्तान्	=अनन्त वैष्णव	दास्यैक	=दास्य में एक मात्र आसक्त
सदपराधान्	अपराधों का	मनसाम्	=चित्त (पुरुषों) की
अपि	=भी	महिम्नः	=महिमा की
अनुल्लिख्य	=विचार न करके	सीमाम्	=अवधि को
परमदेयम्	=उसे देने योग्य श्रेष्ठ वस्तु का	कः	=कौन
विमृशति	=विमर्श (मन ही मन) करते हैं (तो फिर	स्पृशति	=स्पर्श कर सकता है (अर्थात् कोई (नहीं
तव	=आप के		

सुनतहि मधुपति नाम तिहारो।
राधे ! एक बार कोइ सुमिरै मानत मन ऋण भारो ।।
नामामृत रस भाषै जो यदि हो ऐसा वह प्रानी।
कोटि अनंत पाप मह तनयुत तुरत क्षमैं हित जानी ।।
महा प्रेम आविष्ठ सतत उर रहै विचार सताए।
बदलै नामामृत कहा दीजै कैसे ऋण चुक जाए ॥
पै जे दास्य भाव रत किंकरी सुमिरत नाम अनन्य।
निजहित तिन की महिम अगम को परसै बुद्धि नगण्य ॥

लुलितनवलवंगोदारकर्पूरपूरं
प्रियतममुखचंद्रोद्गीर्णतांबूलखंडम् ।
घनपुलककपोला स्वादयंती मदास्ये
पंयतु किमपि दासीवत्सला कर्हि राधा ।। १५५ ।।

लुलित	=चूर्णित	लवंगोदारकर्पूर-पूरम्	=लौंग एवं सुखद कर्पूर
नव	=नूतन		

	से पूर्ण		रोमाञ्चित कपोल युक्त,
प्रियतम मुख चन्द्र	=प्यारे के मुख चन्द्र द्वारा	दासीवत्सला	=दासी पर कृपालु
उद्गीर्ण	=चर्वित (उगार किये हुए)	राधा	=श्री राधा
ताम्बूल खण्डम्	=ताम्बूल खण्ड को	कर्हि अपि	=कभी
		मदास्ये	=मेरे मुख में
स्वादयन्ती	=आस्वादन करती हुई	किं	=क्या
घनपुलककपोला	=निबिड	अर्पयतु	=अर्पित करेंगी ?

देगी कब पिय पान प्रसादी।
हे राधे ! तुम हूं चर्वित करि दोउनि सों आस्वादी ॥
शीतलता कर्पूर पान भर तुव गण्डनि पुलकायो।
नव लवङ्ग चूरण युत दासि वत्सला मोहि गहायो ॥

सौंदर्यामृतराशिरद्भुतमहालावण्यलीलाकला
कालिंदीवरवीचिडंबरपरिस्फूर्जत्कटाक्षच्छविः।
सा कापि स्मरकेलिकोमलकलावैचित्र्यकोटिस्फुर-
त्प्रेमानंदघनाकृतिर्दिशतु मे दास्यं किशोरीमणिः ॥१५६॥

सौन्दर्यामृत राशिः	=(जो) सौन्दर्य सुधा की राशि हैं,	वीचिडम्बर	=की मनोहर तरंग की विशाल
अद्भुत महा	=महाविचित्र	परिस्फूर्जत्	=शोभा के समान
लावण्य लीला कला	=लावण्यमयी लीला कलाओं में पूर्ण हैं,	कटाक्षच्छविः	=(जिनकी) कटाक्ष कान्ति है,
कालिन्दी वर	=श्री यमुना जी	स्मर केलि	=अनङ्ग रङ्ग की

कोमल कला	=कोमल कला की	कापि	=कोई अनिर्वचनीया
वैचित्र्य कोटि	=कोटि कोटि विचित्रताओंसे	किशोरी मणि	=किशोरी शिरोमणि
स्फुरत्	=उल्लसित,	मे	=मुझे
प्रेमानन्द	=प्रेमानन्द की		
घनाकृतिः	=सान्द्रमूर्ति,	दास्यम्	=अपना दास्य
सा	=वह (ऐसी)	दिशतु	=प्रदान करें

करें मुहि निज दासता प्रदान।
प्रेमानन्द घनाकृति सब नव युवतिन माँहि प्रधान॥
सौन्दर्य्यामृत महा राशि सोइ दृग भङ्गी छवि मानो।
उठत तरङ्ग चमत्कृत वर तर यमुन वीचियन जानो॥
कोटि काम कोमल कल केलि अनूपम कलन प्रकासी।
लीला निधि लावण्य सकल निजहित इक कला विकासी॥

दुकूलमतिकोमलं कलयदेव कौसुंभकं
निबद्धमधुमल्लिकाललितमाल्यधम्मिल्लकम्।
बृहत्कटितटस्फुरन्मुखरमेखलालंकृतं
कदा नु कलयामि तत्कनकचंपकाभं महः ॥१५७॥

ति कोमलम्	=अत्यन्तमृदुल	निबद्ध मधु-	=वासन्ती लता
सुम्भकम्	=कुसुम्भ रंग से रञ्जित	मल्लिका ललित	की मालाओं से
दुकूलम्	=दुकूल को	माल्य धम्मिल-	=विरचित
क. यत् एव	=भली भांति धारण किये हुए	कम्	केशपाश वाले
		बृहत्कटि तट	=विशाल कटि प्रदेश पर

स्फुरत् =देदीप्यमान, एवं
मुखर =कलरव करने वाली,
मेखलालङ्कृतम् =काञ्ची से अलङ्कृत,
तत् कनक =उस स्वर्ण
चम्पकाभम् चम्पक के समान
महः तेज को
कदानु =क्या कभी (मैं)
कलयामि =देखूँगी ?

चम्पक हेम प्रभा कब निरखौं।
ओढे कोमल रङ्ग कुसुम्भी नव दुकूल लखि हरषौं॥
कबरी ललित माल मल्ली सों बद्ध नितम्ब बिशाल।
भूषित मुखर मेखला निजहित झं झं बजे रसाल॥

कदा रासे प्रेमोन्मदरसविलासेद्भुतमये
दिशोर्मध्ये भ्राजन्मधुपतिसखीवृंदवलये।
मुदांतः कांतेन स्वरचितमहालास्यकलया
निषेवे नृत्यन्तीं व्यजननवतांबूलशकलैः॥१५८॥

दिशोर्मध्ये =दोनों दिशाओं के मध्य में (अर्थात् सखियों के दाएँ बाएँ)
भ्राजन् =विराजमान,
मधुपति =श्री लाल जी से युक्त,
सखीवृन्द =सखी समूह से
वलये =मण्डलाकार मण्डित,
प्रेमोन्मदरस- =प्रेम के उत्कृष्ट
विलासेद्भुतमये मद से युक्त रसमय विलास सम्पन्न विचित्रता वाले,
रासे =रास में
अन्तः =मण्डल के भीतर
कान्तेन =अपने कान्त के साथ
स्वरचित =निज रचित
महालास्य कलया =प्रशस्त लास्य की कला से

मुदा	=प्रेम पूर्वक	ताम्बूल शकलैः	=नूतन ताम्बूल खंड से
नृत्यन्तीं	=नृत्य परायण (श्री प्रिया जी को)	कदा	=(मैं) कब
व्यजन नव	=बीजना एवं	निषेवे	=सेवन करूंगी ?

रास में यों सेवौं पिय प्यारी ।
व्यजन डुलाऊँ, नव बीरी रचि अर्पौं सहित सुपारी ॥
प्रेमोन्मत्त रास रस विलसति अद्भुत, मधुपति लार ।
दमकैं सखी समूह चहूं दिश दिखैं कंकनाकार ॥
हिय उल्लसित रचौं निज हित बहु नृत्य कला रस सार ।
देखति लास्य नृत्य अद्भुत तहँ सेवौं रुचि अनुसार ॥

प्रसृमरपटवासे प्रेमसीमाविकासे
मधुरमधुरहासे दिव्यभूषाविलासे ।
पुलकितदयितांसे संवलद्बाहुपाशे
तदतिललितरासे कर्हि राधामुपासे ॥१५९॥

प्रसृमर पटवासे	=(जहां) पटवास (कुंकुमादि चूर्ण) फैला हुआ है,	दिव्यभूषा विलासे	=अलौकिक अलङ्कारों के विलास से संपन्न,
प्रेम सीमा विकासे	=प्रेमावधि का पूर्ण विकास है,	पुलकित दयितांसे	=प्रिय के रोमाञ्चित स्कंध वाले
मधुर मधुर हासे	=मधुरातिमधुर हास परिहास से युक्त,	सम्वलद्बाहुपाशे	=भुज पाश से विभूषित
		तत	=उस (ऐसे)

अतिललित	=अतिशय रमणीय	राधाम्	=श्री राधा जी की
रासे	=रासमें(मैं)	उपासे	=उपासना करूंगी
कर्हि	=कब		

सेऊँ कब रास रसीली राधा ।
पुलकित वपु पिय अंस वलित भुजपाशहि रस बस साधा ।।
फरहरात पट सर्व अंग के सींव प्रेम सुविकासी ।
मधुर मधुर मृदु हास्य जु निर्जहित भूषण दिव्य विलासी ॥

यदि कनकसरोजं कोटिचंद्रांशुपूर्णं
नवनवमकरंदस्यंदि सौंदर्यधाम ।
भवति लसितचंचरखंजनद्वंद्वमास्यं
तदपि मधुरहास्यं दत्तदास्यं न तस्याः ।।१६०।।

यदि	=यदि	भवति	=हो
कोटि चन्द्रांशु पूर्णम्	=कोटि कोटि चन्द्र किरणों से पूर्ण	तदपि	=तो भी
		मधुर हास्यम्	=मधुर हास्य से भूषित
नव नव	=नूतनातिनूतन	तस्याः आस्यम्	=उन (प्रियाजी) का मुख कमल
मकरन्द	=मकरन्द को		
स्यन्दि	=बहाने वाला,	दत्त दास्यम् न	=(उसे) दास्यता देना भी स्वीकार नहीं करता (अर्थात् दास नहीं बनाता फिर समता देने की तो बात ही कैसे की जाए)
सौन्दर्य्य धाम	=सुन्दरता का एकमात्र सदन		
लसित	=शोभायमान		
चञ्चरखञ्जन	=चञ्चल खञ्जन		
द्वंद्वम्	=युगल से (अलङ्कृत) कोई		
कनक सरोजम्	=स्वर्ण कमल		

रास माँहि प्यारी छवि भ्राजै ।
जनु इक रूप धाम कनकाम्बुज कोटिन चन्द्र प्रभा कों लाजै ॥
नव नव झरत मरन्द युगल खञ्जन खेलत चञ्चल तिहि माँहि ।
तुलै न निजहित लेश कञ्जमुख हंसत प्रिया जब रास रचाहि ॥

सुधाकरमुधाकरं प्रतिपदस्फुरन्माधुरी
धुरीणनवचंद्रिकाजलधितुंदिलं राधिके ।
अतृप्तहरिलोचनद्वयचकोरपेयं कदा
रसांबुधिसमुन्नतं वदनचंद्रमीक्षे तव ॥१६१॥

राधिके !	=हे श्री राधिके !
सुधाकर	=चन्द्रमा को
मुधाकरम्	=निरर्थक करने वाले,
प्रतिपद स्फुरन् माधुरी	=प्रतिक्षण विकासमान माधुरी में
धुरीण	=मुख्य,
नव चन्द्रिका	=नूतन चन्द्रिका रूपी
जलधि	=सागर के
तुन्दिलम्	=सम्वर्धन शील,
अतृप्त	=तृप्ति हीन

हरि लोचन द्वय चकोर	=चकोर समान लाल जी के नेत्र युगल से
पेयम्	=पान करने योग्य,
रसाम्बुधि	=रस सागर से
समुन्नतम्	=उदित होने वाले
तव	=आपके
वदनचन्द्रम्	=मुख चन्द्र को मैं
कदा	=कब
ईक्षे	=देखूँगी ?

रास रस छवि मय मुख कब दरसैं ।
निरस चन्द्र जिहि सम्मुख राधे ! विनु दरसैं उर टीसैं ॥
क्षपा क्षण वीस माधुरी नव नव सार सु-सागर भर है ।
हरि युग दृग चकोर हित अमृत रसनिधि निज हित वर है ॥

अंगप्रत्यंगरिंगन्मधुरतरमहाकीर्तिपीयूषसिंधो
रिंदोःकोटीर्विनिंदद्वदनमतिमदालोलनेत्रं दधत्याः ।
राधायाः सौकुमार्याद्भुतललिततनोः केलिकल्लोलिनीना
मानंदस्यंदिनीनां प्रणयरसमयान् किं विगाहे प्रवाहान्।१६२।

अङ्गप्रत्यङ्गरिङ्गन् मधुर तर महा-कीर्ति पीयूष सिन्धोः	=जिनके प्रत्येक अङ्ग से मधुरातिमधुर प्रशस्त कीर्ति रूप सुधा सागर बहते रहते हैं
अति मदा लोल नेत्रम्	=मद भरे चञ्चल नेत्र युक्त,
इन्दोः कोटीः विनिन्दत्	=कोटि कोटि चन्द्रों को लज्जित करने वाले,
वदनम् दधत्याः	=वदन वाली
सौकुमार्यद्भुत ललित तनोः	=विचित्र सुकुमार कमनीय कलेवर वाली,
राधायाः	=श्री राधा जी के
आनन्दस्यन्दिनी-नाम्	=आनन्द स्राविणी
केलि कल्लोलिनी-नाम्	=केलि सरिताओं के
प्रणय रसमयान्	=प्रणय रस रूप
प्रवाहान्	=प्रवाह का
किम्	=क्या (मैं)
विगाहे	=अवगाहन करूंगी ।

रस निरझरणी आनन्द सरिता ।
श्री राधा रति केलि स्रवै कब, भीजौं भावोच्छलिता ॥
अंग प्रति अंग मधुर तर अमृत यश सागर जु प्रवाहै ।
मत्त चपल दृग युत श्री आनन कोटिन इन्दु लजाहै ॥
अति अद्भुत सुकुमार किशोरी परम ललित तनु शोभी ।
प्रणय रसमयी निजहित रसिकन हिय अस सरिता लोभी ॥

मत्कंठे किं नखरशिखया दैत्यराजोस्मि नाहं
मेवं पीडां कुरु कुचतटे पूतना नाहमस्मि ।
इत्थं कीरैरनुकृतवचः प्रेयसा संगतायाः
प्रातः श्रोष्ये तव सखिकदा केलिकुंजे मृजंती ।।१६३।।

मत्कण्ठे	=मेरे कण्ठ में
नखरशिखया	=नखाग्र (घात)
किम्	=क्यों (करते हो)
अहम्	=मैं
दैत्यराजः	=दैत्यराज (तृणावर्त तो)
नास्मि	=नहीं हूँ,
कुचतटे	=मेरे कुच मण्डल पर
एवम्	=ऐसी
पीडाम्	=पीडा
मा कुरु	=मत करो
अहम्	=मैं
पूतना	=पूतना (बकी)
नास्मि	—नहीं हूँ
सखि	=हे सखि !
इत्थम्	=इस प्रकार
प्रेयसा	=प्रियतम से
सङ्गतायाः	=समागम को प्राप्त (होते समय)
तव	=आपके
कीरैरनुकृत	=शुकानुकृत
वचः	=वचन को
प्रातः	=प्रातःकाल
केलि कुञ्जे	=केलि कुञ्ज में
मृजन्ती	=मार्जन करती
कदा श्रोष्ये	=कब सुनूँगी ।

प्रणय कोप कछु पिय सँग बतियाँ ।
सङ्गम समय सुनी शुक-उचरत तब हौं सुनूँ मिथुन की रतियाँ ।।
भोर बुहारत केलि कुञ्ज हौं सुनौं जु शुक अस रटन लगाई ।
क्यों ममगर नख घात करत-हो तृणावर्त राक्षस तो नाई ।।
काहे कुच मर्दत पीडा दं ? हौं तो नाँहि पूतना प्यारे ।
सुरत समय को भाषण तुमरो शुक निजहित सुमिरत उच्चारे ।।

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु स्फुरतु मे राधापदाब्जच्छटा
वैकुंठेनरकेथवा मम गतिर्नान्यास्तु राधां विना ।
राधाकेलिकथासुधांबुधिमहावीचीभिरांदोलितं
कालिंदीतटकुंजमंदिरवरालिंदे मनो विंदतु ।।१६४।।

जाग्रत्स्वप्न	=जाग्रत्स्वप्न
सुषुप्तिषु	=सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं में
राधापदाब्जच्छटा	=श्री राधा पद कमल की छटा
मे (हृदि)	=मेरे हृदय में
स्फुरतु	=स्फुरित हो
वैकुण्ठे	=वैकुण्ठ लोक में
अथवा	=अथवा
नरके	=नरक में
राधां विना	=श्रीराधा जी के विना
मम अन्या	=मेरी कोई
गतिःनास्तु	=दूसरी गति (शरण) न हो
राधा केलि कथा	=राधाकेलि
सुधाम्बुधि	=कथामृत सागर की
महा वीचिभिः	=उत्ताल तरङ्गों से
आन्दोलितम्	=संचालित
मनः	=(मेरा) मन
कालिन्दीतट-कुञ्जमंदिर	=यमुना तट के निकुञ्ज मंदिर के
वरालिन्दे	=श्रेष्ठ आङ्गन में
विन्दतु	=(मोद को प्राप्त करे।

नँहि मुहि आन गती विनु राधा ।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति फुरै उर दुति पद कमल अबाधा ।।
राधा केलि कथामृत सागर सो मन सदा तरङ्गित ।
यमुना कूल लता मंदिर वर रमै उहां आनन्दित ।।
कहा कहौं वैकुण्ठ लहौं अथवा बहु नर्कहुं जाऊँ ।
रहै अखण्ड स्मृति तुव स्वामिनि निजहित तुम सों पाऊँ ।।

अलिंदे कालिंदीतटनवलतामंदिरगते
रतामर्दोद्भूत श्रमजलभरापूर्णवपुषोः ।
सुखस्पर्शेनामीलितनयनयोः शीतमतुलं
कदा कुर्य्यां संवीजनमहह राधामुरभिदोः ॥१६५॥

अहह !	=अहो (आश्चर्य्य)	वपुषोः	=शरीर वाले,
कालिन्दीतट	=श्रीयमुना तट पर	सुखस्पर्शेन	=सुखद स्पर्श से
नवलतामंदिरगते	=नवीन लता भवन के	आमीलित	=मुद्रित नयन
अलिन्दे	=आङ्गन में	नयनयोः	=वाले
रतामर्दोद्भूत	=रति व्यायाम (विहार) से समुत्पन्न	राधामुरभिदोः	=राधामाधव के लिये
श्रम जल भरा पूर्ण	=श्रम स्वेद (कन) समूह सिक्त	अतुलम्	=अनुपम
		शीतम्	=शीतल
		सम्वीजनम्	=व्यजन को
		अहम्	=मैं
		कदा	=कब
		कुर्य्याम्	=करूंगी ।

तब कहुं करौं व्यजन सों ब्यार ।
राधा मधुसूदन रति श्रम में श्रमित होइँ जिहि बार ॥
यमुन कूल नव लता भवन में सुरत केलि उरझाए ।
रस वश सटे मुंदे दृग निरखहित श्री वपु स्वेद सुहाए ॥

क्षणं मधुरगानतः क्षणममंदहिंदोलतः
क्षणं कुसुमवायुतः सुरतकेलिशिल्पैः क्षणम् ।
अहो मधुरसद्रसप्रणयकेलिवृंदावने
विदग्धवरनागरौ रसिकशेखरौ खेलतः ।१६६ ॥

अहो !	=अहह !
मधुर	=मधुर
सद्रस	प्रशस्त रस की
प्रणयकेलि	=प्रेम विलास से पूर्ण
वृन्दावने	=श्रीवृन्दावन में
विदग्ध वर नागरी रसिक शेखरौ	=विदग्ध शिरोमणि प्रिया जी (तथा) रसिक शेखर श्री श्री लाल जी
क्षणं मधुर गानतः	=कभी मधुर सङ्गीत द्वारा
क्षणं अमन्द हिन्दोलतः	=कभी वेगशाली हिण्डोले से,
क्षण कुसुम वायुतः	=कभी पुष्प विहित वायु से (तथा)
क्षण सुरत केलि शिल्पैः	=कभी सुरत विहार रचनाओं से
खेलतः	=खेलते (कौतुक करते) रहते हैं।

विवधि रस कौतुक श्री वन ठानें।
चतुर नागरी मणी रसिक दोउ मधुर केलि की बानें॥
कबहुं मधुर स्वर गावत निजहित वेगि हिण्डोरे झूलें।
सेवत सुरभित पवन-चातुरी सुरत केलि रचि फूलें॥

अद्य श्यामकिशोरमौलिरहह प्राप्तो रजन्या मुखे
नीत्वा तां करयोः प्रगृह्य सहसा नीपाटवीं प्राविशत्।
श्रोष्ये तल्पमिलन्महारतिभरे प्राप्तेपि शीत्कारितं
तद्वीचीसुखतर्जनं किमु हरेः स्वश्रोत्ररंध्राश्रितम्॥१६७॥

अहह	=अहह ! (आश्चर्य्य)
अद्य	=आज
श्याम किशोर	=किशोर
मौलिः	=शिरोमणि श्री लाल जी
रजन्यामुखे	=सायं काल
प्राप्तः	=पधारे (तथा)
ताम्	=उन (श्री प्रिया जी) को
करयोः प्रगृह्य	=कर ग्रहण पूर्वक

नीत्वा =ले जाकर
सहसा =एकाएक
नीपाटवीम् =कदम्ब कानन में
प्राविशत =प्रविष्ट हो गये,
अपि =और (वहाँ)
तल्प मिलन्महा रति भरे प्राप्ते =शय्या पर (परस्पर) संगम में प्रशस्त रति प्रवाह की वृद्धि होने पर
हरे: तद्वीचो उन (श्री लाल जी के)

तरङ्गवत् (स्वल्प कैवल्य)
सुख तर्जनम् =सुख को तिरस्कृत करने वाले (उस रति भर के)
शीत्कारितम् =शीत्कार शब्द को,
स्वश्रोत्र =अपने कर्ण
रन्ध्राश्रितम् कुहरों में प्राप्त होने पर
किम् =क्या (मैं)
श्रोष्ये =सुनूंगी ?

श्रवण सुनौं सी-सी मधु बोलन ।
कुञ्ज रन्ध्र लगि जब प्यारे सों रति सुख भर अंग अंगहि डोलन ॥
सहसा श्याम किशोर मौलि सायं तुव भुज मृदु बरवस गहि कैं ।
विपिन कदम्ब प्रविष्ट होइ निजहित तुम सों क्रीडत डहडहि कैं ॥

श्रीमद्राधे त्वमथ मधुरं श्रीयशोदाकुमारे
प्राप्ते कैशोरकमतिरसाद्वलगसे साधुयोगम् ।
इत्थं बाले महसि कथया नित्यलीलावय:श्री
जातावेशा प्रकटसहजा किन्नु दृश्या किशोरी ॥१६८॥

श्री मद्राधे ! =हे श्रीमति राधे !
श्री यशोदाकुमारे=श्री यशोदा नन्दन (लाल जी) के
अति रसात् =अति रसावेश से

कैशोरकम्	=किशोरावस्था की	इत्थं कथया	बाल्यावस्था में) इस प्रकार की उक्ति से
प्राप्ते	=प्राप्त होने पर	नित्य लीला वयः श्री	=नित्य लीलोचित वय शोभा में
त्वम् अथ	=आप भी इसी (किशोर वय रूपी	जातावेशा	=आवेश को प्राप्त
मधुरं साधु योगम्	=मधुर संयोग को	प्रकट सहजा	=सहज गुणों सहित
वल्गसे	=प्राप्त हो रही हो	किशोरी	=(आप)किशोरी जी को
बालेमहसि	=बालोचित प्रकाश के प्राकट्य काल में (अर्थात्	किन्तु	=क्या (मैं)
		दृश्या	=देखूंगी ?

प्रकटि हो वय किशोर जब प्यारी ।
उत यशुमति नन्दन किशोर बय मधुर प्रकटि सहकारी ॥
तब लीला अनुरूप सुभग वपु साधु योग जुरि आयो ।
इतनो सुमत वचन मम, लखि हों दृग निजहित जु सुहायो ॥

एकं कांचनचंपकच्छवि परं नीलांबुदश्यामलं
कंदर्पोत्तरलं तथैकमपरं नैवानुकूलं बहिः ।
किंचैकं बहुमानभंगि रसवच्चाटूनि कुर्वत्परं
वीक्षे क्रीडतिकुंजसीम्नि तदहो द्वंद्वं महामोहनम् ।१६९।

अहो	=अहह !	काञ्चन	=स्वर्ण चम्पक के
एकम्	=एक तो	चम्पकच्छवि	=समान कान्तिवाला,

परं नीलाम्बुद	=दूसरा नील
श्यामलम्	=नीरद के समान श्याम वर्ण,
तथा	=तथा
एकं कन्दर्प-	=एक काम से
तरलम्	अत्यन्त चञ्चल
अपरम्	=दूसरा
बहिः नैव	=केवल बाहिर
अनुकूलम्	से (अनुकूल नहीं) प्रतिकूल,
किञ्च एकम्	=और फिर एक
बहुमान भङ्गि	=बहुत प्रकार की मान परि-पाटी से पूर्ण
परम्	=तथा दूसरा
रसवच्चाटूनि	=प्रेम से अनुनय विनय
कुर्वत्	=करने वाला (इस प्रकार)
महामोहनम्	=महा मोहित करने वाला
तत् द्वन्द्वम्	=वह युगल (रसिक)
निकुञ्ज सीम्नि	=निकुञ्ज प्रान्त में
क्रीडति	=क्रीडा कर रहा है (क्या मैं उसे)
वीक्षे	=देखूंगा ?

महा मोहन अस युगल निहारौं।
केलि निकुञ्ज प्रान्त छवि युत अस मन अभिलाषा धारौं ॥
एक हेम चम्पक द्युति दूजे सजल सघन घनश्याम ।
इक मनसिज ज्वर चञ्चल दूजे मन रागी पै वाम ॥
एक मानयुत प्रणय कोप वश उत दीनता मनावनि ।
रसमयि चाटु वचन रचना अस निजहित हृदय लुभावनि ॥

विचित्ररतिविक्रमं दधदनुक्रमादाकुल
महामदनवेगतो निभृतमंजुकुञ्जोदरे ।
अहो विनिमयन्नवं किमपि नीलपीतं पटं
मिथो मिलितमङ्कुरं जयति पीतनीलं महः ॥१७०॥

अहो ! =अहह !
महा मदन वेगतः =अतिशय अनङ्ग वेग से पूर्ण
निभृतमञ्जु कुञ्जोदरे =एकान्त मनोहर कुञ्ज में
अनुक्रमात् =अनुकूलक्रम
विचित्ररति विक्रमम् से विचित्र रति
दधत् =पराक्रम को अनुशीलन करता हुआ,
किमपि =किसी अनिर्वचनीय
नवं नीलपीतं =नूतन नील
पटं विनिमयत् =तथा पीत पट परस्पर परिवर्तन करता हुआ,
मिथो मिलितम् =परस्पर (नितान्त) संयुक्त
अद्भुतम् =अद्भुत (अनुपम)
पीत नीलं महः =पीत एवं नील तेज
जयति =सर्वोत्कर्षता से विराजमान है ।

अद्भुत मिथुन निकुञ्ज भवन में ।
सटे मनो दो पुञ्ज प्रभा द्युति नील पीत अनुपम श्री वन में ॥
महा मदन आवेश रचें आकुल रति कला विचित्र परस्पर ।
कबहुं पीत नव नील दुकूलनि पलटत अद्भुत ओढत सिर पर ।
अकथ आलौकिक रूप मनोहर इक रस निभृत निकुञ्ज विलासी ।
सर्वोपरि सर्वोत्तम जो युत क्रीड़त निजहित नित्योल्लासी ॥

करे कमलमद्भुतं भ्रमयतोर्मिथोंसार्पित
स्फुरत्पुलकदोर्लतायुगलयोः स्मरोन्मत्तयोः ।
सहासरसपेशलं मदकरींद्रभंगीशतं
गतिं रसिकयोर्द्वयोः स्मरत चारुवृंदावने ॥१७१॥

करे =(जो) हाथ में
अद्भुतम् =विचित्र
कमलम् =कमल (लिये)
भ्रमयतोः =घुमा रहे हैं,
मिथोंसार्पित- =तथा (जिनकी)
स्फुरत्पुलकदोर्लता=दोनों भुज
युगलयोः =लताएँ परस्पर अंसों पर समर्पित, देदीप्यमान एवं रोमांचित हैं,
स्मरोन्मत्तयोः =अनङ्ग से उन्मत्त
द्वयोः =उन दोनों
रसिकयोः =रसिकों की
चारु वृन्दावने =मंजुल वृन्दावन में
सहास रस =परिहास रस
पेशलम् से मृदुल
मदकरीन्द्र =मदोन्मत्त गजराज की
भंगीशतैः =अनेक प्रकार की परिपाटी के समान
गतिम् =गति को
स्मरत =स्मरण करो।

सुमिरिये छवि अनूप हिय धारी।
शत शत मत्त करीन्द्र मन्द गति बिहरत प्रियतम प्यारी॥
अद्भुत कमल घुमाते कर गहि दिये उभय गल-बंयाँ।
हँसत हँसात परस्पर रस युत फिरत विपिन तरु छैयाँ॥
पुलकित मद माते मनसिज रस भाव प्रगट रोमन में।
निजहित प्रभु यह भाव दासता गह्यो भाग्य सों वन में॥

खेलन्मुग्धाक्षिमीनस्फुरदधरमणीविद्रुमश्रोणिभार
द्वीपायामोत्तरंगस्मरकलभकटाटोपवक्षोरुहायाः।
गंभीरावर्त्तनाभेर्बहलहरिमहाप्रेमपीयूषसिंधोः
श्री राधायाः पदांभोरुहपरिचरणे योग्यतामेव मृग्ये।१७२।

खेलन्मुग्धाक्षि- =क्रीडा परायण
मीन मनोहर मीन
ही नेत्र हैं,
स्फुरदधरमणी =दीप्तिशाली

विद्रुम	विद्रुम मणि ही अधिरोष्ठ है,
श्रोणिभार	=विस्तृत द्वीप
द्वीपाया मोत्तरंग	=के समान
स्मर	नितंब मण्डल व काम की जिसमें तरङ्गें हैं,
कलभ कटाटोप	=गजशावक के गण्डस्थल की विशालता तुल्य
वक्षोरुहाया:	=कुच कलश हैं,
गम्भीरावर्त्त नाभे:	=गम्भीर आवर्त्त ही जिनकी नाभि है,
वहलहरि	=श्याम सुन्दर के
महाप्रेमपीयूष सिन्धो:	=महा प्रेम रूप सुधा की जो नदी है,
श्री राधाया:	=(ऐसी) श्री राधा जी के
पदोम्भोरुह	=चरण कमल की
परिचरणे	=सेवा (के विषय) में
योग्यतामेव	=योग्यता (अधिकार कैंङ्कर्य्य) को ही
मृग्ये	=खोजता (चाहता) हूँ।

लहौं कहुं युग पद पद्मनि सेवा।
श्री राधे पीयूष प्रेम निधि रूप-कृष्ण रस देवा॥
चंचल मुग्ध नैंन जनु मीन जु ता निधि मांझ कलोलैं।
पृथु नितंब जनु द्वीप-अधर द्युति विद्रुम मणि समतोलैं॥
विस्तृत द्वीप तरंगित थल में कुच युग यों उपमाहीं।
ज्यों मनसिज गज शावक पै द्वै कलश सहज दरसाहीं॥
गहन नाभि आवर्त्त परयो जनु ता सागर के बीच।
सुमिरि सुमिरि स्वामिनि अस छवि पद उर धरि निजहित सींचु॥

विच्छेदाभान्मानादहह निमिषतो गात्रविस्रंसनादौ
चंचत्कल्पाग्निकोटिज्वलितमिव भवेद्बाह्यमभ्यंतरं च ।
गाढस्नेहानुबंधग्रथितमिव तयोरद्भुतप्रेममूर्त्योः
श्रीराधामाधवाख्यं परमिह मधुरं तद्द्वयं धाम जाने ॥१७३॥

अहह !	= अहो ! (आश्चर्य)
गात्रविस्रंसनाद्	= (जिन्हें) अंगों की शिथिलता में
निमिषतः	= निमेष मात्र के
विच्छेदा-भासमानात्	= वियोगाभास (वियोग की आशंका) से भासित होने पर
बाह्यमभ्यन्तरञ्च	= तन और मन दोनों
चंचत्कल्पाग्नि कोटि ज्वलितमिव भवेत्	= सूद्दीप्त कोटि२ प्रलय अग्नि के समान प्रज्वलित हो जाते हैं ।
इह	= इस लोक में
अद्भुत प्रेम मूर्त्योः तयोः	= उन अद्भुत प्रेम मूर्ति का नाम है
श्री राधामाधवा-ख्यम्	= श्री राधा माधव,
परम् मधुरम्	= जो परम मधुर हैं
इव गाढ स्नेहानुबन्ध	= और मानो गाढ स्नेह
ग्रथितम्	रज्जु में गुथे हुए
तद्द्वयं धाम जाने	= उस प्रकाश रूप युगल को (मैं) जानता हूँ ।

परम मधुर आश्रय जग माहीं ।
केवल राधा माधव दम्पति प्रेम मूर्त्ति सम नाहीं ॥
बिछुड़त सन इक लव निमेष अचरज वियोग आभासे ।
कोटिन प्रलय ज्वाल अगनी जनु तन मन तुरत भुलासे ॥
अंग अंग शिथिल युगल अति गाढ स्नेह बन्ध सों राचे ।
निजहित कण ऐसो सनेह आश्रित यों उन सों जाचे ॥

कदा रत्युन्मुक्तं कचभरमहं संयमयिता
कदा वा संधास्ये त्रुटितनवमुक्तावलिमपि ।
कदा वा कस्तूर्य्यास्तिलकमपि भूयो रचयिता
निकुंजांतर्वृत्ते नवरतिरणे यौवनमणेः ॥१७४॥

निकुञ्जान्तः यौवनमणे नव रति रणे वृत्ते	=नव निकुञ्ज के भीतर यौवन मणि (श्री प्रिया जी के) नव रति रण (प्रथम समागम) के होने पर
अहम्	=मैं
रति उन्मुक्तम्	=रति विलास से शिथिल
कच भरम्	=केश पाश को
कदा संयमियता	=कब बाँधूगी
अपि वा	=तथा
त्रुटित नव मुक्तावलिम्	=टूटी हुई नवीन मुक्ता माला को
कदा सन्ध्यास्ये	=कब पिरो दूंगी
अपि वा	=और फिर
कस्तूर्य्याः तिलकम्	=कस्तूरी के तिलक को
कदा भूयो रचयिता	=कब भली प्रकार से सजा दूंगी ?

कब तब श्री वपु सेव लहोंगी ।
नव निकुंज सुरतांत केलि रण स्वामिनी निकट चहोंगी ॥
अस्त व्यस्त कच पाश सँवारो, मुक्ता माल पिरोऊँ ।
मृगमद तिलक रचौं नवीन यौवन मणि निजहित जोऊँ ॥

किं ब्रूमोन्यत्र कुंठीकृतकजनपदे धाम्न्यपि श्रीविकुंठे ।
राधामाधुर्यवेत्ता मधुपतिरथ तन्माधुरीं वेत्ति राधा ।
वृंदारण्यस्थलीयं परमरससुधामाधुरीणां धुरीणा
तद्द्वंद्वं स्वादनीयं सकलमपि ददौ राधिकाकिंकरीभ्यः।१७५।

श्री विकुण्ठे धाम्नि अपि	=(जब कि) श्री वैकुण्ठ धाम भी
कुण्ठी कृतक-जनपदे	=कुण्ठित प्रदेश हो गया है
अन्यत्र किम् ब्रूमः	=तब अन्यत्र का तो कहना ही क्या ?
मधुपतिः राधा माधुर्य्य वेत्ता	=(एक मात्र) श्री लाल जी (मधुपति) श्री राधा माधुरी को जानते हैं,
अथ तन्माधुरीं राधावेत्ति	=तथा श्री राधा ही उनकी माधुरी को जानती हैं,
परम रस सुधा माधुरीणां धुरीणा	=परम रसमय सुधा माधुरी के मूल उद्गम स्थान
इयम्	=इस
वृन्दारण्यस्थली	=श्री वृन्दावन स्थली (भूमी) ने
स्वादनीयम्	=आस्वादन के योग्य
अपि तद्द्वन्द्वम्	=उसी (रसिक) युगल को भी
सकलमपि	=सम्पूर्ण रूप से
राधिका किङ्करीभ्यः	=श्री राधिका किङ्करी गण के लिये
ददौ	=प्रदान कर दिया है।

जानतु हैं माधव इक मात्र ।
श्री राधा माधुर्य्य महिम ज्यों राधा जानहि पिय को पात्र ।।
कहा गनैं अन्यत्र धाम, वैकुण्ठहुं कुण्ठित भयो प्रदेश ।
विनु राधा माधुर्य निरस सब परसै नहीं युगल रस लेश ।।
जो उद्गम रस सुधा माधुरी सहजहि वृन्दारण्य उदार ।
वै राख्यौ सम्पूर्ण किंकरिनु चाखैं निजहित तिहि आधार ।।

लसद्वदनपंकजा नवगभीरनाभिभ्रमा
नितंबपुलिनोल्लसन्मुखरकांचिकादंबिनी ॥
विशुद्धरसवाहिनी रसिकसिंधुसंगोन्मदा
सदा सुरतरंगिणी जयति कापि वृंदावने ॥ १७६॥

लसद्वदन	=(जिनका) सुन्दर मुख ही	रसिक सिन्धु	=रसिक शेखर (लाल जी) रूप सागर के
पंकजा	=कमल है,	सङ्गोन्मदा	=सङ्गम के लिये उन्मत्त रहती है,
नव गभीर नाभि भ्रमा	=नवीन गहन नाभि ही भँवर है,	कापि	=कोई एक (अनिर्वचनीय)
नितम्ब पुलिनोल्लसत्	=नितम्ब रूपी पट पर सुशोभित	सुरतरङ्गिणी	देव नदी (अथवा) सुरत रंगमयी =श्री प्रिया जी (रूप देव नदी)
मुखर काञ्चि कादम्बिनी	=कलरव करने =वाली काञ्ची ही मेघ माला है		
विशुद्ध रस वाहिनी	=(तथा जो) मधुर (शृङ्गार) रस को बहाने वाली	वृन्दावने	=श्री वृन्दावन में
		सदा	=सदैव
		जयति	=सर्वोत्कर्ष से विराजमान है

श्री वपु जनु सुरसरि इक राजै ।
मुख जनु कमल प्रफुल्लित, भँवर नाभि गहरी मनु छाजै ॥
कूल नितम्ब मेघमाला जनु कलकल काञ्ची बाजै ।
सरस विशुद्ध प्रवाही केवल सुरत मधुर रस साजै ॥
रसिक सिंधु पिय सङ्गम के हित उन्मद वेगावेश ।
श्री वन राजति अकथ देवसरि निजहित सुरत विशेष ॥

अनंगनवरंगिणीरसतरंगिणीसंगतां
दधत्सुखसुधामये स्वतनुनीरधौ राधिकाम् ।
अहो मधुपकाकलीमधुरमाधवीमंडपे
स्मरक्षुभितमेधते सुरतसीधुमत्तं महः ॥१७७॥

अहो	=अहह	मधुप काकली	=भ्रमरों के गुञ्जार से युक्त
अनङ्ग नव	=अनंग के नवीन	मधुर माधवी	=सुन्दर माधवी
रङ्गिणी	आह्लाद से संपन्न	मंडपे	लता के मण्डप में
रस तरङ्गिणी	=संगम को प्राप्त	स्मर क्षुभितम्	=काम से क्षुब्ध
सङ्गताम्	रसमयी नदी की तरह	सुरत सीधु मत्तम्	=सुरत आसव से उन्मत्त,
रधिकाम्	=श्री राधा जी को	महः	=तेज
सुखसुधानये	=सुख सुधा रूप		
स्वतनु नीरधौ	=स्वकीय शरीर रूप समुद्र में	एधते	=समृद्धि को प्राप्त हो रहा है ।
दधत्	=लीन करते हुए,		

अहो इक मनसिज पीडित ज्योति ।
सुरत सुधा उन्मत्त प्रवर्धित माधवि कुंज उदोति ॥
गुंजत मधुकर मन्द नील उज्ज्वल झलकत रस सागर ।
वेष्टित नव भव-सानी निजहित राधा सुधा उजागर ॥

रोमालीमिहिरात्मजा सुललिते बंधूकबंधुप्रभा
सर्वांगे स्फुटचंपकच्छविरहो नाभीसरःशोभना ।
वक्षोजस्तवकालसद्भुजलता शिजापतच्छुंकृतिः
श्रीराधा हरते मनो मधुपतेरन्येव वृंदाटवी ॥१७८॥

अहो = अहह
रोमाली मिहिरात्मजा = (जिनकी) रोमावली ही यमुना है,
बन्धूक बन्धु प्रभा = (अधरोष्ठ ही) बन्धूक (दुपहरिया) पुष्पवत् प्रभाशील है,
सुललिते सर्वाङ्गे = मनोहर
स्फुट चम्पकच्छविः सुकुमार सर्वाङ्ग में प्रफुल्लित चम्पा की कान्ति है,
नाभीसरः शोभना = नाभि रूप सरोवर से जो शोभायमान

है,
वक्षोजस्तबका = कुच युगल ही (पुष्प) गुच्छे हैं,
लसद्भुजलता = सुन्दर भुजा ही लता है,
शिञ्जापतत् छुङ्कृतिः = भूषणों का रव ही भ्रमरों की गुञ्जार है
श्री राधा = ऐसी श्री राधा
अन्या = दूसरी
वृन्दाटवी = वृन्दाटवी की
इव = तरह
मधुपतेः = श्री लाल जी के
मनो हरते = मन को हरण कर रही हैं।

श्री राधा वपु निज श्री वन है।
रोम तरनिजा अधर प्रभा बन्धूक बन्धु सम ठन है॥
ललित सकल अँग चम्पक छवि, जनु नाभी वन सरवर है।
पुष्प गुच्छ वक्षोज, लता भुज शोभे वर तरुवर है॥
आभूषण माधुरि रव मधुपनि गुञ्ज सरस सुखदाई।
राधा जनु वृन्दाटवि निजहित माधव मनहि चुराई॥

राधामाधवयोर्विचित्रसुरतारंभे निकुंजोदर
स्रस्तप्रस्तरसंगतैर्वपुरलं कुर्वेंगरागैः कदा ।
तत्रैव त्रुटिताः स्रजो निपतिताः संधाय भूयः कदा
कंठे धारयितास्मि मार्जनकृते प्रातः प्रविष्टास्म्यहम् ।१७९।

अहम्	=मैं
प्रातः	=भोर ही
मार्जन कृते	=(कुञ्ज में) मार्जन के लिये
प्रविष्टास्मि	=प्रविष्ट हो कर
राधा माधवयोः	=श्री राधा माधव के
विचित्र	=अभूत पूर्व
सुरतारम्भे	=सुरत केलि के समय की
निकुंजोदर	=निकुंज के भीतर
स्रस्त प्रस्तर	=मर्दित शय्या पर
सङ्गतैः	=लगे हुए
अङ्गरागैः	=अंग राग से (मैं)
कदा वपुरलं कुर्वे	=अपने शरीर को कब अलङ्कृत करूंगी,
तत्रैव	=तथा वहीं पर
त्रुटिताः	=टूट कर
निपतिताः	=गिरी (बिखरी)
स्रजः	=मालाओं को
भूयः संधाय	=फिर पिरोकर
कदा	=कब
कण्ठे	=अपने कण्ठ में
धारयितास्मि	=धारण करूंगी ।

अहो मन इक अद्भुत अभिलाषा ।
भोर करौं, सोइ कुञ्ज मार्जनी दम्पति रति रस चाखा ।।
शैय्या अस्त व्यस्त पै दम्पति अङ्गराग लपटानो ।
लै सोइ अगअंग निज लेपौं आपुन भाग्य बखानौं ।
दम्पति कंठ कुसुम माला तँह टूटी पाउँ प्रसादी ।
सो पिरोई के पुन निजहित गर पहिर होउँ उन्मादी ।।

श्लोकान्प्रेष्ठयशोंकितान्गृहशुकानध्यापयेत्कर्हिचिद्
गुंजामंजुलहारबर्हमुकुटं निर्माति काले क्वचित् ।
आलिख्य प्रियमूर्त्तिमाकुलकुचौ संघट्टयेद्वा कदा
प्येवंव्यापृतिभिर्दिनं नयति मे राधा प्रियस्वामिनी ॥१८०॥

कर्हिचित्	=कभी तो
प्रेष्ठ	=प्रियतम के
यशोङ्कितान्	=यश से परिपूर्ण
श्लोकान्	=श्लोकों को
गृहशुकान्	=गृह शुक (सारिकाओं) को
अध्यापयेत्	=पढ़ाती हैं,
क्वचित् काले	=और किसी समय
गुञ्जामंजुल-हारबर्ह-मुकुटम्	=गुञ्जा के सुन्दर हार तथा मयूर मुकुट का
निर्माति	=निर्माण करती हैं,
कदापि वा	=और कभी फिर
प्रियमूर्त्तिम्	=प्रियतम के चित्र को
आलिख्य	=चित्रित करके
आकुल	= आकुल) अपने
कुचौ	=कुच युगल
सङ्घट्टयेत्	=स्पर्श कराती हैं,
एवम्	=इस प्रकार के
व्यापृतिभिः	=व्यापार कलाप से
मे प्रिय स्वामिनी	=मेरी (प्राण-जीवन) प्यारी स्वामिनी
राधा	=श्री राधा जी
दिनम् नयति	=दिन को व्यतीत करती हैं ।

पिय विरहा में दिन यों बितवति ।
श्री राधा निज प्रेष्ठ श्लोक रचि शुक सारिकाहि सिखवति ॥
कबहुं हार मञ्जुल गुञ्जा और मोर मुकुट निर्माय ।
लिखि पिय चित्रहि व्याकुल निजहित कुच युग लेति सटाय ॥

प्रेयः संगसुधासदानुभविनी भूयोभवद्भाविनी
लीलापंचमरागिणी रतिकलाभंगीशतोद्भाविनी ।

कारुण्यद्रवभाविनी कटितटे कांचीकलाराविणी
श्रीराधैव गतिर्ममास्तु पदयोः प्रेमामृतस्राविणी ।।१८१।।

प्रेयः	=प्रियतम की
सङ्गसुधा-सदानुभविनी	=(सङ्गम) प्रेमसुधा का नित्य अनुभव करने वाली,
भूयो	=प्रतिक्षण
भवद्भाविनी	=वर्धमान भाव रूपिणी
लीला पञ्चम-रागिणी	=लीला पूर्वक पंचम राग गाने वाली,
रतिकलाभङ्गी-शतोद्भाविनी	=शत शत रति-कलाओं की परिपाटी का प्राकट्य करने वाली,

कारुण्यद्रव-भाविनी	=करुणा से द्रवित हृदय वाली,
कटितटे -	=कटि प्रदेश में
काञ्ची कलाराविणी	=काञ्ची के कलरव से सम्पन्न,
पदयोः	=चरणों से
प्रेमामृत-स्राविणी	प्रेमामृत को =प्रवाहित करने वाली
श्रीराधैव	=श्री राधा ही
मम	=मेरी
गतिः	=गति (शरण)
अस्तु	=हों ।

श्री राधा इक मात्र गती मम ।
जाके पद युग प्रेमामृत निरझरें सतत रस अनुपम ।।
जो पिय संग अनुभवे सदा सुख स्वाद सुधा रुचिकारी ।
नित नव भावमयी लीला में गावै पंचम प्यारी ।।
उदित करें शत शत युक्तिन रति कला करुण रस स्रावें ।
कटि मेखला मधुर कल बाजै निजहित महिमा ध्यावें ।।

कोटीन्दुच्छविहासिनी नवसुधासम्भारसम्भाषिणी
वक्षोजद्वितयेन हेमकलशश्रीगर्वनिर्वासिनी ।
चित्रग्रामनिवासिनी नवनवप्रेमोत्सवोल्लासिनी
वृन्दारण्यविलासिनी किमु रहो भूयाद्धृदुल्लासिनी ।।१८२।।

कोटीन्दुच्छवि-हासिनी	=कोटि २ चन्द्र छटा के समान हास्य वाली,
नवसुधा सम्भार सम्भाषिणी	=नूतन सुधा धारा वत् आलाप करने वाली
वक्षोज-द्वितयेन हेम-कलश श्रीगर्व-निर्वासिनी	=कुच युग के द्वारा स्वर्ण कलश की शोभा के गर्व को निर्मूल करने वाली,
चित्रग्राम निवासिनी	=चित्रग्राम (बरसाने) में निवास करने वाली,
नवनव प्रेमोत्सवो-ल्लासिनी	=नूतनातिनूतन प्रेमोत्सव (सुरत रङ्ग) को उल्लसित करने वाली,
रहो वृन्दारण्य विलासिनी	=निभृत वृन्दारण्य में विलास करने वाली, (श्री प्रिया जी)
किमु	=क्या कभी (मेरे)
हृदुल्लासिनी	=हृदय में उल्लसित
भूयात्	=होंगी।

हिय उल्लास चहौं इक तुमरो।
राधे ! चित्रग्राम निवासिनी, दान हेतु तुहि सुमिरौं॥
कोटि इन्दु दुति हरनी, बोलनि सद्य सुधा सों पालै।
कुच युग स्वर्ण कलश के गर्वहि हरैं सहज रति आलय॥
प्रेमोत्सव उल्लास-मयी श्री वृन्दावरण्य बिलासिनि।
अस गरिमा उल्लास एक रस निजहित उर उल्लासिनि॥

कदा गोविन्दाराधनललितताम्बूलशकलं,
मुदा स्वादं स्वादं पुलकिततनुर्मे प्रियसखी।
दुकूलेनोन्मीलन्नवकमलकिञ्जल्करुचिना
निवीताङ्गी सङ्गीतकनिजकलाः शिक्षयति माम् ॥१८३॥

गोविन्दाराधन	=श्री लाल जी के आराधन से प्राप्त
ललित	=रुचिर
ताम्बूलशकलम्	=तांबूल खण्ड को
मुदा स्वादं स्वादम्	=मोद पूर्वक बार बार आस्वादन करती हुई,
पुलकित तनुः	=रोमाञ्चित विग्रह वाली,
मे प्रिय सखी	=मेरी प्यारी सखी (ललिता)
उन्मीलन्नव	=प्रफुल्लित नूतन
कमल किञ्जल्क रुचिना	कमल केसर की शोभा वाले,
दुकूलेन	=दुकूल से
निवीताङ्गी	=सुसज्जिताङ्गी
सङ्गीतक	=सङ्गीत की
निजकलाः	=असाधारण कलाओं को
माम्	=मुझे
कदा	=कब
शिक्षयति	=सिखायेंगी ?

ललित वपु हे हे सखी! प्रवीन ।
कब सङ्गीत सिखावहुगी मुहि जानि जु चेरी नवीन ।
गोविन्द पान प्रसादी तुम कहँ देत मुदित मन सजनी ।
स्वाद लेति तुम पुलकित वपु नित उनके हित की भजनी ॥
नवल कमल केसर पराग सम रंग्यो दुकूल तिहारो ।
ऐसी निपुन सखी निज हित तन मनु हौं तुहि पै वारौं ॥

लसद्दशनमौक्तिकप्रवरकांतिपूरस्फुरन्
मनोज्ञनवपल्लवाधरमणिच्छटासुन्दरम् ।
चरन्मकरकुण्डलं चकितचारुनेत्राञ्चलम्
स्मरामि तव राधिके वदनमण्डलं निर्मलम् ॥१८४॥

राधिके !	=हे श्री राधिके !
लसद्दशन	=शोभमान सुन्दर
मौक्तिक प्रवर कान्ति	मुक्ता सम दन्त-कांति के पुञ्ज से
पूरस्फुरन्	उल्लसित
मनोज्ञनव	=सुन्दर नूतन
पल्लवाधर	=पल्लव सम अधर की

मणिच्छटा =मनोज्ञ छवि से
सुन्दरम् =कमनीय
चलन्मकर =चञ्चल मकराकृति
कुण्डलम् कुण्डल मंडित
चकित चारु =चकित उज्ज्वल
नेत्राञ्चलम् नेत्र कटाक्ष युक्त
तव =आपके
निर्मलम् =स्वच्छ (शुभ्र)
वदनमंडलम् =वदन मंडल को
स्मरामि =(मैं) स्मरण करती हूँ।

सुमिरि मन राधा मुख मण्डल कौं।
अति अद्भुत शोभामय दीपति सकल सार मङ्गल कौं॥
निर्मल उज्वल दुति स्वाती सुत सम दशनावलि शोभी।
पल्लव अधर मनोज्ञ लजावें विद्रुम मणि दुति को भी॥
चञ्चल मकराकार कपोलनि कुण्डल निज हित भ्राजें।
चारु चकित युग नेत्र कोण मुख खञ्जन खेलत साजें॥

चलत्कुटिलकुन्तलं तिलकशोभि भालस्थलं
तिलप्रसवनासिकापुटविराजिमुक्ताफलम्।
कलङ्करहितामृतच्छविसमुज्ज्वलं राधिके
तवातिरतिपेशलं वदनमण्डलं भावये॥१८५॥

राधिके! =हे श्री राधिके!
चलत् कुटिल =चञ्चल घुँघराली
कुन्तलम् अलकों वाले,
तिलक शोभि =तिलक से चित्रित
भालस्थलम् भाल वाले,
तिलप्रसव =तिल पुष्प सम-
नासिकापुट नासिका पुट में
विराजि =शोभमान बेसर की
मुक्ताफलम् मुक्ता वाले,
कलङ्करहिता- =निष्कलंक चंद्रमा
मृतच्छवि =से भी
समुज्ज्वलम् =अत्यन्त उज्ज्वल (स्वच्छ)
अतिरति =अतिशय प्रेम से
पेशलम् सुन्दर
तव =आपके
वदनमंडलम् =मुख मंडल की
भावये =मैं भावना करती हूँ।

स्वामिनि मुख मण्डल तुव ध्याऊँ।
कुटिल अलक चञ्चल अरु माथे तिलक सुमिरि बलि जाऊँ॥
मुक्ताफल बेसर नासा जो तिल प्रसून वत सोहै।
निश्कलङ्क विधु उज्वल छबि चिन्मय निज हित चित मोहै॥

पूर्णप्रेमामृतरससमुल्लाससौभाग्यसारं
कुंजे कुंजे नवरतिकलाकौतुकेनात्तकेलि।
उत्फुल्लेन्दीवरकनकयोः कांतिचोरं किशोरं
ज्योतिर्द्वन्द्वं किमपि परमानन्दकन्दं चकास्ति ॥१८६॥

पूर्णप्रेमामृत =पूर्ण प्रेमामृत रस
समुल्लास समुत्कर्ष के
सौभाग्यसारम् सौभाग्य का सार रूप
कुञ्जे कुञ्जे =प्रत्येक कुञ्ज में
नव रतिकला नूतन रतिकला के
कौतुकेन चमत्कार से
आत्तकेलि =केलि परायण
उत्फुल्लेन्दी =प्रफुल्लित नील
वर कनकयोः =एवं स्वर्ण कमल की

कान्तिचोरम् =कान्ति को चुराने वाला
परमानन्द =परमानन्द का
कन्दम् मूल
किमपि =कोई अनिर्वचनीय
किशोरम् =किशोर
ज्योतिर्द्वन्द्वम् =प्रकाश युगल (गौरश्याम तेज)
चकास्ति =शोभित हो रहा है।

ज्योति किशोर युगल छबि शोभै।
अनुपम परमानन्द कन्द रमि कुञ्ज कुञ्ज वन लोभै॥
नील कनक विवि कमल हरत द्युति अङ्ग प्रफुल्लित राजै॥
पूर्ण प्रेम अमृत रस सार सुकमनी उलहत भ्राजै॥
नव नव कौतुक कोक कला कल केलि कुञ्ज बहु ठानें।
निज हित ऐसे युगल मनोरम भजि, तजि इतर जु बानें॥

ययोन्मीलत्केलीविलसितकटाक्षैककलया
कृतो बन्दी वृन्दाविपिनकलभेंद्रो मदकलः ।
जडीभूतः क्रीडामृग इव यदाज्ञालवकृते
कृती नः सा राधा शिथिलयतु साधारण गतिम् ॥१८७॥

यया	=जिन (श्रीराधा जी की
उन्मीलत्केली	=विकसित केलि
विलसित	=विलास में
कटाक्षैक	=कटाक्ष की केवल
कलया	एक कला ने
मदकलः	=मदोन्मत्त
वृन्दाविपिन	=वृन्दावन के
कलभेन्द्रः	=गज शावक शिरोमणि (श्री लाल जी) को
बन्दीकृतः	=बन्दी बना लिया (तथा)
कृती	=कुशल होने पर भी
यदाज्ञालव	=जिन की आज्ञा के
कृते	संकेत मात्र के लिये (पालनार्थ)
क्रीडामृग इव	=क्रीडामृग की
जडी भूतः	तरह जड़ वत् बने रहते हैं
सा राधा	=वह श्रीराधा जी
नः	=हमारी
साधारण	=भव बाधा को
गतिम्	
शिथिलयतु	=दूर करें ।

निवारहु संसृति गति श्री राधा ।
का कहौं महिमा तोपै जड़वत मोहन बिषयो अबाधा ॥
यद्यपि हैं वह महा मत्त गज निज हित विपिन विलासी ।
परम चतुर क्रीड़ा मृग कीनो लव भ्रूभङ्गि विकासी ॥

श्रीगोपेंद्रकुमारमोहनमहाविद्येस्फुरन्माधुरी
साररफाररसाम्बुराशिसहजप्रस्यंदिनेत्राञ्चले ।
कारुण्यार्द्रकटाक्षभङ्गिमधुरस्मेराननाम्भोरुहे
हाहा स्वामिनि राधिके मयि कृपादृष्टिं मनाङ्निक्षिप॥१८८॥

श्री गोपेन्द्र कुमार मोहन महा विद्ये = हे श्री नन्द नन्दन के मोहनार्थ महा विद्या स्वरूपे!
स्फुरन्माधुरी सारस्फार रसाम्बुराशि सहजप्रस्य-न्दि नेत्राञ्चले = हे देदीप्यमान माधुरी सार समृद्धि के रस सागर के स्वाभाविक प्रस्रावि नेत्र प्रान्त भागे!
कारुण्यार्द्र कटाक्षभङ्गि! = हे करुणा पूर्ण स्निग्ध कटाक्ष पातिनि!
मधुर स्मेराननाम्भोरुहे! = हे सुन्दर मन्द हास्य भूषित मुख कमले!
हा हा स्वामिनि राधिके! = हा हा स्वामिनि श्रीराधिके!
मयि = मुझ पर
मनाक् = तनिक
कृपा दृष्टिम् = कृपा दृष्टि
निक्षिप = पात कीजिये।

तनिक करि कृपा कटाक्ष विलोको।
हे स्वामिनि! हे राधे! हे मुख कमल हास्य मृदु चोखो॥
हे गोपेन्द्रकुमार मोहिनी! विद्यमहा! प्रवीने!।
हे माधुरी सार रस सागर! नेत्र कोण द्रवि भीने॥
हे करुण स्नेह सानी सुकटाक्ष भङ्गिमा शोभे!।
निज हित की आधार रूप छवि ढरे कृपा अरु लोभे॥

ओष्ठप्रांतोच्छलितदयितोद्गीर्णतांबूलरागा
रागानुच्चैर्निजरचितया चित्रभंग्योन्नयंती।
तिर्यग्ग्रीवा रुचिररुचिरोदञ्चदाकुञ्चितभ्रूः
प्रेयः पार्श्वे विपुलपुलकैर्मण्डिताभाति राधा ॥१८६॥

ओष्ठ प्रान्तोच्छलित दयितोद्गीर्ण ताम्बूलरागा = प्रियतम के उगले हुए पान की लाली से जिनके ओष्ठ रङ्गीन हो रहे हैं
तिर्यग्ग्रीवा = ग्रीवा को तिरछी करके

रुचिररु =अत्यन्त सुन्दरता	उन्नयन्ती गान करती हुई,
चिरोदञ्चद् से कुछ उठी हुई	विपुल पुलकै =प्रचुर रोमाञ्च
आकुञ्चतभ्रूः =भृकुटि को बंक किये हुए	मण्डिता भूषित
	राधा =श्रीराधा
निजरचितया =अपने ही रचित	प्रेयः =प्रियतम के
चित्रभङ्ग्या =विचित्र कौशल से	पार्श्वे =पास में (वाम भाग में)
रागान् =रागों को	
उच्चैः =ऊँचे स्वर से	भाति =विराजमान हैं।

राजति स्वामिनि पिय के अङ्क।
निज चर्वित ताम्बूल अधर सो देति लाल निसंङ्क॥
इहि अवसर अरुणारे झलकें मधुर अधर मृदु न्यारे।
अद्भुत उच्च स्वरनि बहु रागिनि तिरछी ग्रीव उचारे।
गानरचित निज-भौंह रुचिर कछु दोनों सिमिट लुभानो॥
कौशल राग सिद्धि सों निजहित पुलकित आनँद सानो।

किं रे धूर्त्तप्रवर निकटं यासि नः प्राणसख्या
नूनं बालाकुचतटकरस्पर्शमात्राद्विमुह्येत्।
इत्थं राधे पथिपथि रसान्नागरं तेनुलग्नं
क्षिप्त्वा भंग्या हृदयमुभयोः कर्हि संमोहयिष्ये॥१९०॥

रे धूर्त प्रवर! =अरे वञ्चक शिरोमणे !	कुच तट कर =कुच तटी के कर
	स्पर्श मात्रात् स्पर्श मात्र से
नः प्राण =हमारी प्राण	
सख्याः प्यारी सखी के	विमुह्येत् =(तुम) मूर्छित हो जाओगे
निकटं कि =निकट क्यों जाते	
यासि हो	राधे =हे श्रीराधे !
नूनम् =निश्चय ही	इत्थम् =इस प्रकार
बाला =उन बाला के	पथि पथि =पग पग पर

रसात् =प्रेम विवश
ते अनुलग्नम् =आपका अनुगमन करने वाले
नागरम् =नागर शिरोमणि (श्री लालजी) को
भङ्ग्याक्षिप्त्वा =वचन चातुरी से डाँट कर
उभयोः =आप दोनों के
हृदयम् =चित्त को
कर्हि =(मैं) कब
सम्मोहयिष्ये =भली भाँति मोहित (प्रमुदित) करूँगी।

स्वामिनि! कब यह आस पुजोगी।
रसिक लाल नागर तव अनुगत देखति हास्य सजोगी॥
कहौं लाल कौं क्योंरे धूर्त्त शिरोमणि! इत क्यों आता।
लेश परस कुच या बाला को करिहौ याद विधाता॥
हे राधे! सुनि वचन चातुरी तुम अरु लाल बिहारी।
निर्जहित यों विनोद सुमोद युत मोहित तुम पिय प्यारी॥

कदा वा राधायाः पदकमलमायोज्य हृदये
दयेशं निःशेषं नियतमिह जह्यामुपविधिम्।
कदा वा गोविंदः सकलसुखदः प्रेम करणा
दनन्ये धन्ये वै स्वयमुपनयेत स्मरकलाम् ॥१६१॥

राधायाः =श्रीराधा जी के
दयेशम् =कृपा पूर्ण
पदकमलम् =पद कमल को
हृदये =हृदय में
आयोज्य =धारण करके
इह इस जीवन में
निःशेषम् =सर्वाङ्ग रूप से
नियतम् =नियमित
उपविधिम् =विधि विधान को
कदा =(मैं कब
जह्याम् =त्यागूँगी (तथा)
सकल सुखदः =सकल सुखप्रद
गोविन्दः =श्री लाल जी मुझ
अनन्ये धन्ये अनन्य धन्य को

प्रेम करणात्	=प्रिया जी की कृपा भाजन जान	स्मरकलाम्	=विहार परिपाटी की
स्वयम्	=स्वयं ही	कदा	=कब
		उपनयेत	=शिक्षा देंगे ।

मन राधा पद पंकज उर धरि ।
संसृति हेतु विहित धर्मनि तजि काम मुक्त ह्वै हो इक किंकरि ॥
कब तब गोविन्द मुहि अनन्य अरु धन्य जानि निज गनि अपनावैं ।
निजहित अधिकारिन लखि सेवा स्वामिनि काम कला सिखलावैं ॥

कदा वा प्रोद्दामस्मरसमरसंरंभरभस
प्ररूढस्वेदांभःप्लुतलुलितचित्राखिलतनू ।
गतौ कुञ्जद्वारे सुखमरुति संवीज्य परया
मुदाहं श्री राधारसिकतिलकौ स्यां सुकृतिनी ॥१९२॥

प्रोद्दाम स्मर समर संरम्भ रभस	=निर्बाध काम संग्राम की उत्कण्ठा के वेग से	सुख मरुति	=सुख से वायु प्राप्त हो सके
प्ररूढ स्वेदाम्भः	=उत्पन्न स्वेद सलिल द्वारा (जिनके)	कुञ्जद्वारे	=ऐसे कुञ्ज द्वार पर
प्लुत लुलित चित्राखिलतनू	=शरीर सर्वांग सिक्त शिथिल एवं विचित्र हो गये हैं (तथा जहां)	गतौ	=विराजमान (उन)
		श्री राधा रसिक तिलकौ	=श्री राधा एवं रसिक शेखर (लाल जी को)
		परयामुदा	=परम प्रीति से
		सम्वीज्य	=सम्वीजन (बयार) करके

अहम्	=मैं	सुकृतिनी	=भाग्यशालिनी
कदा वा	=कब	स्याम्	=होऊँगी ।

कब अस सुकृत उदय हो प्यारी ।
श्रमित जानि संग लाल सेज पर करूं व्यजन सों ब्यारी ।।
भर संग्राम काम आवेशित वेग, स्वेद सों साने ।
देह उभय भए शिथिल तरातर चित्रित श्रम कछु भाने ।।
परम हर्ष सों देखि दशा अस निकट कुञ्ज दर ठाढी ।
भीतर कुञ्ज धाइ निजहित करौं सेव प्रीति उर बाढी ॥

मिथः प्रेमावेशाद्घनपुलकदोर्वल्लिरचित
प्रगाढाश्लेषेणोत्सवरसभरोन्मीलितदृशौ ।
निकुञ्जक्लृप्ते वै नवकुसुमतल्पेधिशयितौ
कदा पत्संवाहादिभिरहमधीशौ नु सुखये ।।१९३।।

मिथः	=परस्पर		वाले
प्रेमावेशाद्घन-पुलक	=प्रेम के आवेश से सान्द्र रोमांच युक्त	निकुञ्जक्लृप्तेवै	=(तथा) निकुञ्ज में सुसज्जित
दोर्वल्लिरचित	=भुज लताबद्ध	नव कुसुम तल्पे	=नूतन कुसुम शय्या पर
प्रगाढाश्लेषेण	=प्रगाढालिंगन से	अधिशयितौ	=विराजमान
उत्सव रस	=उत्सव रस के	अधीशौ	=अपने अधीश्वर (प्रियाप्रियतम) को
भरोन्मीलित दृशौ	आधिक्य द्वारा अर्ध निमीलित नेत्र	कदा नु	=(मैं) कब

पत्सम्वाहादिभिः	=पाद सम्वाहनादि (चरण सेवा आदि से)	सुखये	=सुखित करूँगी ।

लहौं तब सेवा पद सम्वाहन ।
निज अधीश्वरिनु सुखित करौं यों हियो भयो रस चाहन ।।
जबै निकुञ्ज निभृत मधि नव दल कुसुमित सेज रची हो ।
प्रेमावेश परस्पर पुलकित घन भुज लता खची हों ।।
गाढ़ालिंगन उत्सव रति भर दृष्टि मिचीं रस सानी ।
शयन किये हों युगल आनन्दित निजहित सब रस खानी ।।

मदारुणविलोचनं कनकदर्पकामोचनं
महाप्रणयमाधुरीरसविलासनित्योत्सुकम् ।
लसन्नववयःश्रिया ललितभंगिलीलामयं
हृदा तदहमुद्वहे किमपि हेमगौरं महः ।।१६४।।

मदारुणविलोचनम्	=मद मत्त रक्त नेत्र वाले,	नव वयः श्रिया लसत्	=नूतन (कैशोर) वय श्री से शोभित,
कनकदर्पका-मोचनम्	=स्वर्ण के सौन्दर्य्य गर्व को खर्व करने (वाले)	ललितभङ्गि	=ललित परिपाटी से युक्त
महा प्रणय माधुरी	=महा प्रणय माधुरी के	लीलामयम्	=लीला स्वरूप
रस विलास	=रसमय विहार	तत्	=उस
नित्योत्सुकम्	के लिये सतत उत्कण्ठित,	किमपि	=किसी अनिर्वचनीय
		हेम गौरम्	=स्वर्णवत् गौर
		महः	=तेज को

अहम्	=मैं	उद्वहे	=धारण करता हूँ।
हृदा	=हृदय में		

कनक गोर द्युति हिय नित धारौं ॥
जाके युगल नैन अरुणारे मद उन्मत्त निहारौं ॥
कञ्चन प्रभाविनिन्दक निजहित महा प्रणय रस सानी ।
नित्य विलास उल्लसित वय नव लीला ललित सुहानी ॥

मदाघूर्णन्नेत्रं नवरतिरसावेशविवशो-
ल्लसद्गात्रं प्राणप्रणयपरिपाट्यां परतरम् ।
मिथो गाढाश्लेषाद्वलयमिव जातं मरकत
द्रुतस्वर्णच्छायं स्फुरतु मिथुनं तन्मम हृदि ॥१९५॥

मदाघूर्णन्नेत्रम्	=मद से घूर्णित नेत्र वाला,	वलयमिवजातम्	=मानो कङ्कणाकृति को प्राप्त,
नवरति रसावेश	=नूतन रति रस के आवेश से	मरकत	=इन्द्रनील मणि तथा
विवशोल्लसत्	=विवश तथा उल्लसित	द्रुतस्वर्णच्छायम्	=तरल कनक के समान कान्तिमय
गात्रम्	=अङ्ग वाला,		
प्राण प्रणय	=प्राणाधिक		
परिपाट्याम्	प्रेम परिपाटी से	तत्	=वह
		मिथुनम्	=युगल
परतरम्	=सर्वातिशायी	मम	=मेरे
मिथो	=परस्पर	हृदि	=हृदय में
गाढाश्लेषात्	=गाढालिङ्गन से	स्फुरतु	=प्रकाशित हो।

फुरै उर गौर श्याम जुरि ज्योती ।
इन्द्रनीलमणि सम इक द्रवित कनक छवि मय अनहोती ।।
मद उन्मत्त नैंन नव रति रस पूर्ण विवश तन फूले ।
एकीभूत प्राणगति सर्वाङ्गीण प्रेम अनुकूले ।।
वलयाकार परस्पर मिथुनी भूत-आलिगित राजैं ।
निजहित उर अभिलाष सतत यों युगल हृदय में भ्राजैं ।।

परस्परं प्रेमरसे निमग्नमशेषसंमोहनरूपकेलि ।
वृन्दावनांतर्नवकुञ्जगेहे तन्नीलपीतं मिथुनं चकास्ति ।।१९६।।

परस्परं प्रेमरसे	=परस्पर के प्रेम	कुञ्ज गेहे	=मध्य नूतन कुंज सदन में
निमग्नम्	रस में डूबा हुआ,	नीलपीतम्	=नील पीत वर्ण वाला
अशेष सम्मोहन-रूप केलि	=जिसका रूप एवं केलि विश्व विमोहन वाली है,	तत्	=वह
		मिथुनत्	=युगल (तेज)
		चकास्ति	=देदीप्यमान हो रहा है।
वृन्दावनान्तः नव	=वृन्दावन के		

श्री वृन्दावन नव निकुञ्ज में ।
नील पीत अनुपम द्युति मिथुनी राजत्ति अद्भुत रसद पुञ्ज में ।।
सुरत केलि नित रचत परस्पर मोहे अखिल चराचर लोक ।
इक रस प्रेम परस्पर साने निजहित कुशल कला कल कोक ।।

आशास्य दास्यं वृषभानुजाया
स्तीरे समध्यास्य च भानुजायाः ।
कदा नु वृन्दावनकुञ्जवीथी
ष्वहं नु राधे ह्यतिथिर्भवेयम् ।।१९७।।

वृषभानुजायाः	=श्री वृषभानु नंदिनी (आप) के	राधे	=हे श्री राधे !
दास्यम्	=कैंङ्कर्य की	वृन्दावन कुञ्ज-वीथीषु	=श्री वृन्दावन की कुञ्ज गलियों में
आशास्य	=कामना (मन में) रख कर	कदा नु	=क्या कभी (मैं)
भानुजायाः च	=और यमुना जी के	अतिथिः नु	=अभ्यागत होकर
तीरे	=तीर पर	भवेयम्	=निवास करूंगा ।
समध्यास्य	=निवास करके		

भानु नंदिनी यमुना कूल ।
दृढ़ निष्ठा वृषभानुनंदिनी भाव किंकरी मन अनुकूल ।।
विचरों श्री वन कुञ्ज गलिन में निजहित अभ्यागत जिय भावे ।
कब ऐसो सौभाग्य होइगो गनि हौं सुफल मनुज तन दावे ।।

कालिंदीतटकुंजे पुंजीभूतं रसामृतं किमपि ।
अद्भुतकेलिनिधानं निरवधि राधाभिधानमुल्लसति ।।१९८।।

कालिन्दी तट कुञ्जे	=श्री यमुना तटवर्त्ति निकुंज में	पुञ्जीभूतं	=घनीभूत
अद्भुत केलि निधानम्	=विचित्र केलि परम्परा का निधान	रसामृतम्	रसामृत (तत्त्व)
किमपि	=कोई अनिर्वचनीय	निरवधि	=असीम रूप से
राधाभिधानम्	=श्रीराधा नामक	उल्लसति	=उल्लसित (प्रकाशित) हो रहा है ।

कूल कलिन्दी कुञ्ज वेश में।
अकथनीय रसामृत पुञ्जीभूत रहै कैशोर वेश में ।।
अपरम्पार केलि निधि अद्भुत रूप उल्लसित सोहै ।
निजहित स्वामिनि राधा नामनि कामनि सम नहिं कोहै ।।

प्रीतिरिव मूर्तिमती रससिंधोः सारसंपदिव विमला ।
वैदग्धीनां हृदयं काचन वृंदावनाधिकारिणी जयति ।।१९९।।

मूर्तिमती	=मूर्त्ति धारिणी		हृदय (सार)
प्रीतिरिव	=प्रीति के समान		रूपा
रससिन्धोः	=रस समुद्र की	काचन	=कोई
विमला	=निर्मलतम		अनिर्वचनीय
		वृन्दावनाधि-	=श्री वृन्दावन
सार सम्पत्	=सार भूत	कारिणी	की स्वामिनी
इव	सम्पत्ति ही	जयति	=सर्वोत्कर्ष रूप
वैदग्धीनाम्	=समस्त चातुरी		से विराजमान
हृदयम्	की एक मात्र		है।

सर्वोपरि-विपिनाधिकारिणी।
राजति विजयी अकथ स्वामिनी चेरिनु हित प्रतिपारिणी ।।
सहज स्वरूप प्रीतिमइ मूरति सार विमल रस सिन्धु ।
सम्पति, चतुर शिरोमणि सखियनु निजहित हिय विधि इन्दु ।।

रसघनमोहनमूर्ति विचित्रकेलिमहोत्सवोल्लसितम् ।
राधाचरणविलोडितरुचिरशिखंडं हरिं वंदे ।।२००।।

रसघन मोहन	=घनीभूत रस	विचित्र केलि	=विचित्र रति
		महो-	विहार के
मूर्त्तिम्	की मोहन	त्सवोल्लसितम्	महोत्सव से
	मूर्त्ति		उल्लास युक्त

राधा चरण विलोडित	=श्री राधा के युगल चरणों से मथित (अतएव चरण प्रभा से)		मोर मुकुट वाले
रुचिर शिखण्डम्	=कान्ति जनक	हरिम्	=श्री हरि की (मैं)
		वन्दे	=वन्दना करता हूँ।

रसघन मोहन मूरति लाल।
वन्दौं श्री हरि, श्री राधा पद नमत प्रीति प्रतिपाल॥
प्यारी चरण धरें जहँ तहँ सिर मोरपिच्छ परसावैं।
निर्जाहित इहि विधि अद्भुत केलि महोत्सव उमँगनि भावैं॥

कदा गायंगायं मधुरमधुरीत्या मधुभिद
श्चरित्राणि स्फारामृतरसविचित्राणि बहुशः।
मृजंती तत्केलीभवनमभिरामं मलयज-
च्छटाभिः सिंचंती रसहृदनिमग्नास्मि भविता॥२०१॥

मधुभिदः	=मधुसूदन श्री लाल जी के	अभिरामम्	=उनके सुन्दर
		तत्केलीभवनम्	=केलि सदन को
स्फारामृत रस	=अमृत रस से भरे	मृजन्ती	=मार्जन करती, एवं
विचित्राणि	=विचित्र	मलयजच्छटाभिः	=चन्दन (जल) धाराओं से
चरित्राणि	=लीला चरित्रों का	सिञ्चन्ती	=सींचती हुई
मधुरमधुरीत्या	=अत्यन्त मधुर रीति से	कदा	=(मैं) कब
		रसहृदे	=रस सरोवर में
बहुशः	=बारबार		
गायं गायम्	=गान करती हुई	निमग्ना	=निमग्न
		भवितास्मि	=हो जाऊँगी।

ह्वै हौं तब कहुं रस निधि लीन ।
रसघन अमृत पूर्ण सुयश मधुसूदन गाऊँ नवीन ॥
चरित अनन्त मधुर कहि केलि भवन वन कुञ्ज बुहारौं ।
निजहित मलयज धार सींचि बहु रस लहरी विस्तारौं ॥

उदंचद्रोमांचप्रचयखचितां वेपथुमतीं
दधानां श्रीराधामतिमधुरलीलामयतनुम् ।
कदा वा कस्तूर्या किमपि रचयंत्येव कुचयो-
र्विचित्रां पत्रालीमहमहह वीक्षे सुकृतिनी ॥२०२॥

अहह	=अहह
उदञ्चत् रोमाञ्च	=अतिशय
प्रचय खचिताम्	रोमाञ्च समूह से युक्त
वेपथुमतीम्	=प्रकम्प शालिनी
अति मधुर	=अत्यन्त मधुर
लीलामय तनुं	=लीला वपु को
दधानाम्	धारण करने वाली
श्री राधाम्	=श्री राधा जी को
कस्तूर्य्या	=मृगमद से
कुचयोः	=कुच युगल पर
किमपि	=कोई अभूत पूर्व
विचित्राम्	=भली भाँति
पत्रालीम् रचयन्ती एव	विचित्र पत्रावली रचना करती हुई
अहम्	=मैं
सुकृतिनी	=भाग्यशालिनी
कदा वा वीक्षे	=कब दर्शन करूँगी ।

सुभग कब राधा दरसन पाऊँ ।
पुलकित अति शोभित कम्पित लीला सुमधुर वपु ध्याऊँ ॥
निज कर सों कुच युग पर मृगमद पत्रावलि रचौं शोभी ।
अकथनीय सजि निजहित भावित पुण्य पुञ्ज हिय लोभी ॥

क्षणं सीत्कुर्वन्ती क्षणमथ महावेपथुमती
क्षणं श्यामश्यामेत्यमुमभिलपंती पुलकिता ।
महाप्रेमा कापि प्रमदमदनोद्दामरसदा
सदानंदा मूर्तिर्जयति वृषभानोः कुलमणिः ॥२०३॥

क्षणं सीत् कुर्वन्ती	=कभी सीत्कार करती हुई,
अथ क्षणं महा वेपथुमती	=तथा कभी महा प्रकम्प युक्त होकर
क्षणं श्याम श्याम इति पुलकिता अमुम् अभिलपन्ती	=पुलकित शरीर से हठात् श्याम श्याम इस प्रकार उच्चारण करती हुई,
महा प्रेमा प्रमद मदनोद्दाम	=महा प्रेममयी प्रकृष्ट मद वाले अबाध प्रेम
रसदा	रस को देने वाली,
सदानन्दामूर्त्तिः	=नित्यानन्द स्वरूपिणी
कापि	=कोई एक अनिर्वचनीया
वृषभानोः	=वृषभानु (पिता)
कुलमणिः जयति	के कुल की मणि (स्वरूपा) असमोर्ध्व रूप से विराजमान हैं।

वृषभानु कुलमणि इक बाला ।
सर्व उत्कृष्ट किशोरी आनन्द मूरति प्रेम विशाला ॥
दान करै रस प्रमद मदन पिय स्वयं प्रेम उन्मादिनि ।
सी सी कहि क्षण कम्पित वपु हे श्याम ! हे श्याम ! प्रवादिनि ॥
अस कहुँ विरह विलाप करति पुन पुलकित रोमाञ्चित ह्वै ।
निजहित राजति प्रेम स्वरूपा भानु कुल मणि वित ह्वै ॥

यस्याः प्रेमघनाकृतेः पदनखज्योत्स्नाभरस्नापित
स्वांतानां समुदेति कापि सरसा भक्तिश्चमत्कारिणी ।

सा मे गोकुलभूपनंदनमनश्चोरी किशोरी कदा
दास्यं दास्यति सर्ववेदशिरसां यत्तद्रहस्यं परम् ॥२०४॥

प्रेमघनाकृतेः	=घनीभूत प्रेम की मूर्ति
यस्याः	=जिन (श्री राधा जी) के
पदनखज्योत्स्ना-	=चरण नख
भर	=चन्द्रिका के प्रवाह द्वारा
स्नापित	=स्नापित (भीजे) चित्त व ले (व्यक्ति के)
स्वान्तानाम्	=हृदय में
कापि	=कोई अनिर्वचनीय
चमत्कारिणी	=चमत्कार पूर्ण
सरसा भक्तिः	=परम रसीली भक्ति
समुदेति	=भली भाँति प्रकाशित हो जाती है

गोकुल भूप	=गोकुल राज
नन्दन	=कुमार (श्री लाल जी) के
मनः चोरी	=चित्त को (बर-वस) हरण करने वाली
सा	=वह
किशोरी	=श्री किशोरी (राधा जी)
यत्	=जो
सर्ववेदशिरसाम्	=समस्त उपनिषदों के लिये भी
रहस्यम्	=रहस्यभूत है
तत्	=उस (अपने)
दास्यम्	=कैंकर्य्य को
मे	=मुझे
कदा दास्यति	=कब प्रदान करेंगी ।

परम रहस्य निगम शिर सार ।
श्री राधा पद दास्य पाऊँ कब हो ऐसो अधिकार ॥
जो घन प्रेम स्वरूपा स्वामिनि पद नख ज्योति प्रवाहै ।
परसत जे जे अद्भुत सरस चमत्कृत भक्तिहिं लाहैं ॥

उन किशोरि जू गोकुल पति सुत लालहि मोहित कीनो ।
निजहित अस महिमा जाकी-ताके चरननि चित दीनो ॥

कामं तूलिकया करेण हरिणा यालक्तकैरंकिता
नानाकेलिविदग्धगोपरमणीवृन्दे तथा वंदिता ।
या संगुप्ततया तथोपनिषदां हृद्येव विद्योतते
सा राधाचरणद्वयी मम गतिर्लास्यैकलीलामयी ॥२०५॥

या हरिणा	=जिन (चरणों) को श्री हरि ने
करेण	=अपने कर कमल से
तूलिकया	=तूलिका द्वारा
अलक्तकैः	=महावर से
कामम्	=भली भाँति
अङ्किता	=अङ्कित (या चित्रित) किया है,
तथा	=तथा (जो)
नाना केलि विदग्ध	=अनेक विध केलि में चतुर
गोप रमणी वृन्दे	=गोपाङ्गनाओं के यूथ में (उनसे)
वंदिता	=वंदित हैं,
तथा	=और जो
उपनिषदां हृदि	=उपनिषदों के हृदय (अन्तःस्तल) में
संगुप्ततया एव	=गुप्त रूप से ही
विद्योतते	=प्रकाशित हैं
लास्यैक लीलामयी	=मुख्य रूप से लास्य (नृत्य) लीला स्वरूप
सा राधा चरणद्वयी	=श्री राधा के वे युगल चरण
मम गतिः	=मेरी गति (शरण) हैं ।

श्री राधा युग पद अवलम्ब ।
नृत्य कला मम स्वामिनि चरननि वर्णत वेद अचम्भ ॥
गुप्त रहस्य उपनिषद राख्यो गोप रमणि सब वन्दें ।
यद्यपि बहु विधि केलि विदग्धा चिन्तति पद अरविन्दे ॥

श्री हरि निज कर पंकज लै तूलिका चित्र रचि हरखैं ।
निजहित सो अनुपम रस मय पद चिन्तत उर रस बरखैं ॥

सांद्रप्रेमरसौघवर्षिणि नवोन्मीलन्महामाधुरी
साम्राज्यैकधुरीणकेलिविभवत्कारुण्यकल्लोलिनि ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रचित्तहरिणी बंधुस्फुरद्वागुरे
श्रीराधे नवकुंजनागरि तव क्रीतास्मि दास्योत्सवैः ॥२०६॥

सान्द्रप्रेम रसौघ वर्षिणि !	=हे घनीभूत प्रेम रस प्रवाह वर्षिणि !	स्फुरद्वागरे !	वशीकरण समुज्ज्वल रज्जु स्वरूपिणि !
नवोन्मीलन्महा-माधुरी साम्राज्यैक धुरीण केलि-विभवत् कारुण्य कल्लोलिनि !	=हे नूतन उल्लसित महा माधुरी साम्राज्य की मुख्यतम केलि से अतिशय प्रकाशमान कारुण्य सरिते !	नव निकुञ्ज नागरि श्री राधे !	=हे नव निकुञ्ज नागरि श्री राधे !
		तव	=आपके
		दास्योत्सवैः	=दास्य रूप उत्सव के लिये
		अहम्	=(मैं)
श्री वृन्दावन चन्द्र चित्त हरिणीबन्धु	=हे श्री वृन्दावन चन्द्र चित्त मृग	क्रीतास्मि	=खरीद ली गयी हूँ ।

बिकी हौं तव किंकरि वपु हेत ॥टेक॥
हे हे निबिड़ प्रेम रस धार वर्षिणी सघन बदरिया ! ।
हे नव महा मधुर श्री केलि करुण सरि उठत लहरिया ! ॥
हे श्री विपिन चन्द्र चित सारंग बन्धन रज्जु प्रकासी ! ।
हे नव कुञ्ज नागरी ! निजहित हे राधे ! कर दासी ॥

स्वेदापूरः कुसुमचयनैर्दूरतः कंटकांको
वक्षोजेऽस्यास्तिलकविलयो हंत घर्माम्भसैव ।

ओष्ठः सख्या हिमपवनतः सव्रणो राधिके ते
क्रूरास्वेवं स्वघटितमहो गोपये प्रेष्ठसंगम् ॥२०७॥

अहो	=अहह
दूरतः	=दूर देश तक
कुसुम चयनैः	=फूल चुनने के कारण (हमारी सखी के)
स्वेदा पूरः	=स्वेद का प्रवाह बह रहा है (विहार से नहीं) तथा
अस्याः	=इनके
वक्षोजे	=कुच मण्डल पर
कण्टकाङ्कः	=कण्टकों के ही अङ्क हैं (नख क्षत नहीं)
हन्त	=खेद है
घर्माम्भसैव	=पसीने से ही (इनका)
तिलक विलयः	=तिलक मार्जित हुआ है (प्रेष्ठ संग से नहीं)
सख्याः	=हमारी सखी का
ओष्ठः	=अधरोष्ठः
हिम पवनतः	=हिमाद्र पवन से
सव्रणः	=व्रण युक्त है (दंत क्षत से नहीं)
राधिके !	=हे श्री राधिके !
एवम्	=इस प्रकार (चातुरी से)
ते स्वघटितम्	=आपके निज
प्रेष्ठ सङ्गम्	=रचित प्रियतम सङ्गम को
अहम्	=मैं
क्रूरासु	=क्रूर सखियों से,
गोपये	=छिपा लूँगी ।

राधिके ! तुव हित कछु चतुराई ।
करि हौं सखियन सौं दुराव मिस लखि तव केलि सुहाई ॥
रची स्वयं तुम पिय सौं सङ्गम करि रचना जु अनूप ।
कहि हौं प्यारी फूल चयन गई दूरि श्रमित भयो रूप ॥
क्षत विक्षत कुच कंटक सौं भए अधर फटे मस कारण ।
केवल हिम वायू परसी निजहित कछ सखिन प्रतारण ।

पातंपातं पदकमलयोः कृष्णभृंगेण तस्याः
स्मेरास्येंदोर्मुकुलितकुचद्वंद्वहेमारविंदम् ।
पीत्वा वक्त्रांबुजमतिरसान्नूनमंतः प्रवेष्टु-
मत्यावेशान्नखरशिखया पाटचमानं किमीक्षे ॥२०८॥

तस्याः	=उन
स्मेरास्येन्दोः	=हास्य भूषित मुख चंद्र वाली (प्रिया जी) के
पद कमलयोः	=पद कमलों में
पातं पातम्	=बार बार प्रणत होकर
अतिरसात्	=अत्यन्त प्रीति से
कृष्ण भृङ्गेण	=श्री कृष्ण रूपी भ्रमर द्वारा
वक्त्राम्बुजम्	=मुख कमल (रस) का
पीत्वा	=पान करके
अत्यावेशात्	=अत्यधिक आवेश में
नूनम्	=निश्चय ही
अन्तः प्रवेष्टुम्	=(कुच कमल के) भीतर प्रवेश पाने के लिये
मुकुलित कुच द्वन्द्व हेमार-विन्दम्	=मुकुलित कुच युगल रूप स्वर्ण कमलों को
नखरशिखया	=नखाग्र घात से
पाटचमानम्	=विदीर्ण होते हुए
किम्	=क्या (मैं)
वीक्षे	=देखूँगी ?

कब लखि हौं रति रस मय झाँकी ।
कनक कमल कुच विकसित मंवित प्यारे नख रेखाङ्की ॥
लाल तिहारे मुख अम्बुज को पान कियो मधु गाढ़ो ।
मधुकर इव पुन चरण छुवत लोलुप समीप तुव ठाढ़ो ॥
प्रेमावेश प्रवेश कमल कुच में अलि चत पुन चाहैं ।
मधुर हास्य युत तुव विधु आनन निजहित कब अवगाहैं ॥

अहो तेमी कुंजास्तदनुपमरासस्थलमिदं
गिरिद्रोणी सैव स्फुरति रतिरंगे प्रणयिनी ।

न वीक्षे श्रीराधां हरहर कुतोपीति शतधा
विदीर्येत प्राणेश्वरि मम कदा हंत हृदयम् ॥२०६॥

अहो !	=अहह !
अमी	=ये
कुञ्जाः	=कुञ्जें
ते एव	=वे ही हैं,
इदम्	=यह
अनुपम	=उपमा रहित
रास स्थलं	=रास स्थली भी
तत् एव	वही है,
रति रङ्गे	=रति काल में
प्रणयिनी	आह्लाद कारिणी
सा एव गिरि-	=गिरि गुहा भी तो
द्रोणी स्फुरति	वही है,
हर हर !	=(परन्तु) हाय हाय!
कुतोपि	=कहीं भी
श्री राधां न	=श्री राधा जी के
वीक्षे	दर्शन नहीं होते हैं,
इति	=यह विचार आते ही
प्राणेश्वरि !	=हे प्राणेश्वरि !
हन्त	=शोक खेद से
मम	=मेरा
हृदयम्	=हृदय
कदा	=कब
शतधा	=सौ सौ (टूक)
विदीर्येत	=विदीर्ण हो जावेगा।

तुम बिनु प्राणेश्वरि ! सब फीको।
अचरज महा कुञ्ज सब वे ही देखौं रास थली को ॥
रति रण योग्य गुहा गिरि वे ही हाय हाय उर दाहे।
नँहि दरसौ राधा निजहित जिय टूक टूक भयो चाहे ॥

इहैवाभूत्कुंजे नवरतिकलामोहनतनो
रहो अत्रानृत्यद्दयितसहिता सा रसनिधिः।
इति स्मारंस्मारं मव चरितपीयूषलहरीं
कदा स्यां श्रीराधे चकित इह वृंदावनभुवि ॥२१०॥

मोहन तनोः	=मोहनाङ्गी (श्री प्रिया जी की
इहैव कुञ्जे	=इसी कुञ्ज में,
नव रति	=नूतन रति केलि

कला (प्रथम मिलन केलि)
अभूत् =हुई थी,
अहो ! =अहह !
दयित सहिता =प्रियतम के साथ
सा =उन
रसनिधिः =रस निधि ने
अत्र =यहीं पर
अनृत्यत् =नृत्य किया था,
श्री राधे ! =हे श्री राधे !
इति =इस प्रकार

तव चरित =आपकी चरितामृत
पीयूष लहरीम् लहरी (भावों) को
स्मारं स्मारम् =बार बार स्मरण करता हुआ
इह =इस
वृन्दावन भुवि=श्री वृन्दावन की भूमि में
कदा =(मैं) कब
चकितः स्याम्=चकित होकर रहूँगा।

श्री वन चकित भ्रमित यों हेरौं।
सुमिरत तव लीला चरितामृत राध ! राधे ! टेरौं॥
अहो कुंज यहि मोहन वपु श्री प्रिया करी नव केली।
प्राणेश्वर सों रस निधि निजहित रास नृत्य रस झेली॥

श्रीमद्बिंबाधरे ते स्फुरति नवसुधामाधुरीसिंधुकोटि
र्नेत्रांतस्ते विकीर्णाद्भुतकुसुमधनुश्चण्डसत्कांडकोटिः।
श्रीवक्षोजे तवातिप्रमदरसकलासारसर्वस्वकोटिः
श्रीराधे त्वत्पदाब्जात्स्रवति निरवधिप्रेमपीयूषकोटिः॥२११॥

श्री राधे ! =हे श्री राधे !
ते =आपके
श्रीमद्बिम्बाधरे=शोभाशाली बिम्बाधर में
नव सुधा =कोटि कोटि
माधुरी सिन्धु नूतन सुधा

कोटिः माधुरी के सिन्धु
स्फुरति =प्रकाशित होते हैं,
ते =आपकी
नेत्रान्तः =तिरछी चितवन
विकीर्णाद्भुत =अद्भुत कामदेव के
कुसुमधनुश्चण्ड कोटि २ प्रचण्ड

सत्काण्डकोटिः	सुन्दर बाणों को बिखेरती रहती है	(स्फुरति)	सर्वस्व स्फुरित होते रहते हैं,
तव श्री वक्षोजे	=आपके श्रीसम्पन्न वक्षोज में से	त्वत्	=(तथा) आपके
अति प्रमद	=कोटि २ अत्यन्त	पदाब्जात्	=चरण कमल से
रस कला सार	प्रकृष्ट मद पूर्ण	निरवधि प्रेम	=कोटि २ असीम
सर्वस्व कोटिः	रस कला के सार	पीयूष कोटिः	प्रेमामृत प्रवाह
		स्रवति	झरते रहते हैं।

श्री राधे बहु कोटि माधुरी।
तव श्री वपु सहजें वरसें को वरणें प्रकट ना बुरी ॥
कोटि कोटि सागर अमृत श्री अधर बिम्ब जु उलेडं ॥
कोटि कोटि शर मार कुसुम धनु नेत्र भ्रकुटि तव ठेलें ॥
कुच बहु गाढ़ कला रति सार जु कोटि कोटि बरसावें।
प्रेम पियूष पद्म पद निजहित अमित कोटि सरसावें ॥

सांद्रानंदोन्मदरसघनप्रेमपीयूषमूर्त्तेः
श्रीराधाया अथ मधुपतेः सुप्तयोः कुञ्जतल्पे।
कुर्वाणाहं मृदुमृदुपदांभोजसंवाहनानि
शय्यांते किं किमपि पतिता प्राप्ततंद्रा भवेयम् ॥२१२॥

सान्द्रानन्दो-न्मदरसघन	=प्रगाढानन्द एवं उन्मदरस सम्पन्न	किमपि	=अनिर्वचनीय रूप से
प्रेम पीयूष-मूर्त्तेः	=प्रेमामृत की घनीभूत मूर्त्ति,	मृदु मृदु	=अत्यन्त कोमलता
कुञ्जतल्पे	=कुञ्ज शय्या पर	पदाम्भोज	पूर्वक चरण कमलों का।
सुप्तयोः	=शयन करने वाले	सम्वाहनानि	=सम्वाहन करती
श्री राधाया	=श्री राधा तथा	कुर्वाणा	हुई
अथ मधुपतेः	लाल जी के	शय्यान्ते	=शय्या के प्रान्त में

पतिता	=लुढक कर	प्राप्त तन्द्रा	=तन्द्रा वश हो
किं अहम्	=क्या मैं	भवेयम्	जाऊँगी ?

तन्द्रावश कहुँ सेज समीप ।
लुढक परौंगी चरण पलोटति सोइ गये विविकुञ्ज महीप ।।
अति कोमल (धीरे) पद कमल दुहुँनि के चाँपति रति रस भरि उन्मत्त ।
प्रेमपियूष मूर्ति राधा मधुपति सोये निजहित रस रत्त ।।

राधापादारविंदोच्छलितनवरसप्रेमपीयूषपुंजे
कालिंदीकूलकुंजे हृदि कलितमहोदारमाधुर्यभावः ।
श्रीवृन्दारण्यवीथीललितरतिकलानागरीं तां गरीयो-
गंभीरैकानुरागां मनसि परिचरन् विस्मृतान्यः कदा स्याम्२१३

राधापादार-विन्दोच्छलित	=श्री राधा चरण कमल से उच्छलित		तथा उत्कृष्ट अनुराग शालिनी,
नव रस प्रेम	=नूतन रसमय	श्री वृन्दारण्य वीथी	=श्री वृन्दावन की वीथी में विराजमान
पीयूष पुञ्जे	=प्रेमामृत पुञ्ज से सम्पन्न		
कालिन्दीकूल कुञ्जे	=श्री यमुना तट-वर्ती कुञ्ज में स्थित होकर,	ललित रति कला	=ललित रति कला सम्पन्न
		नागरीं ताम्	=उन (श्री राधा) नागरी की
हृदि कलित	=अपने हृदय में		
महोदार	महा उदार	मनसि	=मानसिक (अन्तश्चिंतित वपु से)
माधुर्य्य भावः	=मधुर (किंकरी) भाव को धारण करके,		
गरीयो गम्भीरै-कानुरागाम्	=(श्री लाल जी के प्रति) गम्भीर	परिचरन्	=परिचर्य्या करता हुआ

कदा	=(मैं) कब	स्याम्	(प्रपंच) को भुला दूँगा।
विस्मृतान्य:	=अन्य समस्त		

कबहुँ सब इतर भावना भूलौं।
एक मात्र राधा सेवा मानसि भाव में झूलौं।
अहा कूल कालिन्दी कमनी राधा पद पद्माङ्कित।
नव रस प्रेम पियूष पुञ्ज उत, इत मो सम जु कलङ्कित॥
अस उदार अति मधुर भावना निर्जहित हृदय सुभामिनी।
श्री वन ललित कला चतुरा प्रियतम हित रागिनि स्वामिनि॥

अदृष्ट्वा राधांके निमिषमपि तं नागरमणिं
तया वा खेलंतं ललितललितानंगकलया।
कदाहं दुःखाब्धौ सपदि पतिता मूर्छितवती
न तामाश्वास्यार्त्तां सुचिरमनुशोचे निजदशाम् ॥२१४॥

ललित ललितानंग कलया	=अत्यन्त ललित काम कला पूर्ण	ताम्	=उन
तया	=उन (श्री राधा जी) के	आर्ताम्	=विरह से आर्त्त (प्रिया जी) को
वा खेलन्तम्	=साथ क्रीडा करते हुए	न आश्वास्य	=विना आश्वासन दिये,
राधाङ्के	=श्री राधा जी के अङ्क में	सपदि दुःखाब्धौ पतिता मूर्च्छितवती	=तत्काल ही दुःख सागर में पडकर मूर्च्छित हुई,
निमिषमपि	=निमेष मात्र भी	अहम्	=मैं
नागरमणिम्	=(उन) नागर शिरोमणि (लाल जी) को	कदा निज दशाम्	=कब अपनी (उस) दशा पर
अदृष्ट्वा	=न देखकर	सुचिरम्	=चिरकाल तक

अनुशोचे	=पश्चात्ताप करूँगी (अर्थात् मैंने स्वयं सँभल कर		प्रिया जी की उस दुःख में सेवा सँभार न की)

शोक युत उर कब दाह दहौंगी ।
पिय प्यारी को विप्रयोग इक निमिष मात्र जु लखौंगी ॥
तब जब प्यारी श्री राधा संग ललित काम कल केली ।
नागर मणि श्री लाल करत भरि अंक सुरत रस झेली ॥
तिहि अवसर प्यारी अंकम में प्यारे नहि दरसाने ।
सहि न सकी हौं सो वियोग मम सुधि गई होश भुलाने ॥
उत प्यारी विरहातुर सहजहि-उचित हौं धीर बँधाती ।
हा धिक ! धिक ! अवसर चूकी निजहित रहि पछताती ॥

भूयोभूयः कमलनयने किं मुधा वार्यतेसौ
वाङ्मात्रेपि त्वदनुगमनं न त्यजत्येव धूर्त्तः ।
किंचिद्राधे कुरु कुचतटीप्रांतमस्य म्रदीय-
श्चक्षुर्द्वारा तमनुपतितं चूर्णतामेतु चेतः ॥२१५॥

कमलनयने !	=हे कमलाक्षि !	त्यजति	=छोड़ता है,
असौ	=उन(लालजी) को	राधे !	=हे श्री राधे ! (आप)
भूयोभूयः	=(आप) बारबार	किञ्चित्कुच-तटी प्रान्तम्	=कुच तट कोर की तनिक
मुधा	=व्यर्थ ही	कुरु	=झाँकी (करा दीजिये जिससे)
किं वार्यते	=क्यों रोक रही हो,	अस्य	=इनका
धूर्त्तः	=(यह) धूर्त्त	म्रदीयश्चेतः	=मृदुल चित्त
वाङ्मात्रेऽपि	=वाणी मात्र से कभी	चक्षुर्द्वारा	=नेत्र मार्ग से
त्वदनुगमनम्	=आपका अनुसरण		
नैव	=कदापि नहीं		

तमनुपतितम् =उस (कुच तट) पर गिरकर	चूर्णिताम् =चूर चूर
	एतु =हो जावेगा ।

स्वामिनि ! अस कछु करहु विधान ।
धूर्त्तराज अशंक अनुगत तव तजत नहीं निज बान ॥
हे कमलाक्षी ! यद्यपि तुम तो कोमल बैन निवारो ।
पै यह हठी न कान देत जो मैं कहुँ सोइ करि डारो ॥
जानति हो या को चित कोमल नैनति पथ अनुधावै ।
कुच तट कोर झाँकी सों नजहित चूर चूर ह्वै जावे ॥

किं वा नस्तैः सुशास्त्रैः किमथ तदुदितैर्वर्त्मभिः सद्गृहीतै
र्यत्रास्ति प्रेममूर्त्तेर्नहि महिमसुधा नापि भावस्तदीयः ।
किं वा वैकुण्ठलक्ष्म्याप्यहह परमया यत्र मे नास्ति राधा
किं त्वाशाप्यस्तु वृन्दावनभुवि मधुरा कोटिजन्मातरेपि ॥२१६॥

नः तैः हमारा उन	नहि तदीयः =नहीं है या उनका
सुशास्त्रैः किम् =बृहत् शास्त्रों से क्या (प्रयोजन) है	भावः =भाव भी
अथ वा =अथवा	अपि न अस्ति=सर्वथा नहीं है,
तदुदितैः =उनसे प्रतिपादित	अहह =अहह (आश्चर्य)
सद्गृहीतैः =सज्जनों से स्वीकृत	परमया वैकुण्ठ=सर्वोत्कृष्ट वैकुण्ठ
वर्त्मभिः किम्=पद्धतियों से भी क्या (लेना है)	लक्ष्म्यापि शोभा से भी हमें
यत्र प्रेम मूर्त्तेः=जिनमें प्रेम विग्रह (श्री प्रिया जी)का	किं वा क्या लाभ है,
महिमसुधा =महिमामृत	यत्र मे राधा =जहाँ हमारी श्री
	नास्ति राधा नहीं हैं।
	किन्तु कोटि =किन्तु कोटि २
	जन्मान्तरेपि =जन्मों में भी
	वृन्दावन भुवि=वृन्दावन की भूमि

अपि	में ही		मधुर
मधुरा	=(हमारी ऐसी)	आशा अस्तु	=आशा लगी रहे।

उर अभिलाषा एक बनी हो।
योनि कोटि बहु बसौं जन्म लै श्री वन महा मधुर अवनी हो॥
कारण इतर थलनि निज स्वामिनि मिलै न प्रेम स्वरूपा राधा।
अरु ताको महिमामृत गाथा भाव माधुरी पुंज न साधा।
भले विहित सद्ग्रन्थ शास्त्र सत्पथ निजहित जु अनेक प्रचारें।
शोभायुत वैकुण्ठ रुचै नहिं श्री राधा विन दीखें खारे॥

श्यामश्यामेत्यनुपमरसापूर्णवर्णैर्जपंती
स्थित्वास्थित्वा मधुरमधुरोत्तारमुच्चारयंती।
मुक्तास्थूलान्नयनगलितानश्रुबिंदून्वहंती
हृष्यद्रोमा प्रतिपदिचमत्कुर्वती पातु राधा॥२१७॥

श्याम श्याम !	=हे श्याम!हेश्याम!	नयन गलितान्	=(एवं) नेत्रों से झरते
इति	=इस प्रकार	मुक्तास्थूलान्	=मोतियों के समान स्थूल
अनुपम	=अनुपम रस से	अश्रु बिन्दून्	=अश्रु बिन्दुओं को
रसापूर्ण वर्णैः	पूर्ण वर्ण (नाम) का	वहन्ती	=धारण करती हुई,
जपन्ती	=जप करती हुई तथा	हृष्यद्रोमा	=रोमाञ्च भूषिता
स्थित्वा स्थित्वा	=रुक रुक कर	प्रतिपदि	=क्षण क्षण में
मधुर-मधुरोत्तारम्	=मधुरातिमधुर (उसी नाम का)	चमत्कुर्वती	=चमत्कार (उद्दीपन) को प्राप्त
उच्चरयन्ती	=उच्च स्वर से उच्चारण करती हुई,	राधा	=श्री राधाजी हमारी
		पातु	=रक्षा करें।

(श्री) राधे ! अब तो आप उबारौ ।
पुलकित रोमनि लाल आगमन प्रतिपद शंक सँभारौ ॥
लाल प्रेम में विह्वल हा हे श्याम ! श्याम ! उच्चारौ ।
नैंन विशाल टपाटप मोतिन सम अश्रुनि उर ढारौ ॥
जनु बहु स्थूलनि मुक्ताफल की सघन झरी लागी हो ।
इहि विधि उत्कंठित निज हित तव चरननि मति पागी हो ॥

ताद‍ृङ्मूर्त्तिर्व्रजपतिसुतः पादयोर्मे पतित्वा
दंताग्रेणाथ धृततृणकम् काकुवादान्ब्रवीति ।
नित्यं चानुव्रजति कुरुते सङ्गमायोद्यमं चे
त्युद्वेगं मे प्रणयिनि किमावेदयेयं नु राधे ॥२१८॥

प्रणयिनि	=हे प्रणयिनि		(मेरा)
राधे !	श्रीराधे !	अनुव्रजति	=अनुगमन करते हैं,
ताद‍ृङ्मूर्तिः	=मोहन मूर्ति	सङ्गमायोद्यमं	=और आपके सङ्गम
व्रजपतिसुतः	=व्रजेशनन्दन	च	के लिये (ऐसे सब)
मे पादयोः	=मेरे चरणों में		यत्न
पतित्वा	=गिर कर	कुरुते	=करते रहते हैं,
अथ	=तथा	इति मे	=इस प्रकार के
दन्ताग्रेण धृत	=दाँतों में तृण	उद्वेगम्	=(अपने) मानसिक
तृणकम्	दबा कर		उद्वेग को (मैं)
काकुवादान्	=अनुनय विनय	किं नु	=आपके सम्मुख
ब्रवीति	पूर्ण वचनावली		कहाँ तक
	कहते रहते हैं,	आवेदयेयम्	=निवेदन करूँ ।
नित्यं च	=और नित्य ही		

स्वामिनि ! कहु कहाँ जिय की खेवन ।
हे हे प्रणयिनि ! हे श्री राधे सुनों तनिक मम वेदन ॥

मोहनि मूरति व्रजपति सुत दसनन में तृण कूं लीने।
शुद्ध भाव बहु दीन वचन कहि मो पाछे लगि दीने ॥
कैसे हूँ तुमहि मिलाऊँ मेरो चाटुकारि बहु करते।
इति दीनता लखि प्रियतम की निजहित उर शर गड़ते ॥

चलल्लीलागत्या क्वचिदनुचलद्धंसमिथुनम्
क्वचित्केकिन्यग्रे कृतनटनचन्द्रक्यनुकृति ।
लताश्लिष्टं शाखिप्रवरमनुकुर्वत् क्वचिदहो
विदग्धद्वंद्वं तद्रमत इह वृन्दावन भुवि ॥२१६॥

क्वचित्	=कभी तो	क्वचित्	=फिर कभी
चलल्लीला-	=चलते चलते लीला	लताश्लिष्टं	=लता से आलिंगित
गत्या	=पूर्ण गति द्वारा	शाखि प्रवरम्	=तरुवर का
हंस मिथुनम्	=हंस हंसिनी की चाल का)	अनुकुर्वत्	=अनुकरण करते हैं
		अहो	=अहह ! (इस प्रकार)
अनुचलत्	=अनुसरण करते हैं,		
क्वचित्	=और कभी	इह वृन्दावन	=इस वृन्दावन की
केकिन्यग्रे	=मयूरी के आगे	भुवि	भूमि में
कृत नटन	=नाचने वाले	तद्	=वह
चन्द्रक्यनु	=मयूर का अनुकरण	विदग्धद्वन्द्वं	=विदग्ध युगल
कृति	करते हैं,	रमते	=रमण कर रहे हैं।

करत अस श्रीवन युगल बिहार।
कहुं कल हंस मिथुन गति लीला पूरण चलहिं निहार।
कहूं मयूर मयूरी आगे तद्वत नृत्यत लार ॥
कहूं तरु लता लिपटि लखि निज हित लपटत उर रस ढार ॥

व्याकोशेंदीवराष्टापदकमलरुचा हारि कान्त्या स्वया य-
त्कालिंदीयं सुरभिमनिलं शीतलं सेवमानम् ।

सान्द्रानंदं नवनवरसं प्रोल्लसत्केलिवृन्दं
ज्योतिर्द्वंद्वं मधुरमधुरं प्रेमकंदं चकास्ति ॥२२०॥

यत्	=जो
स्वयाकान्त्या	=अपनी कान्ति से
व्याकोषेन्दी वराष्टापद-कमलरुचा	=विकसित नील एवं स्वर्ण कमल की शोभा को
हारि	=हरण करने वाला है;
शीतलं सुरभिम्	=शीतल सुगन्धित
कालिन्दीयम्	=श्री यमुनाजी के
अनिलम्	=पवन को
सेवमानम्	=सेवन करता हुआ
सान्द्रानन्दम्	=घनानन्द पूर्ण
नवनव रसम्	=नव नव रस मय
प्रोल्लसत्केलि-वृन्दम्	=केलि कलाओं को उल्लसित करने वाला,
मधुरमधुरम्	=मधुरातिमधुर
प्रेमकन्दम्	=प्रेम का मूल कारण
तत्	=(ऐसा) वह
ज्योतिर्द्वन्द्वम्	=प्रकाश युगल
चकास्ति	=प्रकाशित हो रहा है।

श्रीवन राजति मिथुनो ज्योति।
लाजैं नील कनक कमलनि छबि विकसित विपिन उदोति॥
सेवैं सुरभित शीतल अनिल सु-कालिंदी कल-कूल।
निविडानंदमय कन्द मधुर नव केलि प्रम के मूल॥

कदा मधुरसारिकाः स्वरसपद्यमध्यापय
त्प्रदाय करतालिकाःक्वचन नर्तयत्केकिनम्।
क्वचित्कनकवल्लरीवृततमाललीलाधनं
विदग्धमिथुनं तदद्भुतमुदेति वृन्दावने ॥२२१॥

कदा	=कभी तो
मधुरसारिकाः	=मधुर स्वर वाली सारिकाओं को
स्वरसपद्यम्	=स्वकीय रस पूर्ण

	श्लोक को	तमाल लीला	=तमाल की लीला
अध्यापयत्	=पढ़ाते हुए	धनम्	(अनुरूपता) को धन के समान (आदर देते हुए)
क्वचन	=कभी	तत्	=वह
करतालिकाः	=अपने हाथ से ताली	विदग्ध मिथुनम्	=विदग्ध युगल
प्रदाय	=बजा कर	वृन्दावने	=श्री वृन्दावन में
केकिनम्	=मयूर को	उदेति	=प्रकाशित हो रहा है।
नर्त्तयत्	=नचाते हुए		
क्वचित्	=तथा किसी समय		
कनकवल्लरी वृत	=स्वर्ण लता से आलिंगित		

प्रकाशित मिथुन विपिन सब ओर।
चतुर धनी धन लीला अमित अपार ओर नहिं छोर ।।
कहुँ कल कण्ठी देखि सारिका निजरस पद्य पढावें।
दै कर तारिनु मोर नचावें लखि मन-मन सरसावें ।।
कनक लता तरुवर तमाल लखि लिपटे उर हरषाने।
निज,हित यों वृन्दावन बिलसत लाड़िलि लाल लुभाने ।।

पत्रालीं ललितां कपोलफलके नेत्राम्बुजे कज्जलं
रंगं बिंबफलाधरे च कुचयोः काश्मीरजालेपनम् ।
श्रीराधे नवसंगमाय तरले पादांगुलीपंक्तिषु
न्यस्यन्ती प्रणयादलक्तकरसं पूर्णा कदा स्यामहम्।।२२२।।

कपोलफलके	=कपोलों पर	नेत्राम्बुजे	=नेत्र कमल में
ललिताम्	=सुन्दर	कज्जलम्	=काजल को, और
पत्रालीम्	=पत्र रचना को, तथा	बिम्बाधरे	बिम्बाफल समान अधरोष्ठ

	पर,	प्रणयाद्	=प्रेम से यावक रस
रङ्गम्	=रङ्ग का,	लक्तक रसम्	को
कुचयो:	=कुच मण्डल पर	न्यस्यन्ती	=लगाती हुई,
काश्मीरजा	=केसर लेप को एवं	नव सङ्गमाय	=हे नव संगम
लेपनम्		तरले श्रीराधे	चञ्चले ! श्रीराधे !
पादाङ्गुली	=चरणों की	अहम् कदा	=मैं कब कृतार्थ
पंक्तिषु	अंगुलियों में	पूर्णा स्याम्	होऊँगी।

पुरैं कब विविध मनोरथ सादर ।
मृदु गण्डस्थल ललित चित्र रचूं दृग अरविंदन काजर ॥
बिम्बाफल सम ओष्ठ तम्बोलज रंग युगल कुच केसर ।
अनुलेपन करि पद अंगुरियनु रञ्जौं यावक देकर ॥
हे राधे ! नव संगमार्थ अति चञ्चल भाव तिहारे ।
निजहित सब निज कर सेवा रचि सरैं मनोरथ भारे ॥

श्रीगोवर्धन एक एव भवता पाणौ प्रयत्नाद्धृतो
राधावर्ष्मणि हेमशैलयुगले दृष्टेपि ते स्याद्भयम् ।
तद्गोपेंद्रकुमार मा कुरु वृथा गर्वं परीहासतः
कर्ह्येवं वृषभानुनंदिनि तव प्रेयांसमाभाषये ॥२२३॥

भवता	=आपने तो	हेमशैल	=स्वर्ण के शैल
एक: श्री	=एक श्री गोवर्धन	युगले	युगल
गोवर्धन एव	को ही	दृष्टेपि	=देखते ही
प्रयत्नात्	=प्रयत्न पूर्वक	ते भयं स्यात्	=तुम्हें भय हो
पाणौ धृत:	=हाथ पर उठाया		जायेगा
	था,	तद्गोपेन्द्र-	=अत: हे गोपेन्द्र-
राधावर्ष्मणि	=श्रीराधा के शरीर	कुमार	कुमार
	में तो	वृथा गर्वम्	=(तुम) वृथा गर्व

मा कुरु	=मत करो,
वृषभानु	=हे श्रीवृषभानु
नन्दिनि !	=नन्दिनि !
एवं तव	=आपके प्रियतम से
प्रेयासम्	=इस प्रकार
परीहासतः	=परिहास पूर्वक
अहम्	=मैं
कर्हि	=कब
आभाषये	=कहूँगी।

स्वामिनि ! सुनु कहुँ इक परिहास।
हे वृषभानु नन्दिनी ! तुमरे प्रियतम सों करु खास ॥
कहि हों हे गोपेन्द्रसुवन ! क्यों व्यर्थ गर्व में साने।
इक साधारण गिरि कर गोवर्धन धारयो हम माने ॥
ता में करी सहाय सबन ने, पै राधा तन कवनी।
हेमशैल ह्वै देखि भीत क्यों निजहित निज उर अवनी ॥

अनंगजयमंगलध्वनितकिंकिणीडिंडिम
स्तनादिवरताडनैर्नखरदंतघातैर्युतः ।
अहो चतुरनागरीनवकिशोरयोर्मञ्जुले
निकुंजनिलयाजिरे रतिरणोत्सवो जृम्भते ॥२२४॥

अनङ्गजय	=काम विजय रूप
मङ्गल	=मङ्गल की सूचक
ध्वनित	=ध्वनित किंकिणी
किंकिणी	=ही जहाँ नगारा
डिण्डिम	=है,
स्तनादि वर	=स्तनादि के भली
ताडनैः	=भांति मदन से
नखर दन्त	=एवं नख व दन्त
घातैः युतः	=क्षत से युक्त
अहो	=अहह (आश्चर्य)
मञ्जुल	=सुन्दर निकुञ्ज
निकुञ्ज	=भवन के प्राङ्गण में
निलयाजिरे	
चतुर नागरी	=चतुर नागरी एवं
नव किशोरयोः	=नव किशोर का
रति रणोत्सवः	=काम संग्राम महोत्सव
जृम्भते	=प्रकाशित हो रहा है।

अजिर कुञ्ज में सुरत रस केली ।
महा उत्सव निज सहज प्रकाशित मिथुन मधुर रस झेली ।।
नव किशोर अरु चतुर नागरी की करधनि कल बाजत ।
जनु अनंग जय मङ्गल सूचक शब्द डिंडिमि गाजत ।।
कुच मर्दन ताडन पिय द्वारा दन्तक्षत नख रेखें ।
चरणाघात आदि निजहित रति कोक कला अवरेखें ।।

यूनोर्वीक्ष्य दरत्रपानटकलामादीक्षयंतीदृशो
वृण्वाना चकितेन संचितमहारत्नस्तनं चाप्युरः ।
सा काचिद्वृषभानुवेश्मनि सखीमालासु बालावली
मौलिः खेलति विश्वमोहनमहासारूप्यमाचिन्वती।।२२५।।

यूनोः	=युवक एवं युवतियों की
दरत्रपा नट	=अल्प लज्जायुक्त
कलाम्	=नट तुल्य कलाओं =को
वीक्ष्य	=देखकर
दृशोः	=अपने दोनों नेत्रों =को
आदीक्षयन्ती	=दीक्षित करती हुई,
अपि च	=तथा
चकितेन	=चकित भाव से
सञ्चित महा	=संचित महारत्न
रत्नस्तनं उरः	=रूपी स्तन मण्डल =वाले वक्षस्थल को
वृण्वाना	=ढकती हुई,
विश्वमोहन	=विश्व मोहनार्थ
महा सारूप्यम्	=महा सारूप्य का
आचिन्वती	=संचय करती हुई,
वृषभानु	=श्री वृषभानु
वेश्मनि	भवन में
सखी मालासु	=सखियों के मध्यमें
सा काचित्	=वह कोई
बालावली	=बालाओं की
मौलिः	=शिरोमणि
खेलति	=क्रीडा कर रही है।

विश्व विमोहिनि इक ललनामणि ।
खेलति श्री वृषभानु अजिर में संग सखी तिन में चूडामणि ।।

निरखि युवक युवती कल काम केली औचक निज हृदय लजानी ।
ढांपति निज नव अंकुर सम कुच चकित भई रतनन सम मानी ॥
अस यौवन नव प्रथम हगनि लखि पाठ पढ़ांत मनसिज चटशाला ।
निजहित जनु नव मोहनि विद्या संचत्ति है निज उर नव बाला ॥

ज्योतिः पुंजद्वयमिदमहो मंडलाकारमस्या
वक्षस्युन्मादयति हृदयं किं फलत्यन्यदग्रे ।
भ्रूकोदंडं नकृतघटनं सत्कटाक्षौघबाणैः
प्राणान्हन्यात्किमु परमतो भावि भूयो न जाने ॥२२६॥

अहो	=अहह आश्चर्य है,
अस्याः	=इन के
वक्षसि	=वक्षस्थल पर
इदम्	=यह
मण्डलाकारम्	=मण्डला कार
ज्योतिः पुञ्जद्वयम्	=दो प्रकाश पुञ्ज देखते ही)
हृदयं उन्मादयति	=हृदय को उन्मत्त बना रहा है
अग्रे	=आगे
अन्यत्	=और
किं फलति	=क्या फल लाता है (अर्थात् क्या प्रभाव करेगा)
सत्कटाक्षौघ-बाणैः	=तथा कुटिल कटाक्ष रूप बाण समूह से
नकृत घटनं	=युक्त हुए बिना
भ्रूकोदण्डम्	ही भ्रूचाप
प्राणान्हन्यात्	=प्राणों का हनन कर रहा है
अतः परंभूयः	=इससे अधिक बढ़कर (और)
किं भावि	=क्या होने वाला है,
इति न जाने	=यह मैं नहीं जानता ।

अकथ कथा कछु कही न जाई ।
अचरज यौवन युत यह बाला भ्रुकुटी चाप चढ़ाई ।

विन संयोग कटाक्ष बाण बहु मानों प्रान प्रहारी ।
ज्योति पुञ्ज युग मण्डल साजे रहा हिये पर धारी ।।
अजौं क्षोभ मद प्रेरे जिय हठि पाछे कहा बखानी ।
विन संयोग इतो मद व्यापे मिलै ते निजहित हानी ।।

भोः श्रीदामन्सुबल वृषभ स्तोककृष्णार्जुनाद्याः
किं वो दृष्टं मम नु चकिता दृग्गता नैवकुञ्जे ।
काचिद्देवीसकलभुवनाप्लाविलावण्यपूरा
दूरादेवाखिलमहरतप्रेयसो वस्तु सख्युः ।। २२७ ।।

भोः	=हे हे
श्री दामन् ! सुबल ! वृषभ !	=श्रीदामा! सुबल ! वृषभ !
स्तोक कृष्ण अर्जुनाद्याः	=स्तोक कृष्ण ! अर्जुन आदि सखाओ !
वः	=तुम सबने
किन्नु दृष्टम्	=क्या देखा है
मम चकिता दृक्	=मेरी चकित (अर्थात् भयभीत) दृष्टि तो
कुञ्ज एव न गता	=कुञ्ज के भीतर जा ही नहीं पाई
सकल भुवना प्लावि लावण्य पूरा	=अपने लावण्य प्रवाह से सकल भुवन को आप्लावित करने वाली
काचिद्देवी	=किसी अनिर्वचनीय देवी ने
दूरादेव	=दूर से ही
प्रेयसः सख्युः	=तुम्हारे प्रिय सखा (मेरी)
अखिलं वस्तु	=समस्त (जीवन) वस्तु को
अहरत्	=अपहरण कर लिया है ।

सखन सौं बोले श्याम सुजान । (टेक)
हे श्रीदाम !वृषभ ! अर्जुन ! हे सुबल ! हे कृष्ण-स्तोक ! ।
क्या तुम सबने अचरज इक अब दृष्टि कियो अवलोक ।।

अहा चकित दृष्टि हौं बिन ही कुञ्ज प्रवेश विलोकी ।
अकथ एक देवी राजति तहँ दुति जनु छवी त्रिलोकी ॥
निज लावण्य प्रवाह डुबायो चहै निखिल जग मानो ।
अरे सखे ! निजहित मम सर्वस ताहि के हाथ लुटानो ॥

गता दूरे गावो दिनमपि तुरीयांशमभज
द्वयं दातुं क्षांतास्तव च जननी वर्त्मनयना ।
अकस्मात्तूष्णीके सजलनयने दीनवदने
लुठत्यस्यां भूमौ त्वयि नहि वयं प्राणिणिषवः ॥२२८॥

गावः	=गौएँ	अकस्मात्	=(इस प्रकार) अचानक ही
दूरे	=बहुत दूर	तूष्णीके सजल नयने	=मौन सजल नेत्र
गताः	=चली गईं,	दीनवदने	=तथा म्लान मुख होकर
दिनमपि	=और दिन भी	त्वयि	=तुम्हारे
तुरीयांशम्	=चतुर्थांश शेष	अस्याम्	=इस
अभजत्	=रह गया है,	भूमौ लुठति	=भूमि में लोटने पर
वयं दातुं क्षान्ताः	=हम आपको छोड़ कर नहीं जा सकते हैं,	वयम्	=हम
तव जननी च	=और तुम्हारी माता भी	नहि प्राणिणिषवः	=प्राण धारण नहीं कर सकते हैं।
वर्त्मनयना	=बाट देख रही हैं,		

सखा लखि श्याम दशा अकुलाने ।
बोले श्याम ! अहो क्यों बेसुध मूर्छित भूमि लुठाने ॥
गिरा मौन, दृग अश्रुनि भी वपु दीन भये तुम प्यारे ।
कैसे करि यह दशा सहैं नहि रहि हैं प्रान हमारे ॥

दूरि गई गाइनु को फेरे अस्त भानु तनु थाके।
जननी राह तकति ह्वै है निजहित तुहि तजें न वांके॥

नासाग्रे नवमौक्तिकं सुरुचिरं स्वर्णोज्ज्वलं बिभ्रती
नानाभङ्गिरनङ्गरङ्गविलसल्लीलातरङ्गावलिः।
राधे त्वं प्रविलोभयव्रजमणिं रत्नच्छटामञ्जरी
चित्रोदञ्चितकञ्चुकस्थगितयोर्वक्षोजयोः शोभया ॥२२६॥

राधे ! त्वम्	=हे श्रीराधे ! आप
नासाग्रे	=नासाग्र भाग में
स्वर्णोज्ज्वलं	=स्वर्ण से भी
सुरुचिरम्	उज्ज्वल सुन्दरतम
नव मौक्तिकम्	=नूतन मुक्ता को
बिभ्रती (वर्तसे)	=धारण कर रही हो,
नाना भङ्गिः	=नाना विलास परिपाटी सम्पन्न हो,
अनङ्ग रङ्ग विलसत्	=कामोल्लास से विलसित
लीला	=लीला रूपी लहरी
तरङ्गावलिः	समूह से शोभित हो,
रत्नच्छटा	=रत्न कान्ति
मञ्जरी	समूह
चित्रोदञ्चित	=तथा चित्र से चमत्कृत
कञ्चुकस्थगि-तयोः	=कञ्चुकी से आच्छादित
वक्षोजयोः	=अपने उरोज युगल की
शोभया	=शोभा से
व्रजमणिम्	=व्रजमणि श्रीलाल जी को
प्रविलोभय	=लुब्ध करें।

राधे ! छबि मय तुव वपु लोभे।
अग्र नासिका नव मुक्ता कनकाभ रुचिर अति शोभे।
सहज स्वरूप विशिष्ट भंगि मनसिज विलासमय प्यारी।
अनिक तरङ्ग समूह उठत लीला अनूप विस्तारी॥

ता पै कुच युग रत्न प्रभामय ढके कंचुकी चित्रित।
व्रजमणि लाल सहज सब विधि मोहित चितवित अरु निजहित॥

अप्रेक्षे कृतनिश्चयापि सुचिरं वीक्षेत दृक्कोणतो
मौने दार्ढ्यमुपाश्रितापि निगदेत्तामेव याहीत्यहो।
अस्पर्शे सुधृताशयापि करयोर्धृत्वा बहिर्यापये
द्राधाया इति मानदुस्थितिमहं प्रेक्षे हसन्ती कदा॥२३०॥

अहो =अहह (आश्चर्य)
अप्रेक्षे =अदर्शन का
कृत निश्चयापि =निश्चय करने पर भी
सुचिरम् =चिरकाल तक
दृक्कोणतः =तिरछी चितवनसे
वीक्षेत =देख लेती हैं,
मौने दार्ढ्यम् =सुदृढ़ असंभाषण का
उपाश्रितापि =आश्रय लेकर भी
तामेव याहि ="उसी (दूसरी सखी) के पास जाइये"
इति निगदेत् =इस प्रकार कह उठती हैं,
अस्पर्शे =स्पर्श न करने का
सुधृताशयापि =सुदृढ विचार करके भी
करयोः =(लाल जी के) दोनों हाथ
धृत्वा =पकड़ कर
बहिर्यापयेत् =(कुञ्ज से) बाहिर निकाल देती हैं,
इति राधायाः =इस प्रकार की श्री राधा जी की
मानदुस्थितिम् =मान की चञ्चल स्थिति को
हसन्ती =हँसती हुई
अहं कदा प्रेक्षे =मैं कब देखूँगी।

लाडिली! निरखौं कहुँ सो मान।
जाते मन तुव होइ अनवस्थित सुनियै करौं बखान॥
नहिं हेरौं पिय जिय निश्चय दृग कोण सतत तहँ लागे।
मौन अवलम्बित पैं फटकारयौ 'जाहु जहाँ रहे रागे'॥

अङ्ग न परसौंगी हिय हठ, पै करनि जु बाह्य धकेलौ।
हँसति हँसति देखौं निजहित यों मन गति ठेलम-ठेलौ ॥

रसागाधे राधाहृदि सरसि हंसः करतले
लसद्वंशःस्रोतस्यमृतगुणसङ्गः प्रतिपदम् ।
चलत्पिच्छोत्तंसः सुरचितवतंसः प्रमदया
स्फुरद्गुञ्जागुच्छः स हि रसिकमौलिर्मिलतु माम् ॥२३१॥

रसागाधे राधा हृदि सरसि	=अगाध रसपूर्ण श्रीराधा हृदय सरोवर में	चलत्पिच्छोत्तंसः	=चञ्चल मयूरमुकुट धारी,
हंसः	=हंस के समान,	प्रमदया	=प्रिया जी द्वारा
करतले	=हाथ में	सुरचितवतंसः	=सुसज्जित करणाभरण(कुण्डलादि) से अलंकृत,
लसद्वंशः	=सुन्दर वंशी (धारण करने) वाले,	स्फुरद्गुञ्जा-गुच्छः	=देदीप्यमान गुञ्जाओं के गुच्छ से शोभित
प्रतिपदम्	=पद पद पर	स हि	=वही
स्रोतसि	=प्रत्येक इन्द्रिय तथा रोम-रोमको	रसिकमौलिः	=रसिक शेखर (लाल जी)
अमृतगुणसङ्गः	=अमृत सम प्रतीत होने वाले (प्रिया जी के) गुणों में आसक्त	माम्	=मुझे
		मिलतु	=मिलें (अपनायें) ।

रसिकमौलि छविमय पिय ध्याऊँ ।
शोभित गुञ्जा गुच्छ माल गल जाकी दासि कहाऊँ ॥
राधा मानस गहन सरोवर हँस, मुरलि कर शोभे ।
अमृत सम प्रतिपद छिद्रन सों आनँद-स्रावी लोभे ॥

केकि पिच्छ चल शीश चन्द्रिका, श्रवण आभरण कमनी ।
रचि रचि रमणिन साजे कर निज हित द्युति विद्युत दमनी ।।

अकस्मात्कस्याश्चिन्नववसनमाकर्षंति परां
मुरल्या धम्मिले स्पृशति कुरुतेन्याकरधृतिम् ।
पतन्नित्यं राधापदकमलमूले व्रजपुरे
तदित्थं वीथीषु भ्रमति स महालंपटमणिः ।।२३२।।

अकस्मात्	=अचानक
कस्याश्चित्	=किसी एक के
नव वसनं	=नवीन वस्त्र को
आकर्षति	खैंचते हैं,
पराम्	=दूसरी किसी (गोपी) के
धम्मिले	=केश पाश को
मुरल्या	मुरली से स्पर्श
स्पृशति	करते हैं,
अन्या कर	=किसी अन्य के
धृतिम् कुरुते	हाथ को ही ग्रहण करते हैं,
नित्यम्	=और नित्य ही
राधा पद-	=श्री प्रिया (राधा)
कमल मूले	जी के पद कमल मूल में
पतन्	=लोटते रहते हैं
तत् इत्थम्	=सो इस प्रकार,
व्रजपुरे	=व्रजपुर की
वीथिषु	वीथियों में
स महा	=वह महा लम्पट
लम्पट मणिः	शिरोमणि
भ्रमति	=घूमते रहते हैं।

लम्पट मणि व्रज वीथिनु डोलैं ।
अहह ! उचकि कहुँ लखि रमणी नव वस्त्र ऐंचि झकझोलैं ।
कर मुरली सों केशपाश छ्वै निजहित काहु खिजावैं ।
कर गहि झगड़ैं पै राधा पद पद्मनि सीस डुलावैं ।।

एकस्या रतिचौर एव चकितं चान्यास्तनान्ते करं
कृत्वा कर्षति वेणुनान्यसुदृशो धम्मिल्लमल्लीस्रजम् ।

धत्तेन्या भुजवल्लिमुत्पुलकितां संकेतयत्यन्यया
राधायाः पदयोर्लुठंत्यलममुं जाने महालंपटम् ॥२३३॥

एकस्याः	=किसी एक के
रति चौरः	=रति चौर हैं
एव	=(अर्थात् संकेत करके नहीं आते हैं)
अन्या	=तथा अन्य किसी के
स्तनान्ते च	=वक्षस्थल पर
चकितम्	चकित भाव से
करं कृत्वा	=हाथ रख कर
वेणुना	=वेणु के द्वारा
अन्य सुदृशः	=अन्य सुनयनी (गोपी) के
धम्मिल मल्ली	=केश पाश की
स्रजं कर्षति	=मल्ली माल खैंचते हैं,
	=अन्य किसी की
उत्पुलकिता-	=रोमाञ्चित भुज-
मन्या	लता को पकड़
भुजवल्लिम्	लेते हैं,
धत्ते अन्यया	=तथा किसी अन्य से
संकेतयति	=संकेत करते हैं
राधायाः	=और श्री प्रिया जी के
पदयोः-	=चरणों में
लुठति	=लोटते रहते हैं,
अमुम्	=ऐसे इस
महालम्पटम्	=महा लम्पट को
अलम्	=(मैं) भली प्रकार
जाने	=जानती हूँ।

भलि विधि लम्पट मणि जानति हौं।
सुनु सखि! यह रति चोर सांखन को कह कसें पहिचानति हौं॥
काहू सखी के चकित भयो कर सों कुच परसत डोलें।
सखी सुनयनी लखि बंशी सों मल्लिमाल सिर खोलें॥
पुनि काहू की पुलकित भुजा लता गहि कंठहि मेलें।
करत काहु संकेत कुञ्ज अन्तर प्रवेश करि खेलें॥

पै यह अचरज सब शठता तजि श्रीराधा पद पद्मनि।
पूर्ण रूप सौं लौटतु निजहित रचि न सकें तहँ छद्मनि॥

प्रियांसे निक्षिप्तोत्पुलकभुजदण्डः क्वचिदपि
भ्रमन्वृंदारण्ये मदकलकरीन्द्राद्भुतगतिः।
निजां व्यञ्जन्नत्यद्भुतसुरतशिक्षां क्वचिदहो
रहः कुञ्जे गुंजाध्वनितमधुपे क्रीडति हरिः॥२३४॥

अहो	=अहह!	क्वचित्	=और कभी
क्वचिदपि	=कभी तो	निजाम्	=अपनी
वृन्दारण्ये	=वृन्दावन में	अत्यद्भुत	=अति विचित्र
प्रियांसे	=प्रिया जी के	सुरत शिक्षां	सुरत शिक्षा को
निक्षिप्तोत्पुलक	=स्कन्ध पर	व्यञ्जन्	प्रकट करते हुए
भुज दण्डः	रोमाञ्चित भुज	गुञ्जा ध्वनित	=भ्रमरों के गुञ्जार
	=लता को डाले	मधुपे	से युक्त
मदकल	=मदोन्मत्त गजराज	रहः कुंजे	=निभृत निकुञ्ज में
करीन्द्राद्भुत	=के समान विचित्र	हरिः	=श्रीहरि (लालजी)
गतिभ्रमन्	गति से	क्रीडति	=खेलते रहते हैं।
(आस्ते)	घूमते फिरते हैं,		

सुनो सखी! रति लम्पट केली।
प्यारी सङ्ग अतीव अनूपम निगम रहस्य करत रस झेली॥
अहो! कबहुँ भुज दण्ड प्रिया के कन्ध दिये श्रीवन में।
डोलत मत उन्मत्त भयो गज सम गति अद्भुतपन में॥
कबहुँ इकन्त कुंज जहँ गुंजत मुखरित अलि कुल राजैं।
अति विचित्र प्रकटत रति शिक्षा निज हित क्रीड़ा साजैं॥

दूरे सृष्ट्यादिवार्ता न कलयति मनाङ्नारदादीन्स्वभक्ता
ञ्छ्रीदामाद्यैः सुहृद्भिर्न मिलति हरति स्नेहवृद्धिं स्वपित्रोः

किंतु प्रेमैकसीमां मधुररससुधासिंधुसारैरगाधां
श्रीराधामेव जानन्मधुपतिरनिशं कुञ्जवीथीमुपास्ते ।२३५।

सृष्ट्यादिवार्ता=सृष्टि आदि की
दूरे　बात तो दूर रही,
(आस्ताम्)
नारदादीन् =अपने नारदादि
स्वभक्तान्　भक्तों का भी
मनाक् न　तनिक ध्यान
कलयति　नहीं करते
श्रीदामाद्यैः =श्रीदामा आदि
सुहृद्भिर्न　सहृदों से भी नहीं
मिलति　मिलते,
स्वपित्रोः =अपने पितृ वर्ग
(नन्द यशोदा
आदि) की
स्नेह वृद्धिम् =स्नेह वृद्धिको भी
हरति =संकुचित कर
देते हैं
किन्तु =परन्तु
मधुर रस =अगाध मधुर
सुधा सिंधु　रससुधा सिंधु के
सारैः अगाधाम् सार स्वरूप प्रेम
प्रेमैक सीमां　की चरमावधि
श्रीराधां एव　श्रीप्रिया को एक
जानन्　मात्र जानते हुए
मधुपतिः =मधुपति (श्री
लाल जी)
अनिशम् =निरन्तर
कुञ्ज वीथीम् =कुञ्ज वीथी की
उपास्ते =उपासना करते
रहते हैं ।

भूलि सब वैभव सुधि श्रीलाल ।
एकमात्र राधा अगाध रस सुधा सिंधु चहै बाल ।
निशि दिन कुञ्ज वीथि रहि अलि सम मधुपति अनत न जावै ।
कहाँ कथा भयो सृष्टिन को चर्चा ताको न सुहावै ।।
अन्तरङ्ग नारद आदिक भक्तन की सुधि बिसरानी ।
श्रीदामादि सखन तजि निजहित ममता पैतृक हानी ।।

सुस्वादु सुरसतुन्दिलमिंदीवरवृन्दसुन्दरं किमपि ।
अधिवृन्दाटवि नंदति राधावक्षोजभूषणं ज्योतिः ।।२३६।।

सुस्वादु	=अतिशय आस्वादनीय	भूषणम्	=की आभूषण
सुरस	=मधुर रस	किमपि	=कोई अनिर्वचनीय
तुन्दिलम्	परिपुष्ट	ज्योतिः	=ज्योति
इन्दीवर	=नील कमल समूह	श्रीधवृन्दाटवि	=श्रीवृन्दावन में
वृन्द सुन्दरम्	सम सुन्दर	नन्दति	=आनन्दित हो रही है।
राधा वक्षोज	=श्रीराधा वक्षस्थल		

राजत वृन्दावन आनन्दित।
ज्योती एक अनिर्वचनीया रसिक जनन सों वन्दित ॥
पुष्ट सुरस आस्वादन अद्भुत नील कमल को पुंज।
सुरत विशिष्ट सुशोभित भूशण राधा उरज निकुंज ॥

कांतिः कापि परोज्ज्वला नवमिलच्छ्रीचन्द्रिकोद्भासिनी
रामाद्यद्भुतवर्णकांचितरुचिर्नित्याधिकांगच्छविः
लज्जानम्रतनुः स्मयेन मधुरा प्रीणाति केलिच्छटा
सन्मुक्ताफलचारुहारसुरुचिः स्वात्मार्पणेनाच्युतम् ।२३७॥

नव मिलत्	=नूतनता को प्राप्त	च्छविः	छवि से भूषित
श्रीचन्द्रिको	=शोभा सम्पन्न	लज्जानम्रतनुः	=लज्जा से विनत शरीर वाली
द्भासिनी	चाँदनी से भी	स्मयेनमधुरा	=स्मित से मधुर (मुख वाली)
रामाद्यद्भुत	=ललनाओं में	केलिच्छटा	=केलि विलास
वर्ण काञ्चित	मुख्य (ललिता	सन्मुक्ता फल	छटा युक्त शुभ्र
रुचिः	दिक) द्वारा विचित्र हिंगुल चन्दन आदि की कान्ति से सम्पन्न	चारु हार	मुक्ता फल रचित
नित्याधिकाङ्ग	=क्षण-क्षण नूतन	सुरुचिः	मनोहर हार की सुन्दर कान्ति-

	मयी,
कापि	=कोई अनिर्वचनीय
परोज्ज्वला	=परमोज्ज्वल शोभा
कान्तिः	(अर्थात् प्रियाजी)
स्वात्मार्पणेन	=अपना सर्वस्व
	निवेदन करके (अपने)
अच्युतम्	=प्राणनाथ लाल जी को
प्रीणाति	=प्रसन्न कर रही हैं

तुष्ट स्वयं लालहि संतोषैं ।
श्रीराधा करि सर्व समर्पण लज्जित नम्र हँसति मृदु पोषैं ।।
निज वपु मधुर केलि लहरिनु उज्ज्वल द्युति अकथ प्रकासैं ।
परम स्वच्छ मुक्ताफल कण्ठी हारनि प्रभा विकासैं ।।
प्रतिक्षण बढ़ै अङ्ग छवि वर्ण मध्य रमणिनु मणि सोहै ।
नव विकसित चन्द्रिका सुशोभा निजहित सब विधि मोहै ।।

यन्नारदाजेशशुकैरगम्यं वृन्दावने वञ्जुलमंजु कुञ्जे ।
तत्कृष्णचेतोहरणैकविज्ञमत्रास्ति किंचित्परमं रहस्यम् ।।२३८।।

यत् नारद	=जो नारद, ब्रह्मा,
अज ईश	शङ्कर शुक आदि
शुकैः अगम्यम्	से अगम्य है,
तत् वञ्जुल	=वह अशोक के
मञ्जु कुञ्जे	सुन्दर कुञ्ज
अत्र वृन्दावने	मण्डित इस श्री वृन्दावन में
कृष्ण चेतो	=श्रीकृष्ण के चित्त
हरणैक	चुराने में एकमात्र
विज्ञम्	चतुर
किञ्चित्	=कोई अनिर्वचनीय
परमं रहस्यं	=परम रहस्य
अस्ति	विराजमान है ।

राजत श्री वन अगम रहस्य ।
कुंज अशोक मनोहर इक रस चतुर हरै मोहन सर्वस्य ।।
खोजत फिरैं ईश अज नारद व्यास सुवन शुक से मर्मज्ञ ।
पैं अजहुं नहिं थाह कहूं लहि निजहित वक्ता ज्ञानी तज्ञ ।।

लक्ष्म्या यश्च न गोचरी भवति यन्नापुः सखायः प्रभोः
संभाव्योपिविरंचिनारदशिवस्वायंभुवाद्यैर्न यः।
यो वृन्दावननागरीपशुपतिस्त्रीभावलभ्यः कथं
राधामाधवयोर्ममास्तु स रहोदास्याधिकारोत्सवः ॥२३९॥

यः लक्ष्म्या न गोचरी भवति	=जो लक्ष्मीजी को भी ज्ञान गम्य नहीं है,	यः वृन्दावन नागरी पशुपति स्त्री भाव लभ्यः	=जो श्री वृन्दावन की नागरी गोपिकाओं के भाव द्वारा प्राप्य है,
यं च प्रभोः सखायः न आपुः	=तथा जिसे लाल जी के सखा भी नहीं प्राप्त कर सके,	सः	=वह
यः विरञ्चि नारद शिव स्वायम्भुवाद्यैः सम्भाव्योपि न	=एवं जो ब्रह्मा नारद शङ्कर सनकादिकों से सम्भावनीय भी नहीं है,	राधामाधवयोः	=श्रीराधामाधवका
		रहोदास्य	=एकान्त कैङ्कर्य्य रूप
		अधिकारोत्सवः	=पूर्ण मधुर अधिकार
		मम कथं अस्तु	=मुझे कैसे प्राप्त हो।

दास्य लहौं कहुँ राधा माधव।
जो श्री वन नागरि गोपिन के अनुगत भाव सुलभ होइ तब ॥
यद्यपि इक अचरज महान नहिं गोचर लक्ष्मी श्याम सखन कौं।
निजहित ब्रह्मा नारद ईश स्वयम्भू सनकादिक देवन कौं ॥

उच्छिष्टामृतभुक्तवैव चरितं शृण्वंस्तवैव स्मर-
न्पादांभोजरजस्तवैव विचरन्कुञ्जांस्तवैवालयान्।
गायन्दिव्यगुणांस्तवैव रसदे पश्यंस्तवैवाकृति
श्रीराधे तनुवाङ्मनोभिरमलैः सोहं तवैवाश्रितः ॥२४०॥

रसदे श्रीराधे! = हे कैंकर्य रसदे ! श्री राधे !
तवैव उच्छिष्टा = आपके ही
मृत भुक् उच्छिष्ठ अमृत तुल्य प्रसादी का भोगी होकर,
तवैव चरितं = आप के ही
शृण्वन् चरित्र को सुनता हुआ,
तवैव पादा- = आपके ही चरण
म्भोज रजः कमल की रज का
स्मरन् स्मरण करता हुआ,
तवैव = आपके ही विहार
आलयान् स्थल कुंजों में
विचरन् विचरता हुआ,
तवैव दिव्य = आपके ही दिव्य
गुणान् गुणों का गान
गायन् करता हुआ,
तवैव = आपके ही (मनो-
आकृतिं हर) आकृति
पश्यन् (रूप) का दर्शन करता हुआ,
अमलैः तनु = अपने निर्मल
वाङ्मनोभिः = तन वचन एवं मन से,
सोहम् = ऐसा मैं
तवैव = आपके ही
आश्रितः = आश्रित हूँ।

मन वच तन मुहि तुव अवलम्ब ।
हे श्रीराधे ! हे रसदे ! सुनु, सत्य कहौं तजि दम्भ ।।
तुव पियूष प्रसादी पाती, श्रवण चरित्रनि सुनती ।
दिव्य गुण गणन लीला विलसति गान करति अरु गुनती ।।
रसमयि तुव छवि दर्श करति युग पद पङ्कज रज परसति ।
तुव निकुंज मन्दिर यों विचरौं निजहित दासी सरसति ।।

क्रीडन्मीनद्वयाक्ष्याः स्फुरदधरमणीविद्रुमश्रोणिभार
द्वीपायामोंतरालस्मरकलभकटाटोपवक्षोरुहायाः ।
गम्भीरावर्त्तनाभेर्बहुलहरिमहा प्रेमपीयूषसिन्धोः
श्रीराधायाःपदांभोरुहपरिचरणे योग्यतामेव चिन्वे। २४१।

क्रीडन्मीन =खेलते हुए मीन
द्वयाक्ष्याः युगल ही जिनके नेत्र हैं,
स्फुरदधर =देदीप्यमान
मणी विद्रुम अधरोष्ठ ही श्रेष्ठ विद्रुम मणि हैं,
श्रोणिभार =नितम्ब ही द्वीप
द्वीपायाम का विस्तार है,
अन्तराल स्मर=हृदय में वर्तमान
कलभ कटाटोप काम ही तरङ्ग है
वक्षोरुहायाः =तथा गज शावक के गण्डस्थल का आटोप ही कुच मण्डल है,
गम्भीरावर्त- =गम्भीर भँवर ही
नाभेः नाभि है,
बहु लहरि =(तथा जो) श्री
महा प्रेम पीयूष लालजी के प्रति
सिन्धोः महा प्रेम रूप अमृत की सिन्धु स्वरूपा हैं,
श्रीराधायाः =(ऐसी) श्रीराधा जी के
पदाम्भोरुह =पद कमलों की
परिचरणे =परिचर्य्या में (मैं)
योग्यतामेव =योग्यता
चिन्वे (अधिकार) का ही चयन करना (चाहता) हूँ।

युग पद पंकज राधा केरे।
चाहौं मिलै योग्यता सेवौं यही मनोरथ मेरे॥
जिन के दृग युग चल मनि द्वै, अधर लसत मणि मूंगा।
स्थूल नितम्ब उभय द्वीप द्वै विस्तृत भये चहूं —धा॥
हृदयस्थल घेरे कुच युग जनु कलश कलभ शिशु लीनै।
प्रेम सुधा निधि भँवर नाभि — मनसिज तरंग हरि भीनै॥

मालाग्रन्थनशिक्षया मृदुमृदुश्रीखण्डनिर्घर्षणा
देशेनाद्भुतमोदकादिविधिभिः कुञ्जांतसंमार्जनैः।
वृन्दारण्यरहःस्थलीषु विवशा प्रेमार्तिभारोद्गमा-
त्प्राणेशंपरिचारिकैः खलु कदा दास्यामयाधीश्वरी।२४२॥

प्रेमार्तिभारो	=प्रेम जन्य आर्ति
दुगमात् विवशा	भार के प्रकट होने
अधीश्वरी	से भाव विवश श्री स्वामिनी,
मालाग्रन्थन	=माला गूँथने की
शिक्षया	शिक्षा से,
मृदु-मृदु श्री	=धीरे-धीरे
खण्ड निर्घर्ष	चन्दन घिसने
णादेशेन	की आज्ञा से
अद्भुत मोद-	=(स्वादिष्ट)
कादि विधिभिः	अद्भुत मोदक निर्माण कला से,
कुञ्जान्त	=कुञ्जों के भीतर
सम्मार्जनैः	सम्मार्जन द्वारा,
वृन्दारण्य	=श्रीवृन्दावन की
रहः स्थलीषु	एकान्त स्थली में (इन उपर्युक्त)
परिचारिकैः	=विविध सेवाओं से
मया दास्या	=मुझ दासी द्वारा
प्राणेशं कदा	अपने प्रियतम को
खलु (प्रीणाति)	कब भली भाँत प्रसन्न करेंगी

सौंपि हौ कब मुहि पिय परिचर्या ।
उर अभिलाष कहौं सुनु स्वामिनि ! यद्यपि अति अश्चर्या ॥
जब रति विवश विपिन प्रियतम प्रति निभृत निकुंज विराजति ।
माला गूथन शिक्षा दई मुहि तैसे रहि हौं साजति ॥
मृदु मृदु चन्दन घिसौं कथित विधि मोदक रचौं रसीले ।
आंगन कुंज बुहारौं निजहित आज्ञा तुव ईश्वरि लै ॥

प्रेमांभोधिरसोल्लसत्तरुणिमारंभेण गम्भीरदृ
ग्भेदा भङ्गि मृदुस्मितामृतनवज्योत्स्नांचितश्रीमुखी ।
श्रीराधासुख धामनि प्रविलसद्वृन्दाटवीसीमनि
प्रेयोंके रतिकौतुकानि कुरुते कंदर्पलीलानिधिः ॥२४३॥

प्रेमाम्भोधि	=प्रेम सागर के रस
रसोल्लसत्	से उल्लसित
तरुणिमारम्भेण (तथा)	तारुण्य के आरम्भ से
गम्भीरदृग्भेदा	=गम्भीर कटाक्ष पात से सम्पन्न,
भङ्गिमृदुस्मितामृत	=विलासपद्धति
नव ज्योत्स्ना युक्त	मन्द स्मितामृत

स्मित श्रीमुखी	= की नूतन चन्द्रिका से प्रशस्त मुख वाली	वृन्दाटवी सीमनि	वृन्दावन सीमा में
कंदर्प लीला निधिः श्रीराधा	= काम कलाओं की निधि श्रीराधा	प्रेयोङ्के	= प्रियतम के अङ्क में (स्थित)
सुखधामनि	= सुख निकेतन	रतिकौतुकानि कुरुते	= रति कौतुकों (विहार) का विस्तार कर रही हैं।
प्रविलसत्	शोभा शाली		

पिय अङ्कम रति कौतुक कारिणि।
स्मर लीला निधि रूप राधिका सुखमय कुंज बिहारिणि।
प्रेमरसांम्बुधि भयौ उल्लसित प्रारम्भी तरुणाई।
ता कारण गम्भीर महा दृग भङ्गी परत लखाई।।
मन्हित भङ्गिमा मृदु मुस्कनि मुख द्युति नव सुधा सुहावै।
निजहित अस स्वामिनी एक रस नित बिहार दरसावै।।

शुद्धप्रेमविलासवैभवनिधिः कैशोरशोभानिधि
वैंदग्धीमधुरांगभङ्गिमनिधिर्लावण्यसम्पन्निधिः।
श्रीराधा जयतान्महारसनिधिः कन्दर्पलीलानिधिः
सौंदर्यैकसुधानिधिर्मधुपतेः सर्वस्वभूतो निधिः ॥२४४॥

शुद्ध प्रेम	= उज्ज्वल प्रेम	लावण्य	= रूप लावण्य
विलास वैभव निधिः	विलासके वैभव की निधि,	सम्पन्निधिः	= संपत्ति की निधि
कैशोर शोभा निधिः	= किशोर वय शोभा की निधि,	महारस निधिः	= सर्व श्रेष्ठ शृङ्गार रस की निधि,
वैदग्धी मधु रांग भङ्गिम निधिः	= चातुरी पूर्ण मधुरांग जनित चेष्टाओं की निधि	कंदर्प लीला निधिः	= काम कलाओं की निधि,
		सौन्दर्य्यैक सुधानिधिः	= सौन्दर्य्य की एक मात्र निधि एवं

मधुपतेः सर्व-	=श्रीलाल जी की
स्वभूतो निधिः	सर्वस्व स्वरूप निधि,
श्रीराधा जय-	=(ऐसी) श्रीराधा
तात्	सर्वातिशायी रूप से विराजमान हों।

अखिल मधुरता निधि की जै हो।
श्रीराधा इक मात्र सर्व निधि निज पिय मधुपति हित जै जै हो।
प्रेम विलास बिभव विशुद्ध निधि अरु निधि वय कैशोर सुशोभी !।
पूर्ण चतुरता मधुर मधुर अँग २ मटकन लटकन निधि लोभी।
निधि सम्पत लावण्य महारस की निधि जाको वार न पारा।
मर्नासिज लीला की निधि सब सौन्दर्य्य जु निजहित अमृत सारा ॥

नीलेंदीवरवृन्दकांतिलहरीचौरं किशोरद्वयं
त्वय्येतत्कुचयोश्चकास्ति किमिदं रूपेण सम्मोहनम् ।
तन्मामात्मसखीं कुरु द्वितरुणीयं नौ दृढं श्लिष्यति
स्वच्छायामभिवीक्ष्य मुह्यतिहरौ राधास्मितं पातु नः॥२४५॥

त्वयि एतत्	=आपके इन कुच
कुचयोः	युगल में
नीलेन्दीवर	=नील कमल समूह
वृन्द कान्ति	की कान्ति तरङ्ग
लहरी चौरम्	को चुराने वाला
(निज) रूपेण	=तथा अपने रूप से
सम्मोहनम्	सम्मोहित करने
इदं किशोर	वाला यह किशोर
द्वयं किं	युगल क्या चमक
चकास्ति	रहा है
तत् माम्	=इस लिए मुझे
आत्म सखीं	भी अपनी सखी
कुरु	बना लो (जिससे)
इयं द्वितरुणी	=यह तरुण युगल
नौ दृढं	हम दोनों
श्लिष्यति	को गाढ़ालिङ्गनकरें,
स्वच्छायां	=(इस प्रकार)
अभिवीक्ष्य	अपनी छाया को
हरौ मुह्यति	(कुचों में) देखकर हरि के मोहित होने पर,
नः राधा	=श्री राधाजी की
स्मितं पातु	मन्द मुस्कान हमारी रक्षा करे।

कौतुकमय राधा मृदु हास्य ।
प्रकट्यो जानि लाल मोहित इक बिरियां सो सखि सदा उपास्य ।
केलि काल कबहुंक प्यारे कुच बीच लखी निज युग परछाहीं ॥
कहन लगे प्यारी ! तब हिय में युग किशोर वपु नील लुकाही ।
हरत नील अम्बुज दुति मो हिय रूप अनूपम विलस्यौं चाही ॥
निजहित मोहि सखी निज करि द्वै हम द्वै तरुण लिपटि हर्षाही ॥

सङ्गत्यापि महोत्सवेन मधुराकारां हृदि प्रेयसः
स्वच्छायामभिवीक्ष्य कौस्तुभमणौ संभूत शोकाक्रुधा ।
उत्क्षिप्य प्रियपाणिमेव विनयेत्युक्त्वा गताया बहिः
सख्यै सास्रनिवेदितानि किमहं श्रोष्यामि ते राधिके ॥२४६॥

राधिके !	=हे श्रीराधिके !
महोत्सवेन	=महोत्सव (सुरत)
सङ्गत्यापि	समागम को प्राप्त करके भी
प्रेयसः हृदि	=प्रियतम के हृदय-
कौस्तुभमणौ	स्थ कौस्तुभमणि
मधुराकारां	में मधुराकृति
स्वच्छया-	वाली अपनी ही
मभिवीक्ष्य	छाया को देखकर
क्रुधा सम्भूत	=क्रोधावेश से शोक
शोका	को प्राप्त होकर,
प्रिय पाणि	=प्रियतम के कर,
उत्क्षिप्य एव	कमल को झटक
विनय	कर अरे नीतिवर्जित !
इति उक्त्वा	=ऐसा कह कर
बहिः गतायाः	बाहिर चले जाने पर
ते	=आपके द्वारा
सख्यै	=सखी के प्रति
सास्रनिवेदितानि	=अश्रु पूर्ण निवेदन को
किमहं श्रोष्यामि	=क्या मैं सुनूँगी ?

श्रीराधे तुव भोरो मान ।
उपालम्भ जब कह्यौ हितू सौ मुदित सुनौं दै कब निज कान ॥
एक बार रति सङ्गम सुख में निज पिय हिय कौस्तुभमणि माहीं ।

मधुराकृती निरखि जिन वपु प्रतिबिंबित मानि अन्य तिय ताही।
तुरत शोक कोपाकुल अविनय भाव प्रकटि पिय कर झटकाए ॥
ज्यहिनित अश्रुनि पूरित दृग तजि कुञ्ज सखिन पै आनि सुनाए।

महामणिवरस्रजं कुसुमसंचयैरंचितं
महामरकतप्रभा ग्रथितमोहितश्यामलम् ।
महारसमहीपतेरिव विचित्रसिद्धासनं
कदा नु तव राधिके कबरभारमालोकये ॥२४७॥

राधिके !	=हे श्रीराधिके !	श्यामलम्	मोहित करने वाले,
महामणि वर	=प्रशस्त सुन्दर मणि	महा रस	रस राज रूपी
स्रजम्	मालाओं से युक्त	महीपतेः	महीपति का
कुसुम सञ्चयै	=कुसुम समूह से	विचित्र	मानो विचित्र
रञ्चितम्	व्याप्त,	सिद्धासनं इव	सिद्धासन ही हो
महा मरकत-	=मरकत मणि	तव कबरभारं	=ऐसे आपके केश
प्रभा	सदृश प्रभा वाले	कदानु	पाश को क्या मैं
ग्रथित	=प्रियतम से गुम्फित	आलोकये	कभी देखूँगा ? ।
मोहित	तथा उन्हीं को		

कबहुँ शिर जूडा अद्भुत निरखौं।
श्रीराधिके ! महामणि माला कुसुम कलाप बन्ध्यौ लखि हरषौं ॥
गूंथित महा मरकत मणि आभा देत जु श्याम लताहि लजाए।
नृपति रसन श्रृङ्गार हेतु सिंहासन निजहित मनहुँ सजाए ॥

मध्येमध्ये कुसुमखचितं रत्नदाम्ना निबद्धं
मल्लीमाल्यैर्घनपरिमलैर्भूषितं लंबमानैः ।
पश्चाद्राजन्मणिवरकृतोदारमाणिक्यगुच्छं
धम्मिल्लं ते हरिकरधृतं कर्हि पश्यामि राधे ॥२४८॥

राधे =हे श्रीराधे !
मध्ये मध्ये =बीच बीच में
कुसुम खचितम् पुष्पों से भूषित,
रत्नदाम्ना =रत्न की माला से
निबद्धम् सम्यक्तया गँधा हुआ,
घनपरिमलैः =अत्यन्त सुगन्धित
लम्बमानैः लटकती हुई
मल्लीमाल्यैः मल्ली मालाओं
भूषितम् से शोभित,
पश्चाद्राजन् =पीछे की ओर
मणिवर कृतो- शोभायमान
दार माणिक्य सुन्दर मणि रचित
गुच्छम् सुख प्रद माणिक्य गुच्छ से युक्त,
हरिकरधृतम् =श्री लालजी के कर कमल से रचित,
ते धम्मिल्लम् =आपके केश पाश को
अहं कर्हि =मैं कब देखँूगी।
पश्यामि

वरस कब अस तुव वेणी होय।
श्रीराधे ! जो स्वयं रची हरि वर्णं अस कवि कोय॥
रत्ननि माल बँधी बिच बिच खचि कुसुम सघन महकाएं।
मालति माल विभूषित निजहित फुन्दना लाल झुलाएं॥

विचित्राभिर्भंगीविततिभिरहो चेतसि परं
चमत्कारं यच्छँल्ललितमणिमुक्तादिललितः।
रसावेशाद्वित्तः स्मरमधुरवृत्ताखिलमहो-
द्भुतस्ते सीमन्ते नवकनकपट्टो विजयते॥२४६॥

अहो =अहह !
विचित्राभिः =विचित्र २ विविध
भङ्गी विततभिः विन्यास पद्धति से
चेतसि परं चित्त में चमत्कार
चमत्कारं को प्रदान करता
यच्छन् हुआ,
ललित मणि =सुन्दर मणि मुक्ता-
मुक्तादि ललितः दिकों से मनोहर
रसावेशात् =रस के आवेश से
स्मरमधुरवृत्ता- काम सम्बन्धी
-खिल महो मधुर चरित्र के
वित्तः सम्पूर्ण तेज को प्राप्त,
अद्भुत नव =विचित्र नूतन

कनक पट्टः	कनक पट्ट	विजयते	सुशोभित है।
ते सीमन्ते	=आपके सीमन्त में		

सर्व जयौ जु कनक पट माँग।
अद्भुत शिर पर हलत ललित मणि मुक्तन जड्यौ लली गौराङ्ग॥
सब रस संपत काम चरित्रनु पूर्ण देखियत विस्मयदाई।
विविध भङ्गिमा प्रकटतु निर्जाहित चित हर, दै आनंद महाई॥

अहो द्वैधीकर्त्तुं कृतिभिरनुरागामृतरस
प्रवाहैः सुस्निग्धैः कुटिलरुचिरश्याम उचितः।
इतीयं सीमंते नवरुचिरसिंदूररचिता
सुरेखा नः प्रख्यापयितुमिव राधे विजयते॥२५०॥

राधे अहो!	=हे श्रीराधे! आश्चर्य्य है		उचित है,
कृतिभिः	=चतुर पुरुषों को	इति नः प्रख्या-	=मानो इसी बात
सुस्निग्धैः	अति स्निग्ध अनु-	पयितुम् इव	को हमें समझाने
अनुरागामृत	रागामृत रस के	सीमन्ते नव	के लिए माँग में
रस प्रवाहैः	प्रवाह से	रुचिर सिंदूर	=नूतन रुचिर सिंदूर
कुटिल रुचिर	=कुटिल एवं रुचिर	रचिता	से रची हुई,
श्यामः द्वैधी	श्याम को द्विधा	इयं सुरेखा	=यह सुन्दर रेखा
कर्तुं उचितः	विभक्त करना ही	विजयते	सर्वोपरि शोभित हो रही है।

रेख सिंदूर माँग दै घोष।
हे श्रीराधे! तुव सुभाग को विजयौ नवल रुचिर रस पोष।
मानहुं रस अनुराग सुधा सुस्निग्ध पनारी बहत सरोष।
कुटिल रुचिर श्यामहि द्वै खण्डनि उचित करन निर्जाहित मदहोश॥

चकोरस्ते वक्त्रामृतकिरणबिम्बे मधुकर
स्तव श्रीपादाब्जे जघनपुलिने खञ्जनवरः।

स्फुरन्मीनो जातस्त्वयिरससरस्यां मधुपतेः
सुखाटव्यां राधे त्वयि च हरिणस्तस्य नयनम्॥२५१॥

राधे	=हे श्रीराधे !	जघनपुलिने	=जघन पुलिन का
तस्य मधुपतेः नयनम् ते	=उन मधुपति श्री लालजी का नेत्र	खञ्जन वरः	सुन्दर खञ्जन हो रहा है
वक्त्रामृतकिरण बिम्बे चकोरः	आपके मुख रूप चन्द्र मण्डल का चकोर,	त्वयि रस सरस्यां स्फुरन्मीनो जातः	=आप रस की सरसी हो तो उनका नयन चञ्चल मीन है
तव श्रीपादाब्जे मधुकरः	=आपके चरण कमल का भ्रमर तथा	त्वयि च सुखाटव्यां हरिणः	=आप सुखाटवी हो तो वह (उसमें) हरिण के समान है

बिके यों मधुपति राधे तोपै ।
मानत निज जीवन सर्वस तुहि सुनियेन्यौरो मो पै ॥
नयन भये चकोर विधु आनन किरण पियूष पियासे ।
पद पङ्कज पै मधुकर खञ्जन जघन पुलिन जु विलासे ॥
भये चपल अति मीन नाभि रस सरसी करत कलोलें ।
तत्सुख वन में मृग स्वरूप निजहित निज जीवन तोलें ॥

स्पृष्ट्वास्पृष्ट्वा मृदुकरतलेनांगमङ्गं सुशीतं
सांद्रानन्दामृतरसह्रदे मज्जतो माधवस्य ।
अंके पङ्केरुहसुनयना प्रेममूर्तिः स्फुरंती
गाढाश्लेषोन्नमितचिबुका चुंबिता पातु राधा२५२॥

मृदु करतलेन	=कोमल कर कमल		करके,
सुशीतं अङ्गम्	से अत्यन्त शीतल	सान्द्रानन्दा-	=सघन आनन्दा
अङ्गम् स्पृष्ट्वा स्पृष्ट्वा	प्रत्येक अङ्ग का बार बार स्पर्श	मृत रस ह्रदे	मृत रस के सरोवर में

मज्जतः माधवस्य	निमग्न होतेहुए, लाल जी के	गाढ़ाश्लेषो	=गाढ़ालिङ्गन से
अङ्के पङ्केरुह	= अंक में कमल	उन्नमित चिबुका	उठे हुए चिबुक
सुनयना	सी सुन्दर	चुम्बिता राधा	वाली प्रियतम से
स्फुरन्ती	नयना	पातु	चुम्बित (वे)
प्रेममूर्ति	देदीप्यमान प्रेममूर्ति,		श्री राधा हमारी रक्षा करें।

अम्बुज दल नयनी श्रीराधा।
प्रेम मूर्ति नित शरण चहौं राजत पिय अङ्क अबाधा।
पुनि-पुनि माधव निज कर शीतल अङ्गनि परसि हुलासैं।
घनीभूत आनन्द सुधा सरवर डूबत है प्यासे॥
गाढ़ालिङ्गन कियो जब कछु चिबुक उठयो सन्मानैं।
चुम्बन करतहि पुलकित वपु श्री निजहित पाहि निदानैं॥

सदा गायंगायं मधुरतरराधाप्रिययशः
सदा सांद्रानन्दा नवरसदराधापतिकथाः।
सदा स्थायंस्थायं नवनिभृतराधारतिवने
सदा ध्यायं ध्यायं विवशहृदि राधापदसुधाः॥२५३॥

सदा मधुरतर	=सदैव मधुराति		बार बार गान करता हुआ,
राधा प्रिययशः	मधुर श्रीराधाजी		
(तथा) सदा	के प्रियतमके यश	नव निभृत	=नूतन रहस्य मय
सान्द्रानंदा नव	का एवं घनीभूत	राधारतिवने	श्रीराधा विहार
रसद राधापति	आनन्द स्वरूप	सदा स्थायं	वन में नित्य
कथा गायं	नूतन रस दायिनी	स्थायम्	निवास करके,
गायम्	श्रीराधा प्राणेश्वर	विवश हृदि	=तथा सदैव प्रेमा-
	की कथाओं का	राधा पद	वेश में श्रीराधा

सुधाः सदा	पद सुधा का
ध्यायं ध्यायम्	बार-बार चिन्तन करता हुआ,
(कदा कृतार्थः स्याम्)	=(मैं कब कृतार्थ होऊँगा)।

बसौं यौं केलि कुञ्ज कानन में।
श्रीराधा पद सुधा सर्वदा ध्यान रहे प्रानन में।
विवश हृदय प्रिय श्री राधा यश महा मधुर हुलसाती।
श्रीराधा पति कथा रसीली नव-नव नित-नित गाती॥

श्यामश्यामेत्यमृतरससंस्रावि वर्णाञ्जपन्ती
प्रेमोत्कंठ्यात्क्षणमपि सरोमांचमुच्चैर्लपन्ती।
सर्वत्रोच्चाटनमिव गता दुःखदुःखेन पारं
कांक्षत्यह्नो दिनकरमलं क्रुध्यती पातु राधा॥२५४॥

श्याम श्याम	= हे श्याम !
इति अमृत रस संस्रावि वर्णान् जपन्ती	हे श्याम ! इस प्रकार अमृत रस प्रवाही नाम का जप करती हुई,
क्षण मपि प्रेमोत्कण्ठ्यात् सरोमाञ्चम् उच्चैःलपन्ती	=क्षण में प्रेमोत्कण्ठा से पुलकित होकर उच्च स्वर से उसी (नाम) का उच्चारण करती हुई,
दुःखदुःखेन	=अत्यन्त दुःख से
सर्वत्र उच्चाटनमिव गता	सर्वत्र उच्चाटन को प्राप्त हुई,
अह्नः पारं कांक्षन्ती	दिवसावसान को चाहती हुई
दिनकरं अलं क्रुध्यती राधा	=सूर्य्य के प्रति अत्यन्त क्रोधवती
पातु	श्रीराधा हमारी रक्षा करें।

पाहि पाहि प्रेमाकुल राधा।
प्रिय संभ्रम विरह में जपती श्याम ! हे श्याम ! अबाधा।
पुनि क्षण में अति प्रेम उत्कण्ठा सों रोमाञ्च उदोत॥

करति प्रलाप उच्च स्वर चित उच्चाटित दुख बहु होत ।।
कैसे करि विरहज दिन बीतें खीजि कोप उर ठानें ।
देखि दिबाकर ताड़ति अति निजहित अस छवि उर ध्यानें ॥

कदाचिद्गायन्ती प्रियरतिकलावैभवगतिं
कदाचिद्ध्यायन्ती प्रियसहभविष्यद्विलसितम् ।
अलं मुंचामुञ्चेत्यतिमधुरमुग्धप्रलपितै
र्नयन्ती श्रीराधा दिनमिह कदा नन्दयतु नः ।।२५५।।

कदाचित् प्रिय=कभी प्रियतम के
रतिकला वैभव रतिकला पूर्ण
गतिं गायन्ती वैभवकी दशा का गान करती हुई
कदाचित् =तथा किसी समय
प्रियसह प्रियतम के साथ
भविष्यद्विल- प्राप्त होने वाले
सितम् ध्यायंती भावी विलासका ध्यान करती हुई,
मुञ्च आमुञ्च =छोडो जी छोड़ो,

अलं इति अति बस रहने दो इस,
मधुर मुग्ध प्रकार के अत्यन्त
प्रलपितैः दिनं (मनोहारी) प्रलाप
नयन्ती के द्वारा अपने दिन को व्यतीत करती हुई
श्रीराधा इह नः श्रीराधा इस
कदा जीवन में कब
आनन्दयतु हमें आनन्दित करेंगी ।

आनन्दित अस कबहुँ करोगी ।
श्रीराधे ! निज प्रेम वैचिती वश प्रलाप उचरोगी ।
बस छोड़ो-छोड़ो जु इती भई मधुर भाव आलापौ ।
पिय के भावी सङ्गम सुख कौ ध्याइ मनहि मन जापौ ॥
कबहुँ लाल की सुरत कला वैभव विलास कौं गाती ।
निजहित मधुर मनोहर चिन्तन विलसन दिवस बिताती ॥

श्रीगोविंद व्रजवरवधूवृन्दचूडामणिस्ते
कोटिप्राणाभ्यधिकपरमप्रेष्ठपादाब्जलक्ष्मीः ।

कैंकर्येणाद्भुतनवरसेनैव मां स्वीकरोतु
भूयोभूयः प्रतिमुहुरधिस्वामि संप्रार्थयेहम् ॥२५६॥

श्रीगोविन्द ! =हे श्रीगोविन्द !
तेकोटि =जिनके चरण
प्राणाभ्यधिक कमल की शोभा
परम श्रेष्ठ आपको कोटि-२
पादाब्ज प्राणों से अधिक
लक्ष्मीः परम प्रिय है,
व्रजवरवधू =(वे) व्रज रमणी
वृन्द चूडामणिः मणि समूह की
शिरोमणि श्रीप्रिया जी
अद्भुत नव =अद्भुत तथा नवीन
रसेन कैङ्कर्येण रसमय अपने
कैङ्कर्य (प्रदान) से
एव मां स्वी- =ही मुझे स्वीकार
करोतु करें,
इति अहं =बस यही मैं आप
अधिस्वामि के प्रति बार-बार
भूयोभूयः प्रति अधिकाधिक
मुहुः सम्प्रार्थये सविनय प्रार्थना
करता हूँ।

विनय सुन लालन हे गोबिन्द ! ।
पुनि-पुनि तुमसों जाचौं सेवा प्यारी पदारविन्द ॥
जो व्रज वर युवती समूह में सर्व श्रेष्ठ नव बाला ।
पद पङ्कज श्री तुव जीवन धन प्राण कोटि प्रतिपाला ॥
तुमरेंहि बस मन आस पुजावन निजहित विनवं दीन ।
करें कबूल किंकरी अपनी अद्भुत नित्य नवीन ॥

अनेन प्रीता मे दिशतु निजकैंकर्यपदवीं

दवीयोदृष्टीनां पदमहह राधासुखमयी ।
निधायैवं चित्तेकुवलयरुचिं बर्हमुकुटं
किशोरं ध्यायामि द्रुतकनकपीतच्छविपटम् ॥२५७॥

अहह =आश्चर्य है
दृष्टीनां दवीयः =सामान्य जनों की
पदं सुखमयी दृष्टि से जिनका
(सा) राधा स्वरूप सुदूर है-

अनेन प्रीता मे निज कैङ्कर्य्य पदवीं दिशतु	(अर्थात् सविशेष अन्तर्दृष्टि से समीप है) वह सुखमयी श्रीराधा इस कृत्य से प्रसन्न होकर मुझे अपनी कैङ्कर्य्य पदवी प्रदान करें,
एवं चित्ते निधाय	=इस प्रकार चित्त में रखकर
द्रुत कनक पीतच्छवि पटम्	=द्रवीभूत स्वर्ण के समान पीताम्बर धारी,
बर्हमुकुटं	=मयूर मुकुटी एवं
कुवलय रुचिं	नील कमल सम कांति वाले
किशोरं ध्यायामि	=किशोर (श्रीलाल जी का) मैं ध्यान करता हूँ।

जो मो मन रति पद श्री श्याम।
कनक तरल द्युति पीत वसन शिर मोरपिच्छ अभिराम।
नीलेन्दीवर सम किशोर अस ध्यान जु दृढ़ मन मोरे।
श्रीराधा सुखमयी प्रसन्न ह्वै प्रियतम श्याम निहोरे॥
निजहित निज कैंकर्य अगमपद मो कों करें प्रदान।
जा कों खोजत दूर दर्शि बहु अन्तर्दृष्टि महान॥

ध्यायंस्तं शिखिपिच्छमौलिमनिशं तन्नाम संकीर्तयन्
नित्यं तच्चरणांबुजं परिचरंस्तन्मंत्रवर्यं जपन्।
श्रीराधापददास्यमेव परमाभीष्टं हृदा धारयन्
कर्हि स्यां तदनुग्रहेण परद्भूमोतानुरागोत्सवः॥२५८॥

अनिशं तं शिखिपिच्छ मौलिम् ध्यायन्	=निरन्तर उन मयूर मुकुट धारी का ध्यान करता हुआ,
नित्यं तन्नाम संकीर्त्तयन्	=नित्य उनका नाम संकीर्त्तन करता हुआ,
तत्	=उनके चरण

चरणाम्बुजं कमल की सेवा
परिचरन् करता हुआ,
तन्मन्त्रवर्यं =तथा उनके श्रेष्ठ
जपन् मंत्र का जप करता हुआ,
परमाभीष्टं =परम अभीष्ट
श्रीराधा पद श्रीराधा पद
दास्यमेव हृदा कैङ्कर्य्य को ही
धारयन् हृदय में धारण करता हुआ,
तदनुग्रहेण =उनके अनुग्रह से
परमोद्भूतानु- प्रकटित परम
रागोत्सवः अनुराग के उत्सव से सम्पन्न
(अहं) कर्हि =मैं कब बनूँगा।
स्याम्

उर कब बाढ़ि है अस अनुराग ।
अद्भुत परम दास्य पद राधा मिले अभीष्ट सभाग ।
ध्यान धरौं शिखिपिच्छ मौलि श्रीश्याम हिये इकसार ।
उनके नाम गान चरनन के अर्चन में चित ढार ।।
उनके नाम सुअङ्कित मन्त्र राज को जपत निरन्तर ।
निजहित भई कृपा की भाजन कृतकृत्य अभ्यन्तर ।।

श्रीराधारसिकेन्द्ररूपगुणवद्गीतानि संश्रावयन्
गुञ्जामंजुलहारबर्हमुकुटाद्यावेदयंश्चाग्रतः ।
श्यामप्रेषितपूगमाल्यनवगंधाद्यैश्च संप्रीणयं
स्त्वत्पादाब्जनखच्छटारसह्रदे मग्नः कदास्यामहम् ।।२५६।।

श्री राधा =श्रीराधा एवं
रसिकेन्द्र रूप रसिक शेखर के
गुण वद् रूप तथा गुण से
गीतानि पूर्ण गीतों का
संश्रावयन् भली भाँति गान करता हुआ,
अग्रतश्च गुंजा =और उनके सम्मुख
मञ्जु लहार गुञ्जा के सुन्दर
बर्ह मुकुटादि हार एवं मयूर
आवेदयन् पिच्छ रचित मुकुटादिको को निवेदन करता हुआ,
श्याम प्रेषित =तथा श्याम सुन्दर
पूग माल्य द्वारा प्रेषित

नव गन्धा	सुपारी माला	त्वत् पादाब्ज	=आपके चरण
द्यै श्च	नूतन गन्धादि	नखच्छटा रस	कमल नखकांति
सम्प्रीणयन्	से सम्यक्	ह्रदे अहं कदा	रूप रससरोवर में
	आपको प्रसन्न	मग्नः स्याम्	मैं कब निमग्न
	करता हुआ		रहूँगा।

पद पङ्कज नख छटा तिहारी।
मानहुं रस सरसी राधे! तहँ रहौ डूबि इक तारी॥
राधे तुव - अरु रसिक नृपति हरि गुणावाद करुँ गान।
गुञ्जामाल मुकुट मयूर करुँ अर्पण लाल सुजान॥
अरे श्याम, प्रसन्न करौं तुहि अर्पि सुपारी माला।
इत्र नवीन लेप करि स्वामिनि निजहित गनौं विशाल॥

क्वासौ राधा निगमपदवीदूरगा कुत्र चासौ
कृष्णस्तस्याः कुचकमलयोरंतरैकांतवासः।
क्वाहं तुच्छः परममधमः प्राण्यहो गर्ह्यकर्मा
यत्तन्नाम स्फुरति महिमा एष वृन्दावनस्य॥२६०॥

निगम पदवी	=वेद पद्धति से	गर्ह्य कर्मा	परम अधम,
दूरगा असौ	दूर (अप्राप्य) कहाँ	तुच्छः प्राणी	निन्दित कर्म वाले
राधा क्व	तो वह श्रीराधा जी	अहं क्व	तुच्छ जीव,
तस्याः कुच	=तथा उनके कुच	अहह यत्-	=आश्चर्य है कि
कमलयोः	कमल के	तन्नाम स्फुरति	फिर भी उनका
अन्तरैकान्त	भीतर		नाम जो मेरे
वासः असौ	एकान्त निवास		हृदय में (प्रकाशित
कृष्णश्च कुत्र	करने वाले वे		हो रहा है)
	श्रीकृष्ण कहाँ?	एष वृन्दावनस्य	=यह श्रीवृन्दावन
परमम् अधमः	=तथा कहाँ मैं	महिमा (अस्ति)	की महिमा है।

महिमा केवल श्रीवृन्दावन।
जाते फुरि रह्यो अकथ नाम श्री राधा पुनि-पुनि मो मन ॥
यद्यपि राधा अगम निगम पद प्रिय अति श्याम सुजान।
ताते मध्य बसत कुच मण्डल अलि सम रस की बान ॥
पै मो सो अति गर्हित प्राणी तुच्छ कर्म सब हीन।
निधरक जपत फिरत सोइ निजहित श्रीवन वैभव चीन्ह ॥

वृन्दारण्ये नवरसकलाकोमलप्रेममूर्तेः
श्रीराधायाश्चरणकमलामोदमाधुर्यसीमा।
राधां ध्यायन्रसिकतिलकेनात्तकेलीविलासां
तामेवाहं कथमिह तनुं न्यस्य दासीभवेयम् ॥२६१॥

वृन्दारण्ये	=वृन्दावन में
रसिकतिलके	=रसिक शिरोमणि
नात्तकेली	के साथ विलास
विलासाम्	करने वाली,
तामेव राधा	=उन्हीं श्रीराधा का
ध्यायन्	ध्यान करता हुआ (मैं)
इह तनुं	=अपने इस शरीर
न्यस्य	को (धरोहर के रूप में यहाँ) रख कर,

नव रस कला	=नव रस कलाओं
कोमल प्रेम	से मृदुल प्रेम
मूर्तेः	विग्रहवती
श्रीराधाया-	=श्रीराधा जी के
श्चरण कमला	चरणकमल
मोद माधुर्य	सम्बन्धी आमोद
सीमा	एवं माधुरी की अवधि
अहं कथं	=स्वरूप दासी (मैं)
दासी भवेयम्	कैसे हो सकूँगी?

होइ कहुँ श्री वन तनु अवसान।
तो लहौं दास्य मधुर निरवधि राधा पद कञ्ज महान ॥
जो नित रसिक शिरोमणि पिय सँग केलि विलास परायन।
नव रस मृदुल कला निजहित राधा पद करती ध्यायन ॥

हा कालिंदि त्वयि मम निधिः प्रेयसा क्षालितोभू-
द्भोभो दिव्याद्भुततरुलतास्तत्करस्पर्शाभजः ।
हे राधाया रतिगृहशुका हे मृगा हे मयूरा
भूयोभूयः प्रणतिभिरहं प्रार्थये वोनुकंपाम् ॥२६२॥

हा कालिन्दि	=हे यमुने ! तुम्हारे
त्वयि मम	जल में मेरी निधि
निधिः प्रेयसा	स्वरूप स्वामिनी
क्षालितोभूत्	को प्रियतम ने
	स्नान कराया है
भोः भोः तत्कर	=उन्हीं के कर
स्पर्श भाजः	स्पर्श को प्राप्त
दिव्याद्भुत तरु	करने वाले हे हे
लताः	दिव्याद्भुत
	तरुलताओ !

हे राधाया	=श्रीराधा रति गृह
रतिगृह शुका	के हे शुको !,
हे मृगाः !	=हे मृगो !
हे मयूराः !	=हे मयूरो !
अहं भूयोभूयः	=मैं बार बार
प्रणतिभिः वः	अनेक प्रणामों
अनुकम्पाम्	द्वारा आप (सब
प्रार्थये ।	की) अनुकम्पा
	चाहता हूँ ।

प्रणति सुनु सम्पति विपिन सबै ।
हे यमुने ! दम्पति जल विहरत तो में हुलसि अबै ॥
दिव्याद्भुत तरु लता वल्लरी मृदु कर परसन भाजन ।
हे शुक ! मृगो ! मयूरो ! राधा कुञ्ज केलि सुख साजन ॥
पुनि-पुनि तुम सों विनय जोरि कर अनुकम्पा दरसावो ।
निजहित लाल लाड़ली चरननि अपु सम प्रेम दिलावो ॥

वहंती राधायाः कुचकलशकाश्मीरजमहो
जलक्रीडावेशाद्गलितमतुलप्रेमरसदम् ।
इयं सा कालिंदी विकसितनवेंदीवररुचि
स्सदा मंदीभूतं हृदयमिह संदीपयतु मे ॥२६३॥

अहो जल	=अहह ! जल केलि
क्रीडा वेशात्	आवेश से (धुल
गलितम् अतुल	कर) छूटी हुई
प्रेम रसदम्	अनुपम प्रेम रस
राधायाः कुच	देने वाली श्रीप्रिया
कलश	जी के कुच कलश
काश्मीरजं	में लगी हुई केशर
वहन्ती	को वहाती हुई,
विकसित	=प्रफुल्लित नूतन
नवेन्दीवर	नील कमल के
रुचिः इयं सा	समान कांति वाली
कालिन्दी	यह प्रसिद्ध श्रीयमुना
इह मन्दीभूतं	=इस जीवन में
मे हृदयं सदा	(मायिक अन्धकार
संदीपयतु	से) मन्दीभूत मेरे हृदय को सदा प्रकाशित करें ।

यमुने ! मो मन मन्द प्रकासो ।
तुम सों विनय प्रष्ठ जे तुमरे उन पद प्रीति विकासो ॥
प्रकट बहति तुम कुच कलशन को केशर प्रेम रसासव ।
जल क्रीडा में धुल्यो प्रिया को अद्भुत मोहन आसव ॥
ताते दर्शति आप प्रफुल्लित नील कमल दुति स्पन्दनि ।
निजहित कहँ लौं वरणं महिमा सुभगे कलिन्द नन्दनि ॥

सद्योगीन्द्रसुदृश्यसांद्र रसदानंदैकसन्मूर्त्तयः
सर्वेप्यद्भुतसन्महिम्नि मधुरे वृन्दावने संगताः ।
ये क्रूरा अपि पापिनो न च सतां संभाष्यदृश्याश्चये
सर्वान्वस्तुतया निरीक्ष्य परमस्वाराध्यबुद्धिर्मम ॥२६४॥

ये क्रूरा अपि	=जो व्यक्ति क्रूर
पापिनः	एवं पापी हैं,
न च सतां	=और सज्जनों के
सम्भाष्य	साथ भाषण एवं
दृश्याः	दर्शन के योग्य भी नहीं है,
ते सर्वेप्यद्भुत	=वे सभी अद्भुत
सन्महिम्नि	महिमा शाली
वृन्दावने	श्रीवृन्दावन के
सङ्गताः	समागम को लाभ करके,
सद्योगीन्द्र	=श्रेष्ठ योगीन्द्रों

सुदृश्य सान्द्र	के भी दर्शनीय	वस्तुतया	वास्तविक रूप से
रसदा नन्दैक	मधुर रसदाता	निरीक्ष्य	देख (जान) कर
सन्मूर्त्तयः	एवं आनन्द की	मम परम	=मेरी (उन में
(भवन्ति)	एकमात्र श्रेष्ठ मूर्ति हो जाते हैं,	स्वाराध्य	अपने) परम
तान् सर्वान्	=उन सब को	बुद्धिः	आराध्य की बुद्धि हो।

जेहि केहि विधि श्री वन सम्बन्ध।
जिन प्राणिन को प्राप्त होइ मो मति तिन में नित वन्द्य॥
अद्भुत महिमा पूर्ण मधुर श्रीवन के जे अनुयायी।
भले क्रूर पापी सत वर्जित व्यक्ति अयोग्य महाई॥
वस्तु तत्व वन दर्शनीय, सम योगीन्द्रन मन मोरे।
सरस सघन आनन्द रूप ते निजहित धाम निहोरे॥

यद्राधापदकिंकरीकृतहृदां सम्यग्भवेद्गोचरं
ध्येयं नैव कदापि यद्धृदि विना तस्याः कृपास्पर्शतः।
यत्प्रेमामृतसिंधुसाररसदं पापैकभाजामपि
तद्वृन्दावनदुष्प्रवेशमहिमाश्चर्यं हृदि स्फूर्जतु ॥२६५॥

यद्राधा पद	=जो श्री प्रियाजी	तस्याः कृपा	=जो उन (श्री जी)
किंकरी कृत	के पद कमल में	स्पर्शतः बिना	की कृपा प्राप्ति के
हृदां सम्य-	अपने हृदय को	हृदि कदापि	बिना कभी भी
ग्गोचरं भवेत्	कैंकर्य भाव से संपन्न करने वाले व्यक्तियों को सम्यक् रूप से गोचर होता है, (तथा)	नैव ध्येयम्	(हृदय में) ध्यान का विषय भी नहीं होता है
		यत्पापैक	=एवं जो एक मात्र
		भाजामपि	पापियों को भी
		प्रेमामृत सिंधु	प्रेमामृत सिंधु

साररसदम्	के सार रूप रस को दान करने वाला है,
तत् वृन्दावन	=वह आश्चर्य्य रूप

दुष्प्रवेश महिमाश्चर्य्यं हृदि स्फूर्जतु	श्रीवृन्दावन की दुर्गम महिमा (मेरे) हृदय में प्रकाशित हो।

फुरै उर अचरज श्रीवन महिमा।
जो अति दुश्प्रवेश पै अधमनि प्रगट करत निज गरिमा ॥
अघ-भाजन जे, दान करत प्रेमामृत रस निधि सार।
विनु श्रीराधा कृपा ध्याइ नँहि सकैं कोइ इक बार ॥
जे राधा पद दास्य भाव पूरण उन रसिक जनन कूं।
सहज दृष्टिगत निजहित भजि ऐसे महिमान्वित बन कूं ॥

राधाकेलिकलासु साक्षिणि कदा वृन्दावने पावने
वत्स्यामि स्फुटमुज्ज्वलाद्भुतरसे प्रेमैकमत्ताकृतिः।
तेजोरूपनिकुञ्ज एव कलयन्नेत्रादिपिण्डस्थितं
तादृक्स्वोचितदिव्यकोमलवपुः स्वीयं समालोकये ॥२६६॥

(अहं) प्रेमैक मत्ताकृतिः	=(मैं) एक मात्र प्रेम में ही मतवाला
उज्ज्वलाद्भुतरसे	हो कर अद्भुत मधुर
राधा केलि	रसमय श्रीराधा
कलासु	=केलि कलाओं के
साक्षिणि	साक्षी रूप पावन
पावने वृन्दावने कदा स्फुटं	श्रीवृन्दावन में कब भली भाँति
वत्स्यामि	निवास करूँगा,
पिण्डस्थितं	=तथा शरीरस्थ

नेत्रादि तेजो रूप निकुञ्ज एव कलयन्	नेत्रादि इंद्रियों को तेज पूर्ण निकुञ्ज में लगाता हुआ
स्वीयं तादृक्स्वोचित दिव्य कोमल वपुः (कदा) समालोकये	अपने तद्वत् (तेज मय) भाव के अनुरूप दिव्य कोमल (किंकरी) वपु को (कब) देखूँगा?

अहो ! कब ह्वै हौं अस सौभागिन ।
प्रेम विवश हिय वास होय श्रीवन अहै उर दावागिनि ॥
जो श्रीराधा केलि साक्षि अद्भुत रस पूरण देश ।
प्रकट पवित्र माधुरी दाता दूरि गन्ध भव लेश ॥
तहँ तेजोमय नव निकुञ्ज की हगनि भावना - शीला ।
निजहित कोमल किंकरि दिवि वपु फुरै जु अद्भुत लीला ॥

यत्रयत्र मम जन्म कर्मभिर्नारकेऽथ परमे पदेऽथवा ।
राधिकारतिनिकुञ्जमण्डली तत्रतत्र हृदि मे विराजताम् २६७॥

नारके पदे	=नरक पद में
अथवा परमे पदे	अथवा परम पद में
कर्मभिः यत्र यत्र मम जन्म (स्यात्)	=कर्मवश जहाँ-२ भी मेरा जन्म हो
तत्र तत्र	=वहाँ वहाँ श्री
राधिका रति निकुञ्ज मण्डली	राधिका रति विहार निकुञ्ज मण्डली
मे हृदि विराजताम्	=मेरे हृदय में विराजमान हो ।

रहै उर अविचल एकै भाव ।
नर्क स्वर्ग कर्मनि वश जहँ-जहँ फिरौं चहौं यह चाव ॥
श्रीराधा प्रिय केलि कुञ्ज मण्डलि संतत आधार ।
तहँ-तहँ निजहित केवल उर रहै दम्पति नित्य बिहार ॥

क्वाहं मूढमतिः क्व नाम परमानंदैकसारं रसः
श्रीराधाचरणानुभावकथया निस्यंदमाना गिरः ।
लग्नाः कोमलकुञ्जपुञ्जविलसद्वृन्दाटवीमण्डले
क्रीडच्छ्रीवृषभानुजापदनखज्योतिश्छटाः प्रायशः ॥२६८॥

अहं मूढ मतिः क्व	=मैं मन्द मति कहाँ (तथा)
परमानन्दैक	=परमानन्द का
सारं रसः	एकमात्र सार रस
नाम क्व	रूप नाम कहाँ
श्रीराधा	=श्रीराधा चरण

चरणानुभाव	प्रभाव की कथा
कथया निस्यन्द-	के द्वारा प्रवाहित
माना गिरः	होने वाली मेरी वाणियाँ
कोमल कुञ्ज	=कोमल कुञ्ज समूह
पुञ्ज विलसद्वृ	से शोभायमान
न्दाटवी मण्डले	वृन्दाटवी मण्डल
लग्नाः	में संलग्न हैं
प्रायशः क्रीडछ्री	=प्रायः (वे)
वृषभानुजा पद	विहार परायण
नख ज्योति-	वृषभानु कुमारी
श्छटाः	की पद नख ज्योति की छटा से समन्वित हैं ।

अहो ! मो मन यह अति कौतूह ।
कहँ हौं मूढ़ उतै परमानँद नाम सार रस व्यूह ॥
तदपि राधिका पद अनुभव गाथा उचरति मो बानी ।
कोमल कुञ्ज पुञ्ज दम्पति बिलसत श्रीवन रस सानी ॥
प्राय श्रीवृषभानु नन्दिनी पद नख द्युति छबि लीन ।
सतत केलि संलग्न स्वामिनी रस निजहित भई मौन ॥

श्रीराधे श्रुतिभिर्बुधैर्भगवताप्यामृग्यसद्वैभवे
स्वस्तोत्रं स्वकृपात एव सहजो योग्योऽप्यहं कारितः ।
पद्येनैव सदापराधिनि महन्मार्गं विरुध्य त्वदे
काशेस्नेहजलाकुलाक्षि किमपि प्रीतिं प्रसादीकुरु ॥२६६॥

श्रुतिभिः बुधैः	=वेद, बुध जन,
भगवतापि	तथा भगवान् के
आमृग्य सद्वै-	द्वारा भी अन्वेष-
भवे श्रीराधे!	णीय श्रेष्ठ वैभव
अहमपि पद्य-	शालिनि हे श्रीराधे!
नैव स्वस्तोत्रं	मुझे भी पद्य रूप
स्वकृपात एव	से अपने स्तोत्र के
सहजो	निर्माण में अपनी ही कृपा से
योग्यः कारितः	(आपने) सहज योग्य बना दिया
स्नेह जला-	=स्नेहार्द्रनयने !
कुलाक्षि.	
सदापराधिनि	=सदा अपराध युक्त
महन्मार्गं	एव महत् मार्ग
विरुद्ध्य	का विरोध करके

त्वदेकाशे	एक मात्र आपकी आशा लगाने वाले (मुझे)	प्रीतिं	नीय प्रीति का
किमपि	अपनी अनिर्वच-	प्रसादो	प्रसाद प्रदान
		कुरु	कीजिये।

श्रीराधे ! तव वैभव सार।
खोज योग्य बुधजन अतियन सों, हरि सों विविध प्रकार।
पै अचरज अधिकार दियो तव कृपा जु सहज उदार।
पद यश गान करायो निज, दीने अपराध बिसार॥
विमुख विरोधी महत पंथ ते तदपि आश दृढ़ एक।
अकथ इहै परसाद कृपा रहै निजहित चित इक टेक॥

अद्भुतानंदलोभश्चेन्नाम्ना रससुधानिधिः।
स्तवोयं कर्णकलशैर्गृहीत्वा पीयतां बुधाः ॥२७०॥

बुधाः चेत्	=हे बुध जनो यदि (आपके चित्त में)	सुधानिधिः	निधि नामक
अद्भुतानन्द लोभः	विचित्र अनुपम लोभ है	अयं स्तवः	=इस स्तोत्र को
तर्हि	=तो	कर्णकलशैः	=कर्ण कलशों द्वारा
नाम्ना रस	=(राधा) रस सुधा	गृहीत्वा	=ग्रहण (श्रवण) करके पान
		पीयताम्	कीजिये।

अहो बुध ! यदि आनंद उपभोग।
अहै लोभ विहु श्रवण श्रीराधा सुधा निधी संयोग।
यहै स्तोत्र पीयूष पयोनिधि कलशनि भरि बहु बार॥
श्रवणनि पुट करि पान सतत निजहित लहो नित्य विहार॥

॥ इत्यन्वितार्थचन्द्रिका विभूषितं श्रीराधासुधानिधि स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

।। क्षमायाचनापूर्वक शुद्धपाठ का शुद्धिपत्र ।।

कृपया यथास्थान सुधार कर पाठ करें ।

पृष्ठ	श्लोक	पंक्ति	शुद्ध
१	१	६	कृतार्थमानो
४	५	९	रससार
४	५	१६	नन्दसूनु
७	८	३	वहां=यहां
७	९	२२	विमंग=विभंग
८	९	५	अतिरङ्गनिधेः
९	१०	१	सारमूर्तिः
९	११	२३	पुण्यदृष्टिः
१०	१२	१२	निर्वापयत्
१०	१२	१९	पब=पद
१०	१२	२०	मरन्द निजहित
११	१४	२२	अहम् इति ईरिता
१२	१५	२०	मुखेन्दु बिम्बम्
१३	१६	९	त्व=त्वम्
१३	१६	२२	मेरो ।। टेक ।।
१५	१८	११	भेंटौगी ।।टेक।।
१६	२०	१०	संगमतीव्रवेगि
१६	२०	१३	वेगिनि
[illegible]०	२५	७	सुखैकसारे
२०	२५	१३	वैदग्ध्यसार
[illegible]१	२६	७	श्रीवृषभानुजी के
[illegible]१	२७	१७	प्रेमामृताम्बुधि
२१	२७	२५	एवं=एव
२२	२८	९	प्रसूमरच्छवि
२३	२९	७	प्रेमास्पदं
२३	२९	११	महिष्योः
४०	५१	३	निगमै
४३	५५	११	स्नेहार्द्धिं
४४	५६	१०	शैशवं खेलनै
५५	६८	२२	प्रेमैकपात्रम्
५७	७०	१४	नवप्रेम
६६	७८	५	सित=हित
६६	७९	१०	प्राप्नुयुः
६७	८०	९	निर्ममाः
७१	८४	२२	क्षिन=छिन
७४	८८	२०	सम्मोहनकारी
७४	८८	२७	त्वाम्
७७	९१	१०	देदीप्यमान
			पद कमल
८०	९४	११	सक्रुद्धेव
८६	९९	१५	कमनी
८६	१००	१३	स्निग्धा
८७	१०१	१६	मोहनं
८७	१०१	२३	भूमिका में
९०	१०३	१२	महिमा के

पृष्ठ	श्लोक	पंक्ति	शुद्ध
९१	१०४	१४	निरखेंगे
९८	११२	२४	तिलकगंध
१०३	११६	९-१०	भव्यन्मध्ये !
			बृहन्नितम्बे !
१०७	१२१	२२	मंदारद्रुमकुञ्ज
१०७	१२१	२३	मणिः=मणि
११०	१२२	७	शिरोवगुण्ठन
११२	१२५	१३	लक्ष्यते
११३	१२६	१७	परिपूरण
११४	१२७	२३	परिपूरण
११४	१२७	२७	करत आरती
११८	१३१	१४	राधिका मे
११९	१३२	१३	संदोहभृन्
१२१	१३४	२०	से वायु
१२६	१३[illegible]	४/५	वेदातीत परिचरन्
१३२	१४५	१५/१६	नंदसूनोर्दृष्य
१३२	१४५	२५	नन्दसूनाः
१३६	१४८	१३	गोविन्द सखन्
१३६	१४९	१४	नित्य
१३८	१५०	१६	मकरन्द
१४०	१५१	४	अङ्गों की
१४०	१५२	५	विचित्रता से
१४०	१५५	२४	लौंग
१४४	१५७	१९	अति कोमलम्
१४४	१५७	२०	कौसुम्भकम्
१४४	१५७	२३	कलयत् एव
१४८	१६१	२३	टीसै=तरसै
१५६	१७०	२३	कुञ्जोदरे
१५७	१७१	२४	भंगीशतै
१६०	१७३	१	विच्छेदाभास
१६०	१७३	४	तद्द्वयं
१६०	१७३	१२	आशंका)के
१६०	१७३	१७/१८	हुए हैं
		-	तद्द्वयं
१६३	१७६	२	कादम्बिनी
१६३	१७६	१२	तट पर
१६६	१७९	१४	सुरतारम्भे
१६८	१८२	२४	वक्षोजद्वितयेन
१६९	१८२	१८	वृन्दारण्य
१७०	१८४	१८	मनोज्ञ
१७४	१८८	६	रसाम्बुराशि
१७४	१८८	१६	हे करुण सनेह
१७६	१९१	२१	जह्याम्
१८७	२०४	११	चित्त वाले
१८७	२०४	२३	दास्य पाउँ
१८८	२०५	२२	अवलम्ब
१९२	२०९	२२	मव=तव
१९३	२११	१६	श्रीमद्विबाधरे
१९५	२१२	३	तन्द्रावश
१९७	२१४	११	रहिउर
१९८	२१५	४	तव तजत नहीं
१९८	२१६	१२	कोटिजन्मांतरेपि

पृष्ठ	श्लोक	पंक्ति	शुद्ध
२०४	२२२	७	होउंगी
२०४	२२२	६	मृदु
२०६	२२७	४	लुटानौ
२१३	२३२	३	कर्षति
२१४	२३३	२०	कह कहौं
२१७	२३६	८	आनन्दित
२१७	२३७	१८	चाँदनी से भी चमकीली
२२१	२४१	६	विद्रुम
२२१	२४१	१८	चल मीन द्वै
२२२	२४३	१६	भङ्गिमृदु......
२२२	२४३	२०	सुखधामनि
२२३	२४३	४	कंदर्प
२२५	२४६	८	संभूतशोका क्रुधा
२२५	२४६	१८	स्वच्छाया
२२८	२५१	२४	किरणबिम्बे
२३१	२५३	६	विवश
२३२	२५५	२१	ध्याइ
२३२	२५५	२३	बिताती
२३३	२५७	२१	कुवलयरुचि
२३४	२५७	४	बर्हमुकुटं
२३४	२५८	२०	परमोद्धूता
२३६	२५६	११	विशाला
२३७	२६१	१५	तामेव राधां
२३८	२६२	२	स्पर्शभाजः
२३६	२६३	११	प्रेष्ठ
२४१	२६६	१८	ताहृ--
		१६	क्स्वोचित
२४३	२३८	६	कहँ
२४३	२६६	२४	एवं
२४४	२७०	१२	गृहीत्वा

नोट—पृष्ठ ८ पंक्ति ६ अन्वय शुद्ध पाठ=
(सम्प्रार्थित एक परिरम्भ रसोत्सवायाः)

श्रीयमुनाष्टकम्

ग	३	१२	वेग
ग	४	२३	है
ङ	५	२	के मोद
ङ	६	१०	(जो)
च	८	२५	मुनीन्द्र
छ	६	२१	विचारशील
ज	६	८	जानैं
ज	सम्मति	१६	पृथक् २

॥ इति श्री शुद्ध पाठ शुद्धि पत्रं सम्पूर्णम् ॥